करामातुस्सादिक़ीन

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

I

करामातुस्सादिक़ीन

(सत्यनिष्ठों की करामतें)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: करामातुस्सादिक़ीन (सत्यनिष्ठों की करामतें)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: अली हसन एम ए, आनर्स इन अरबिक
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अप्रैल 2024 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Karamaatus Sadiqeen
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Ali Hasan M. A. , H.A.
Edition	: 1st Edition (Hindi) April 2024
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "करामातुस्सादिक़ीन" का यह हिन्दी अनुवाद श्री अली हसन एम. ए. ने किया है। तत्पश्चात श्री शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), श्री फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), श्री अली हसन एम. ए., श्री इब्नुल मेहदी एम. ए. और श्री सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रकाशक

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

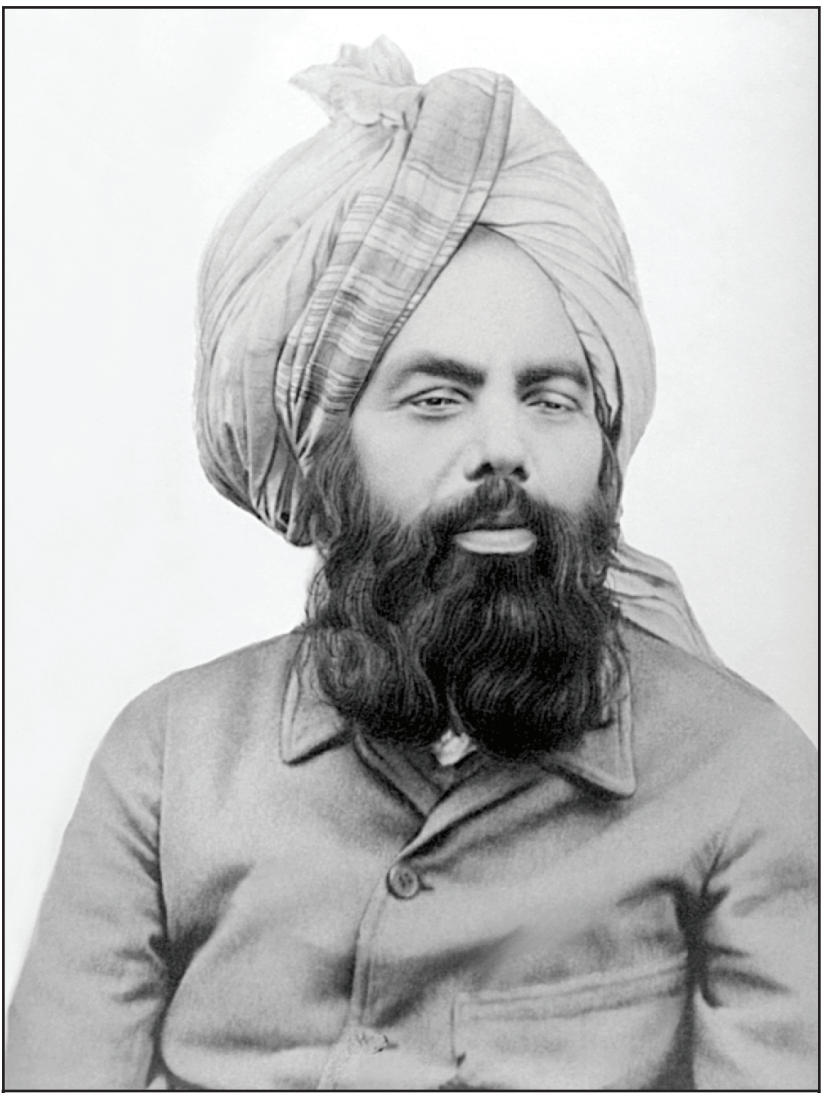

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

(1835 ई० - 1908 ई०)

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

VI

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आरोपों तथा आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने असली रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से जोड़ सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी जिसको जमाअत अहमदिया के नाम से जाना जाता है। ख़ुदा से इल्हाम

---

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग (कलियुग) के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से मौजूद हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप चौदहवीं शताब्दी हिजरी मे प्रकट होने वाले वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

करामातुस्सादिक़ीन

मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी का एक लेख जो उन्होंने 9 जनवरी 1893 ई. को लिखकर अपनी पत्रिका ईशातुससुन्ना जिल्द नंबर 15 अंक नंबर 1, जनवरी 1893 ई. में प्रकाशित किया था। 30 मार्च 1893 ई. को उसका उत्तर देते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने लिखा:-

"मियां मुहम्मद हुसैन को इस बात पर अत्यंत हठ है कि यह विनीत अरबी भाषा के ज्ञान से बिल्कुल अनभिज्ञ, कोरा, नादान और मूर्ख है और ख़ुदा तआला से सहायता पाने के योग्य ही नहीं क्योंकि महाझूठा और दज्जाल है और इसके साथ उनको अपने ज्ञान की श्रेष्ठता और दानशीलता का भी दावा है।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 306)

इस इश्तिहार (विज्ञापन) में आपने सच और झूठ की जांच पड़ताल करने हेतु यह मशवरा दिया कि एक सभा में पर्चियों के द्वारा पवित्र क़ुरआन की एक सूरत निकाल कर उसकी सुबोध एवं सुरुचिपूर्ण रूप से अरबी भाषा में अनुप्रासात्मक शैली में व्याख्या लिखी जाए और इस व्याख्या में ऐसी वास्तविकताएं एवं अध्यात्म ज्ञान लिखे जाएं जो अन्य पुस्तकों में न पाए जाते हों अत इसके अंत

में वाग्मी और अलंकृत अरबी भाषा में आहंज़रत सल्लालाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में 100 काव्य पंक्तियां (क़सीदा) लिखी हों और दोनों पक्षों को इस कार्य के लिए चालीस दिन की मोहलत दी जाए। फिर एक सामान्य सभा में दोनों पक्ष अपनी-अपनी व्याख्या एवं अपनी काव्य पंक्तियां (शैर) सुना दें। यदि शैख़ मुहम्मद हुसैन इस मुक़ाबले में विजयी रहे या इस विनीत के बराबर रहे तो उसी समय यह विनीत अपनी गलती को स्वीकार करेगा और अपनी पुस्तकें जला देगा किंतु यदि यह विनीत विजयी रहा तो फिर मियां मुहम्मद हुसैन उसी सभा में खड़े होकर इन शब्दों से तौबा करे।

इसके अतिरिक्त आपने फ़रमाया कि "शैख़ बटालवी साहिब को यह अधिकार होगा कि मियां शैख़ुल् कुल समस्त अहंकारी मुल्लाओं को साथ मिला ले।

(आइना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 603)

"और यदि इसका उत्तर प्रथम अप्रैल से दो सप्ताह के भीतर न आया तो आपका मुक़ाबले से फ़रार समझा जाएगा।"

(आइना कमालात-ए-इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 604, हाशिया,)

इसके जवाब में बटालवी साहिब ने इशाअतुसुन्ना जिल्द 15 अंक 8 पृष्ठ 190-191 में यह लिखकर कि अरबी भाषा में तफसीर के मुकाबले हेतु मैं हाज़िर हूं, हाज़िर हूं, हाज़िर हूं, लिखकर मुकाबले से अपनी जान बचाने हेतु वह तुच्छ शर्तें लगाईं जिनका उल्लेख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रूहानी ख़ज़ायन की जिल्द-7 के पृष्ठ 64-65 पर किया है। जिनसे बुद्धिमान समझ गए कि बटालवी साहिब मुक़ाबले के मैदान से भाग रहे हैं।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुझे उनके इस प्रकार के द्वेष देखकर प्रथम तो दिल में यह विचार आया कि अब सदैव के लिए उनसे मुंह फेर लिया जाए परंतु लोगों का यह गलत विचार दूर करने हेतु कि मानो मियां मुहम्मद हुसैन बटालवी या अन्य विरोधी मौलवी जो इस बुज़ुर्ग के साथी व सहायक हैं और साहित्यिक ज्ञान और ख़ुदा के कलाम की व्याख्या में अत्याधिक कुशलता रखते हैं समयानुकूल समझा गया कि अब उनको समझाने हेतु अंतिम प्रयास के रूप में बटालवी साहिब और उनके साथी उलमा की अरबीदानी और अध्यात्मज्ञान की सच्चाई प्रकट करने हेतु यह पुस्तक करामातुस्सादिक़ीन प्रकाशित की जाए।

(करामातुस्सादिक़ीन रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 7 पृष्ठ 47-48)

यह पत्रिका चार क़सीदों एवं सूरत फ़ातिहा की व्याख्या पर आधारित है और यह क़सीदे केवल एक सप्ताह के भीतर हुज़ूर ने लिखे और वह भी उस समय जब आथम के साथ शास्त्रार्थ समाप्त करके अमृतसर में रुके हुए थे। परंतु आपने बटालवी साहिब और उनके हम प्याले विरोधियों को केवल समझाने के अंतिम प्रयास हेतु पूरे एक महीने की मोहलत दी और फ़रमाया।

"और यदि इस पत्रिका की तुलना में मियां बटालवी या उनके किसी अन्य हम प्याले ने साफ नीयत से अपनी ओर से क़सीदे एवं सूरत फ़ातिहा की व्याख्या लिखकर पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर दी तो मैं सच्चे दिल से वचन देता हूं कि यदि मध्यस्तों की गवाही से यह सिद्ध हो जाए कि उनके क़सीदे और उनकी व्याख्या जो सूरत फ़ातिहा के रहस्यों एवं वास्तविकताओं के संबंध में है, मेरे

क़सीदों और व्याख्या से जो इस पवित्र सूरत के गूढ़ रहस्यों के बारे में होगी और हर लिहाज़ से बढ़कर है तो मैं उनमें से ऐसे व्यक्ति को एक हज़ार रुपया दूंगा जो प्रकाशन के एक महीने के भीतर ऐसे क़सीदे और ऐसी व्याख्या पुस्तक के रूप में प्रकाशित करे और यह भी इक़रार करता हूं कि मुक़ाबले में क़सीदे और तफ़सीर प्रकाशित करने के बाद यदि उनके क़सीदे और उनकी तफ़सीर व्याकरण एवं अलंकारों कि गलतियों से रहित निकले और मेरे क़सीदों और तफ़सीर से बढ़कर निकले तो फिर अपनी उस विद्वत्ता से यदि मेरे क़सीदों और व्याख्या में तुलनात्मक दृष्टि से कोई गलती निकालेंगे तो हर गलती पर पांच रुपए पुरस्कार भी दूंगा। .....तफ़सीर लिखने के समय यह याद रहे कि किसी अन्य व्यक्ति की तफ़सीर की नकल स्वीकार न होगी बल्कि वही तफ़सीर स्वीकार होगी जिसमें नए-नए ज्ञान एवं नए अध्यात्म हों और इस शर्त के साथ कि कुरआन और हदीस के वर्णनों के विरुद्ध न हों"

(करामातुस्सादिक़ीन रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 7 पृष्ठ 49)

इस मुकाबले के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने करामातुस्सादिक़ीन में यह भी लिखा:

"हम ईमानी दूरदर्शिता से यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि शैख़ साहिब मुक़ाबले के इस ढंग को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे और अपनी पुरानी आदत अनुसार टालने का प्रयास करेंगे।.....परंतु अब शैख़ साहिब के लिए यह सरल मार्ग निकल आया है क्योंकि इस पुस्तक में शैख़ साहिब ही संबोधित नहीं बल्कि काफिर-काफिर कहने वाले वे समस्त मौलवी भी संबोधित हैं जो अल्लाह और रसूल

के आज्ञाकारी इस विनीत को इस्लाम से खारिज समझते हैं। इसलिए अनिवार्य है कि शैख़ साहिब विनम्रतापूर्वक उनके पास जाएं और उनके सामने हाथ जोड़ें और रोएं और उनके पैरों में गिरें ..... किंतु मुश्किल यह है कि इस विनीत को शैख़ जी और हर एक काफिर-काफिर कहने वाले अशुभचिंतक के बारे में यह इल्हाम हो चुका है कि "इन्नी मुहीनुन् मन् अराद इहातक" अर्थात मैं हर उस व्यक्ति को अपमानित करूंगा जो तुझे अपमानित करने का इरादा करेगा। इसलिए शैख़ जी के यह सारे प्रयास व्यर्थ होंगे और यदि कोई मौलवी धृष्टता और चालाकी से शैख़ साहिब के समर्थन के लिए उठेगा तो मुंह के बल गिराया जाएगा। ख़ुदा तआला इन अहंकारी मौलवियों के अहंकार को तोड़ेगा और उन्हें दिखाएगा कि वह किस तरह गरीबों का समर्थन करता है।

(करामातुस्सादिक़ीन रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 7 पृष्ठ 66-67)

और ऐसा ही हुआ न शैख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी को हिम्मत हुई और न ही काफिर-काफिर कहने वाले किसी अन्य को कि वे इस पुस्तक की तुलना में पुस्तक लिखकर अपने अरबीदानी और क़ुरआनदानी का प्रमाण देते।

टाइटल प्रथम संस्करण उर्दू

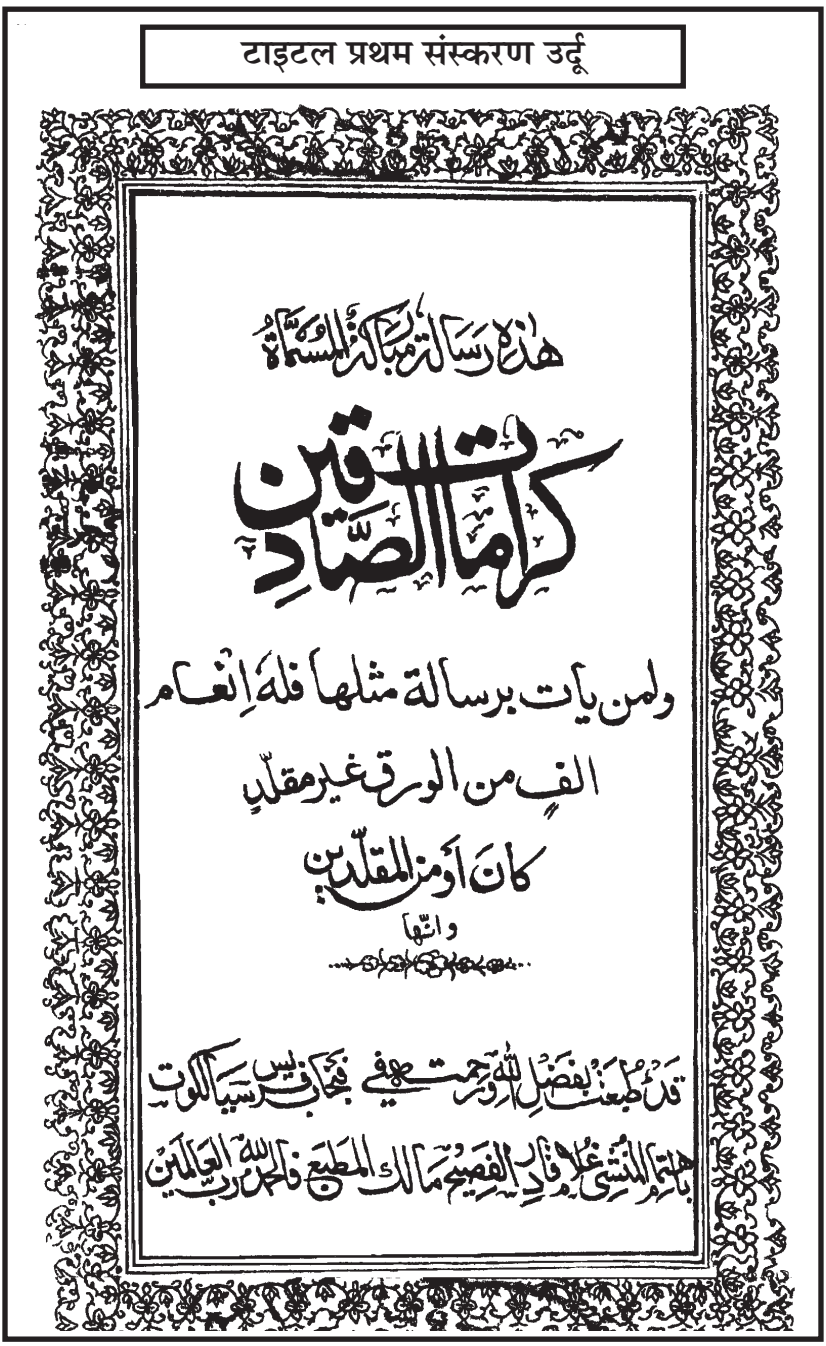

टाइटल प्रथम संस्करण का अनुवाद

यह पवित्र पुस्तक
जिसका नाम

करामातुस्सादिक़ीन

है और जो इस पुस्तक के हमतुल्य पुस्तक प्रस्तुत करेगा उसके लिए एक हज़ार रुपया इनाम है चाहे वह मुक़ल्लिद (अहले हदीस) हो या ग़ैर मुक़ल्लिद (अहले क़ुर्आन)।

और यह अल्लाह तआला की दया एवं कृपा से पंजाब प्रैस स्यालकोट में प्रबन्धक ग़ुलाम क़ादिर फ़सीह साहिब की देखरेख में प्रकाशित हुई।

XVI

चेतावनी

हे काफ़िर ठहराने वालो! जो मुझे झूठा ठहराने पर अड़े हुए हो और मेरा अपमान करने के लिए तन, मन, धन से प्रयासरत हो, अल्लाह तुम्हें हिदायत दे, अच्छी तरह जान लो कि यह पुस्तक मेरे और तुम्हारे मामले को परखने के लिए एक कसौटी है। अत: यदि तुम गाली गलौज से बाज़ नहीं आते और अपने रब्ब के अज़ाब (प्रकोप) से नहीं डरते और यह समझते हो कि तुम शरीअत (अर्थात् क़ुर्आन) का पताका लहराने वाले, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्शों के बहुत बड़े अनुयायी, इस्लाम के बहुत बड़े विद्वान और प्रखर ज्ञानी हो, और अपने दावे में सच्चे हो तो मेरी इस पुस्तक के समतुल्य (पुस्तक लिखकर) दिखाओ। लेकिन यदि तुम ऐसा न कर सको और ख़ुदा की क़सम! तुम ऐसा हरगिज़ न कर सकोगे, तो फिर अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ तुम लौटाए जाओगे, और उस आग से डरो जो मुजरिमों की हर चीज़ को तबाह और भस्म कर देती है, और ख़ुदा की क़सम! मैंने इस पुस्तक को केवल तुम्हारे घमण्ड को तोड़ने और तुम्हारे दिखावे के जोश को ठण्डा करने के लिए लिखा है। और मुझे तुम्हारी ओर से अपने अपमान को देखकर बर्दाश्त करने और ग़ुस्से को पी जाने का पूरा सामर्थ्य प्राप्त था, लेकिन मैंने चाहा कि न्यायप्रिय लोगों पर तुम्हारी विद्वता की हालत प्रकट करूँ। अत: (इस उद्देश्य के लिए) मैंने अपने तरकश से तीर निकाला और वर्णनशैली के मोतियों से मैंने अपना उद्देश्य पूरा कर

लिया। अत: यदि तुमने मुक़ाबला किया और इस जैसा लेख पेश कर दिया तो तुम्हें 1000 (एक हज़ार) रुपया इनाम दिया जाएगा, बल्कि विजयी होने की दशा में 20 (बीस) रुपए और भी दिए जाएँगे। ख़ुदा की क़सम! मुझे तुम में केवल कूड़ा-करकट, अपकारी, निरुत्साही, क्षुद्र, और मूर्ख दिखाई देते हैं और कोई प्रखरबुद्धि और अध्यात्ज्ञानी नज़र नहीं आता। और मुझे आश्चर्य है कि तुम धार्मिक ज्ञानों से रहित होने के बावजूद अहंकारी और निर्लज्ज भी हो और मुत्तक़ी (संयमी) लोगों की राह पर नहीं चल रहे। क़सम है उस हस्ती की जिसने तुम्हें मुल्ज़िम ठहराने और तुम्हारा मुँह बन्द करने के लिए मुझे अवतरित किया। मैंने अल्लाह से यह दुआ की कि वह मेरे और तुम्हारे बीच निर्णय करे और झूठों के षडयन्त्र को कमज़ोर (प्रभावहीन) करे। मेरी ओर से (इनाम के रूप में) तुम्हें रुपयों और पैसों की पेशकश तो केवल तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए है। अत: यदि तुमने गद्य (व्याख्या) और नज़्म (पद्य) के मैदान में मेरा मुक़ाबला किया तो नि:सन्देह तुम्हें (निर्धारित इनाम) दिया जाएगा। लेकिन यह अच्छी तरह से जान लो कि इसमें अल्लाह तुम्हें रुसवा करेगा और लोगों पर तुम्हारी मूर्खता प्रकट कर देगा और तुम्हारे झूठे प्रचार-प्रसार और अहंकार से भरी डीगों की हक़ीक़त खोल देगा, और मैंने यह सारे क़सीदे बिना किसी प्रकार की सहायता या नक़ल के तुकान्त अमृतसर में (बैठकर) पिरोए हैं और वहाँ के मुसलमानों की एक बड़ी संख्या इस बात की चश्मदीद गवाह है। लेकिन मैं तुम्हें इस पुस्तक के प्रकाशन के समय से लेकर दो माह तक का (लिखकर प्रस्तुत करने का) समय देता हूँ और मैं प्रतीक्षा करूँगा कि तुम (इसका) क्या

जवाब देते हो, पीठ फेर लेते हो या मुक़ाबला करते हो। मूलतः तो बटाला के शैख़ (अर्थात् मुहम्मद हुसैन बटालवी) ने जोश में आकर मुझे मुक़ाबले की चुनौती दी थी, फिर क्या था मैं तुरन्त मुक़ाबले के लिए उठ खड़ा हुआ और उसे कहा कि उठ, मैदान में निकल मैं आ गया हूँ। और फिर मैं उसके पास एक चमकता हुआ चिराग़ (दीपक) लेकर गया। हालाँकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह मूर्खों में से है। इस पुस्तक में क़ुर्आन के रहस्यज्ञान लिखे गए हैं और इसे पवित्र ज्ञान की सुगन्ध से बहुत सुगन्धित किया गया है। जन्नतों की नहरों के (जीवनदायक) पानी को इसकी ओर खींचा गया है। इस पुस्तक ने ख़ूबसूरत चेहरे और पूरब से चलने वाली ठण्डी हवा की सुगन्ध से पर्दा हटाया और ख़ूबसूरत चेहरा दिखलाया और उसकी चमक-दमक से मोतियों को शर्मिन्दा कर दिया और दिल प्रेम की ज्वाला में पिघलने लगे, और इसने दुश्मनों के सीनों में ग़मों का एक तूफ़ान पैदा कर दिया। मैंने इस (पुस्तक) को इस उद्देश्य से लिखा है ताकि बहस की कोई तर्ज़ और झगड़े की कोई गुंजाइश शेष न रहे और सच ख़ुलकर सामने आ जाए और मुजरिमों की राह स्पष्ट हो जाए। अन्त में हमारा यही सन्देश है कि हर एक प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का पालनहार है।

इनाम का वादा

इस पुस्तक के समतुल्य पुस्तक लिखने पर एक हज़ार रुपए का इनाम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।)

सच्ची प्रशंसा का पात्र अल्लाह ही है जिस तक आँखें नहीं पहुँच सकतीं, हाँ वह ख़ुद आँखों तक पहुँचता है। उसकी वास्तविकता को समझने से बुद्धि उतनी ही दूर है जितनी रात, दिन से दूर है। वह, वह हस्ती है जिसने क़ुर्आन और अपने रसूल (पैग़म्बर) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा शहरों और जंगलों के तमाम् वासियों को व्यापक सन्देश दिया है। फिर दुरूद व सलाम हो उसके प्यारे नबी और समस्त नबियों के गौरव हज़रत मुहम्मद ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो ठोस प्रमाणों और तर्कों के साथ आया और लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कीं और समस्त संसार के सुधार का बीड़ा उठाया। कितने ही कामवासनाओं के पीछे घूमने वाले थे जो रूहानी बन गए और कितने ही गालियाँ देने वाले और क्रोध से भड़क उठने वाले थे जो अत्यन्त शिष्ट, विनम्र और सदाचारी हो बन गए। हे अल्लाह! उस रसूल नबी उम्मी (अनपढ़) पर अपार कृपा कर,

जो अपनी विशेषताओं में समस्त नबियों (पैग़म्बरों) से आगे बढ़ गया और अपने आदर्श एवं विशेषताओं से हर पराकाष्ठा को छू लिया और ऐसे लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा की जो घोर मुनाफ़िक़ थे और निष्ठा से रहित थे। और ऐसी क़ौम को सन्मार्ग दिखाया जो मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) थी और एक ख़ुदा पर ईमान नहीं रखती थी। और ऐसे लोगों को नेक और संयमी बनाया जो घोर दुराचारी थे और काम, क्रोध, लोभ, मोह के नीचे दबे हुए थे और अल्लाह की राहों पर न चलकर सांसारिकता में डूबे हुए थे। और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उम्मी थे जिन्होंने सांसारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञानों में से कुछ भी नहीं पढ़ा था। वह अनपढ़ और मूर्ख क़ौम के अन्दर पैदा और जवान हुए और सांसारिक एवं आध्यात्मज्ञानियों का चेहरा तक भी न देखा था, और न कभी अपने दोस्तों और पड़ोस को छोड़कर बाहर की यात्रा पर गए थे। इसके बावजूद वह अपनी बुद्धि, विवेक और अपने कल्याणकार्यों एवं ज्ञान और उपकारों में सबसे आगे बढ़ गए। यहाँ तक कि आपकी शिक्षा के उपकार समस्त संसार पर छा गए और हर माँगने वाले ने अपना आँचल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकारों की ओर फैलाया और लोगों के हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकार और उपहार लेने के लिए बढ़े। फिर उन्होंने लोगों को अमन-शान्ति का मार्ग दिखाया और उन्हें आपसी फूट, लड़ाई-झगड़े और अन्धकार के मार्गों से छुटकारा दिलाया और हर प्रकार की मुनाफ़क़त (कपट), फूट, मनमुटाव, लड़ाई-झगड़े और तुच्छता एवं नीचता की आदतों से छुड़ाया, और सूझ-बूझ में दूरदर्शिता और सुधारणा पैदा की और ग़ुलामों को आज़ाद

कराया। यहाँ तक कि आप ने लोगों के दिलों में अनुसरण (स्वीकार) और आशा की किरण पैदा की, उनके कुफ़्र (इन्कार) की भावनाओं को ठण्डा किया और उन्हें दृढ़ता प्रदान की, और उन्हें साहस और दृढ़ता पर तत्पर करके अपने पैरों पर खड़ा किया तो वे दूरदर्शी बन गए और अपनी राहों और मंज़िलों को पहचान लिया और अपनी मंज़िल पाने का निश्चय कर लिया और सुख-चैन के सुन्दर एवं स्वच्छ (जीवन के) ठण्डे पानी के घाट पर जा पहुँचे। उनको स्वच्छ और सदाचारी बनाया गया और वे ऐसे निश्छल और पाकदिल हो गए कि वे लोगों में से अत्युत्तम और महान लोगों के नाम से नामित हुए। और उन्हें हर प्रकार की सुस्ती से जगाया गया तो वे बुद्धि-विवेक और अध्यात्म की बातों में ऐसे एकांकी और पारंगत हो गए कि वे बड़े-बड़े बुद्धिमानों के गुरू बन गए और उनमें से इतना ज्ञान फूटा कि लोगों को रौशन करने लगा और उनकी आदतें और स्वभाव बदल दिए गए, उनके दिल रौशन किए गए और उनकी परिचय और प्रशंसा फैला दी गई और वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसे जुड़ गए जैसे फल टहनियों से। उन्होंने अपने चंचल मन की लगामों को लड़ाई-झगड़े और फ़साद की राहों से हटाकर सीधी राहों की ओर फेर लिया, यहाँ तक कि उन्होंने प्रेम, सानिध्य और भ्रातृत्व की मंज़िलों को पा लिया, और वे उन विशेषताओं की पराकाष्ठा तक पहुँच गए जो अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए निर्धारित की हैं।

अत: सच्ची स्तुति के योग्य अल्लाह की हस्ती है, जिसने अपने इस मुबारक उम्मी रसूल (पैग़म्बर) और नबी के द्वारा अपने बन्दों को सन्मार्ग दिखाया और उसके माध्यम से समस्त संसार को पुण्य

जीवन प्रदान किया।

इसके बाद स्पष्ट हो कि इस शाश्वत् विधानानुसार कि हर एक घोर अन्धकार के समय ख़ुदा तआला इस दयनीय उम्मत (प्रजा) की सहायता करता है और लोगों के सुधार हेतु अपने किसी बन्दे को चुनकर धर्म को पुनः जीवित करने के लिए खड़ा कर देता है। यह विनीत भी इस सदी के सिर पर ख़ुदा तआला की ओर से मुजद्दिद (सुधारक) की उपाधि पाकर अवतरित हुआ और जिस प्रकार के फ़ित्ने (बुराइयाँ) दुनिया में फैल रहे थे उनके उन्मूलन और दूर करने के लिए इस विनीत को वे ज्ञान और साधन प्रदान किए गए कि जब तक ख़ुदा की विशेष अनुकंपा उन साधनों को प्रदान न करे, किसी को प्राप्त नही हो सकते। लेकिन अफ़सोस जैसा कि पुरातन से अधूरे और मंदबुद्धि उलेमा की आदत है कि कई रहस्य अपनी समझ से बाहर पाकर रहस्योद्घाटन करने वाले को ही काफ़िर (अधर्मी) ठहराते रहे हैं। उसी राह पर इस ज़माने के कई मौलवी साहिबों ने क़दम मारा है। बार-बार उन्हें क़ुर्आन करीम की खुली-खुली आयतों और हदीसों से समझाया गया, लेकिन सच की थोड़ी सी भी रौशनी उनके दिलों पर न पड़ी। बल्कि उसके उलट काफ़िर और झूठा कहकर प्रचारित और प्रसारित करने के बारे में जोश दिखाया, और केवल काफ़िर कहने पर ही नहीं रुके बल्कि महाकाफ़िर नाम रखा और एक सच्चे मोमिन के जहन्नुमी होने के फ़त्वे लिखे। इस विनीत ने बार-बार ख़ुदा तआला की क़समें खाकर बल्कि मस्जिद में जो ख़ुदा का घर है बैठकर उन पर स्पष्ट किया कि मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों पर ईमान रखता हूँ मगर

उन महाशयों ने एक न माना और कहा कि यह मुनाफ़िक़ाना इक़रार है। उन (महाशयों) में से जो मियाँ मुहम्मद हुसैन बटालवी हैं उन्होंने तो विशेषकर अपनी ज़िद को चरम तक पहुँचा दिया और कहा कि अगर मैं अपनी आँखों से निशान भी देख लूँ तब भी मैं कदापि मुसलमान न समझूँगा और हमेशा काफ़िर-काफ़िर कहता रहूँगा। अत: कुछ निशान भी प्रकट हुए मगर हज़रत बटालवी साहिब ने उनका नाम मुलहिदों (नास्तिकों) द्वारा दिखाया गया चमत्कार या ज्योतिष रखा और हर तरह से लोगों को धोखे दिए। अत: उन धोखों के अलावा एक धोखा यह भी है कि कहा यह व्यक्ति निपट मूर्ख और अरबी साहित्य एवं आलंकारिकता से पूर्णत: अनभिज्ञ है और इसके साथ-साथ झूठा और बात को तोड़-मरोड़कर पेश करने वाला भी है जो ख़ुदा तआला से कभी सहायता नहीं पा सकता, और अपनी अरबीदानी को बधिरों की तरह पूरी सरपटता से बयान किया ताकि उसके कारण लोगों के दिलों में उसकी प्रतिष्ठा बैठ जाए। और इस विनीत को एक मूर्ख, अनपढ़ देहाती और अरबी साहित्य एवं आलंकारिकता से पूर्णत: अनभिज्ञ, शैतान और बातें बनाने वाला ठहराकर यह चाहा कि उस डींग से लोगों पर सुधारणा की सारी राहें छुप जाएँ। लेकिन ख़ुदा तआला की अद्भुत शान् है कि इस विषय में भी उसने पसन्द न किया कि बटालवी साहिब और उनके हमख़याल उलेमा का कुछ सम्मान और सदाचार प्रकट हो। यद्यपि मैं वस्तुत: उम्मियों (अर्थात् अनपढ़ या देहातियों) की तरह हूँ। लेकिन ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से अरबी साहित्य एवं आलंकारिकता और क़ुर्आन करीम की गूढ़ सच्चाइयों के बयान करने में मेरी वह सहायता की कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं

हैं कि जिनसे मैं पूर्णत: उसका शुक्र अदा कर सकूँ। और मुझे शुभसूचना दी कि अगर मियाँ बटालवी या उसका कोई अन्य हमख़याल मुक़ाबले के लिए खड़ा होगा तो खुला-खुला पराजित होकर घोर शर्मिन्दा होगा। इसी आधार पर मैंने इश्तिहार (विज्ञापन) दिया कि मियाँ बटालवी पर यह अनिवार्य है कि मेरे मुक़ाबले पर अलंकृत और वाग्मितापूर्ण अरबी में क़ुर्आन करीम की एक सूर: की तफ़्सीर लिखे जो दस भागों से कम न हो और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में 100 छन्दों पर आधारित एक क़सीदा भी प्रस्तुत करे। और इसी तरह मुझ पर भी अनिवार्य होगा कि मैं भी उसी सूर: की अरबी में अलंकृत और वाग्मितापूर्ण तफ़्सीर लिखूँ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में 100 छन्दों पर आधारित एक क़सीदा भी लिखकर तैयार करूँ, और फिर यदि तुलनात्मक मुक़ाबले में मियाँ बटालवी साहिब की तफ़्सीर और क़सीदा मेरी तफ़्सीर और क़सीदे से अधिक अलंकृत, वाग्मी, सर्वांगपूर्ण और उच्चकोटि का साबित हुआ तो मैं अपने दावे से तौबा कर लूँगा और अपनी किताबें जला दूँगा और समझ लूँगा कि ख़ुदा तआला ने बटालवी साहिब का समर्थन किया है, और यदि मैं विजयी हुआ तो बटालवी साहिब को इक़रार करना पड़ेगा कि वह अपने उन बयानों में पूर्णत: झूठे और मिथ्यावादी थे कि यह व्यक्ति मनगढ़त बातें बनाने वाला, झूठा, काफ़िर, शैतान और अरबी साहित्य एवं अलंकारों से ऐसा अनभिज्ञ है कि अरबी व्याकरण की एक विभक्ति भी सही तौर पर नहीं जानता, और इसके साथ मैंने यह भी लिखा था कि हम में से यदि कोई व्यक्ति इस मुक़ाबले से मुँह फेरे या व्यर्थ बहसों और

बहानों से आज़माइश के इस ढंग को टाल दे तो उस पर ख़ुदा तआला की 10 लानतें पड़ें। मगर अफ़सोस की बटालवी साहिब ने उन लानतों की कुछ भी पर्वाह न की और कई शर्तें और वादे तोड़कर अन्ततः बहाना करते हुए यह जवाब दिया कि पहले हम आपकी अरबी किताबों को जाँचकर देखेंगे कि वे भूल-चूक से रहित हैं या नहीं, और अरबी व्याकरण की दृष्टि से उनमें कोई ग़लती पाई जाती है या नहीं। यदि नहीं पाई जाएगी तो फिर मुक़ाबले में तफ़्सीर लिखने और 100 छन्दों पर क़सीदा बनाने में कोई हर्ज न होगा। मगर बुद्धिमानों ने समझ लिया कि बटालवी साहिब ने अपनी जान बचाने के लिए यह बहाना बनाया है। क्योंकि उनको अच्छी तरह ज्ञात है कि अरबी या फ़ारसी की कोई विस्तृत पुस्तक मानवीय भूल-चूक से रहित नहीं हो सकती। और बहाना ढूँढ़ने वाले के लिए कोई न कोई शब्द चाहे वह कातिब (लिपिक) की भूल से ही हुआ हो तर्क पेश करने के लिए एक सहारा हो सकता है और मालूम होता है कि उन्होंने बहुत हाथ-पैर मारकर और मशहूर कहावत "मरता क्या न करता" पर व्यवहृत होकर यह शर्मनाक बहाना पेश कर दिया और अपने दिल को इस बाज़ारी चालबाज़ी से ख़ुश कर लिया कि कातिब (लिपिक) की किसी एक भूल या मान लो संयोगवश किसी ग़लती के निकलने से यह तर्क हाथ आ जाएगा कि अब तुम्हारी किताब में ग़लती निकल आई इसलिए अब बहस की ज़रूरत नहीं रही। लेकिन अफ़सोस की बटालवी साहिब ने यह नहीं समझा कि नबियों के बाद निर्दोष होने का दावा न मुझे और न किसी इन्सान को है। जो व्यक्ति अरबी या फ़रसी में विस्तृत पुस्तकें लिखेगा सम्भव है कि इस मशहूर कहावत (क़ल्ला मा सलिमा

मिक्सारुन) के अनुसार उससे कोई व्याकरण सम्बन्धी ग़लती हो जाए और प्रूफ़रीडिंग में नज़र न पड़ने के कारण वह ग़लती ठीक होने से रह जाए, और यह भी सम्भव है कि कातिब (लिपिक) की भूल से कोई ग़लती रह जाए और मानवीय भूलवश लेखक की उस पर नज़र न पड़े। तो फिर उस इकतरफ़ा नुकत:चीनी में दोनों पक्षों की विद्वता की तुलना कैसे हो सकती है। अत: बटालवी साहिब के ऐसे व्यर्थ उत्तरों से स्पष्ट तौर पर मालूम हो गया कि तफ़्सीर और (अरबी) साहित्य में ख़ुदा ने उनको कुछ भी हिस्सा नहीं दिया और मानवीय प्रकृति में से लान-तान और चालबाज़ी में महारत के अतिरिक्त और कुछ भी उनके दिलोदिमाग़ और ज़ुबान को नहीं मिला। इसी कारण से मुझे उनकी इस प्रकार की ईर्ष्या-द्वेष को देखकर पहले दिल में यह विचार आया था कि अब हमेशा के लिए इन (बटालवी साहिब) से विमुखता अपनाई जाए। लेकिन लोगों का यह भ्रम दूर करने के लिए कि मानो मियाँ मुहम्मद हुसैन बटालवी या उसके हमख़याल अन्य मुख़ालिफ़ मौलवी अरबी साहित्य और क़ुर्आन करीम की सच्ची तफ़्सीर लिखने में महारत रखते हैं, यह युक्तिपूर्ण समझा गया कि अब आख़िरी बार इत्माम-ए-हुज्जत (निर्णायक प्रमाण) के तौर पर बटालवी साहिब और उनके हमख़याल अन्य उलेमा की अरबीदानी और क़ुर्आन करीम के वास्तविक रहस्योद्घाटन करने की योग्यता ज़ाहिर करने के लिए यह किताब प्रकाशित की जाए। और स्पष्ट रहे कि इस किताब में चार क़सीदे और सूर: फ़ातिहा की एक तफ़्सीर है। यद्यपि यह क़सीदे केवल एक सप्ताह के अन्दर लिखे गए हैं, बल्कि वस्तुत: कुछ ही घंटों में। लेकिन बटालवी साहिब और उनके हमख़याल

मुख़ालिफ़ मौलवियों के लिए इत्माम-ए-हुज्जत के उद्देश्य से पूरे एक महीने की मोहलत देकर यह क़ानूनानुसार इक़रार किया जाता है कि यदि वे इस किताब के प्रकाशन से एक महीने के अन्दर-अन्दर इसकी तुलना में अपनी अलंकृत और वाग्मीपूर्ण किताब प्रकाशित कर दें जिसमें इसी संख्या के अनुसार अरबी छन्द हों जो हमारी इस किताब में हैं और इसी तरह सच्ची, गूढ़, अलंकृत एवं वाग्मितापूर्ण सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर भी हो जो इस किताब में लिखी गई है, तो **उन्हें 1000 (एक हज़ार) रुपये इनाम दिया जाएगा।** वर्ना आगे उनको यह कहने का अधिकार न होगा कि वे साहित्यकार और अरबीदान हैं या क़ुर्आन करीम के सच्चे रहस्यज्ञान बयान करने की कुछ योग्यता रखते हैं। और मैंने सुना है कि उलेमा का यह गिरोह अपने-अपने मकानों में बैठकर एक तरफ़ तो इस विनीत को झूठा, दज्जाल और काफ़िर ठहराते हैं और यह भी कहते हैं कि यह व्यक्ति सरासर मूर्ख और अरबी साहित्य से पूर्णतः अनभिज्ञ है। इसलिए इस मुक़ाबला से पूर्णतः स्पष्ट हो जाएगा कि इस बयान में ये लोग सच्चे हैं या झूठे। चूँकि इन लोगों के दिलों में ईमानदारी और ख़ुदा का कोई ख़ौफ़ नहीं है। इसलिए अब मैं नहीं चाहता कि बार-बार उनकी ओर ध्यान दूँ, यद्यपि मैं एक स्पष्ट कश्फ़ (ईश्वरीय संकेत) के द्वारा ऐसे द्वेषी और टेढ़े दिल लोगों के साथ मुबाहसे करने से रोका गया हूँ। जिसका वर्णन मेरी किताब **"आईना कमालात-ए-इस्लाम"** में छप चुका है। लेकिन यह मुक़ाबला निशाननुमाई के तौर पर है। और अब तक़्वा (संयम) और परहेज़गारी की दृष्टि से यह प्रण करता हूँ कि अगर अब मियाँ मुहम्मद हुसैन बटालवी या किसी दूसरे मौलवी ने बिना किसी बहस

और बहाने के मेरे इन क़सीदों और तफ़्सीर के मुक़ाबले में एक माह तक अपने क़सीदे और तफ़्सीर प्रकाशित न किया तो फिर हमेशा के लिए इस क़ौम से मुँह फेर लूँगा। और यदि इस किताब के मुक़ाबले पर मियाँ बटालवी या उनके किसी और हमख़याल ने सच्ची नीयत से अपनी ओर से क़सीदे और सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर लिखकर किताब के रूप में प्रकाशित कर दिया तो मैं सच्चे दिल से वादा करता हूँ कि अगर न्यायकों की गवाही से यह साबित हो जाए कि उनके क़सीदे और उनकी सूरः फ़ातिहा की सच्ची और गूढ़ तफ़्सीर मेरे क़सीदों और मेरी तफ़्सीर से जो इसी मुबारक सूरः के गूढ़ रहस्यों के बारे में है हर एक दृष्टि से बढ़कर है तो मैं 1000 (एक हज़ार) रुपए उनमें से ऐसे व्यक्ति को दूँगा जो प्रकाशन के दिन से एक माह के अन्दर-अन्दर ऐसे क़सीदे और ऐसी तफ़्सीर किताब के रूप में प्रकाशित कर दे। इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि मुक़ाबले पर क़सीदे और तफ़्सीर प्रकाशित करने के बाद अगर उनके क़सीदे और उनकी तफ़्सीर अरबी व्याकरण एवं रस और अलंकारों की ग़लतियों से रहित निकले और मेरे क़सीदों और तफ़्सीर से बढ़कर निकले तो फिर अपनी उस प्रकाण्ड विद्वता के कारण यदि मेरे क़सीदों और तफ़्सीर में तुलनात्मक दृष्टि से कोई ग़लती निकालेंगे तो प्रति ग़लती **5 (पाँच) रुपया** इनाम भी दूँगा। लेकिन याद रहे कि नुक़्तःचीनी आसान है एक मूर्ख भी कर सकता है, पर नुक़्तानुमाई मुश्किल। तफ़्सीर लिखते समय यह याद रहे कि किसी दूसरे व्यक्ति की तफ़्सीर की नक़ल स्वीकार्य न होगी, बल्कि वही तफ़्सीर स्वीकारयोग्य होगी जिसमें नए-नए गूढ़ ज्ञान और सच्चाइयाँ बयान हों और क़ुर्आन करीम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के कथनों के विपरीत न हों। अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम के बारे में फ़रमाता है कि इसमें हर एक चीज़ का बयान है। फिर सच्चाइयों और गूढ़ ज्ञानों का कोई भाग किस तरह उससे बाहर रह सकता है। इसके अतिरिक्त ख़ुदा तआला का क़ानून-ए-क़ुदरत भी यही गवाही दे रहा है कि जो कुछ उसने बनाया है चाहे वह एक मक्खी ही हो, वह अनगिनत चमत्कार अपने अन्दर रखती है। फिर क्या एक ईमानदार यह कह सकता है कि (एक मक्खी या मच्छर जिसकी बनावट ऐसी उच्चकोटि की है कि यदि क़यामत तक तमाम् फ़िलास्फ़र उसकी अद्भुत विशेषताएँ पता करने के बारे में सोचते चले जाएँ तब भी उनको यह अधिकार नहीं पहुँचता कि जितनी उसमें विशेषताएँ थीं उन्होंने वे सब मालूम कर ली हैं) क़ुर्आन करीम की इबारतें केवल सतही (सरसरी) विचारों तक सीमित हैं। जो एक मूर्ख मुल्ला उन पर सरसरी नज़र डालकर कह सकता है कि जो कुछ क़ुर्आन में था मैंने मालूम कर लिया। ख़ुदा तआला का क़ानून-ए-क़ुदरत कभी बदल नहीं सकता और उसकी रचनाओं में से एक पत्ता भी ऐसा नहीं जिसको दो-चार विदित विशेषताओं में सीमित कह सकें। बल्कि उसकी हर एक रचना अपने अन्दर असंख्य विशेषताएँ रखती है और इसी कारण हर एक रचना में बेजोड़ विशेषता पाई जाती है और यदि सारी दुनिया उसकी सदृशता बनाना चाहे तो कदापि उनके लिए सम्भव न हो। जैसा कि क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने ख़ुद फ़रमा दिया है कि मक्खी बनाने पर भी कोई समर्थ नहीं हो सकता। क्यों समर्थ नहीं हो सकता इसका यही तो कारण है कि मक्खी में भी ख़ुदा की इतनी अद्भुत कारीगरियाँ हैं कि मानवीय सोचों बल्कि उसकी समस्त शक्तियों

से बढ़कर हैं। फिर ख़ुदा तआला के कलाम (क़ुर्आन मजीद) को क्यों इतना गिरा हुआ और निम्नकोटि का समझा जाए कि वह अपनी विशेषताओं और रहस्यपूर्ण सच्चाइयों की दृष्टि से मक्खी के बराबर भी नहीं। क्या यह वही कलाम (क़ुर्आन मजीद) नहीं जिसके बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है:-

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿۸۹﴾

(सूरः बनी इस्राईल आयत नं. 89)

कि अगर जिन्न और इन्स (अर्थात् साधारण और विद्वान वर्ग) इस बात पर एक हो जाएँ कि इस क़ुर्आन की हमतुल्य लिख लावें तो कदापि नहीं कर सकेंगे, चाहे वे एक-दूसरे की सहायता भी करें। कई मूर्ख मुल्ला (अल्लाह उनकी धृष्टता की सज़ा दे) कहा करते हैं कि यह अद्वितीयता केवल आलंकारिकता के सम्बन्ध में है। लेकिन ऐसे लोग निपट मूर्ख और दिलों के अन्धे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि क़ुर्आन करीम अपनी आलंकारिकता और वाग्मिता की दृष्टि से भी अद्वितीय है। क़ुर्आन करीम का यह तात्पर्य नहीं है कि उसकी अद्वितीयता केवल इसी कारण से है, बल्कि उस पवित्र कलाम (क़ुर्आन करीम) का यह तात्पर्य है कि जिन-जिन विशेषताओं से वह विभूषित किया गया है उन समस्त विशेषताओं की दृष्टि से वह अद्वितीय है। यह आवश्यक नहीं कि वे समस्त विशेषताएँ एकत्र होकर अद्वितीयता पैदा हो, बल्कि हर एक विशेषता अलग से भी अद्वितीयता की पराकाष्ठा तक पहुँची हुई है। अब आवश्यक समझकर क़ुर्आन करीम की वे महानतम् विशेषताएँ जो इस पवित्र ग्रन्थ में दर्ज

हैं, जिनकी दृष्टि से क़ुर्आन करीम अद्वितीय और अनुपम कहलाता है उदाहरणत: कुछ नीचे लिखी जाती हैं और वे निम्नवत् हैं:-

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ (सूर: यूनुस 10/2)

يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ

(सूर: अल्-अहक़ाफ़ 46/31)

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿۲۹﴾

(सूर: अल्-तक्वीर 81/28,29)

مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ (सूर: अल्-अन्आम 6/39)

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۲۱﴾

(सूर: अल्-जासिय: 45/21)

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿۷۶﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۷﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿۷۸﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿۷۹﴾

(सूर: अल्-वाक़िय: 56/76-80)

اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ

(सूर: इब्राहीम 14/25)

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ (सूर: बनी इस्राईल 17/10)

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿۱۳﴾ (सूर: अल्-तारिक़ 86/14)

لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ (सूर: अल्-बक़र: 2/3)

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ (सूर: अल्-क़मर 54/6)

وَمُهَيْمِنًا (सूर: अल्-माइद: 5/49)

هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ (सूर: अल्-बक़र: 2/186)

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾ (सूर: अल्-हाक़्क़: 69/49)

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۵۱﴾ (सूर: अल्-हाक़्क़: 69/52)

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٥﴾ (सूर: अत्-तक्वीर : 81/25)

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ يَّهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٧﴾

(सूर: अल्-माइद: 5/16,17)

هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (सूर: अल्-सफ़्फ़ 61/10)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٥﴾ (सूर: अल्-निसा 4/175)

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (सूर: अल्-माइद: 5/4)

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

(सूर: अल्-ज़ुमर 39/24)

قُلِ اللّٰهُ يَهْدِىْ لِلْحَقِّ (सूर: यूनुस 10/36)

اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ (सूर: अल्-शूरा 42/18)

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا

(सूर: अल्-राद 13/18)

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ

(सूर: अल्-नहल 16/65)

هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ (सूर: अल्-हदीद 57/10)

يَاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ (सूरः यूनुस 10/58)

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ (सूरः साद 38/30)

وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا (सूरः मरियम 19/98)

وَ كُلَّ شَىْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا (सूरः बनी इस्राईल 17/13)

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ (सूरः बनी इस्राईल 17/106)

وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ (सूरः हाम मीम अल्-सज्दः 41/42,43)

جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا (सूरः अल्-शूरा 42/53)

تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ (सूरः अल्-नहल 16/90)

رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا (सूरः अल्-शूरा 42/53)

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿١٩٦﴾ (सूरः अश्-शुअरा 26/196)

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ (सूरः अल्-बय्यिनः 98/4)

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٩﴾

(सूरः बनी इस्राईल 17/89)

सारांशतः अनुवाद- इन समस्त आयतों का सारांशतः अनुवाद यह है कि: क़ुर्आन हकीम है अर्थात् हिकमत से भरा हुआ है, सच्चाई के समस्त स्तर तय करा देता है, और समस्त संसार के लिए नसीहत है अर्थात् हर एक प्रकार की प्रकृति को उसकी इच्छित विशेषताएँ याद दिलाता है और हर एक स्तर का आदमी उससे फ़ायदा उठाता

है, जैसे कि एक साधारण व्यक्ति उसी तरह एक फ़िलास्फ़र भी। यह उस व्यक्ति के लिए उतरा है जो मानवीय साहस को अपने अन्दर पैदा करना चाहता है अर्थात् मानवता रूपी वृक्ष की जितनी भी शाख़ें हैं यह क़ुरआन करीम उन सब शाख़ों को बढ़ाने वाला और संतुलित स्तर पर लाने वाला है। और मानवीय शक्तियों के हर एक पहलू पर अपनी शिक्षा का असर डालता है। कोई सच्चाई इससे बाहर नहीं। इसकी शिक्षाएँ दूरदर्शिता प्रदान करती हैं और ईमान लाने वालों को वह राह दिखाती हैं जिससे ईमान दृढ़ होता है और ख़ुदा की कृपा और दया उन ईमानदारों के साथ अपेक्षाकृत अधिक हो जाती है। जिससे वे ईमान से अध्यात्मज्ञान के स्तर तक पहुँचते हैं और फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं मवाकिउन् नुजूम (अर्थात् सितारों के उदय) की क़सम खाता हूँ और यह बड़ी क़सम है अगर तुम जानते हो। और क़सम इस बात पर है कि यह क़ुर्आन अत्यन्त महान शान् वाली पुस्तक है और इसकी शिक्षाएँ प्राकृतिक विधान के विपरीत नहीं। बल्कि इसकी सारी शिक्षाएँ किताब-ए-मक्नून अर्थात् अन्तरात्मा में लिखी हुई हैं और इसके रहस्यों को वही लोग समझ सकते हैं जिनके अन्त:करण शुद्ध किए गए हैं (इस जगह महाप्रतापी ख़ुदा ने मवाकिउन् नुजूम (अर्थात् सितारों के उदय होने) की क़सम खाकर इस ओर इशारा किया है कि जैसे सितारे अत्यन्त ऊँचे स्थान पर होने के कारण छोटे-छोटे बिन्दुओं की भाँति दिखाई देते हैं हालाँकि वे बहुत बड़े हैं। इसी तरह क़ुर्आन करीम अपनी उच्चतम् शान् और स्थान पर होने के कारण मूर्खों को दिखाई नहीं देता और जिनके अन्त:करण का मैल दूर हो जाए वे उनको देख और समझ लेते हैं। इस आयत

में महाप्रतापी ख़ुदा ने क़ुर्आन करीम के बड़े-बड़े रहस्यज्ञानों की ओर संकेत किया है जिन्हें ख़ुदा तआला के वे विशिष्ट भक्त ही जानते हैं जिन्हें ख़ुदा तआला अपने हाथ से पाक (शुद्ध) करता है। यह ऐतराज़ नहीं हो सकता कि अगर क़ुर्आन करीम का ज्ञान विशिष्ट भक्तों से विशिष्ट किया गया है तो दूसरों से नाफ़र्मानी की हालत में क्यों पूछताछ होगी। चूँकि क़ुर्आन करीम की वह शिक्षा जो ईमान का आधारभूत ढाँचा है वह बिल्कुल आसान है जिसको एक नास्तिक भी समझ सकता है, और ऐसी नहीं है कि किसी पढ़ने वाले की समझ में न आए, और यदि वह आसान न होती तो तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) का सारा काम बेकार हो जाता। चूँकि गूढ़ सच्चाइयाँ और रहस्यज्ञान ईमान का आधारभूत ढाँचा नहीं केवल ज्ञान एवं अध्यात्म के बढ़ाने का साधन हैं, इसलिए केवल विशिष्टों को उस राह में ज्ञान दिया। क्योंकि वे पूर्णतः ख़ुदाप्रदत्त (ईशप्रदत्त) नेमतें हैं, जो ईमान के बाद (आज़माइश की कसौटी में खरे उतरने वाले) कामिल ईमान वाले लोगों को मिला करती हैं)। इसके बाद फ़रमाया कि क़ुर्आन की बातें उस वृक्ष के समान हैं जिसकी जड़ मज़बूत हो और उसकी शाख़ें आसमान में हों और वह हमेशा अपने समय पर अपना फल देता है अर्थात् मनुष्य की सत्प्रकृति उसको स्वीकार करती है और आसमान में शाखों के होने से यह तात्पर्य है कि बड़े-बड़े अध्यात्मज्ञानों पर आधारित है जो क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुसार हैं और हमेशा फल देने से यह तात्पर्य है कि हमेशा रूहानी प्रभाव अपने अन्दर रखता है। और फिर फ़रमाया कि यह क़ुर्आन उस सन्मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है जिसमें थोड़ा सा भी दोष नहीं, और मानवीय प्रकृति के पूर्णतः

अनुरूप है। और क़ुर्आन की विशेषताओं में से यह भी एक बड़ी विशेषता है कि वह एक परिधि की भाँति मनुष्य की समस्त शक्तियों पर आच्छादित है और उपरोक्त प्रशंसित आयत में सन्मार्ग से वही मार्ग अभिप्राय है जो मनुष्य की प्रकृति से पूर्णत: निकट है अर्थात् जिन महान विशेषताओं के लिए मनुष्य पैदा किया गया है उन समस्त विशेषताओं का मार्ग उसको दिखला देना और वे मार्ग उसके लिए सम्भव और सरल कर देना, जिनकी प्राप्ति के लिए उसकी प्रकृति में क्षमता रखी गई है और आयत :

(सूर: बनी इस्राईल आयत नं.10) يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَم

में शब्द "अक़्वमु" से यही वास्तविकता तात्पर्य है। इसके बाद फिर फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम (सच और झूठ के) समस्त झगड़ों का निर्णय करता है और यह कथन भी इस बात की ओर संकेत करता है कि इसमें ख़ुदाई युक्ति के सारे प्रकार मौजूद हैं। क्योंकि जो किताब ख़ुद अधूरी और कई अध्यात्मज्ञानों से रहित हो वह आमतौर पर इलाहियात् (अर्थात् ब्रह्मज्ञान से सम्बन्धित शास्त्रादि) के समझने में ग़लती करने वालों और मर्म तक पहुँचने वालों के लिए जज और न्यायक नहीं ठहर सकती, बल्कि उसी समय न्यायक ठहरेगी जब वह समस्त व्यापक ख़ुदाई युक्तियों और रहस्यज्ञानों से भरी हुई होगी। और फिर फ़रमाया कि यह क़ुर्आन समस्त सन्देहों से रहित है और इसकी शिक्षाओं में शक और सन्देह नहीं अर्थात् ठोस और तथ्यात्मक बातों से भरी हुई है। फिर फ़रमाया कि यह क़ुर्आन वह हिकमत (युक्ति) है जो अपने चर्मोत्कर्ष को पहुँची हुई है और समस्त आसमानी किताबों पर हावी है और उसमें समस्त धार्मिक रहस्यज्ञानों का वर्णन मौजूद है।

वह सन्मार्ग की शिक्षा देता है और सन्मार्ग पर ठोस तर्क और प्रमाण देता है और फिर सच को झूठ से अलग करके दिखला देता है, और वह संयमियों को उनकी सुयोग्यताएँ जो उनमें मौजूद हैं याद दिलाता है और उसकी शिक्षा विश्वसनीय स्तर पर है और वह भविष्य की बातें बयान करने में कृपण नहीं हैं अर्थात् उसमें भविष्य से सम्बन्धित सभी बातें भरी हुई हैं और केवल इतना ही नहीं कि वह भविष्य की बातें अपने ही अन्दर रखता है बल्कि उसका सच्चा अनुयायी भी ख़ुदा की ओर से इल्हाम पाकर भविष्य से सम्बन्धित विषय समझ सकता है और यह उपकार इसी पवित्र पुस्तक का है जो कृपण नहीं है। और दूसरी पुस्तकें चाहे ख़ुदा की ओर से भी हों किन्तु अब वे कृपण ही के दायरे में आती हैं, जैसे कि इन्जील और तौरैत। कि अब उनका अनुसरण करने वाला कोई नूर (अध्यात्मज्ञान) प्राप्त नहीं कर सकता, बल्कि इन्जील तो ईसाइयों से एक ठट्ठा कर रही है। क्योंकि इन्जील ने जो ईसाई धर्मनिष्ठों की निशानियाँ ठहराई हैं कि वे असाध्य रोगियों अर्थात् जन्मजात अन्धों, कोढ़ियों, लंगड़ों और बहरों (बधिरों) इत्यादि को चंगा करेंगे और पहाड़ों को कहेंगे कि एक जगह से दूसरी जगह चला जा तो वह चला जाएगा, और ज़हर खाने से नहीं मरेंगे, यह निशानियाँ ईसाइयों में नहीं पाई जातीं। बल्कि हज़रत ईसा ने यह बात कहकर कि यदि राई के दाना के बराबर भी तुम में ईमान हो तो यह सारे काम जो मैं करता हूँ तुम करोगे बल्कि मुझसे बढ़कर करोगे, इस बात पर मुहर लगा दी कि समस्त ईसाई अधर्मी (बेईमान) हैं। और जब समस्त बेईमान ठहरे तो उनको यह अधिकार ही नहीं है कि किसी से दीन (धर्म) की सत्यता के बारे में बहस करें जब तक कि पहले अपनी

ईमानदारी सिद्ध न कर लें। क्योंकि उनकी हालत यह गवाही दे रही है कि उनमें निर्धारित निशानियाँ न पाई जाने के कारण या तो वे बेईमान हैं या वह व्यक्ति झूठा है जिसने उनके लिए ऐसी निशानियाँ ठहराईं जो उनमें पाई नहीं जातीं। और दोनों प्रकार के सन्देह की दृष्टि से सिद्ध होता है कि ईसाई लोग सच्चाई से बिल्कुल दूर और परित्यक्त एवं रहित हैं। लेकिन क़ुर्आन करीम ने अपने अनुयायियों के लिए जो निशानियाँ ठहराई हैं वे सैकड़ों मुसलमानों में पाई जाती हैं, जिससे सिद्ध हो गया कि क़ुर्आन करीम ख़ुदा की सच्ची वाणी है। लेकिन अगर ईसाइयों को ईमानदार (धर्मनिष्ठ) मान लिया जाए तो साथ यह भी मानना पड़ेगा कि मौजूदा इन्जील किसी ऐसे व्यक्ति की बातें हैं जो झूठी पेशगोइयों के सहारे अपने गिरोह को क़ायम रखना चाहता है। लेकिन याद रहे कि इस तक़रीर से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर हमारा कोई आरोप नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि यह बातें हज़रत मसीह की ओर से हैं तभी तो उन्होंने ईमानदारों की यह निशानियाँ लिखीं। फिर यदि कोई ईमानदारी (धर्मनिष्ठा) को छोड़ दे तो (इसमें) हज़रत मसीह का क्या क़ुसूर। बल्कि हज़रत मसीह ने इन निशानियों के रूप में ईसाइयों के बेईमान (अधर्मी) हो जाने के ज़माने की एक भविष्यवाणी कर दी, अर्थात् यह कह दिया कि हे ईसाइयो! जब तुम पर ऐसा ज़माना आ जाए कि तुममें यह निशानियाँ न पाई जाएँ तो समझो कि तुम बेईमान (अधर्मी) हो गए और एक राई के दाना के बराबर भी तुममें ईमान न रहा। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रादुर्भाव से पूर्व ईसाइयों के कई विशिष्ट लोगों में यह निशानियाँ पाई जाती थीं और उनसे चमत्कार प्रकट होते थे, लेकिन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रादुर्भावकाल में जब वे लोग उस सच्चे नबी को स्वीकार न करने के कारण बेईमान (अधर्मी) हो गए और एक राई के दाना के बराबर भी ईमान न रहा, तब बड़ी अधिकता से बेईमान (अधर्मी) होने की निशानियाँ उनमें पैदा हो गईं। मुसलमानों पर अनिवार्य है कि जब तक ईसाई अपने आप को तौरैत और इन्जील के अनुसार चरितार्थ सिद्ध न करें अर्थात् ईमानदारी की निशानियाँ न दिखलाएँ तब तक बार-बार उनसे यही प्रश्न करें कि वे इन्जील द्वारा ठहराई गई उन निशानियों के अनुसार अपना ईमानदार होना हमें दिखलाएँ। उनसे यह पूछना चाहिए कि तुम किस मज़हब की ओर बुलाते हो? क्या उस इन्जीली मज़हब की ओर जिस पर चलने वालों की यह निशानियाँ लिखी हैं कि उनको रूहुलक़ुदुस (अर्थात् ख़ुदा की ओर से आसमानी सहायता) मिलती है और वे ऐसे-ऐसे चमत्कार दिखाते हैं। यदि वही दीन (मज़हब) है तो बहुत अच्छा, वे निशानियाँ दिखलाओ और पहले अपने आप को एक ईमानदार (धर्मनिष्ठ) ईसाई सिद्ध करो और फिर उस स्पष्ट और प्रामाणिक ईमान की ओर दूसरों को बुलाओ। अत: जब उस ईमान की निशानियाँ ही मौजूद नहीं तो निजात (मुक्ति) जिसका मिलना उसी ईमान पर आधारित है वह भी उसी तरह झूठी सिद्ध होगी जिस तरह तुम्हारा ईमान झूठा है। और झूठे ईमान का फल सच्ची निजात (मुक्ति) नहीं हो सकती बल्कि फलत: झूठी निजात (मुक्ति) होगी जो जहन्नुम (नर्क) से बचा नहीं सकती। तात्पर्य यह कि कोई ईसाई, ईसाई होने की दृष्टि से तब तक बहस करने का अधिकार नहीं रखता जब तक इन्जील में वर्णित निशानियों के अनुसार अपने आप को सच्चा ईसाई सिद्ध न करे।

फिर हम शेष पवित्र आयतों का तर्जुमा करके लिखते हैं कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि यह क़ुर्आन और रसूल एक नूर (दीपक) है जो तुमहारी ओर आया। यह किताब हर एक सच्चाई को बयान करने वाली है। ख़ुदा इसके द्वारा उन लोगों को सलामती (अमन-शान्ति) का मार्ग दिखलाता है जो ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार चलते हैं और वह उनको अन्धकार (मूर्खता) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर लाता है और उनको वह सीधा मार्ग दिखलाता है जो ख़ुदा तक पहुँचता है। वही ख़ुदा है जिसने अपने रसूल को इस शिक्षा और सच्चे दीन (मज़हब) के साथ भेजा है ताकि इस दीन (मज़हब) को समस्त दीनों (मज़हबों) पर प्रभुत्व दे दे। हे लोगो ! क़ुर्आन एक तार्किक प्रमाण है जो ख़ुदा तआला की ओर से तुमको मिला है और एक ज्वलंत ज्ञान है जो तुम्हारी ओर उतारा गया है। आज तुम्हारे लिए दीन (मज़हब) अपने चर्मोत्कर्ष को पहुँचा दिया गया और तुम पर सारी नेमतें पूरी की गईं और मेरी रज़ामन्दी इसके अन्दर आ गई, इसलिए तुम दीन-ए-इस्लाम का पालन करो। ख़ुदा ने अत्यन्त उच्चकोटि की और रुचिकर किताब तुम्हारी ओर उतारी है, इस किताब में यह विशेषता है कि यह किताब मुतशाबिह (अर्थात् क़ानूने क़ुदरत से मिलती-जुलती) है, अर्थात् इसकी शिक्षाएँ न आपस में मतभेद रखती हैं और न ख़ुदा तआला के क़ानून-ए-क़ुदरत के विपरीत हैं। बल्कि इन्सान की प्रकृति और उसकी शक्तियों की दृष्टि से जो उत्कृष्टता उसके लिए आवश्यक है उसी उत्कृष्टता के अनुरूप इस किताब की शिक्षा है और यह विशेषता तौरैत और इन्जील की शिक्षा में नहीं पाई जाती। तौरैत में हद से बढ़कर कठोरता और प्रतिशोध पर ज़ोर डाला गया है और

वह कठोरता आज्ञाकारी-अवज्ञाकारी और मित्र-शत्रु दोनों के लिए ऐसे ढंग से तय की गई है जिससे ज्ञात होता है कि तौरैत की शिक्षा को विशेष क़ौम और विशेष काल की दृष्टि से यह मज्बूरी आ पड़ी थी कि सीधे और आम क़ानूने क़ुदरत के अनुसार तौरैत के क़ानून उन क़ौमों को कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकते थे। इसीलिए तौरैत ने अपनी क़ौम (अर्थात् यहूदियों) पर यह सख़्ती की कि प्रतिशोधी क़ानूनों पर ज़ोर दिया और क्षमा एवं दरगुज़र मानो यहूदियों के लिए निषेध की भाँति हो गए, और दाँत के बदले अपने भाई का दाँत तोड़ डालना पुण्य समझा गया और हुक़ूक़ुल्लाह (अर्थात् अल्लाह के अधिकारों के बारे) में भी बहुत कठोर क़ानून अर्थात् असाधारण कष्ट देने वाले जिनसे जीविका एवं रहन-सहन में बाधा पड़े रखे गए। इसी तरह दूसरों (अर्थात् ग़ैर यहूदियों) के बारे में भी तौरैत के क़ानून अत्यधिक कठोर थे। जिनकी दृष्टि से मुख़ालिफ़ों और नाफ़र्मानों के देहात और शहर फूँके गए और कई लाख बच्चे क़त्ल किए गए और बूढ़ों, अन्धों, लंगड़ों, और कमज़ोर स्त्रियों को भी मौत के घाट उतारा गया। और इन्जील की शिक्षा में हद से बढ़कर नरमी, दया और दरगुज़र को पूर्णतः अनिवार्य कर्तव्यों की तरह ठहराया गया। यदि कोई धार्मिक शत्रु या कोई अन्य हमला करें तो इन्जील के अनुसार सामना करना हराम (अवैध) है, चाहे वे उनके सामने उनकी क़ौम के ग़रीबों एवं कमज़ोरों को टुकड़े-टुकड़े ही क्यों न कर दें, और उनके बच्चों को क़त्ल कर डालें, और उनकी स्त्रियों को उठाकर ले जाएँ और दुराचार करें, और उनके गिरजाघर फूँक दें, और उनकी पुस्तकों को जला दें। तात्पर्य यह कि चाहे जैसे उनकी क़ौम को मलियामेट कर दें, पर

ईसाई मज़हब के दुश्मन से सामना करने का आदेश नहीं। इसी तरह आन्तरिक तौर पर भी इन्जील में अपनी क़ौम के पारस्परिक अधिकारों के लिए या मुजरिम को जुर्म के बदले में सज़ा देने का कोई क़ानून नहीं। और केवल क्षमा, दया और दरगुज़र के पहलू पर यद्यपि जैन मत से बहुत कम, पर फिर भी इतना अधिक ज़ोर दिया गया है कि दूसरे पहलू का मानो ध्यान ही नहीं। एक गाल पर तमाँचा खाकर दूसरा भी फेर देना यद्यपि एक मूर्ख की नज़र में बड़ी अच्छी शिक्षा लगती होगी, लेकिन अफ़सोस कि ऐसे लोग नहीं समझते कि क्या किसी युग के लोग इस पर व्यवहृत भी हुए, और यदि असम्भवत: मान लो कि व्यवहृत भी हुए तो क्या आबादी की यही हालत रही, और लोगों की जान-माल और अमन-शान्ति में कुछ बाधा न पड़ी। क्या यह शिक्षा संसार के स्रष्टा के उस क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुसार है जिसकी ओर लोगों के विभिन्न स्वभाव मोहताज हैं। क्या यह नहीं देखते कि सारे स्वभाव जुर्म की सज़ा देने की ओर स्वभावत: झुक गए हैं और हर इक सरकार ने जुर्मों को रोकने के लिए यही क़ानून बनाए हैं कि मुजरिमों को निर्धारित सज़ा दी जाए, और किसी देश की व्यवस्था सज़ा के क़ानूनों के बिना केवल रहम (दया) से चल न सकी। आख़िरकार ईसाई मज़्हब ने भी उस रहम और दरगुज़र की शिक्षा से तंग आकर वे रक्तपात किए कि शायद संसार में उसका उदाहरण नहीं मिलेगा और जिस तरह एक बाँध टूटकर चारों ओर तबाही मचा देता है उसी तरह ईसाई क़ौम ने क्षमा और दरगुज़र की शिक्षा को छोड़कर (भयंकर क्रोध के) काम दिखलाए। इसलिए इन दोनों पुस्तकों का अधूरा और दोषपूर्ण होना स्पष्ट है। लेकिन क़ुर्आन

करीम शिष्टाचार से भरी हुई नैतिक शिक्षा में क़ानून-ए-क़ुदरत के अनुसार चला है। क़ानून-ए-क़ुदरत जहाँ तक आज्ञा देता है रहम (दया) के स्थान पर रहम है और इसी नियम के अनुसार प्रकोप और दण्ड के स्थान पर प्रकोप और दण्ड है, और अपनों एवं दूसरों के साथ अपनी व्यवहारिक शिक्षा में हर इक दृष्टि से पूर्ण है और इसकी शिक्षाएँ पूर्ण संतुलन पर हैं जो मानवीयता के सम्पूर्ण वृक्ष की सिंचाई करती हैं न कि किसी एक शाख़ की, और समस्त शक्तियों की शिक्षक और मार्गदर्शक हैं न कि किसी एक शक्ति की।

और वस्तुतः आयत : كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا (सूरः अल-ज़ुमर आयत नं. 24) में इसी संतुलन और सामंजस्य की ओर संकेत किया है। इसके (तुरन्त) बाद अरबी शब्द مَّثَانِيَ (मसानी) में इस बात की ओर संकेत किया है कि क़ुर्आन करीम के अन्दर बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान पाए जाते हैं। फिर इसके बाद फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम में हक़ (ख़ुदा) की इतनी महानता बयान हुई है कि ख़ुदा तआला की बातों के सुनने से उनके दिलों पर कँपकँपी छा जाती है और फिर उनके दिल और देह ख़ुदा की स्तुति के लिए पिघलने लगते हैं। फिर फ़रमाया कि यह किताब पूर्णतः सत्य है और सत्यता की कसौटी भी। अर्थात् यह सत्य भी है और इसके द्वारा सत्य की पहचान भी की जा सकती है। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने आसमान से पानी उतारा फिर अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार हर इक दिल बह निकला अर्थात् जितने संसार में मानवीय स्वभाव हैं क़ुर्आन करीम उनके हर इक सूझ-बूझ और बुद्धि एवं विवेक के स्तर का मार्गदर्शन करने वाला है और पराकाष्ठा तक पहुँचने लिए यह नियम अति अनिवार्य है।

क्योंकि इस आयत में इस बात की ओर संकेत है कि क़ुर्आन करीम ज्ञान एवं अध्यात्म का इतना बड़ा सागर है कि ख़ुदा की मुहब्बत के तमाम् भूखे और सच्चे ज्ञान एवं अध्यात्म के प्यासे इसी से पानी पीते हैं। और फिर फ़रमाया कि हम ने क़ुर्आन करीम को इसलिए उतारा है कि जो पहली क़ौमों में मतभेद पैदा हो गए हैं उनको सुस्पष्ट किया जाए, फिर फ़रमाया कि यह क़ुर्आन अन्धकार से प्रकाश की ओर निकालता है और इसमें तमाम् बीमारियों की दवा है और तरह-तरह की बरकतें भी। अर्थात् रहस्यज्ञान और इन्सानों को फ़ायदा पहुँचाने वाली बातें भी इसमें भरी हुई हैं। अत: यह इस योग्य है कि इसको पूरे ध्यान से पढ़ा जाए और बुद्धिमान इस पर ग़ौर करें। घोर झगड़ालू (बहस-मुबाहसा करने वाले) इस से दोषी सिद्ध होते हैं, और हर इक चीज़ का वर्णन इसमें मौजूद है और यह यथोचित आवश्यकता के समय अवतरित किया गया है और यथोचित आवश्यकता के साथ उतरा है और यह किताब सच्ची और प्रभुत्वशाली है झूठ इसके आगे-पीछे कहीं नहीं ठहर सकता। यह चमकता हुआ सूर्य है जिसके द्वारा सन्मार्ग दिखाया जाता है। इसमें हर एक चीज़ का बयान मौजूद है और यह जड़ है और यह अरबी किताब (अर्थात् क़ुर्आन करीम) वाग्मिता और आलंकारिकता से परिपूर्ण है और समस्त शाश्वत् सच्चाइयाँ इसमें मौजूद हैं। तू उनको कह दे कि यदि जिन्न व इन्स (अर्थात् साधारण एवं असाधारण लोग) सारे मिलकर इसकी सदृश बनाना चाहें अर्थात् वे महानतम् विशेषताएँ जो इसकी बयान की गई हैं यदि कोई जिन्न व इन्स (अर्थात् साधारण एवं असाधारण लोगों) में से उनकी सदृश बनाना चाहें तो यह उनके लिए सम्भव न होगा, चाहे वे एक-दूसरे

की सहायता भी ले लें।

अब इस स्थान पर सिद्ध हुआ कि क़ुर्आन करीम केवल अपनी वाग्मिता एवं आलंकारिकता ही की दृष्टि से अद्वितीय नहीं बल्कि अपनी उन तमाम् विशेषताओं की दृष्टि से अद्वितीय है जिन विशेषताओं का संग्रहीता वह स्वयं अपने आप को ठहराता है और यही सत्य है। क्योंकि ख़ुदा तआला की ओर से जो कुछ जारी है उसकी केवल एक विशेषता ही अद्वितीय नहीं होनी चाहिए बल्कि हर इक विशेषता अद्वितीय होगी। जो लोग क़ुर्आन करीम को असीमित वास्तविकताओं और रहस्यज्ञानों का व्यापक संग्रहीता नहीं समझते वे उन लोगों में शामिल हैं जिन्होंने क़ुर्आन करीम की महानता की वह क़द्र नहीं की जिसकी वह पात्र है। ख़ुदा तआला की पवित्र और सच्ची किताब को परखने की यह एक सच्ची निशानी है कि वह अपनी समस्त विशेषताओं में अद्वितीय हो। क्योंकि हम देखते हैं कि जो चीज़ ख़ुदा तआला की ओर से जारी हुई है उसे कोई बना नहीं सकता, उदाहरणत: एक जौ का दाना है वह भी अद्वितीय है और इन्सानी ताक़तें उसका मुक़ाबला नहीं कर सकतीं, और अद्वितीयता असीमितता को अनिवार्य ठहराती है, अर्थात् हर इक चीज़ उसी अवस्था में अद्वितीय ठहर सकती है जब उसके रहस्यों और विशेषताओं की कोई परिधि और सीमा न हो। और जैसा कि हम बयान कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला की हर इक उत्पत्ति में यही विशेषता पाई जाती है। उदाहरणत: यदि एक पेड़ के पत्ते के रहस्यों की हज़ार वर्ष तक शोध की जाए तो वे हज़ार वर्ष बीत जाएँगे परन्तु उस पत्ते के रहस्य समाप्त नहीं होंगे, और इसमें रहस्य यह है कि जो चीज़ असीमित शक्ति के द्वारा पैदा

हुई है उसमें असीमित रहस्य और विशेषताओं का होना एक अनिवार्य और आवश्यक विषय है। और क़ुर्आन करीम की यह आयत

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

(सूरः अल-कहफ़ आयत नं. 110)

अपने एक अर्थ की दृष्टि से इसी बात की समर्थक है। क्योंकि अल्लाह के द्वारा पैदा की हुई समस्त चीज़ें अपने लाक्षणिक अर्थों की दृष्टि से सारी का सारी उसकी कलिमा (आदेश) ही हैं और इसी आधार पर यह आयत है कि

كَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ

(सूरः अल्-निसा आयत नं. 172)

क्योंकि इब्नि मरियम (अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) में अन्य लोगों की अपेक्षा कोई बात अधिक नहीं। यदि वह कलिमतुल्लाह (अल्लाह के आदेश से जन्मा) है तो आदम भी कलिमतुल्लाह (अल्लाह के आदेश से जन्मा) है और उसकी सन्तान भी। क्योंकि हर एक चीज़ अल्लाह के ''कुन फ़यकून'' के कलिमा (आदेश) से पैदा हुई है। इसी तरह उसकी समस्त पैदा की हुई चीज़ों की प्रकृति एवं विशेषताएँ भी लाक्षणिक दृष्टि से कलिमात-ए-रब्बी (अर्थात् अल्लाह के आदेश) ही हैं। क्योंकि वे सारे कलिमे (आदेश) ''कुन फ़यकून'' (की आवाज़) से निकले हैं। इसलिए इन अर्थों की दृष्टि से इस आयत का यही अर्थ हुआ कि समस्त उत्पत्तियों की विशेषताएँ असीमित और अनन्त हैं, और जब हर इक चीज़ और हर इक उत्पत्ति की विशेषताएँ असीमित और अनन्त हैं और हर इक चीज़ असीमित रहस्यों पर आधारित है तो

फिर क़ुर्आन करीम जो ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम (आदेश) है किस तरह केवल इन थोड़े से अर्थों में सीमित होगा जो चालीस-पच्चास या हज़ार जिल्दों की किसी तफ़्सीर में लिखे हों या जितने हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जीवनकाल में बयान किए हों। नहीं, बल्कि ऐसी बात मुँह पर लाना मेरे निकट कुफ़्र के समान है। अगर जानबूझकर उस बात पर अड़ा जाए तो कुफ़्र (अधर्म) होने का डर है। यह सच है कि जो कुछ हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्आन करीम के अर्थ बयान किए हैं वह ठोस और सत्य है, पर यह बिल्कुल सत्य नहीं है कि जो कुछ क़ुर्आन करीम के रहस्य आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाए हैं उनसे अधिक क़ुर्आन करीम में कुछ भी नहीं। हमारे मुख़ालिफ़ों की यह बातें साफ़ बता रही हैं कि वे क़ुर्आन करीम की असीमित महानताओं और विशेषताओं पर ईमान नहीं लाते और उनका यह कहना कि क़ुर्आन करीम ऐसे लोगों के लिए उतरा है जो उम्मी (अनपढ़) थे और भी इस बात को सिद्ध करता है कि वे क़ुर्आन को पहचानने की बुद्धि और विवेक से पूर्णतः रहित हैं। वे नहीं समझते कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल उम्मियों (अनपढ़ों) के लिए ही नहीं भेजे गए बल्कि हर इक महानता और वर्ग के लोग उनकी उम्मत में दाखिल हैं। महाप्रतापी ख़ुदा फ़रमाता है कि

قُلْ يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا

(सूरः अल्-आराफ़ आयत नं. 159)

अनुवाद- हे रसूल तू घोषणा कर दे कि, हे लोगो! मैं निःसन्देह तुम

सब लोगों की ओर अल्लाह का रसूल होकर आया हूँ। (अनुवादक)

अत: इस आयत से पूर्णत: सिद्ध है कि क़ुर्आन करीम हर इक प्रतिभा को पराकाष्ठा तक पहुँचाने के लिए अवतरित हुआ है और आयत :

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

(सूर: अल्-अहज़ाब आयत नं. 41)

में भी इसी की ओर संकेत है। इसलिए यह सोचना कि मानो जो कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्आन करीम के बारे में बयान फ़रमाया उससे बढ़कर कुछ भी सम्भव नहीं, यह खुला-खुला ग़लत है। हम अत्यन्त ठोस और विश्वसनीय तर्कों से सिद्ध कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला के कलाम (अर्थात् क़ुर्आन करीम) के लिए आवश्यक है कि उसके रहस्य असीमित और अद्वितीय भी हों। और यदि यह ऐतराज़ हो कि अगर क़ुर्आन करीम में ऐसे गुप्त रहस्य और विशेषताएँ थीं तो प्राचीन युग के लोगों का क्या दोष था कि उनको इन रहस्यों से वंचित रखा गया, तो इसका उत्तर यह है कि वे पूर्णत: क़ुर्आन के रहस्यों से वंचित नहीं रहे बल्कि ख़ुदा तआला की इच्छानुसार जितने ज्ञान एवं अध्यात्म उनके लिए उचित थे वे उनको प्रदान किए गए और जितने इस युग की आवश्यकताओं के अनुसार इस ज़माने में रहस्य प्रकट होने आवश्यक थे वे इस ज़माने में प्रकट किए गए। लेकिन वे बातें जो ईमान का आधार हैं और जिनके क़ुबूल करने और जानने से एक व्यक्ति मुसलमान कहला सकता है वे हर ज़माने में लगातार प्रकट होती रहीं। मुझे आश्चर्य है कि इन मंदबुद्धि (कमअक़्ल) मौलवियों ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि ख़ुदा तआला पर यह अनिवार्य है कि भविष्य में ख़ुदा तआला की जो कुछ नेअमतें प्रकट हों उनका भूतकाल

(प्राचीनकाल) में भी प्रकटन सिद्ध हो। बल्कि इस बात के स्वीकार किए बिना किसी बुद्धिमान को कुछ बन नहीं पड़ता कि बाद के ज़माने में ख़ुदा की कई नेअमतें ऐसी ज़ाहिर होती हैं कि पहले ज़माने मे उनका कुछ असर और अस्तित्व नहीं पाया जाता। देखो सैकड़ों नए-नए पौधों की अब जितनी विशेषताओं की खोज हुई है या इन्सानों के आराम के लिए जितनी तरह-तरह की चीज़ों और सवारियों और जीवनयापन की सहूलत की वस्तुओं का आविष्कार हुआ है वे पहले कहाँ थीं। और यदि यह कहा जाए कि क़ुर्आन के ऐसे सच्चे और गूढ़ रहस्यों का नमूना कहाँ है जो पहले नहीं बयान किए गए, तो इसका जवाब यह है कि इस किताब के अन्त में जो सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर लिखी है उसके पढ़ने से तुम्हें ज्ञात होगा कि इस प्रकार के सच्चे रहस्य और गूढ़ ज्ञान क़ुर्आन करीम में मौजूद हैं जो हर इक ज़माने में उस ज़माने की आवश्यकताओं के अनुसार हैं।

अन्ततः यह भी याद रहे कि यह क़सीदे और यह तफ़्सीर अपने किसी अहंकार या आत्मश्लाघा के उद्देश्य से नहीं बल्कि इस उद्देश्य से लिखी गई है कि मियाँ बटालवी और उनके हमख़याल लोगों के बारे में न्यायपसन्द लोगों पर यह स्पष्ट हो जाए कि वे अपनी इस हठ में कि यह आजिज़ (विनीत) झूठा और दज्जाल होने के साथ-साथ अरबी साहित्य से बिल्कुल अनभिज्ञ और क़ुर्आन करीम के गूढ़ रहस्य एवं अध्यात्मज्ञानों के बयान करने से रहित है और वे लोग बड़ी उच्चकोटि के आलिम फ़ाज़िल हैं या कितने बड़े झूठे और दीन और दियानत से दूर हैं। यदि मियाँ बटालवी अपने उन बयानों और अनर्गल बातों में दियानतदार और सच्चा है जो उसने इस विनीत के मूर्ख, जाहिल और

झूठा ठहराने के बारे में अपने अख़बार इशाअतुस्सुन्नः में प्रकाशित किए हैं, तो निःसन्देह अब बिना किसी बहस और बहाना के इन क़सीदों और तफ़्सीर की तुलना में अपनी ओर से उसी तरह तफ़्सीर और क़सीदों की संख्या की दृष्टि से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में (अरबी साहित्य में) चार क़सीदे और सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर भी प्रकाशित करे, ताकि हर झूठे का मुँह काला हो जाए। और इसी तरह वे सारे मौलवी जिनके सिर में अहंकार का कीड़ा है और बार-बार ईमान का इज़्हार करने के बावजूद इस विनीत को काफ़िर और मुर्तद (धर्मभ्रष्ट) ख़याल करते हैं और अपने आप को कुछ चीज़ समझते हैं वे भी इस मुक़ाबले के लिए आमंत्रित हैं, चाहे वे दिल्ली में रहते हों जैसा कि शैख़ों के शैख़ मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी या लखूके में रहते हों जैसा कि मियाँ मुहियुद्दीन पुत्र मौलवी मुहम्मद साहिब या लाहौर में रहते हों या किसी अन्य शहर में। अब उनकी शर्म व हया का तक़ाज़ा यही है कि मुक़ाबला करें और एक हज़ार रुपया इनाम लें और उन्हें अधिकार है कि मुक़ाबले में विद्वता दिखलाते समय हमारी ग़लतियाँ निकालें, और हमारी अरबी व्याकरण की जाँच करें और इसी तरह अपनी भी जाँच करावें। लेकिन यह बात बड़ी बेहयाई में दाख़िल है कि हमारे मुक़ाबले पर अपनी विद्वता दिखाए बिना इकतरफ़ा उस्ताद (विद्वान) बन बैठें।

इस जगह यह भी याद रहे कि शैख़ (मुहम्मद हुसैन) बटालवी ने इस विनीत की कुछ अरबी तहरीरों से जितनी ग़लतियाँ निकाली हैं उनसे यदि कुछ सिद्ध होता है तो बस यही कि अब उस शैख़ की ज़िद्द (हठ) और नीचता इस हद तक पहुँच गई है कि सत्य उसकी

नज़र में असत्य और विद्वान उसकी नज़र में मूर्ख दिखाई देता है, मालूम नहीं कि यह मूर्ख शैख़ कहाँ तक अपनी पोल खुलवाना चाहता है और क्या-क्या रुसवाइयाँ इसके नसीब में हैं। कई विद्वान साहित्यकार इसकी यह बातें सुनकर और इसकी इस प्रकार की नुक्ताचीनियों को देखकर इस पर रोते हैं कि यह शैख़ क्यों इतनी घोर मूर्खता के दलदल में फँसा हुआ है। मैंने पहले भी लिख चुका हूँ और अब फिर पाठकों को अवगत करने के लिए लिखता हूँ कि यदि मियाँ बटालवी ने मेरे इन चारों क़सीदों और सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर का मुक़ाबला कर दिखाया और न्यायकों की राय में उनके वे क़सीदे और वह तफ़्सीर अरबी व्याकरण और आलंकारिकता की ग़लतियों से रहित निकली तो मैं अपनी हर इक ग़लती, जो मेरे इन क़सीदों और तफ़्सीर में निकले या मेरी किसी पहली अरबी किताब में निकली हो, के बदले में प्रति ग़लती पाँच रुपया शैख़ बटालवी साहिब को दूँगा। और मैं पाठकों को विश्वास दिलाता हूँ कि शैख़ बटालवी अरबी साहित्य से पूर्णतः रहित हैं। ग़लतियाँ निकालना उन लोगों का काम होता है जो अरब के नए और पुराने साहित्य पर विस्तृत ज्ञान रखते हैं और मुहावरा और मुहावरे के अभाव का उनको ज्ञान हो और अरबों के हज़ारों शैर उनकी निगाह के सामने हों और अनुकरण एवं निष्कर्ष निकालने की महारत उन्हें प्राप्त हो। मगर यह बेचारा शैख़ जिसने उर्दू लिखने में बाल सफेद किया है, अरबी साहित्य और उसकी आलंकारिकता एवं वाग्मिता को क्या जाने। क्या कभी किसी ने देखा या सुना है कि इस महाशय ने अरबी भाषा में कोई दो-चार सौ शैर पिरोकर प्रकाशित किए हों? और मुझे तो बिल्कुल इतनी भी उम्मीद नहीं कि एक अलंकृत और सुबोध्य शैर भी बना

सकता है या एक पंक्ति आलंकारिकता और वाग्मिता की पूरकताओं के साथ अरबी में लिख सकता है, हाँ उर्दू ख़्वान अवश्य है। पाठकगण ध्यानपूर्वक देखें कि इस महाशय की अरबीदानी की हक़ीक़त खोलने के लिए इस विनीत ने इससे पहले अपने इश्तिहार में एक चुनौती दी थी कि उपरोक्त शैख़ (अर्थात् मुहम्मद हुसैन बटालवी) मेरे मुक़ाबले पर बैठकर अरबी भाषा में क़ुर्आन करीम की किसी सूरः की एक अलंकृत और सुबोध्य तफ़्सीर और सौ (100) शैरों पर आधारित एक क़सीदा लिखे। यदि उपरोक्त शैख़ (अर्थात् मुहम्मद हुसैन बटालवी) को अरबीदानी में कुछ महारत होती तो वह अवश्य बड़ी ख़ुशी से मेरे मुक़ाबले पर खड़ा होता और आमने-सामने बैठकर अपनी अरबीदानी की महारत दिखलाता। इसके इशाअतुस्सुन्नः अंक-8 जिल्द 15 को पृष्ठ 190 से 192 तक ध्यान से देखना चाहिए कि किस तरह इसने व्यर्थ शर्तों से अपना पीछा छुड़ाया है। उन पृष्ठों में लिखा है कि इस मुक़ाबला से पहले (आपकी) किताब ''दाफ़िउल वसाविस'' की अरबी इबारत की ग़लतियाँ निकालेंगे और किताब ''फ़तह इस्लाम'' और ''तौज़ीह-ए-मराम'' की कुफ्र एवं इल्हाद (अर्थात् अधर्म एवं नास्तिकता) की बातें पेश करेंगे और उन पच्चासी (85) प्रश्नों का जवाब भी माँगेंगे जो मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी की मौत के बारे में 09 जनवरी सन् 1893 ई. को हम पत्र नं. 20 में लिख चुके हैं और यह भी प्रश्न करेंगे कि क्या तुम ज्योतिष विद्या, रमल विद्या, जफ़र विद्या और सम्मोहन इत्यादि नहीं जानते, और फिर उत्तरों के प्रत्युत्तर का उत्तर पूछा जाएगा, और इसी तरह लगातार प्रत्युत्तर होते जाएँगे, और फिर यह पूछा जाएगा कि आमने-सामने बैठकर अरबी में तफ़्सीर लिखने को अपने मुल्हम और

मुअय्यद (अर्थात् ख़ुदा की ओर से आदेशित और सहायित) होने पर तर्क बतलावें, अर्थात् यह कि अरबीदानी से मुल्हम होना कैसे सिद्ध होगा। और फिर ख़ुदा की ओर से अपने मुल्हम और मुअय्यद (अर्थात् आदेशित और सहायित) होने पर कोई प्रमाण प्रस्तुत करें। जब इन प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो फिर अरबी में तफ़्सीर और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में क़सीदा लिखने का मुक़ाबला किया जाएगा, वर्ना नहीं।

अब हे पाठको! ख़ुदा के लिए स्वयं उल्लेखित इशाअतुस्सुन्नः के उन तीनों पृष्ठों 190, 191 और 192 को ध्यान से पढ़ो और देखो कि, क्या यह जवाब और इस तरह की बहानेबाज़ियाँ ऐसे व्यक्ति की ओर से हो सकती हैं जो वास्तव में अपने आपको अरबीदान और एक विद्वान व्यक्ति समझता हो, और अपने प्रतिद्वन्द्वी को ऐसा मूर्ख समझता हो कि उसके कथनानुसार उसको अरबी व्याकरण का एक सीग़ः (विभक्ति) भी नहीं आता, और ख़ुदा तआला से सहायता भी नहीं पा सकता? हमारे इस आमन्त्रण का कारण तो केवल इतना था कि इस चालबाज़ शैख़ ने अपनी सभाओं, जलसों, लेखों और भाषणों इत्यादि में बार-बार यह कहना शुरू किया था कि यह व्यक्ति (अर्थात् यह विनीत) एक ओर तो इल्हाम के दावे में प्रपंची और महाझूठा है और दूसरी ओर अरबी ज्ञान और अरबी साहित्य एवं इल्मे-तफ़्सीर से इतना बड़ा मूर्ख और अनभिज्ञ है कि सही तौर पर एक सीग़ः भी इसके मुँह से नहीं निकल सकता, और जिन आसमानी निशानों को देखा था उनका तो पहले इन्कार कर चुका था और उनको रमल और जफ़र विद्याएँ कह चुका था। इसलिए ख़ुदा तआला ने इस तरह से भी इस व्यक्ति को रुसवा और शर्मिन्दा करना

चाहा। पूर्णत: स्पष्ट है कि यदि यह व्यक्ति विद्वान और साहित्यकारों में से होता तो इस जगह इन सौ दो सौ (100-200) शर्तों और बहानों की आवश्यकता ही क्या थी। स्पष्टीकरणयोग्य तो केवल इतनी बात थी कि उपरोक्त शैख़ अपने उन बयानों में जो बार-बार प्रकाशित कर चुका है सच्चा है या झूठा, और यह विनीत आमने-सामने बैठकर अलंकृत अरबी में क़सीदा और तफ़्सीर लिखने में शैख़ से कम रहता है या ज़्यादा। कम रहने की दशा में मैंने इक़रार कर लिया था कि मैं अपनी किताबें जला दूँगा और तौबा कर लूँगा। और इस मुक़ाबले के लिए उपरोक्त शैख़ को चालीस (40) दिन का समय भी दिया था, जिसका शैख़ ने अपनी नीचता से यह अर्थ निकाला कि मानो चालीस दिन का समय देने से मेरा यह अभिप्राय था कि उपरोक्त शैख़ चालीस दिन के अन्दर मर जाएगा। हालाँकि स्पष्ट लिखा था कि यह मुक़ाबला चालीस दिन के अन्दर हो, न कि यह कि चालीस दिन के बाद शैख़ इस संसार से कूच कर जाएगा। अब चूँकि शैख़ जी ने इस तरह पर मुक़ाबला करना न चाहा और व्यर्थ बहाने बनाकर बात को टाल दिया। इसलिए हमें अब इस मुक़ाबले के लिए दूसरा पहलू अपनाना पड़ा। और हम ईमानी दूरदर्शिता के आधार पर यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि शैख़ साहिब इस तर्ज़े-मुक़ाबला को कभी स्वीकार नहीं करेंगे और अपनी पुरानी आदत के अनुसार टालने की कोशिश करेंगे। असल बात यह है कि शैख़ साहिब अरबी साहित्य और तफ़्सीर से पूर्णत: अनभिज्ञ हैं और किसी अज्ञात कारण से मौलवी के नाम से मशहूर हो गए हैं। मगर अब शैख़ साहिब के लिए आसान ढंग निकल आया है। क्योंकि इस किताब में केवल शैख़ साहिब ही आमंत्रित नहीं बल्कि वे समस्त काफ़िर ठहराने वाले मौलवी भी आमंत्रित

हैं जो अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तमाम् आदेशों का अनुसरण करने वाले इस विनीत को दायरा-ए-इस्लाम से ख़ारिज समझते हैं। इसलिए अनिवार्य है कि शैख़ साहिब विनम्रतापूर्वक उन मौलवियों के पास जाएँ और उनके आगे हाथ जोड़े और रोएँ और उनके क़दमों पर गिरें, ताकि वे इस नाज़ुक घड़ी में उनकी अरबीदानी की पोल खुलने से उनको बचा लें, कुछ आश्चर्य नहीं कि किसी को उन पर दया आ जाए। हाँ इतना अवश्य है कि अगर हनफ़ी मौलवी के पास जाएँ तो उसको कह दें कि अब मैं हनफ़ी हूँ और यदि शिया के पास जाएँ तो कह दें कि अब मैं अहले बैत वाले शियों में से हूँ। अत: आजकल शैख़ जी का यही ढोंग सुनने को मिलता है। लेकिन मुश्किल यह है कि इस विनीत को शैख़ जी और हर इक काफ़िर-काफ़िर कहने वाले और बुरा चाहने वाले के सन्दर्भ में ख़ुदा की ओर से यह इल्हाम हो चुका है कि:-

इन्नी मुहीनुन् मन् अरादा इहानतका

अनुवाद- मैं उसे शर्मिन्दा और अपमानित करूँगा जो तुझे शर्मिन्दा और अपमानित करने के बारे में सोचेगा। (अनुवादक)

इसलिए शैख़ जी की यह सारी कोशिशें व्यर्थ जाएँगी और यदि कोई मौलवी धृष्टता और चालाकी की राह से शैख़ साहिब की सहायता और समर्थन के लिए उठेगा तो मुँह के बल गिराया जाएगा। ख़ुदा तआला उन अहंकारी मौलवियों का अहंकार तोड़ेगा और उन्हें दिखलाएगा कि वह कैसे ग़रीबों की सहायता करता है और धृष्टों को भड़कती हुई आग में डालता है। धृष्ट कहता है कि मैं अपने छलों और चालाकियों से विजयी हो जाऊँगा और सत्य को अपने षडयन्त्रों

से मिटा दूँगा। और ख़ुदा तआला की क़ुदरत और ताक़त उसे कहती है कि हे धृष्ट ! मेरे सामने और मेरे ख़िलाफ़ षडयन्त्र रचना तुझे किसने सिखाया, क्या तू वही नहीं जो गर्भाशय में एक तुच्छ बूँद था, क्या तुझे ताक़त है कि मेरी बातों को टाल दे।

अन्तत: फिर मैं समस्त लोगों पर प्रकट करता हूँ कि मुझे महाप्रतापी ख़ुदा की क़सम है कि मैं काफ़िर नहीं لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह) पर मेरा ईमान है। और وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (वलाकिर्रसूलुल्लाहे व ख़ातमन्नबीयीन) (सूरह अलअहज़ाब आयत : 41) पर भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में मेरा ईमान है। मैं अपने इस बयान के ठोस और प्रमाणिक होने पर इतनी क़समें खाता हूँ जितने ख़ुदा के पवित्र नाम हैं और जितने क़ुर्आन करीम के शब्द हैं और ख़ुदा तआला के निकट जितनी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानताएँ हैं। कोई अक़ीदा मेरा अल्लाह और रसूल के बयान के विपरीत नहीं, और जो कोई ऐसा सोचता है वह ख़ुद उसकी ग़लतफ़हमी है, और जो व्यक्ति अब भी मुझे काफ़िर समझता है और तक्फ़ीर (काफ़िर-काफ़िर कहने) से बाज़ नहीं आता वह नि:सन्देह याद रखे कि मरने के बाद उससे (इसके बारे में) पूछा जाएगा। मैं महाप्रतापी ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा ख़ुदा और रसूल पर वह ईमान (विश्वास) है कि यदि इस ज़माने के तमाम् ईमानों को तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाए और **मेरा ईमान** दूसरे पलड़े में तो **ख़ुदा के फ़ज़्ल से यही पलड़ा भारी होगा।**

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हे मुसलमानों की जमाअत! आपको मालूम हो कि इस शैख़ (बटालवी) ने बिना किसी ज्ञान एवं समझ-बूझ के मुझे झूठा और काफ़िर प्रचारित और प्रसारित किया और उस प्रचार-प्रसार में हद से बढ़ गया और लगातार मुझे गालियाँ दे रहा है और मुझे उन लोगों में ठहराता है जो नर्क में गिरकर हमेशा रहेंगे और वहाँ से कभी नहीं निकलेंगे। फिर मैंने कहा, हे भटके हुए शैख़! तुझ पर अफ़सोस। क्या तू उस बात के पीछे लग गया है जिसका तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं। अल्लाह जानता है कि मैं मोमिनों में से हूँ। मेरे रब्ब और मेरे प्रियतम् ने मेरी परवरिश और तरबियत की है और मुझे उत्तम शिष्टाचार से विभूषित किया। मुझ पर दया की और मुझे उत्तम स्थान प्रदान किया, और मैं इनाम पाने वाले लोगों में से हूँ। उसके उपकार और एहसान लगातार मुझ पर वर्षा की तरह अवतरित होते रहे, यहाँ तक कि मैं साधारण मनुष्य होने की श्रेणी से बाहर निकल आया और मुझे रूहानी लोगों में दाख़िल कर दिया गया और इसके बाद मेरे रब्ब ने मुझे भूले-भटकों को सन्मार्ग दिखाने हेतु अवतरित किया, ताकि मैं धर्म की सहायता करूँ और शैतानों (दुष्टों) का संहार करूँ। यदि तुझे मेरे विषय में शक है तो मेरा रब्ब बहुत जल्द अपने निशान तुझे दिखला देगा। अत: तू ऐसे धैर्य रखने वालों में से हो जा जो अल्लाह से डरते हैं और जल्दबाज़ मत बन। लेकिन उस (शैख़) ने इन्कार किया और घमण्ड किया और काफ़िर ठहराने वालों का सबसे बड़ा सरदार बनना चाहा। वह केवल काफ़िर ठहराने पर ही नहीं रुका बल्कि मुझे गालियाँ दीं,

लानत डाली और शैतानों में से ठहराया। हालाँकि अल्लाह मेरे और उसके दिल को अच्छी तरह जानता है और वह सबसे बढ़कर हिसाब-किताब रखने वाला है। फिर मैंने उसे मुबाहला के लिए ललकारा, ताकि अल्लाह हमारे बीच निर्णय करे, और वह सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है। लेकिन उसने मुबाहला न किया और भागने में लगा रहा और अन्ततः भाग गया, और उसका यह भागना नेकनीयती से न था बल्कि रुसवाई से बचने के लिए था। हालाँकि यह रुसवाई तो उसे मिलेगी ही, वह चाहे जहाँ भाग जाए। और इससे पहले उसने यह एक बड़ा दावा किया था कि वह अरबी (भाषा का) साहित्यकार है और मैं मूर्ख हूँ। तब मैंने उसे अलंकृत अरबी लेख में मुक़ाबला करने के लिए ललकारा और कहा कि, आओ मैं अरबी गद्य और पद्य में तुम्हारा मुक़ाबला करता हूँ और तुम्हारे हर लेख का जवाब दूँगा और तुम्हारे साथ हर मैदान में निकलूँगा और इन्शाअल्लाह मैं ही विजयी हूँगा। फिर उसने अपने चेले-चाँटों में यह बात फैलाई कि वह इस मैदान में मेरे बराबर का और बहस में मेरे हमपल्ला है। फिर मैं लाइलाज बीमारी की तरह उसके पीछे पड़ गया, ताकि अगर वह सच्चा है तो मेरे मुक़ाबले के लिए मैदान में निकले। लेकिन वह डर गया और उसने इन्कार कर दिया और बहाने बनाने लगा और पीठ फेर ली। झूठा जहाँ से भी आएगा कामयाब न होगा। मेरे रब्ब ने इल्हाम के द्वारा मुझे एक और तरीक़ा बताया ताकि पराजित होने वाला पराजित हो। और वह (तरीक़ा) यह था कि मैंने उन्हीं दिनों कुछ क़सीदे लिखे और उन्हें तीन दिनों बल्कि उससे भी कम समय में महारत के साथ पिरोया और अल्लाह इसका गवाह है और वह गवाहों

में से सबसे बढ़कर है। मैंने उन (क़सीदों) को बड़े सभ्य-शिष्ट मर्मों और सरस-सुन्दर रूपकों से सुशोभित किया है। जिसमें गम्भीरता और ख़ूबसूरती का पूरा ध्यान रखा गया है। और मेरे रब्ब ने मेरा समर्थन किया है। यद्यपि मैं अनपढ़ था लेकिन फिर भी उसने मुझे इन विषयों का ज्ञान दिया। अत: अब उपरोक्त शैख़ पर अनिवार्य है कि वह इसमें मेरा मुक़ाबला करे और इन विषयों के बारे में ऐसा क़सीदा लिखे। जिसमें इन क़सीदों के शैरों (छन्दों) जितनी संख्या भी हो, और इन (क़सीदों) जैसी अलंकृत शैली भी। यदि उसने मेरी यह शर्त पूरी कर दी तो इस शर्त के पूरा करने पर प्रचलित सिक्का एक हज़ार रुपए मेरी ओर से इनाम के रूप में दिया जाएगा और इसी तरह कुफ्र का फ़त्वा देने वाले उलेमा में से हर एक को जो मेरा मुक़ाबला करेगा यह इनाम मिलेगा। इसके अतिरिक्त मैं अल्लाह की बार-बार क़सम खाकर उनके साथ यह वादा करता हूँ कि उनके विजयी होने की दशा में मैं एक किताब लिखूँगा जिसमें मैं इस बात का इक़रार करूँगा कि वह सचमुच अरबी भाषा के साहित्यिक विद्वान हैं और मैं मूर्ख, झूठा और झूठी बातें गढ़ने वाला हूँ। लेकिन इस शर्त का पूरा करना और इस इनाम का देना केवल उसी दशा में मुझ पर अनिवार्य होगा जब (शैरों के) रचने वाले प्रकाण्ड विद्वान और इस कला के धुरन्धर इसका प्रमाण दें और प्रकाण्ड साहित्यकारों में से साहित्यिक गुण-दोष बताने वाले बुद्धिमान पारखी (विजयी होने का) सत्यापन करें। और यदि वे ऐसा न कर पाए और कदापि वे ऐसा न कर सकेंगे, तो जान लो कि वे उलेमा झूठे, जाहिल और सिरफिरे मूर्ख हैं। और यह उस गुमराह करने वाले शैख़ (बटालवी) के ज्ञान की गहराई परखने का आख़िरी

उपाय है। क्योंकि उसने अपने शैतानी हमलों से बहुत ही लोगों को गुमराह किया है और वे अन्धे और काने हो गए हैं और उसके (कोरे) ज्ञान पर निर्भर (भरोसा किए हुए) हैं। इसके बाद मुझे उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें उसके षडयन्त्र से छुटकारा देगा और वह छुटकारा देने वालों में से सबसे बढ़कर है। अब मैं अपना क़सीदा लिखता हूँ और मेरा सामर्थ्य केवल उस अल्लाह से सम्बद्ध है जो मेरा रब्ब है और हर समय मेरा मददगार है और मुझे ज्ञान प्रदान करने वाला है।

पहला क़सीदा

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में

ياقلبي اذكر أحمدا عينَ الهدى مُفنى العدا

1- हे मेरे दिल! अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को याद कर जो हिदायत का स्रोत और शत्रुओं का संहार करने वाला है।

برًّا كريما مُحسنا بحر العطا يا والجَدا

2- नेक, दयालु, उपकारी एवं दान और पुरस्कारों का सागर है।

بدر منير زاهرٌ فى كل وصفٍ حُمِّدا

3- वह चौदहवीं का चमकता हुआ चाँद है, वह हर गुण में प्रशंसा किया गया है।

إحسانه يصبى القلوب وحسنه يروى الصدى

4- उसका एहसान दिलों को मोह लेता है और उसका वैभव प्यास को बुझा देता है।

الظالمون بظلمهم قد كذّبوه تمردًا

5- झूठों ने अपने झूठ के कारण उसे अपनी सरकशी से झुठलाया है।

والحق لا يسَعُ الورى إنكاره لما بدا

6- और सच्चाई ऐसी चीज़ है कि जब वह सुस्पष्ट जाए तो लोग उसका इन्कार नहीं कर सकते।

اطلُبْ نظيرَ كماله فستند مَنّ مُلَدَّدا

7- तू उसकी महानता का उदाहरण ढूँढ़, तू (इसमें) नि:सन्देह आश्चर्यचकित होकर शर्मिन्दा होगा।

ما إن رأينا مثله للنائمين مُسهّدا

8- हमने उसके समान सोए हुओं को जगाने वाला कोई नहीं देखा।

نور من الله الّذى أحى العلومَ تجدُّدا

9- वह अल्लाह का नूर है जिसने तमाम् ज्ञानों को नए सिरे से ज़िन्दा कर दिया।

المصطفٰى والمجتبٰى والمقتدٰى والمجتدٰى

10- वह निष्कलंक है, चुना हुआ है, उसका अनुसरण किया जाता है, उससे उपकार प्राप्त किया जाता है।

جُمِعتْ مرابيع الهدى فى وَبْله حين الندى

11- सख़ावत के समय हिदायत की बारिशें उसकी मूसलाधार बारिश में जमा कर दी गयीं।

نَسِىَ الزمان رِهامَه مِن جَوْدهذا المقتدٰى

12- उस पेशवा की मूसलाधार (सख़ावत की) बारिश के सामने

ज़माना अपनी रुक-रुककर होने वाली छिटपुट बारिश को भूल गया।

اليوم يسعى النِكُسُ أن يُطفى هداه و يُخمِدا

13- आज मूर्ख कोशिश करता है कि उसकी हिदायत के नूर को बुझा दे और ठण्डा कर दे।

واللهُ يبدى نوره يوما و إن طال المَدى

14- और अल्लाह उसके नूर को किसी न किसी दिन चमका देगा, चाहे मुद्दत लम्बी ही हो जाए।

يا قطرَ ساريةٍ وغادٍ قد عُصمتَ من الردَا

15- हे रात को भी और दिन को भी बरसने वाली नूर की बारिश तू नष्ट होने से सुरक्षित कर दी गई है।

ربّيت أشجار الأسِرةِ بالفيوض وقَرْدَدا

16- तूने अपने उपकारों की वर्षा से मैदान पर रहने वालों को भी सींचा है और पहाड़ पर रहने वालों को भी।

إنا وجدناك الملاذ فبعد كهفٍ قد بدا

17- निःसन्देह हमने तुझे अपनी शरणस्थली (पनाह की जगह) पाया है, और ऐसी महान शरणस्थली के बाद जो (मज़्बूती से) ज़ाहिर हो चुकी है।

لا نتّقى قوسَ الخُطوب ولا نبالى مُرجِدا

18- हम मौत के ख़तरों से नहीं डरते, और न हम भयभीत कर देने वाली तलवारों की परवाह करते हैं।

لا نتّقى نوب الزمان ولا نخاف تهدّدا

19- हम ज़माने के डरावों से नहीं डरते, और न ही हम किसी धमकी से भयभीत हैं।

ونـمُـدُّفـى أوقـات آفاتٍ إلـى الـمـولـى يـدا

20- और हम मुसीबतों के समय अपने मौला (ख़ुदा) की ओर हाथ फैलाते हैं।

كـم مـن منـازعـة جرتْ بـيـنـى و أقـوام الـعِـدا

21- मेरे और दुश्मनों की क़ौमों के मध्य बहुत से मुक़ाबले हुए।

حـتى انـثـنـيتُ مظـفَّـرا ومـوقَّـرا ومـؤيَّـدا

22- यहाँ तक कि मैं सफल, सहायित और विजयी होकर लौटा।

يـا أيـهـا الـنـاس اتـقـوا يـومـا يـشـيِّـبُ ثَـوْهَدا

23- हे लोगो! उस दिन से डरो जो जवाँ मर्द इन्सान को (भी) बूढ़ा कर देगा।

آلامُـه مـا تـنـقـضـى وأسـيـره مـا يُـفـتـدَى

24- उस दिन के दु:ख दूर नहीं होंगे और उस दिन के क़ैदी को फ़िदिया (मुआवजा) देकर छुड़ाया न जा सकेगा।

واللهِ إنـى مـا ضـلـلْتُ ومـا عـدلـتُ عن الهدى

25- अल्लाह की क़सम! नि:सन्देह न मैं गुमराह (पथभ्रष्ट) हुआ और न ही मैं सन्मार्ग से भटका हुआ हूँ।

لـكـنـى مُـذْ لـم أزل مـمـن إذا هُـدِىَ اهـتـدٰى

26- जब से मैं पैदा हुआ, उन लोगों में से हूँ कि जब वे राह दिखाए जाएँ तो राह पा जाएँ।

للهِ حـمـدٌ ثـم حـمـد قـد عـرفـنـا الـمقتدٰى

27- अल्लाह की बार-बार स्तुति है कि हमने अपने पेशवा को पहचान लिया।

كادت تُعقِّيني ضلالاتٌ فأدركني الهدٰى

28- क़रीब था कि आडम्बर मुझे मिटा देते, पर हिदायत को मैंने पा लिया।

يا صاحِ إن الله قد أعطى لنا هذا جَدا

29- हे मित्र! नि:सन्देह अल्लाह तआला ने हमें यह नेमत प्रदान की है।

هو ليلة القدر التى تُعطى نعيمًا مُخْلَدا

30- यह (वह) ऐसी लैलतुलक़द्र (काली अँधियारी रात) की सुबह है जो शाश्वत् ज़िन्दा रहने की नेमत प्रदान करती है।

أتجول فى حَوْمات نفسك تاركا سنن الهدٰى

31- क्या तू (हे मुख़ातिब)! अपने स्वार्थ के मैदानों में हिदायत (सन्मार्ग) के रास्तों को छोड़कर घूम रहा है?

هلا انتهجتَ محجة الاحياءِ يا صيدَ الردا

32- हे मौत के शिकार! तू ज़िन्दों के आदर्श पर क्यों नहीं चला?

يا مَن غدا للمؤمنين أشدَّ بغضا كالعدا

33- हे वह व्यक्ति जो मोमिनों के लिए दुश्मनों की भाँति घोर ईर्ष्या-द्वेष रखने वाला हो गया है!

اخترتَ لذّةَ هذه ونسيتَ ما يُعطى غدا

34- तूने (आज) विलासिता को (पूरी तरह) अपना लिया है, और जो कल मिलेगा उसे (पूरी तरह) भुला दिया है।

يا خاطِبَ الدنيا الدنيّة قد هلكتْ تجَلُّدا

35- हे सांसारिकता के इच्छुक! तू गुनाहों पर दिलेरी के कारण

तबाह हो गया है।

عاديتَ أهلَ ولايةٍ وقفوتَ آثارَ العدا

36- तूने (अल्लाह से) दोस्ती करने वालों से दुश्मनी की, और दुश्मनों के पगचिन्हों पर चला है।

اليوم تُكفِرني وتحسبني شقيًّا ملحِدا

37- आज तू मुझे काफ़िर (अधर्मी) कहता है और मुझे अभागा और अधर्मी समझता है।

وترى بوقت بعده في زيّ احمد احمدا

38- और इसके बाद तू किसी समय अहमद को अहमद के रूप में देख लेगा।

يا مَن تَظنّى الماءَ مِن حمقٍ سرابا واعتدٰى

39- हे वह व्यक्ति जिसने मूर्खता से शराब को पानी समझा और हद से बढ़ गया!

السَّبْرُ سهلٌ هيِّنٌ إن كان فهمٌ أو صدا

40- यदि विवेक या जिज्ञासा मौजूद हो तो परीक्षा सरल और आसान हो जाती है।

واللهِ لو كُشِفَ الغطاء وجدتَني عينَ الهدٰى

41- अल्लाह की क़सम! यदि पर्दा हटा दिया जाता, तो तू मुझे हिदायत का स्रोत पाता।

ونُظِمتَ في سلكِ الرفاق وجئتَني مسترشدا

42- और तू मेरे मित्रों की लड़ी में पिरो दिया जाता और मेरे पास हिदायत का इच्छुक बनकर आता।

दूसरा क़सीदा

أيا محسنى أُثنى عليك وأشكرُ فدًى لك روحى أنت تُرسى ومأزَرُ

1- हे मुझ पर उपकार करने वाले ख़ुदा! मैं तेरी स्तुति और शुक्र करता हूँ। मेरी रूह तूझ पर क़ुर्बान है। तू मेरी शक्ति और कवच है।

بفضلك إنا قد غلبنا على العِدا ى بنصرك قد كُسِرَ الصليب المبطّرُ

2- तेरी कृपा से हमने दुश्मनों पर विजय पाई है और तेरी सहायता से ही इतराने वाली सलीब तोड़ दी गई है।

فتحتَ لنا فتحا مبينا تفضُّلا بفوجٍ إذا جائُوا فزَهق التنصُّرُ

3- तूने अपनी कृपा से हमें ऐसी फ़ौज देकर खुली-खुली विजय प्रदान की है कि जब उसके योद्धा पहुँचे तो ईसाइयत भाग निकली।

قتلتَ خنازير النصارى بصارمٍ وأردى عِدانا فضلُك المتكَثِّرُ

4- तूने ईसाइयों के ख़िन्ज़ीरों (अर्थात् सूअरों जैसी प्रवृत्ति रखने वालों) को (दलाइल की) तेज़ तलवार से मार डाला, और तेरी महान कृपा ने हमारे दुश्मनों को धूल चटा दिया।

بوجهك ما أنسى عطاياك بعده وفى كل نادٍ نبأُ فضلِك أذكُرُ

5- तेरी हस्ती की क़सम! इसके बाद मैं तेरे उपकारों को न भूलूँगा, और हर सभा में तेरी कृपा की महान भविष्यवाणी का वर्णन करता रहूँगा।

تلبّيك روحى دائما كلَّ ساعة وإنك مهما تَحْشُرِ القلبَ يَحْضُرُ

6- मेरी रूह हर समय तेरे हुक्म (आदेश) पर राज़ी रहती है, और तू जब भी मेरे दिल को बुलाता है वह हाज़िर हो जाता है।

وتعصمنى فى كل حرب تَرَحُّمًا فدًى لك روحى أنتَ دِرعى ومِغْفَرُ

7- और तू दया करके मुझे हर युद्ध में बचा लेता है, मेरी रूह तुझ पर न्योछावर है, तू ही मेरी ढाल और सिर का कवच है।

ينوّر ضوء الشمس وجهَ خلايقٍ ولكن جنانى من سناك يُنوَّرُ

8- सूरज की रौशनी तो लोगों के चेहरे को रौशन करती है, लेकिन मेरा दिल तेरे नूर से रौशन होता है।

تحيط بكُنْهِ الكائنات وسِرِّها وتعلم ما هو مستبانٌ ومُضمَرُ

9- सृष्टि का सार और उसके भेद तेरे क़ब्ज़े में हैं और जो व्यक्त है और जो (दिल में) छुपा है तू उसे अच्छी तरह जानता है।

ونحن عبادك يا إلٰهى وملجأى نخِرُّ أمامك خشيةً ونكبِّرُ

10- हे मेरे ख़ुदा और मेरी पनाह! हम तेरे बन्दे हैं, हम डर से तेरे आगे सिज्दा करते हैं और तेरी महानता का गुणगान करते हैं।

نَصَرتَ لإفحام النصارى قريحتى وهدَّمتَ ما يُعلى الخصيمُ ويعمُرُ

11- तूने मेरी रूह को ईसाइयों का मुँह बन्द करने के लिए मदद दी है और तूने उस महल को जो दुश्मन ऊँचा करता है गिरा दिया है।

وأخذتَهم وكسرتَ دَأْيًا مُنَضَّدًا وأتممتَ وعدكَ فى صليب يُكَسَّرُ

12- तूने उनको पकड़ लिया और सीने की पसलियों को क्रमश: एक-एक करके तोड़ डाला और इस तरह सलीब के बारे में अपने वादे को कि वह तोड़ दी जाएगी, पूरा कर दिया।

فسبحان مَن بارا لنصرة دينه وأخزى النصارى فضلُه المتكَثِّر

13- अत: पवित्र है वह हस्ती जिसने अपने दीन (धर्म) की मदद के लिए मुक़ाबला किया और उसकी असीम सहायता ने ईसाइयों को शर्मिन्दा कर दिया।

سقانی من الاسرار کأسًا رَوِیَّةً وإن کنتُ مِن قبل الهدی لا أعثُرُ

14- उसने मुझे (अपने) रहस्यों का दिल भरकर प्याला पिलाया, यद्यपि मैं इस रहनुमाई से पहले (उनको) न जानता था।

غیورٌ یبید المجرمین بسخطه غفورٌ ینجّی التائبین ویغفرُ

15- वह अत्यन्त स्वाभिमानी है अपने प्रकोप से दुष्टों का संहार करता है, और अत्यन्त क्षमा करने वाला भी है तौबा करने वालों को क्षमा कर देता है और मुक्ति देता है।

وحید فرید لا شریك لذاته قویٌّ علیٌّ مستعان مُقدِّرُ

16- वह अपने आप में एकांकी और अद्वय है, उसका कोई साझीदार नहीं, वह सर्वशक्तिमान है, अत्यन्त प्रतिष्ठित है, भाग्यविधाता है, उसी से सहायता माँगी जाती है।

له الملك والملکوت والمجد کله وکلٌّ له ما بان فینا ویظهَرُ

17- समस्त साम्राज्य, शासन और गौरव उसी का है, और जो हम में ज़ाहिर हुआ और जो होगा, वह सब उसी का है।

ودودٌ یحبّ الطائعین ترحّمًا ملیكٌ فیُزعِج ذا شِقاق ویحصِرُ

18- वह अत्यन्त प्रेम करने वाला है, आज्ञापालकों से प्रेम और हमदर्दी करता है। वह बादशाह है, अपने विरोधी को बेचैन कर देता है और अपने प्रकोप के घेरे में ले लेता है।

یحیط بکید الکائدین بعلمه فیهلك من هو فاسق ومزوِّرُ

19- वह अपने ज्ञान से षडयन्त्रकारियों के षडयन्त्र को जान लेता है, फिर वह उस व्यक्ति को जो दुराचारी और धोखेबाज़ हो नष्ट कर देता है।

ولم یتخذ ولدًا ولا کفوٌ لهُ وحید فرید ما دناه التکَثُّرُ

20- न उसने किसी को बेटा बनाया है और न उसका कोई हमतुल्य है, वह एकांकी और अद्वय है। द्वयता या अधिकता उसके निकट नहीं आती।

ومن قال إن له إلٰـهًا قادرا سواه فقد نادى الرّدى ويُدمَّرُ

21- और जो व्यक्ति यह कहे कि उसके अतिरिक्त उसका एक और सामर्थ्यवान् ख़ुदा है, तो उसने तबाही को पुकारा और वह बर्बाद किया जाएगा।

وبشّرنى قبل الجدال بلُطفهٖ فقال لك البشرى وأنت المظفَّرُ

22- और मुक़ाबले से पहले ही उसने अपनी कृपा से मुझे शुभसूचना दे दी और कहा, तुझे ख़ुशख़बरी हो कि तू ही विजय पाने वाला है।

ففاضتْ دموع العين منى تذللا وقصدتُ عَنْبَرْسَر وقَطْرِىَ يَمْطُرُ

23- तब मेरी आँखों से (उसकी) शुक्रगुज़ारी के आँसू जारी हो गए और मैं उस हालत में अमृतसर के लिए कूच किया कि मेरी आँखों से आँसुओं की झड़ी बह रही थी।

فجئتُ النصارى فى مقام جلوسهم فتخيَّروا منهم خصيما وأنظُرُ

24- फिर मैं ईसाइयों के पास उनकी जलसागाह में पहुँच गया और देखा कि उन्होंने अपनों में से एक मुक़ाबला (बहस) करने वाले को चुना है।

وظلَّ النصارى ينصرون وكيلَهم وكُلٌّ تسلَّحَ صائلا لو يقدِرُ

25- और ईसाई अपने चयनित (प्रतिनिधि) को सहायता देने लगे। यदि उनका वश चलता तो हर व्यक्ति हथियारों से लैस हो जाता।

رأيتُ مُبارزهم كذئب بظُلمه يصول على سُبُل الهدى ويزوِّرُ

26- मैंने उनकी ओर से मुक़ाबला (बहस) करने वाले को उसके अन्याय और अत्याचार के कारण भेड़िए की तरह पाया, जो सन्मार्ग की राहों पर हमला करता था और छल से काम ले रहा था।

فخاصَمَ ظلما فی ابن مریم واجترٰی علی اللّٰہ فیما کان یھذی و یھجُرُ

27- उसने इब्नि मरियम के बारे में अन्यायपूर्ण बहस की और अपनी व्यर्थ और अनर्गल बातों से अल्लाह की बातों के ख़िलाफ़ दुस्साहस कर रहा था।

وقال لہ ولدُ مسیحُ ابن مریم فسبحان ربّ العرش عمّا تصوروا

28- उसने कहा कि मसीह इब्नि मरियम ख़ुदा का बेटा है। हालाँकि धरती और आसमान का रब्ब तो उस दोष से रहित है जो उन्होंने सोचा।

وقال بأن اللّٰہ اسم ثلاثۃ أبٌ وابنہ حقًّا ورُوحٌ مطھَّرُ

29- और उसने कहा कि अल्लाह तीन शख़्सियतों (व्यक्तिगत अस्तित्वों) का नाम है। अर्थात् बाप, उसका असली बेटा और रूहुलक़ुदुस का।

فقلتُ لہ اخْسَأْ لیس عیسٰی بخالق وخالقُنا الرب الوحید الاکبرُ

30- मैंने उससे कहा, (तुझ पर) लानत। ईसा हरगिज़ स्रष्टा नहीं, हमारा स्रष्टा तो एकांकी और अद्वय रब्ब है जो सबसे महान है।

أتُثبتُ فی مُلک لہ مِن بریَّۃٍ من الارض أو ھو فی السماء مُدبِّرُ

31- क्या तू सिद्ध कर सकता है कि उस ईसा के वश में धरती की कोई सृष्टि है? या वह आसमान में कोई कुशल नियन्ता (प्रबन्धक) है?

وإن علی معبودک الموتَ قد أتٰی وإلٰھنا حیٌّ ویبقٰی ویَعْمَرُ

32- नि:सन्देह तेरा (वह झूठा) ख़ुदा मृत्यु पा चुका है और हमारा ख़ुदा ज़िन्दा है और अजर और अमर है।

وليس لمستغنٍ إلى الابن حاجةٌ وحاشاه ما الاولاد شيئًا يوقِّرُ

33- उस निस्पृह हस्ती को पुत्र की कोई आवश्यकता नहीं है, वह इससे रहित है। सन्तान कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे इतनी महानता दी जाए।

أعيسى الذى لا يعلم الغيب ذرة إلٰه وتعلَم أنه لا يَقْدِرُ

34- क्या ईसा जिसे कणमात्र भी ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान नहीं, ख़ुदा हो सकता है? और तू जानता है कि उसे कुछ सामर्थ्य नहीं।

فأثنى على إبليس بالعلم والهدى وقال هو الشيخ الذى لا يُنكَّرُ

35- फिर मुबाहसा करने वाले ने ज्ञान एवं सन्मार्ग में इब्लीस (शैतान) की प्रशंसा की और कहा कि वह इतनी बड़ी हस्ती है कि उसका इन्कार नहीं किया जा सकता।

ويؤمن بالابن الوحيد تيقُّنًا ومذهبه مثل النصارى تنَصُّرُ

36- और (कहा कि) उस शैतान का (ख़ुदा के) इकलौते बेटे पर पूरी दृढ़ता से ईमान है और उसका मज़हब भी ईसाइयों की तरह ईसाइयत ही है।

فقلتُ له يا أيها الضال مِن هوىٰ أتُثنى على غولٍ يُضِلّ ويُدخِرُ

37- मैंने उसको जवाब दिया कि हे स्वार्थपरायणताओं के कारण (सन्मार्ग से) भटके हुए व्यक्ति! क्या तू एक छलावा करने वाले की प्रशंसा करता है जो (सन्मार्ग से) भटकाता और रुसवा करता है।

وما كان حامِدَه بصيرٌ قبلكم ولكنكم عُمْىٌ فكيف التبصُّرُ

38- इससे पहले कोई (भी) बुद्धि और विवेक रखने उसकी

प्रशंसा करने वाला नहीं हुआ। तुम तो अन्धे हो, कैसे देख सकते हो

فما تاب من هذيانه وضلالهِ و كان كدجّال يُداجى ويمكُرُ

39- फिर उस मुबाहसा करने वाले ने अपनी मूर्खता और अनर्गल बकना न छोड़ा और दज्जाल की तरह दुश्मनी को छुपाता रहा और छल से काम लेता रहा।

و كم من خرافات و كم من مَفاسدٍ تقوَّلَ خبثًا ذلك المتنصّرُ

40- और उस ईसाई ने अपनी धृष्टता से बहुत सी ख़ुराफ़ात और फ़ित्ना भरी बातें रचकर बयान कीं।

وقال لى إن الله خَلْقٌ وخالقٌ ومسيحُنا عبدٌ وربٌّ أكبرُ

41- उसने मुझे कहा कि अल्लाह सृष्टि भी है और स्रष्टा भी, और हमारा मसीह इन्सान भी है और सबसे बड़ा रब्ब (पालनहार) भी।

فقلتُ له يا تارك العقل والنهٰى إلٰه وعبدٌ ذاك شيئٌ منكَرُ

42- इस पर मैंने उससे कहा, हे बुद्धि और विवेक से काम न लेने वाले! क्या वह ख़ुदा भी है और इन्सान भी? यह तो बुद्धि और विवेक से परे बात है।

إذا قلّ دين المرء قلّ قياسه ومن يؤمنَنْ يُرشده عقلٌ مطهَّرُ

43- जब इन्सान के विश्वास में कमी आ जाए तो उसकी अन्दाज़-ए-सोच में भी कमी आ जाती है, और जो पक्का मोमिन हो तो सद्बुद्धि उसका मार्गदर्शन करती है।

وإنى أرى فى خبطِ عشوىٰ عقولَكم تقولون ما لا يفهم المتفكّرُ

44- और मैं तुम्हारी अक़्लों (बुद्धि) को अन्धी ऊँटनी की तरह भटकता हुआ पाता हूँ। तुम ऐसी बातें कहते हो जिन्हें अक़्ल (बुद्धि) समझ नहीं सकती।

وإنى أراكم فى ظلام دائم وما فى يديكم من دليل يُنوِّرُ

45- मैं तुम्हें घोर अन्धकार में पाता हूँ, तुम्हारे हाथों में कोई भी रौशनी देने वाली दलील नहीं।

و إن هو إلّا بدعة غير ثابت و إثباته مستنكَرٌ متعذِّرُ

46- यह तो केवल एक मनगढ़त विचार है जो प्रमाणसिद्ध नहीं, और इसका सिद्ध करना नामुमकिन और असम्भव है।

أتعرف فى الصحف القديمة مثله وقد جاء هدىٌ بعد هدىٌ ومنذِرُ

47- क्या तू पुरानी आसमानी पुस्तकों में इसकी तरह कोई अक़ीदा पाता है? जबकि एक हिदायत के बाद दूसरी हिदायत आती रही।

أناجيل عيسى قد عفتْ آثارها وحرّفها قوم خبيث مُعَيّرُ

48- ईसा की इन्जीलों के निशानात मिट गए हैं और उन्हें एक अन्त:मलिन (दुष्ट) और धूर्त क़ौम ने अक्षरांतरित और परिवर्तित कर दिया है।

نبذتم هدايته وراء ظهوركم وهذا من الشيطانِ هدىٌ آخرُ

49- तुमने ईसा की शिक्षा को तो अपनी पीठों के पीछे फेंक दिया है, और यह दूसरा मज़हब (धर्म) शैतान की ओर से है।

أقمتم جلال الله فى رُوحِ عاجزٍ وهيهات لا والله بل هو أحقَرُ

50- तुमने अल्लाह के तेज को एक असहाय व्यक्ति की रूह में क़ैद समझ रखा है। नहीं, (ऐसा कदापि सम्भव नहीं)। अल्लाह की क़सम! यह बात यथार्थता से दूर है। बल्कि वह (अर्थात् ईसा) तो एक असहाय व्यक्ति है।

فقير ضعيف كالعبادِ وميّتٌ نعَمْ من عبادِ الله عبدٌ مُعزَّرُ

51- वह ज़रूरतमन्द लोगों की तरह कमज़ोर (और मुहताज) है और वह मर चुका है। हाँ वह ख़ुदा के भक्तों में से एक प्रतिष्ठित भक्त है।

وإن شاء رَبّی یُبْدِ ألفًا نظیرَہٗ   وأرسلنی رَبّی مثیلا فتنظُرُ

52- और यदि मेरा रब्ब चाहे तो उस जैसे हज़ारों पैदा कर सकता है। और मेरे रब्ब ने मुझे (उसका) समरूप बनाकर भेज दिया है जिसे तू देख रहा है।

وقد اصطفانی مثل عیسی ابن مریم   فطوبیٰ لمن یَأتینِ صدقًا و یُبْصرُ

53- और उसने मुझे ईसा इब्नि मरियम की तरह चुन लिया है। अतः उसके लिए हर्ष है जो मेरे पास सत्यनिष्ठ बनकर आए और देखे।

أنبیُّنا مَیّتٌ وعیسٰی لم یَمُت   أَجَزْتم حدودًا یا بنی الغول فاحذروا

54- क्या हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) देहान्त पा गए और ईसा (अभी तक) ज़िन्दा हैं? हे छलावे की औलाद! तुम हद से बढ़ गए हो, (ख़ुदा से) डरो।

تُوفِّیَ عیسٰی ھٰکذا قال ربّنا   فلا تهلکوا متجلدین وفکِّروا

55- ईसा (अलैहिस्सलाम) देहान्त पा गये हैं, मेरे रब्ब ने इसी तरह फ़रमाया है। अतः तुम दुस्साहस करते हुए तबाही में न पड़ो और बुद्धि और विवेक से काम लो।

أتتخذ العبد الضعیف مهیمنًا   أتعبد میتًا أیها المتنصّرُ

56- हे ईसाई बनने वाले! क्या तू एक असहाय व्यक्ति को सारी सृष्टि का निगरान (निरीक्षक) बना रहा है और एक मुर्दे की पूजा कर रहा है?

ألا إنّه عبد ضعيف كمثلنا فلا تَتَّبِعْ يا صاحِ قومًا خُسِّروا

57- सुन, कि वह हमारी तरह ही एक असहाय इन्सान है। इसलिए हे मित्र! तू उन लोगों के पीछे मत चल जो नुकसान उठा चुके हैं।

ووالله يأتي وقت تصديق كلمتي ويبدي لك الرحمن ما كنت تُضمِرُ

58- और ख़ुदा की क़सम! मेरी बातों के सत्यापन का समय आ जाएगा और रहमान ख़ुदा तुझ पर खोल देगा जो तू दिल में छुपा रहा था।

فلا تسمعَنْ مِن بعد ذيبًا وعقربًا يصول بوثبٍ أو تدِبّ وتَأْبِرُ

59- फिर तू इसके बाद किसी भेड़िए के बारे में नहीं सुनेगा कि वह उछल-उछलकर हमला करता है, और इसी तरह बिच्छू के बारे में भी, जो रेंगता है और डंक मार देता है।

مقامي رفيع فوق فكرِ مفكِّر وقولي عميق لا يليه المُصَعِّرُ

60- मेरा स्थान सोचने वाले की सोच से बहुत ऊँचा है और मेरी बात बहुत गहरी है, अहंकार से मुँह मोड़ने वाला उस यथार्थ तक नहीं पहुँच सकता।

إذا قلّ علم المرء قلّ اعتقاده وما يمدَحَنْ حُسْنًا ضريرٌ معذَّرُ

61- जब मनुष्य का ज्ञान थोड़ा हो तो उसका ईमान (विश्वास) भी कमज़ोर होता है, और एक घोर अन्धमूर्ख अच्छाई की कैसे प्रशंसा कर सकता है?

ألا رُبَّ مجد قد يُرى مثل ذلّة إذا ما تعالى شأنه المُتَسَتِّرُ

62- सुनो, कि बहुत सी प्रतिष्ठाएँ अपमान की तरह दिखाई देती हैं जबकि वस्तुत: उनकी छुपी हुई महानता (सोच से कहीं) बढ़कर

होती है।

ألم تعلمَنْ أَنِّى جَرِئٌ مبارزٌ　　وإن كنت فى شكٍ فبارِزْ فنحضُرُ

63- क्या तू नहीं जानता कि मैं एक बहादुर योद्धा हूँ, और यदि तुझे शक हो तो मुक़ाबले के लिए निकल मैं हाज़िर हूँ।

وبارزتُ أحزاب النصارى كضيغم　　بأيدى وفى اليمنى حُسامٌ مشهَّرُ

64- मैंने ईसाइयत की फ़ौजों से शेर की तरह मुक़ाबला किया, हालाँकि मेरे दाएँ हाथ में सोंती हुई (नंगी) तलवार भी थी।

وما زلتُ أرميهم برُمحٍ مُذَرَّبٍ　　إلى أن أبان الحقُ والحقُ أظهَرُ

65- और मैं उन पर प्रचंड तीर भी बरसाता रहा। यहाँ तक कि सत्य स्पष्ट हो गया, और सत्य ही विजयी होने वाला है।

وإنا إذا قمنا لصيدِ أوابدٍ　　فلا الظبى متروك ولا العَيْرُ يُنظَرُ

66- और जब हम वहशियों का शिकार करने निकलते हैं तो न हिरन छोड़ते हैं और न नीलगाय।

وقتل خنازير البرارى وخَرْشُهم　　أَشاشٌ لقلبى بل مرام أكبرُ

67- और सूअरों का क़त्ल करना और उन्हें ज़ख़्मी करना मेरा हार्दिक आनन्द ही नहीं, बल्कि सबसे बड़ा उद्देश्य है।

وفى مُهجتى جيشٌ وأزعم أنه　　يكافئ جيشَ القِدْرِ أو هو أكثر

68- मेरे दिल में एक जोश है और मैं समझता हूँ कि वह हाण्डी के उबाल के बराबर है या उससे भी बढ़कर।

إذا ما تَكلّمنا وبارَى مخاصمى　　ولاحت براهينى كنارٍ تزهَرُ

69- और जब हमने बातचीत शुरू की और मेरे प्रतिद्वन्द्वी ने मुक़ाबला किया तो मेरे प्रमाण (दलाइल) आग की लपटों की तरह भड़क उठे।

فاوجس مبهوتا وأيقنتُ أنّنى نُصرتُ وأيّدنى قديرٌ مظفِّرُ

70- इस पर वह स्तब्ध रह गया और मुझे विश्वास हो गया कि मैं विजयी हो गया, और सामर्थ्यवान् एवं विजय देने वाले (ख़ुदा) ने मेरी सहायता की।

وأدركتُه فى حمئةٍ فدعوتُه إلى مشربٍ صافٍ وماء يُطهّرُ

71- मैंने उसे दलदल में पाया तो उसे एक साफ़ घाट की तरफ और ऐसे पानी की ओर बुलाया जो पवित्र करता है।

فردَّعلىّ بباطلات من الهوى ووالله كان كذى ضلال يزوِّرُ

72- तो उसने (मेरे आमन्त्रण को) स्वार्थपरायणता और कपोल-कल्पित बातों से ठुकरा दिया, और ख़ुदा की क़सम! वह एक धोखेबाज़ की तरह छल और धोखा कर रहा था।

وقال لعيسٰى حصّةٌ فى التألُّهِ وفى هذه سِرٌّ على العقل يعسُرُ

73- और उसने कहा कि ईसा का (भी) ख़ुदाई में एक हिस्सा है और इस बात में एक ऐसा भेद है जिसे अक़्ल भी नहीं समझ सकती।

وإن ابن مريم مَظهرٌ لاب له فنحسبه ربًّا كما هو يُظهِرُ

74- और कहा, इब्नि मरियम (अर्थात् ईसा) अपने बाप (ख़ुदा) का द्योतक है और हम उसे रब्ब समझते हैं। जैसा कि वह (ख़ुद) कहता है।

فقلتُ له هذا اختلاق و فِريةٌ وما جاء فى الإنجيل ما أنت تذكرُ

75- तो मैंने उससे कहा कि यह मनगढ़त और झूठ है। इन्जील में वह बात नहीं (बयान की गई) है, जो तू बयान करता है।

وإن إلٰهك مات واللهُ سرمدٌ قديم فلا يفنى ولا يتغيرُ

76- नि:सन्देह तेरा माबूद (उपास्य) मर चुका है और अल्लाह

हमेशा से है और हमेशा रहेगा, न उसे मौत आएगी और न उसमें कोई परिवर्तन।

وما لا يُحَدُّ فكيف حُدِّد كالورى ووجه المهيمن مِن مَجالى مُطهَّرُ

77- जो असीम है वह सृष्टि की तरह कैसे सीमित हो गया, निगरान (नियंता और निरीक्षक) ख़ुदा की हस्ती छल और धोखों से रहित है।

وليس تُقاس صفاته بصفاتنا ولا يدركه بصر ولا مَن يُبصِرُ

78- उस (ख़ुदा) की महानताओं को हमारी महानताओं पर कल्पित नहीं किया जा सकता, आँख उस तक नहीं पहुँच सकती और न ही कोई देखने वाला।

تعالتْ شؤون الله عن مبلغ النهٰى فكيف يصوِّر كُنْهَه متفكِّرُ

79- उसकी विशेषताएँ बुद्धि और विवेक की पहुँच से बहुत दूर हैं। फिर कोई सोचने वाला उसकी जड़ तक कैसे पहुँच सकता है?

وإن عقيدتكم خيال باطل وما فى يديكم مِن دليل يوفَّرُ

80- नि:सन्देह तुम्हारा अक़ीदा एक झूठी और मनगढ़त सोच है, और तुम्हारे हाथों में कोई पर्याप्त प्रमाण (दलील) मौजूद नहीं।

وللخَلق خلّاقٌ فتَدَعون ذكرَه وتَدْعون مخلوقا ولم تتفكروا

81- सृष्टि का एक ही स्रष्टा है। उसके सुमिरन को तो तुम छोड़ते हो और सृष्टि की पूजा करते हो, और तुमने कुछ सोचा नहीं।

ومن ذاق من طعم المنايا بقولكم فكيف كَحَيٍّ سرمدٍ يُتصوَّرُ

82- जिसने तुम्हारे कथनानुसार मौत का मज़ा चख लिया वह उस हमेशा ज़िन्दा रहने वाली हस्ती की तरह कैसे समझा जा सकता है?

وقد نوَّر الفرقانُ خَلْقا بنوره ولٰكنّكم عُمى فكيف أُبَصِّرُ

83- और फ़ुर्क़ान (क़ुर्आन मजीद) ने अपनी (शिक्षा की) रौशनी से लोगों (के दिलोदिमाग़) को रौशन कर दिया है। लेकिन तुम तो अपनी आँखें बन्द किए बैठे हो, फिर मैं तुम्हें किस तरह (सन्मार्ग) दिखा सकता हूँ।

ألا إنّه قد جاء عند مفاسدٍ إذا ما انتهى الليلاء فالصبح يجشرُ

84- सुनो, कि क़ुर्आन घोर अन्धकार के समय आया है, और काली अँधियारी रात जब ख़त्म हो जाती है तो रौशनी की किरण प्रकट हो जाती है।

ترٰى صورةُ الرحمن فى خِدْرِ سُوَرِه فهل من بصير بالتدبر ينظُرُ

85- इस क़ुर्आन की सूरतों (पाठों) के पर्दे में रहमान ख़ुदा का चेहरा दिखाई देता है। क्या कोई देखने वाला है जो समझने की नज़र से देखे?

تراءا لنا الحق المبين بقوله وآياته دُرَرٌ ومِسكٌ أَذْفَرُ

86- हमें उस (ख़ुदा) के कथन (क़ुर्आन) से खुली-खुली सच्चाई दिखाई दे रही है, और उसकी बातें चमकती हुई मोती और महकती हुई कस्तूरी हैं।

قُلِ الآن هل فى كتبكم مثل نوره وفكِّرْ ولا تعجل ونحن نُذكِّرُ

87- अब बताओ! कि क्या तुम्हारी किताबों में इस जैसी दीप्ति (चमक) मौजूद है? (ठण्डे दिमाग़ से) सोच और (मुख़ालिफ़त में) जल्दी मत कर, हम तुम्हें समझा रहे हैं।

وإن كنتَ تزعم أن فيها دلائلا فجهلك جهلٌ بيّن ليس يُستَرُ

88- यदि तू यह समझता है कि इन (अक्षरान्तरित इन्जीलों) में प्रमाण (दलाइल) मौजूद हैं तो तेरी नादानी एक खुली-खुली मूर्खता है

जो छुपी नहीं रह सकती।

وإن قلتَ آمنّا بما لا نعقل فهٰذا الهدٰى عند النهى مستنكَرُ

89- और यदि तू कहे कि हम तो उस चीज़ पर भी ईमान लाए जिसे समझ नहीं सकते, तो ऐसा मज़हब बुद्धि और विवेक के निकट अच्छा नहीं।

وسَلِ اليهودَ وسَلْ أكابر قومهم أَسُلِّمَ فيهم ابنُك المتخَيَّرُ

90- यहूदियों से पूछ और उनकी क़ौम के बड़े-बुज़ुर्गों से (भी) पूछ, कि क्या उनमें तुम्हारा बनाया हुआ बेटा स्वीकार किया गया है?

ومهما يكن فى كُتُبكم ذِكْرُ عجزه وإنْ خِلتَه يخفى على الناس يظهَرُ

91- और जो कुछ भी तुम्हारी किताबों में उसकी असहायता का वर्णन मौजूद है वह लोगों पर बहुत शीघ्र स्पष्ट कर दिया जाएगा तू चाहे जितना भी कोशिश करे कि वह लोगों से छुपा रहे।

جِعارُك خيطٌ فاتّقِ البئرَ والردا أللموت يا صيدَ الردى تتجَعَّرُ

92- हे मौत के शिकार! तू कुएँ में उतरने और मरने से डर, तेरी कमर का रस्सा एक धागा है। क्या तू मौत से बचने के लिए धागे को रस्सा समझकर बाँध रहा है?

أقلبك قلبٌ أو صَلايَةُ حَرَّةٍ أجهلُك جهل أو دخان مُغبَّرُ

93- क्या तेरा दिल, दिल है या पथरीली ज़मीन का कोई पत्थर? क्या तेरी मूर्खता, मूर्खता है या कोई धूलिधूसर धुआँ?

أكلتَ خُشارةَ كل قوم مُبْطلٍ فتأكل ما أكلوا ولا تتخَفَّرُ

94- तूने हर झूठी क़ौम का जूठन खाया है, और वह खा रहा है जो वे खा चुके हैं, और तू ज़रा भी शर्म नहीं करता।

أباريتَ يا مسكين ذا الرمح بالعصا وأنَّى أَجارِدُنا وأنَّى مِحْمَرُ

95- हे पंगु! क्या तू तीरन्दाज़ का डंडे से मुक़ाबला करता है? कहाँ हमारे आगे बढ़ जाने वाले घोड़े और कहाँ (पीछे रह जाने वाले) गधे बराबर हो सकते हैं?

أترغب عن دين قويم منوّر وتتبَع دينًا قد دَفاه التكدُّر

96- क्या तू सच्चे, सीधे और रौशन दीन (धर्म) से मुँह फेरता है और ऐसे दीन का अनुसरण करता है जिसे दलदल ने तबाह कर दिया है।

وإن لم تداور جُشْرَة البخل والهوى فتَهْوِ نحيفًا فى الهُلاس وتخطُرُ

97- यदि तू अपनी ईर्ष्या-द्वेष और मनोवेग (अहंकार) का इलाज नहीं करेगा तो तू क्षीण होकर टी.बी. का शिकार हो जाएगा और ख़तरे में पड़ जाएगा।

وإنى كماءٍ عند سِلْمٍ وخُلَّة وفى الحرب نارٌ جَعْظَرِىٌّ مُتَعْجِرُ

98- सुलह और दोस्ती के समय मैं पानी की तरह हूँ और युद्ध में भयानक और तहस-नहस कर देने वाला अंगारा के समान।

إذا ما نصبنا فى مواطنَ خيمةً فلا نرجعَنْ عند الوغا ونُجَمِّرُ

99- जब हम युद्ध के मैदानों में उतरते हैं तो लड़ाई के समय पीठ नहीं फेरते बल्कि जमकर डटे रहते हैं।

ولو ابهترت وقلت إنى ضيغم ففى أعينى ما أنت إلّا جَوْذَرُ

100- और यदि तू डींग मारे और कहे कि मैं तो शेर हूँ, तो तू मेरी नज़र में केवल एक नीलगाय का बच्चा है।

ألا أيها الصيد الركيك الاعورُ إلامَ تُحامى عنك سهمى وتَأفِرُ

101- हे कमज़ोर और काने शिकार! कब तक तू मेरे तीर से बचता रहेगा, और अपने आपको मोटा ताक़तवर दिखाता रहेगा।

أعيسى الذى قد مات ربٌّ و خالق أهذا هُدى الإنجيل أو تستأثرُ

102- क्या ईसा जो स्वर्ग सिधार गया वह स्रष्टा भी है और पालनहार भी? क्या यह इन्जील की शिक्षा है या तू ख़ुद (इस कपोल कल्पित विचारधारा को) अपना रहा है?

أ عيسى إلهٌ أيها العميُ من هوًى وأين ثبوت بل حديث يُؤثَرُ

103- हे मनोवेग (अहंकार) में अन्धो! क्या ईसा ख़ुदा है? कहाँ है कोई सुबूत? बल्कि कोई ऐसी हदीस ही पेश करो जो वर्णित हो।

ظننتم فأنتم تعبدون ظنونكم كشخصٍ مِتَرٍّ عاشق لا يصبرُ

104- तुमने ऐसा गुमान कर लिया है, और अपने गुमानों की ऐसे पूजा करते हो जैसे कि एक जोशीला और जल्दबाज़ आशिक़।

تركتم طريق الحق شُحًّا وخِسَّةً وسيعلمَنْ كُلٌّ إذا ما بُعثروا

105- तुमने द्वेष और धृष्टता से सच का रास्ता छोड़ दिया है, और यह उस दिन हर व्यक्ति जान लेगा जब लोग पुन: ज़िन्दा किए जाएँगे।

عسى أن يزيل الله شُحَّ نفوسكم ولكنه بَغْرٌ شديدٌ مُدمِّرُ

106- सम्भव है कि अल्लाह तुम्हारे दिलों का द्वेष दूर कर दे। लेकिन वह द्वेष तो अत्यन्त घातक प्यास है।

ومن كان ذا حِجْرٍ فيدرى حقيقةً ومن كان محجوبًا فيهذى ويهجُرُ

107- और जो बुद्धिमान है वह सच्चाई को पा लेता है और जो मूर्ख है वह व्यर्थ और अनर्गल बकता है।

ستغلب يا يَحْمورَ قومٍ مُحقَّرٍ ومِحْضِيرُنا يعدو ولا يتحسّرُ

108- हे धृष्ट क़ौम के जंगली गधे! तू ज़रूर थक (हार कर बैठ) जाएगा और हमारा घोड़ा नहीं थकेगा बल्कि आगे ही आगे

बढ़ता रहेगा।

قد استخمر الشيطان نفسك كلها فأنتَ لغُول النفسِ عبدٌ مُسخّرُ

109- शैतान ने तेरे पूरे दिल को मदहोश (अचेत) कर दिया है। इसलिए तू दिल के छलावा करने वाले का वशीभूत ग़ुलाम बन गया है।

ألا إنّ ربّي قد رأى ما صنعتَهُ فنفسك سوف تُحَجَّرَنْ وتُحَوَّرُ

110- सुन, कि जो करतूत तूने की है नि:सन्देह मेरे रब्ब ने उसे देख लिया है। तू जल्द ही (इससे) रोका जाएगा और नामुराद रहेगा।

أتُطفىء نورًا قد أُريدَ ظهورُها لك البُهرُ فى الدارين والنورُ يُبهرُ

111- क्या तू उस प्रकाश को बुझाता है जिसका प्रताप (ग़लबा) तय हो चुका है। तेरा दोनों लोकों में सत्यानाश हो, प्रकाश तो फैलकर ही रहेगा।

وإنّى أرىٰ قد بارَ كيدك كُلّه ويهتِك ربى كلَّ ما هو تَسْتُرُ

112- और मैं देखता हूँ कि तेरा सारे का सारा षडयन्त्र टूट गया है, और मेरा रब्ब हर उस षडयन्त्र को खोल देता है जिसे तू छिपाता है।

أتترك أعنابا وتنقِف حنظلا وهذا وبال أنت فيه متبَّرُ

113- क्या तू अंगूरों को छोड़ता है और हन्ज़ल (इन्द्रायण)को तोड़ता है। यह (तेरी दुष्टता का) एक दुष्परिणाम है जिसमें तू तबाह होने वाला है।

تَياهيرُ قَفْرٍ فى عيونك مَرْبَعٌ وأسرَّ كم سِقْطُ اللوىٰ وحَبَوْكَرُ

114- पथरीली चटियल ज़मीन तुझे लहलहाती खेती लगती है और हमेशा हालत बदलने वाला रेगिस्तान और रेत के टीलों का दामन तुझे अच्छा लगता है।

عقيدتكم قد صار للناس ضُحكةً ويضحك جمهورٌ عليه ويُنكرُ

115- तुम्हारा अक़ीदा लोगों के लिए हँसी का कारण बना हुआ है, अधिकतर लोग उस पर हँसते हैं और इन्कार करते हैं।

رأى الناسُ بالتحقيق ما في بيوتكم وإجَّارُ بيتٍ مِن بعيد يظهرُ

116- जो कुछ तुम्हारे घरों में है लोगों ने उसे तहक़ीक़ करके देख लिया है, घर की छत दूर से ही दिखाई दे जाती है।

ولا يُظهِرَنْ إنجيلكم نهجَ الهُدٰى وهداه جَمْجَمَةٌ وقولٌ مُكوَّرُ

117- और तुम्हारी इन्जील सन्मार्ग का रास्ता कदापि सुस्पष्ट नहीं करती। उसकी शिक्षा अस्पष्ट है, और ऐसी अभिव्यक्ति है जो भ्रान्तियों के पर्दों में लिपटी हुई है।

ومَن تبعه ما وجد ريح تيقُّنٍ ولكن إلى الإلحاد والشّكِّ يُدحَرُ

118- और जो उसका अनुसरण करता है वह विश्वास की ख़ुशबू नहीं पाता, बल्कि वह नास्तिकता और सन्देह की ओर धकेला जाता है।

وما فيه إلا ما يُضلّ قلوبكم ويهُدُّ ببيت نجاتكم ويدمِّرُ

119- उसमें इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं कि तुम्हारे दिलों को गुमराह कर दे, और तुम्हारी निजात (मुक्ति) का घर गिरा दे और बर्बाद कर दे।

ومن أين طفل للذى هو أطهرُ أللّٰهِ زوجٌ أيها المتمَذِّرُ

120- और उस हस्ती का बेटा कहाँ हो सकता है जो सब दोषों से रहित है? हे धृष्ट आदमी! क्या अल्लाह की कोई पत्नी हो सकती है?

ولكننا لا نعرف اللّٰهَ هٰكذا وحيدٌ فريدٌ قادرٌ متكبّرُ

121- लेकिन हम लोग अल्लाह को ऐसा नहीं मानते, वह एकांकी है, अद्वय है, सामर्थ्यवान् है, महिमावान् है।

وذٰلك للدين القويم كرامة إذا ما تبعتَ هُداه فالله يؤثِرُ

122- और यह बात सच्चे दीन (धर्म) के लिए आसमानी चमत्कार के तौर पर है कि जब तू उसकी शिक्षा का अनुसरण करेगा तो अल्लाह तुझे (प्रतिष्ठित और) प्रभावशाली बना देगा।

ويَشغِفك الله العزيز محبةً ويأخذ قلبَك حُبُّ حِبٍّ ويأطِر

123- और प्रभुत्ववान् ख़ुदा तुझको अपने प्रेम से भर देगा, और प्रेमी (ख़ुदा) का प्रेम तेरे दिल को खींच लेगा और आकर्षित कर लेगा।

فطوبى لمن صافا صراطَ محمد و كمثل هذا النور ما بانَ نَيِّرُ

124- उस व्यक्ति के लिए भलाई ही भलाई है जिसने सच्चे दिल से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मार्ग को चाहा, और उस सूर्य के समान कोई भी प्रकाश देने वाला प्रकट नहीं हुआ।

وصلنا إلى المولىٰ بهدى نبيّنا فدَعْ ما يقول الكافر المتنصّرُ

125- हमने अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा से ख़ुदा को पा लिया, अत: छोड़ दे उस बात को जो अधर्मी ईसाई कहता है।

وفى كل أقوامٍ ظلامٌ مدمّرٌ وإنّ رسول الله بدرٌ منوّرُ

126- सारी क़ौमों में अत्यन्त घातक अन्धकार छाया हुआ है और रौशनी देने वाले चौदहवीं के चाँद, नि:सन्देह अल्लाह के रसूल (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हैं।

وإن رسول الله مُهْجةُ مُهْجتى ومِن ذكره الاحلىٰ كأنّى مُثْمِرُ

127- और नि:सन्देह मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम) मेरे प्राण हैं और मैं, मानो उनकी अत्यन्त मीठी याद से ही फलदार और प्रतिष्ठित हूँ।

فدَعْ كلَّ ملفوظ بقولِ محمد وقَلِّدْ رسولَ الله تَنْجُ وتُغفَرُ

128- तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन के सामने सारी बातें छोड़ दे और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण कर, तू निजात पा जाएगा और बख़्शा जाएगा।

وليس طريق الهدى إلا اتّباعَهٗ ومَن قال قولا غيره فيُتبَّرُ

129- और उसकी अनुसरण के अतिरिक्त हिदायत का कोई मार्ग नहीं, और जिसने उसके अतिरिक्त कोई बात कही वह तबाह व बर्बाद किया जाएगा।

ومَن ردَّ مِن قِلِّ الحياء كلامَه فقد رُدَّ ملعونا وسوف يُمَذَّرُ

130- और जिसने बेशर्मी से आपकी बात को ठुकरा दिया, वह तिरस्कृत होकर धिक्कृत हुआ और शीघ्र ही टूटकर तबाह व बर्बाद होगा।

ومن يَرَ تقوًى غيرَ هدى رسولنا فذلكم الشيطان يعتُو ويُشْغَرُ

131- और जो व्यक्ति हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायत के अतिरिक्त किसी अन्य बात को तक़्वा (संयम) समझे तो वह शैतान है, जो सरकशी करता है और धुत्कारा जाएगा।

وما نحن إلّا حزب ربٍّ غالبٍ ألا إنّ حزب اللهِ يعلو ويُنصَرُ

132- और हम तो केवल प्रभुत्ववान् ख़ुदा का गिरोह हैं, जान लो कि अल्लाह का गिरोह अवश्य विजय पाता है।

ووالله إنّ كتابنا بحرُ الهُدٰى وتاللهِ إنّ نبيّنا مُتَبَقِّرُ

133- और अल्लाह की क़सम! हमारी किताब तो सन्मार्ग का

सागर है, और ख़ुदा की क़सम! हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अत्यन्त महान विद्वान हैं।

ويبقٰى إلى يوم القيامة دينُه له ملّةٌ بيضاءُ لا تتغيرُ

134- और क़यामत तक उनका दीन (मज़हब) ज़िन्दा रहेगा, और उनका निष्कलंक दीन कभी नहीं बदलेगा।

ونؤثِر فى الدارَينِ سننَ رسولنا وسُنّةُ خيرِ الرسل خيرٌ وأزهَرُ

135- और हम दोनों जगत में अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों को प्रधानता देते हैं, और नबियों के गौरव (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का आदर्श ही सबसे उत्तम और सुस्पष्ट है।

فلما عرفتَ الحق دَعْ ذكرَ باطلٍ ولو للصداقة مثلَ بَكْرٍ تُنهَرُ

136- जब तूने सच को पहचान लिया तो झूठ का बखान छोड़ दे, चाहे सच्चाई के लिए तुझे जवान ऊँट की तरह ज़िबह (क़ुर्बान) किया जाए।

ألا أيها الثرثار خَفْ قهرَ قاهر ويعلم ربى ما تُسِرُّ وتَخْمِرُ

137- सावधान, हे अनर्गल बकने वाले! ख़ुदा के प्रकोप से डर। मेरा रब्ब (वह सब कुछ) जानता है जो तू छिपाता है और जिस पर तू पर्दा डालता है।

فلا تقْفُ ما لا تعرفَنَّ وُجوهَه وثابِرْ على الحق الذى هو أظهرُ

138- तू उन बातों का अनुसरण मत कर जिनके कारणों (उद्देश्यों) से तू परिचित नहीं, और उस सच्चाई पर अडिग रह जो अत्यन्त सुस्पष्ट है।

ووالله ما كان ابن مريم خالقا فلا تهلكوا بغيًا وتوبوا واحذروا

139- और ख़ुदा की क़सम! इब्नि मरियम स्रष्टा (ख़ुदा) नहीं था। अत: तुम लोग सरकशी (धृष्टता) से तबाह न हो, तौबा करो और (ख़ुदा से) डरो।

ولا تعجَبَنْ مِن أنه ليس من أبٍ و كمثل هٰذا الخَلْقِ فى الدُود تنظُرُ

140- इस बात से आश्चर्य मत कर कि वह बाप से पैदा नहीं हुआ, जबकि उस जैसी पैदाइश तू कीड़ों में भी देखता है।

بل الدود أعجبُ خِلقةً من مسيحكم ويخلق رَبّى ما يشاء ويقدرُ

141- बल्कि कीड़ा तो अपनी पैदाइश में तुम्हारे मसीह से भी अधिक आश्चर्यचकित करने वाला है, और मेरा रब्ब जो चाहे पैदा करता है और उसकी सामर्थ्य रखता है।

ألا رُبَّ دُود قد ترى فى مربعٍ تكَوَّنُ فى ليل وتنمو وتكثرُ

142- सुन, कि बहुत से कीड़े तू कभी मौसम-ए-बहार की वर्षा में देखता है जो एक ही रात में अनस्तित्व से अस्तित्व में आ जाते हैं और पलते-बढ़ते हैं।

وليستْ لها أُمٌّ بأرض ولا أبٌ ففكِّرْ هداك الله هادٍ أكبرُ

143- और धरती में न उनकी कोई माँ होती है और न कोई बाप। अब तू सोच, अल्लाह तुझे मार्गदर्शन प्रदान करे कि वह सबसे बड़ा मार्गदर्शक है।

وإن كنتَ لا تَدَعُ الجدال وتُنكرُ فبارِزْ لنا إنا إلى الحرب نَعْكِرُ

144- और यदि तू बहस करना नहीं छोड़ता और (सच्चाई से) इन्कार ही करता है तो हमसे मुक़ाबला के लिए निकल, हम भी जंग के मैदान की तरफ़ निकलते हैं।

وإن لنا المولىٰ ولا مولىٰ لكم فتنظر أنَّا نغلِبَنّ ونُنصَرُ

145- और हमारा तो एक कारसाज़ (ख़ुदा) है और तुम्हारा कोई कारसाज़ नहीं। अत: तू देख लेगा कि हम अवश्य विजय पाएँगे और सहायता दिए जाएँगे।

ووالله إنى أَكسِرَنَّ صليبكم ولو مُزِّقتْ ذرّاتُ جسمى وأُكسَرُ

146- और ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारी सलीब को अवश्य तोड़ डालूँगा, चाहे मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँ और मैं चकनाचूर कर दिया जाऊँ।

ووالله يأتى وقتُ فتحى ونصرتى ووالله إنى فائز ومُعزَّزُ

147- और ख़ुदा की क़सम! मेरी विजय और सहायता का समय आ रहा है। और ख़ुदा की क़सम! मैं सफलता, सहायता और प्रतिष्ठा पाने वाला हूँ।

ووالله يُثنَى فى البلاد إمامُنا إمامُ الانام المصطفى المتخيَّرُ

148- और ख़ुदा की क़सम! देशों में हमारे पेशवा की प्रशंसा की जाएगी। जो (ख़ुदा की ओर से) चुना हुआ अति गौरवशाली और समस्त संसार का पेशवा है।

وما فى يديك بغير قولٍ مدلَّسٍ تَكَدُّ وتستقرى المحالَ وتَفْجُرُ

149- और तेरे हाथों में अक्षरांतरित बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। तू व्यर्थ कष्ट उठा रहा है और असम्भव बात के पीछे पड़ा हुआ है, और गुनहगार हो रहा है।

و كتبك قَفْرٌ حشْوُها الكفرُ والردٰى محرَّفةٌ فى كل عامٍ تُغيَّرُ

150- तेरी किताबें चटियल मैदान हैं, जिनके अन्दर कुफ़्र (अधर्म) और तबाही है। वे अक्षरांतरित हैं, और हर वर्ष अक्षरांतरित की जाती हैं।

فتلك براهينٌ على سَخْفِ دينكم وقد قلتُ تحقيقًا ولو أنت تَبْسُرُ

151- ये तुम्हारे दीन (धर्म) की कमज़ोरी पर ठोस प्रमाण हैं। और यह मैंने छानबीन के आधार पर वर्णन किया है, चाहे तू मुँह टेढ़ा करता रहे।

لقد زيَّن الشيطان أقواله لكم يوسوسكم فى كل حين ويمكُرُ

152- शैतान ने अपनी बातें तुम्हें सजाकर दिखाई हैं। वह हर समय तुम्हें भ्रम में डालता और छल करता है।

وقد ذكَّر الاخيارُ من قبلُ قومَكم ولاٰخرياتِ الناس نحن نذكِّرُ

153- नेक लोग इससे पहले तुम्हारी क़ौम को नसीहत कर चुके हैं, और आख़िरी ज़माने के लोगों को हम नसीहत करते हैं।

و كيف يساوى دينُ عيسٰى لديننا ولا يستوى دخنٌ ونجمٌ أزهَرُ

154- और ईसाई दीन (मज़हब) हमारे दीन (मज़हब) के बराबर कैसे हो सकता है? धुआँ और चमकता हुआ सितारा बराबर नहीं हो सकते।

وقد جاء يوم الله فاليومَ ربُّنا يدقّق أجزاء الصليب ويكْسِرُ

155- ख़ुदा (के वादे) का दिन आ गया। अत: आज हमारा रब्ब सलीब के घटकों (भागों) को चकनाचूर कर देगा और पीस डालेगा।

وقلتُ له لا تحسَبِ العبدَ خالقًا و كلّ امرء عن قوله يُستفسَرُ

156- और मैंने उसे कह दिया कि एक इन्सान को स्रष्टा (ख़ुदा) न समझ, और हर आदमी अपनी बात के सन्दर्भ में उत्तरदायी होगा।

وقلتُ له لا تستُرِ الحق عامدًا سَيُبدى المهيمنُ كلّ ما كنتَ تَستُرُ

157- और मैंने उससे कहा कि जानबूझकर सच को न छिपा। जो कुछ तू छिपाता रहा है सर्वशक्तिमान ख़ुदा उसे अवश्य सुस्पष्ट

कर देगा।

وقلتُ له لمّا أبى إن شأننا بلاغٌ فبلَّغنا وإنك مُنذَرُ

158- जब उसने (सत्य) इन्कार किया तो मैंने उससे कहा कि हमारा काम तो केवल (सन्देश को) पहुँचा देना है। अत: हम अच्छी तरह पहुँचा चुके और तू अवश्य सचेत किया जा चुका है।

وإن كنتَ لم تسمع فزِدْ فى تجاسُرٍ لتُسْعِرَ نار الله ثم تُدمَّرُ

159- और यदि तू सुन और समझ नहीं रहा तो दुस्साहस में बढ़, ताकि तू अल्लाह तआला के प्रकोप को भड़का दे और नष्ट किया जावे।

فزِدْ فى جَراءاتٍ وزِدْ فى تقاعُس وزِدْ فى عمايات فتفنٰى وتُبتَرُ

160- अत: तू दुस्साहसों, धृष्टताओं और अन्धेपन में बढ़ता जा, फिर तू परिणामस्वरूप मलियामेट किया जाएगा।

وليس عذاب الله عَذْبًا كما ترى سيُحرَق فى نار اللّظٰى مَن يفجُرُ

161- ख़ुदा का अज़ाब (प्रकोप) सुखदायी नहीं जैसा कि तू समझ रहा है, जो व्यक्ति गुनाह करता है वह दहकती हुई आग में जलाया जाएगा।

غيور فيأخذ مشركًا بذنوبه وليس له أحدٌ شفيعًا ومَأْزَرُ

162- वह (ख़ुदा) ग़ैरतमन्द है (अपने) भागीदार ठहराने वाले को उसके गुनाहों के परिणामस्वरूप उसे पकड़ लेगा और उसके लिए कोई अनुशंसक (सिफ़ारिश करने वाला) न होगा और न ही कोई शरण देने वाला।

رفيعٌ علىٌّ كيفَ يُدرَك كنهُهُ إذا ما ترقَّتْ عينُنا تتحيرُ

163- वह अत्यन्त महान है उसकी यथार्थता (असलीयत) कैसे

ज्ञात हो सकती है? जितना भी हम नज़र दौड़ाते हैं वह हैरान रह जाती है।

أتعصون بغيًا مَن به الخَلْقُ آمنوا أتنسون يوما ما به الناس أُنذِروا

164- क्या तुम सरकशी से उस (ख़ुदा) की नाफ़र्मानी करते हो जिस पर लोग ईमान ले आए? क्या तुम उस दिन को भुलाते हो जिससे सब लोग सचेत किए गए?

و كيف يكون العبد كابْنٍ لربّه فسبحان ربِّ العرش عما تصوروا

165- एक इन्सान अपने ख़ुदा का बेटा कैसे हो सकता है। ब्रह्माण्ड (कायनात) का स्रष्टा (ख़ुदा) इस दोष से रहित है जो उन्होंने समझा है।

و قد مات عيسٰى ليس حيًّا و إنّنا نردّ على من قال حيٌّ و نَحْجُرُ

166- वह ईसा मर चुका है, ज़िन्दा नहीं है। जिसने कहा कि वह ज़िन्दा है हम उस कथन का पूर्णत: खण्डन करते हैं और ऐसा कहने से मना करते हैं।

و أخبرَني ربي بموت مسيحكم و كان هو الاولٰى و أكفى و أجدرُ

167- और तुम्हारे मसीह की मृत्यु के बारे में मेरे रब्ब ने मुझे सूचना दी है और (इस सूचना के देने में) वही सबसे बढ़कर विश्वसनीय, सबसे बढ़कर सच्चा, और सबसे बढ़कर स्पष्ट करने वाला है।

و كم من دوابّ الارض يحيى مدّة علٰى ظهرها فَاعْجَبْ لهٰذا و فكِّروا

168- वैसे ज़मीन पर रेंगने वाले बहुत से कीड़े-मकोड़े भी तो (धरती पर) लम्बे समय तक ज़िन्दा रहते हैं। अत: तू इस बारे में आश्चर्य करता रह, और तुम सब लोग भी ख़ूब चिन्तन-मनन करो।

وإن جنود الانبياء وحزبهم ألوفٌ فهل ترَيَنَّ كابنك آخَرُ

169- और नि:सन्देह नबियों के समूह और उनके दल हज़ारों हैं। पर क्या तेरे (कपोल-कल्पित) बेटे की तरह कोई दूसरा (दल) दिखाई देता है?

فإن كان للرحمٰن ولدٌ كقولكم فشجرة نسل الله تنمو وتكثرُ

170- यदि तुम्हारे कथन के अनुसार ख़ुदा का कोई बेटा होता तो ख़ुदा के ख़ानदान की नस्ल (वंशावली) तो बढ़ जाती और फैल जाती।

أبُدِّلَ سُنّةُ ربّنا بعد مدّة أيمكن فى سنن القديم تغيُّرُ

171- क्या हमारे ख़ुदा का विधान एक लम्बे समय के बाद बदल गया है? क्या अजर और अमर ख़ुदा के क़ानून में कोई बदलाव सम्भव है?

وقانون سنن الله فى بعث رسله مبين فهل أبصرتَ أو لا تُبصرُ

172- ख़ुदा के आदेशों का क़ानून तो उसके पैग़म्बरों के भेजने से व्यक्त (स्पष्ट) है। क्या तूने बुद्धि और विवेक से काम लिया है या तू देख ही नहीं सकता?

وإن لم تر اليوم الهدى فترٰى غدًا ظلامًا مهيبًا فيه تهوى وتُندَرُ

173- यदि आज तू नसीहत को न समझ सका तो कल तू भयानक अन्धकार को देखेगा। जिसकी चपेट में आएगा और नष्ट हो जाएगा।

أتخلع جهلًا رِبْقةَ العقل والنهٰى لاقوالِ قوم قد أضلّوا و دُمِّروا

174- क्या तू ऐसे लोगों की बातों पर जिन्होंने दूसरों को गुमराह किया और ख़ुद भी भटक गए, धृष्टता से बुद्धि और विवेक को छोड़ रहा है?

أتترك ما جاءت به الرسل من هدى ألا تَتْبَعَنْ قوما هُدوا وتبقَّروا

175- क्या तू उस हिदायत को छोड़ता है जो रसूल लेकर आए? क्या तू उन लोगों का अनुसरण नहीं करता जिन्हें हिदायत दी गई और उन्होंने बहुत ज्ञान पाया?

عليكم بسبل الله من قبل ساعةٍ تُريكم لظى النار التى هى تُسعَرُ

176- तुम पर ख़ुदा की राहों का अपनाना उस घड़ी (क़यामत) के आने से पहले अनिवार्य है, जो तुमको उस आग का अंगारा दिखाएगी जो अत्यन्त भड़काई जाएगी।

عذاب أليم لا انتهاءَ لحرقه وإن ينضَجَنْ جِلدٌ فيُخلَق آخَرُ

177- वह ऐसा दर्दनाक अज़ाब होगा जिसकी जलन ख़त्म नहीं होगी, और यदि एक चमड़ा जल जाएगा तो दूसरा पैदा कर दिया जाएगा।

ينبِّئك العلام ما كنتَ تُضمِرُ ويبدى لك النورَ الذى اليوم تُنكِرُ

178- अन्तर्यामी ख़ुदा तुझको बता देगा जो कुछ तू छिपाता रहा, और वह उस नूर को तेरे सामने चमका देगा जिसका आज तू इन्कार कर रहा है।

ألاَ أيها الناس اتقوا الله ربكم وإن عذاب الله أدهى وأكبرُ

179- सावधान, हे लोगो! अल्लाह से डरो, जो तुम्हारा रब्ब (पालनहार) है। और नि:सन्देह अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) बहुत भयानक और बहुत बड़ा है।

ألم يأتكم نُذُرٌ وآياتُ ربكم نرى بَغْيَكم ودموعُنا تتحدرُ

180- क्या तुम्हारे पास सचेत करने वाले (नबी/अवतार) और तुम्हारे रब्ब के निशानात नहीं आए? हम तुम्हारी सरकशी को देख रहे हैं और (उसे देखकर) हमारे आँसू बह रहे हैं।

ولكلّ نبأٍ مستقرٌّ ومَظْهَرُ ولكلّ ما يأتيك وقت مُقدّرُ

181- हर भविष्यवाणी के ज़ाहिर होने का एक निर्धारित समय और एक निर्धारित स्थान होता है। और जो कुछ तुझे मिलेगा उसके लिए भी एक निर्धारित समय है।

ويَحكُم ربُّ العرش بيني وبينكم وها أنا قبل عذاب ربّي أُخبِرُ

182- ख़ुदा मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा। और सुनो, कि मैं अपने रब्ब का अज़ाब आने से पहले (तुम्हें) सचेत कर रहा हूँ।

وقوم مضوا من قبل ضالين مِن هوًى فأنتم قبِلتم كلَّ ما هُمْ زَوَّروا

183- और स्वार्थपरायणता से गुमराह होने वालों में से बहुत से लोग पहले गुज़र चुके हैं। अत: तुमने हर वह छल अपना लिया जो उन्होंने किया था।

أخذتم طريق الشرك والفسق والردى وثَرَّتْ خطاياكم فلم تستغفرو

184- तुमने शिर्क (बहुदेववाद), नाफ़र्मानी और तबाही की राह अपना ली और तुम्हारे गुनाह (पाप) हद से बढ़ गए, फिर भी तुमने तौबा (पश्चात्ताप) नहीं किया।

فأرسلَنى ربى إليكم لتهتدوا ولتقبَلوا ما قال رَبّى وتُغْفَرَ

185- इसलिए मेरे रब्ब ने मुझे तुम्हारी ओर भेजा है ताकि तुम हिदायत पाओ और उस बात को मानो जो मेरे रब्ब ने कही, और क्षमा किए जाओ।

فإن شئتَ ماء الله فاقصِدْ مَناهلى فيُعْطِك مِن عينٍ وعينٍ تُنوَّرُ

186- और यदि तू ख़ुदा का जीवनदायक पानी पाना चाहता है तो मेरे घाटों की ओर आ, वह तुझे एक ज्ञान की धारा देगा और ऐसी दृष्टि भी जो रौशन की जाएगी।

وأغلَظُ حجبٍ ما تُراك على الهدٰى تعالَ على قدم الضلال فتُزهَرُ

187- और जो कुछ तुझे (इधर-उधर से सजा-सँवारकर) दिखाया जा रहा है वे हिदायत पर पड़े अत्यन्त मोटे पर्दे हैं। तू अपनी पुरानी गुमराही के बावजूद आ जा, तो तू रौशनी दिया जाएगा।

وفيك فسادلو علمتَ اجْتنبتَه وذالكم الشيطان يُغوى ويَحصُرُ

188- तुझमें एक ख़राबी है, यदि तुझे उसका ज्ञान होता तो तू उससे बचता। और वह शैतान ही है जो तुम्हें गुमराह कर रहा है और (रौशनी से) रोक रहा है।

ذببتُ عن الدين الحنيفِىْ شكوكَكم وأزعجتُ أصلَ أصولِكم ثم تُنكِرُ

189- मैंने विशुद्ध दीन (पवित्र इस्लाम) के बारे में तुम्हारे सन्देह दूर कर दिए हैं और तुम्हारे मनगढ़त उसूलों की जड़ को उखाड़ दिया है, फिर भी तू इन्कार कर रहा है।

وقلتم لنا دين بعيد من النهى وهذا فساد ظاهر ليس يُستَرُ

190- और तुमने कह दिया कि हमारा दीन (इस्लाम) तो बुद्धि से परे है, और यह (कहना) एक (खुले-खुले उपद्रव और) फ़साद (को जन्म देना) है, जो छुप नहीं सकता।

و كلُّ امرء بالعقل يفهم أمره كما بالعيون يشاهِدَنَّ ويُبصِرُ

191- और हर आदमी तो बुद्धि से ही अपना मामला समझा करता है, जैसा कि वह आँखों से देखता और सुबुद्धि से काम लेता है।

وعقلُ الفتى نصف ونصفٌ حواسُّه و كصَفْقِ أيدٍ منهما العلمُ يَظهَرُ

192- और आधी तो इन्सान की अक़्ल है और आधी उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ। और हाथ पर हाथ मिलाने की तरह उन दोनों की परस्पर रज़ामन्दी से बौद्धिक ज्ञान पैदा होता है।

تصديتَ فى نصر الضلال تعمُّدا فبارِزْ لحرب الله إنْ كُنت تقدِرُ

193- तू जानबूझकर गुमराही की मदद के लिए आगे आया है। अत: यदि तुझमें सामर्थ्य है तो अल्लाह (के रसूल) से जंग के लिए मैदान में आ जा।

وما أنت إلا عابِد الحرص والهوى تشمِّرُ ذيلَك للحُطام وتهجُرُ

194- और तू तो केवल लोभ-लालसा का पुजारी है। तू सांसारिकता के लिए तन, मन, धन से तत्पर है और अनर्गल बक रहा है।

رأيتُ لك الرؤيا وإنك مَيِّتٌ وإنّ كلام الله لا تتغيَّر

195- मैंने तेरे बारे में एक ख़्वाब देखी है, नि:सन्देह तू मरने वाला है। और ख़ुदा की बातें कभी बदला नहीं करतीं।

وعِدَّةُ وعدِ الله عشرٌ وخمسةٌ إذا ما انقضتْ فاعلَمْ بأنك مُحضَرُ

196- और ख़ुदा के वादे की मुद्दत पन्द्रह महीने है जब यह मुद्दत गुज़र जाएगी तो जान लेना कि तू ख़ुदा के समक्ष पेश किया जाने वाला है।

وتعمٰى وتحضر عند ذى العرش مجرمًا وتُسأل عما كنتَ تهذى وتكفُرُ

197- और तू अन्धा होगा और मुजरिम की हालत में सर्वशक्तिमान ख़ुदा के सामने हाज़िर किया जाएगा, और तुझसे उन बातों के बारे में पूछा जाएगा जो तू बकता रहा है और जो इन्कार करता रहा है।

وما قلتُ مِن تلقاء نفسى تجاسُرا بل الآن نبّأنى العليم المقدِّرُ

198- और यह बात मैंने अपनी ओर से दुस्साहस से नहीं कह दी, बल्कि अभी मुझे सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने बताया है।

فبلّغتُ تبليغا وآليتُ حِلْفةً علٰى صدقِ ما أظهرتُ فانظُرْ وننظُرُ

199- अत: मैंने तो सन्देश पहुँचाने का हक़ अदा कर दिया है और इस बात की सत्यता पर क़सम भी खा ली है जिसका मैंने वर्णन किया है। अब तू प्रतीक्षा कर, हम भी प्रतीक्षा करते हैं।

فإنْ أكُ صدّيقًا فربّي يعزّني وإن أكُ كذّابًا فسوف أُحَقَّر

200- यदि मैं सच्चा हूँ तो मेरा रब्ब मुझे विजय देगा, और यदि मैं झूठा हूँ तो अवश्य अपमानित किया जाऊँगा।

وأعلم أنَّ مهيمنى لا يضيعنى وأعلم أن مؤيّدى سوف يَنصُرُ

201- मैं जानता हूँ कि मेरा संरक्षक ख़ुदा मुझे नष्ट नहीं करेगा और मैं जानता हूँ कि मेरा समर्थक (ख़ुदा) अवश्य मेरी सहायता करेगा।

فتوقَّدَ السفهاء مِن أهل الهوى و كل امرء عند التخاصم يُسبَرُ

202- फिर क्या था सांसारिक लोभ-लालसा रखने वाले मूर्ख भड़क उठे, और हर व्यक्ति बहस (संघर्ष) के समय आज़माया जाता है।

ذووا فطنةٍ يدرُون بحثى وبحثه وما فى السماء فسوف يبدو ويظهَرُ

203- बुद्धिमान लोग मेरी और उसकी बहस को समझते हैं, और जो आसमान में निर्णीत है वह शीघ्र ही स्पष्ट होगा और सामने आ जाएगा।

وإن يُسلِمَنْ يَسلَمْ وإلَّا فميّتٌ وهذان منا آيتان ونشكُرُ

204- यदि वह मान जाएगा तो बच जाएगा अन्यथा मरेगा, और यह हमारी ओर से दो निशान हैं और हम (ख़ुदा का) शुक्र करते हैं।

ووالله هذا مِن إلٰهى ومَن يعِشْ إلى أشهر مذكورة فسينظرُ

205- अल्लाह की क़सम! यह बात मेरे ख़ुदा की ओर से है

और जो व्यक्ति उपरोक्त महीनों तक ज़िन्दा रहेगा वह अवश्य (इस ख़्वाब को पूरा होते) देख लेगा।

وتحت رداء الله روحی ومُهْجتی وما یعرفنی أحد وربّی یُبصِرُ

206- और मेरी रूह और मेरे प्राण तो अल्लाह की चादर के नीचे है, मुझे कोई नहीं पहचानता पर मेरा रब्ब मुझे देख रहा है।

ولستُ بربّی کاذبا تارکَ الهدی ولستُ بربی کالذی هو یهذَرُ

207- ख़ुदा की क़सम! मैं झूठा और काफ़िर (सन्मार्ग को छोड़ने वाला) नहीं, और ख़ुदा की क़सम! मैं उस व्यक्ति की तरह नहीं जो अनर्गल बकता फिरता है।

وهنَّأنی ربّی بنهجِ محبة علی ما تضوَّعَ مِسْكُ فتحی وعنبَرُ

208- मेरे रब्ब ने मुझे मुहब्बत के तौर पर मुबारकबाद दी है, कि मेरी विजय की कस्तूरी और अंबर महक उठे हैं।

وذٰلك من برکات روحِ رسولنا نبیٌّ له نور منیر وأزهَرُ

209- और यह हमारे रसूल (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के वजूद की बरकतों के कारण से है। वह ऐसा नबी है कि उसका नूर बहुत रौशन करने वाला है और वह ख़ुद भी बहुत रौशन है।

رؤوفٌ رحیمٌ آمرٌ مانعٌ مَعًا بشیرٌ نذیرٌ فی الکروب مبشِّرُ

210- वह बहुत दयालु, नेकियों का आदेश देने वाला और बुराइयों से रोकने वाला है और साथ ही ख़ुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला और दु:खों में ख़ुशियों की ख़बर देने वाला भी है।

له درجات لا شریكَ له بها له فیضُ خیرٍ لا تضاهیه أبحُرُ

211- उस नबी की महानता के ऐसे स्थान (स्तर) हैं जिनमें

उसका कोई हमतुल्य नहीं। उसके उपकार की उदारता ऐसी है कि समुद्र भी उसके समान नहीं हो सकते।

تخيَّرَه الرحمن مِن بين خَلقه ذُكاءٌ بجلوته وبدرٌ منوّرُ

212- रहमान ख़ुदा ने उसे अपने लोगों में से चुन लिया है, वह अपने तेज में सूरज है और (सौम्यता में) चौदहवीं का चमकता हुआ चाँद।

و كان جلالٌ فى عَرانينِ وَبْلِه خَفَى الفأرَ مِن أنفاقهن الممطِرُ

213- बरसने वाले महाप्रतापी बादल ने अपनी मूसलाधार वर्षा के प्रारम्भ में ही चूहों को उनके बिलों से निकाल दिया।

رؤوفٌ رحيمٌ كهفُ أممٍ جميعها شفيعُ الورى سَلَّ إذا ما أُضْجِروا

214- वह कृपालु है, दयालु है, समस्त लोगों की शरणगाह है, जब वे तंगी में पड़ जाते हैं तो उन्हें धैर्य दिलाता है और उनका अनुशंसक (सिफ़ारिश करने वाला) है।

ألا ما هَرَفْنا فى ثناء رسولنا له رتبةٌ فيه المدائحُ تُحصَرُ

215- सुनो! हमने अपने रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की प्रशंसा मे अतिशयोक्ति से काम नहीं लिया। उसे तो ऐसा स्थान प्राप्त है जहाँ प्रशंसाएँ समाप्त हो जाती हैं।

و إن أمان الله فى سبل هديه فطوبى لشخص يقتفى ما يؤمَرُ

216- नि:सन्देह उसके धर्म (की शिक्षा) के मार्गों में अल्लाह की शरण है। अत: ख़ुशख़बरी हो उस व्यक्ति को जो उस बात का अनुसरण करता है, जो उसे आदेश दिया जाता है।

سقى فَيَهَجَ العرفانِ كلَّ مصاحب فبنشوة الصهباء سُرُّوا وأَبْشَروا

217- उसने ज्ञान एवं अध्यात्म का शर्बत हर साथी को पिलाया।

फिर वे उस (ज्ञान एवं अध्यात्म) के नशे से झूम उठे और ख़ुश हो गए।

وقدراحِ والمخلوقُ فی ظلماته وجهلاته مثل الاوابد ینفِرُ

218- और वह उस घोर अन्धकार के समय आया जब लोग अपने आडम्बरों में और अपनी मूर्खताओं में जंगली जानवरों की तरह भटक रहे थे।

فأ کملَهم قولًا و فعــلا و مِیسمًا وأیقظَهم فاستیقظوا وتطهَّروا

219- फिर उसने उन्हें कथनी-करनी और उत्तम शिष्टाचारों में उच्चकोटि का बना दिया और उन्हें जगाया तो वे जाग गए और शुद्धात्मा बन गए।

رسولٌ کریمٌ ضعَّف اللّٰهُ شأنه وبدرٌ منیرٌ لا یضاهیه نیِّرُ

220- वह प्रतिष्ठित रसूल है, अल्लाह ने उसके तेज को बहुत बढ़ाया है, वह चौदहवीं का चमकता हुआ चाँद भी है और कोई चमकने वाला उसके समान नहीं।

و کافحَ أمْرَ المسلمین بنفسه وعلَّمهم سننَ الهدی فتبصَّروا

221- उस (नबी) ने मुसलमानों के मामले को ख़ुद अपने हाथ में लिया और उन्हें हिदायत के ढंग सिखाए तो वे दूरदर्शी बन गए।

بأُمّته أحفَی من الاب بابنه شفیعٌ کریمٌ مشفِقٌ ومُحذِّرُ

222- वह अपनी उम्मत पर उससे भी अधिक उपकार करने वाला है जो बाप अपने बेटे पर करता है। वह अनुशंसक (सिफ़ारिश करने वाला) है, प्रतिष्ठित है, सहानुभूति करने वाला और (ख़ुदा के अज़ाब से) सचेत करने वाला भी है।

فمن جاءه طوعًا وصدقًا فقد نجا ومَن أعرض عن أحکامه فیُدمَّرُ

223- जो उसके पास चाहत और सत्यनिष्ठा से आया तो वह (पापों से) मुक्ति पा गया, और जो उसके आदेशों से मुँह फेरेगा तो वह तबाह व बर्बाद किया जाएगा।

ولم يتقدم مثلُه فى كماله وأخلاقِه العليا ولا يتأخّرُ

224- उसकी उत्कृष्टता और उच्चतम् शिष्टाचार में कोई भी उसका हमतुल्य नहीं हुआ और न आगे होगा।

فدَعْ ذكرَ موسٰى واترُكَنْ ابنَ مريمٍ ودَعِ العصا لما تراءى المفقَّرُ

225- जब तू (सत्य और असत्य में अन्तर करने वाले) बहादुर और फ़रमाँबर्दार (आज्ञाकारी) योद्धा को देख ले तो मूसा और उसके डंडे की बात छोड़ दे और इब्नि मरियम की बात को जाने दे।

له رتبةٌ فى الانبياء رفيعة فطوبٰى لقوم طاوعوه وخَيَّروا

226- उस नबी का स्थान सारे नबियों से बहुत ऊँचा है। अतएव उन लोगों के लिए ख़ुशख़बरी है जिन्होंने उसका अनुकरण किया और उसे पसन्द किया।

وعسكرُه فى كلّ حرب مبارِزٌ إذا ما التقى الجمعان فانظُرْ وننظُرُ

227- जब दो गिरोह परस्पर युद्ध के लिए निकलते हैं तो उस (नबी) का लश्कर (लड़ाई के) हर मैदान में ललकार कर सामने से मुक़ाबला करता है। तू भी देख और हम भी देखते हैं।

وجاء بقرآن مجيد مكمَّلٍ منيرٍ فنَوَّرَ عالَمًا وينوِّرُ

228- वह पूरी क़ुर्आन मजीद लेकर आया, जो पूर्णत: सन्मार्ग प्रदान करने वाली है। उसने एक दुनिया को रौशन कर दिया और आगे भी रौशन करती रहेगी।

كتاب كريم حازَ كلّ فضيلة ويسقى كؤوسَ معارفٍ ويوفِّرُ

229- वह एक ऐसी प्रतिष्ठित किताब है जो समस्त महानताओं की संग्रहीता है और ज्ञान एवं अध्यात्म का प्याला पिलाती है, और प्रचुरता से पिलाती है।

وفيه رأينا بيناتٍ من الهدىٰ وفيه وجدنا ما يقى ويبصِّرُ

230- और इसी में हमने हिदायत (सन्मार्ग) के सुस्पष्ट निशान पाए हैं, और इसी में हमने वह बात पाई है जो बुराइयों से बचाती है और दूरदृष्टि प्रदान करती है।

كعينٍ كَحيلٍ زُيِّنت صفحاته بناظرةٍ مِن عِيْنِ خُلدٍ يَنْظُرُ

231- सुर्मगीं (अंजित) आँख की तरह उसके पृष्ठ सजाए गए हैं, वह (क़ुर्आन) हमेशा ज़िन्दा रहने वाली आँख से देखता है।

طرىٌّ طلاوتُه ولم تعفُ نقطةٌ لِما صانَه اللهُ القدير الموقِّرُ

232- उसकी तरोताज़गी हमेशा खिली-खिली है और उसका एक नुक़्ता भी नहीं मिट सका, क्योंकि प्रतिष्ठावान् और सामर्थ्यवान् ख़ुदा ने उसकी रक्षा की क़सम खाई है।

فيا عجبًا مِن حسنه وجماله أرى أنه دُرٌّ ومِسكٌ وعنبرُ

233- उसकी ख़ूबी और ख़ूबसूरती क्या ही आश्चर्यजनक है, मैं तो उसको मोती, कस्तूरी और अंबर (के समान) पाता हूँ।

وإن سروری فی إدارة كأسه فهل فی الندامی حاضرٌ مَن يُكرِّرُ

234- मेरी ख़ुशी तो उसके प्याले को बार-बार पिलाने में ही रही है, क्या लोगों में से कोई है जो उसे बार-बार ले।

وريَّاه قد فاق الحدائق كلها نسيم الصبا من شأنه تتحيَّرُ

235- उसकी महक समस्त बाग़ों की ख़ुशबू से आगे निकल गई है। सुबह की भीनी-भीनी हवा भी उसकी श्रेष्ठता से आश्चर्यचकित

हो रही है।

إذا ما تلا من آية طالبُ الهدٰى يرى نوره يجرى كعين ويمطُر

236- जब सत्य का अभिलाषी उसकी कोई आयत पढ़ता है तो उसके नूर (ज्ञान) को झरने की तरह बहता हुआ और (बादल की तरह) बरसता हुआ पाता है।

وفيه من الله اللطيف عجائبٌ أشاهدها فى كل وقت وأنظرُ

237- और उसमें अदृश (अलौकिक) ख़ुदा के (ताज़ाबताज़ा) चमत्कार हैं जिन्हें मैंने हर समय आभास करता और देखता हूँ।

أيعجب مِن هذا سفيهٌ مشرَّدٌ وألهاه عن نور ظلام مكدَّرُ

238- क्या कोई धिक्कृत मूर्ख इस (विशेषता) से आश्चर्य करता है, जबकि घोर अन्धकार ने उसे नूर (ज्ञान) से ग़ाफ़िल कर दिया है।

إلى قوله يرنو الحكيم تلذذا ويُعرِض عنه الجاهل المتكبرُ

239- उसकी शिक्षा पर बुद्धिमान व्यक्ति आनन्द से प्रेम की नज़र डालता है, और मूर्ख अहंकारी उससे मुँह मोड़ता है।

كتاب جليل قد تعالى شأنه يدافى رؤوسَ المنكرين ويَكسِرُ

240- वह एक उच्चकोटि की प्रतिष्ठित पुस्तक है उसका स्थान बहुत ऊँचा है। वह मुन्किरों के सिरों को कुचल देता है और टुकड़े-टुकड़े कर देता है।

هو السيف فى أيدى رجالِ مَواطنٍ فلن يَعصِمَ دِرعٌ منه فوجًا ومِغفَرُ

241- वह योद्धाओं के लिए एक ऐसी तलवार के समान है कि उसका सामना करने वाले फ़ौजियों के कवच और ख़ौद उन्हें उससे नहीं बचा सकते।

كلام يفُلُّ المرهفاتِ بحدّه يبشّرنا فى كل أمر وينذِرُ

242- वह ऐसा कलाम (शिक्षा) है कि अपनी तेज़ धार से धारदार तलवारों को भी कुन्द कर देता है और हमें हर विषय में ख़ुशख़बरी भी देता है और सचेत भी करता है।

يُدَيَّةُ قومٍ مُنكِرٍ مغلولةٌ   وهُدَّت هراواهم وسُرُّوا و كُسِّروا

243- मुन्किरों के हाथ बाँध दिए गए और उनके डंडे तोड़ दिए गए, और उनकी नाभि में तीर मारे गए और वे टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए।

يباهون مِرِّيْحِينَ جهلا ونخوةً   وسوف تراهم مدبِرين فتُبشِرُ

244- वे मूर्खता और अहंकार से चलते हुए घमण्ड करते हैं। तू जल्द ही उनको पीठ फेरकर भागने वाला पाएगा, फिर तू ख़ुश हो जाएगा।

فدًى لك روحى يا حبيبى وسيدى   فدًى لك روحى أنت وِردٌ مُنضَّرُ

245- हे मेरे प्यारे और मेरे पेशवा! मेरी रूह तुझ पर क़ुर्बान और मेरे प्राण तुझ पर न्योछावर, तू तो तरोताज़ा गुलाब है।

وما أنت إلا نائب الله فى الورى   وأعطاك ربّك هذه ثم كوثَرُ

246- और तू ही लोगों में ख़ुदा का नायब है, और ख़ुदा ने तुझे यह नेमत भी दी है और (आबे) कौसर भी।

ويعجز عن تحميد حسنك مؤمنٌ   فكيف مُحمِّدُك الذى هو يُكفِرُ

247- तेरी विशेषता की पूर्ण प्रशंसा करने में तो मोमिन भी असमर्थ है, फिर काफ़िर ठहराया जाने वाला व्यक्ति तेरी प्रशंसा का हक़ कैसे अदा कर सकता है।

يكفّرنى شيخ وتتلوه أُمّةٌ   وما إنْ أراه كعاقل يتدبّرُ

248- एक शैख़ मेरी तक्फ़ीर कर रहा है, और एक गिरोह

उसके पीछे चल रहा है। मैं उसे ऐसे बुद्धिमान की तरह नहीं पाता जो सोच-विचार से काम लेता हो।

يُرى ظهره عند النضال كثعلبٍ و كالذئب يعوى حين يهذى و يهجُرُ

249- मुक़ाबले के समय वह लोमड़ी की तरह अपनी पीठ दिखाता है, और जब व्यर्थ और अनर्गल बकता है तो भेड़िए की तरह चिल्लाता है।

غبيٌّ عَتِيٌّ أضرمَ الجهلُ غَيْظَه كجُلمودِ صخرٍ جهلُه لا يُغيَّرُ

250- वह मोटी अक़्ल वाला और उद्दंड है, मूर्खता ने उसके ग़ुस्से को भड़का दिया है। उसकी मूर्खता (भारी-भरकम्) चट्टान के पत्थर की तरह हो गई है, जो दूर नहीं सकती।

و كفّرنى بالحقد مِن غير مرّة فقلتُ لك الويلات إنّك أكفَرُ

251- उसने द्वेष से (भरकर) कई बार मेरी तक्फ़ीर की। तब मैंने (उसे) कहा तेरा बुरा हो, तू तो सबसे बड़ा काफ़िर है।

ويسعى لإيذائى ويسعٰى بزوره علىّ حريص كالعدا لو يقدرُ

252- वह मुझे दु:ख देने की कोशिश करता है और अपने झूठ के द्वारा चुग़ुलखोरी करता है और मेरे ख़िलाफ़ दुश्मनों की तरह उसकी नीयत ख़राब है। यदि उसका वश चले (तो वह मुझे क़त्ल कर दे)।

عجبتُ له ما يتقى اللهَ ذرّةً أَشِقْوةُ هذا المرء أمرٌ مقدَّرُ

253- मुझे उस पर आश्चर्य है कि वह ख़ुदा से तनिक भी नहीं डरता। क्या उस आदमी की बद्बख़्ती पहले से तय है?

فطورًا يردّ البينات وتارةً يحرّف قول المصطفٰى ويغيّرُ

254- कभी तो वह खुले-खुले निशानों का इन्कार करता है और कभी हदीस-ए-नबवी में फेरबदल और तब्दीली करता है।

قصدتُ هداه ترحُّمًا فتمايَلا على الرجس والبلوى فكيف أطَهِّرُ

255- मैंने तो हमदर्दी से उसे सन्मार्ग दिखाने का इरादा किया था, पर वह गन्दगी और उद्दण्डता की ओर झुका तो मैं उसे कैसे नेक बनाऊँ।

وقال يمين الله ما لك ناصر فآليتُ إنّ الله معنا فنظفَرُ

256- और उसने कहा, अल्लाह की क़सम! तेरा कोई मददगार नहीं होगा। मैंने भी क़सम खाई कि नि:सन्देह अल्लाह हमारे साथ है और हम ही विजय पाएँगे।

ولما أُريدُ علاجه مِن نصيحة يسبُّ ويُبدى كلَّ ما كان يُضمِرُ

257- और जब मैं हमदर्दी से उसके इलाज का इरादा करता हूँ तो वह गाली देने लगता है, और जो कुछ दिल में छुपाए रखता था उसे उगल देता है।

وجاهدتُ للهِ الكريمِ لهديه فما قلَّ مِن أوهامه بل تكثُرُ

258- और ख़ुदा की ख़ातिर मैंने उसकी हिदायत के लिए ज़ोर लगाया लेकिन उसके सन्देहों में कोई कमी न आई, बल्कि वे बढ़ते ही जा रहे हैं।

عجبتُ لختم الله كيف أضلَّه يردّ النصوصَ كأنه لا يُبصِرُ

259- मैं अल्लाह की मुहर पर आश्चर्यचकित हूँ कि उसने उसे कैसे गुमराह ठहराया है कि वह क़ुर्आन की आयतों को इस तरह ठुकरा रहा है कि मानो कुछ देखता ही नहीं।

خيالاته كالنائمين ضعيفة نَؤُومٌ فيُبغِضُ كلَّ من هو يُسهِرُ

260- उसके विचार सोने वालो की तरह कमज़ोर हैं, वह (बेख़बरी की) घोर निद्रा में है और हर जगाने वाले से ईर्ष्या-द्वेष

रखता है।

وإنا نسهّده وداداً وشفقةً فيهجُونِ مِن جهل ولا يَتَخَفَّرُ

261- हम तो उसको दोस्ती और हमदर्दी से जगाते हैं, पर वह अनर्गल अलाप कर मूर्खता से मेरी बुराई करता है और शर्म नहीं करता।

له كتب السبُّ والشتمُ حَشْوُها شريرٌ فيستقرى الشرور ويفخَرُ

262- उसकी किताबों में गाली-गलौज भरी हुई है। वह उद्दण्ड है और हमेशा झगड़ों की ताक में रहता है और उस पर गर्व भी करता है।

يغوص كدلوٍ عند خوض فيرجعَنْ بحَمْإٍ وما يسقيه ماءً! تفكُّرُ

263- वह गहन सोच-विचार के समय डोल की तरह ग़ोता लगाता है और कीचड़ लेकर लौटता है, ऐसी हालत में वह सोच-विचार उसे कोई ज्ञान नहीं पहुँचाता।

بعيد من التقوى فتسمع أنه كباقورة الاضحى بِعيدٍ يُنحَرُ

264- वह तक़्वा (संयम) से दूर है। तू शीघ्र ही सुन लेगा, कि किसी ईद के (दिन के) साथ वह क़ुर्बानी की गायों की तरह ज़िब्ह किया जाएगा।

لقد زيّن الشيطان أقواله له يوسوسه وقتًا ووقتًا يكوّرُ

265- शैतान ने उसकी बातें उसे अच्छी तरह सजाकर दिखाई हैं, कभी तो वह उसे भ्रम में डालता है और कभी उसकी अक़्ल पर पर्दे डाल देता है।

وأ كفرَنى بخلا وجهلا و دَنْأَةً ووافقَه خَلقٌ ضرير مُدَعْثَرُ

266- उसने द्वेष, मूर्खता और ओछेपन से मेरी तक्फ़ीर की है और (धार्मिक दृष्टि से) अन्धे और मूर्ख लोग उससे सहमत हुए हैं।

يقولون إنا قادرون على الاذٰى فقلنا اخسؤوا إن المهيمن أقدَر

267- वे कहते हैं कि हम दु:ख देने पर समर्थ हैं। हमने कहा चलो हटो, बचाने वाला ख़ुदा सबसे अधिक सर्वशक्तिवान् है।

فيا علماء السوء ما العذرُ فى غدٍ؟ أيُلْعن مثلى مسلمٌ ويُكفَّرُ؟

268- हे उलमा-ए-सू (दुनियादार उलेमा)! कल (क़ियामत के दिन) तुम्हारा क्या उज़र (बहाना) होगा। क्या मेरे जैसे मुसलमान पर लानत डाली जा सकती है और उसकी तक्फ़ीर की जा सकती है?

وما غيظكم إلا لعيسى واسمه أيدعٰى بهذا الاسم شخص محقَّرُ

269- तुम्हारा ग़ुस्सा तो सिर्फ़ ईसा का दावा और उसका नाम इख़्तियार करने पर है। क्या (ख़ुदा की ओर से) कोई ओछा आदमी भी ऐसे नाम से पुकारा जा सकता है?

وما تعلمون شؤون ربى وفضله ويعلم ربى كل نفس وينظُرُ

270- तुम ख़ुदा के कामों और उसकी कृपा को नहीं जानते, और मेरा रब्ब हर आदमी को जानता है और (सब कुछ) देख रहा है।

أنعمةُ ربّى فى يديكم محاطة؟ ويفعل ربى ما يشاء ويُظهِرُ

271- क्या मेरे रब्ब की नेमत (इनाम) तुम्हारे हाथों में क़ैद है? हालाँकि मेरा रब्ब जो चाहता है करता है और उसको प्रकट कर देता है।

أنحن نفرّ من النّبى وَ بَابه خَفِ اللّٰهَ يا صيدَ الرٰى كيف تجسُرُ

272- क्या हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (के अनुकरण) और उसके प्रेम से भाग सकते हैं?

हे तबाही और बर्बादी के शिकार! अल्लाह से डर, तू कैसा दुस्साहस कर रहा है।

أنترك قرآنا كريمًا و دُررَه فمالك لا تدرى صلاحا و تَفجُرُ

273- क्या हम क़ुर्आन करीम और उसके मोतियों को छोड़ दें? तुझे क्या हो गया है कि तू भलाई (और सुधार) को समझता ही नहीं और गुनहगार बन रहा है।

أاخترتَ رجسا بعد خمسين حجّة؟ وقد كنتَ تشهد أن أحمَدَ أطهرُ

274- क्या मैंने पचास साल के बाद नापाकी (गन्दगी) को पसन्द कर लिया है? हालाँकि तू तो गवाही दिया करता था कि अहमद बहुत पाकबाज़ है।

وتعلم أنى حِذْرَيانٌ ومتقِى وتعلَم زَأْرِ وبعدهُ تَتنمَّرُ

275- और तू जानता है कि मैं बहुत परहेज़गार और मुत्तक़ी (संयमी) हूँ। और तू मेरी दहाड़ को भी जानता है फिर भी इसके बाद तू चीता बनता है!!!

تبصَّرْ خصيمى هل ترى من دلائلٍ علىٰ ما تقول وفكِّرَنْ كيف تَكفُرُ

276- हे मुझसे झगड़ने वाले! देख, क्या तेरे पास इस बात पर कोई प्रमाण है जो तू कहता है? और ज़रूर सोच कि तू कैसे काफ़िर (अधर्मी) कहता है?

أنحن تركنا قبلةَ الله شقوةً؟ أنَنبِذُ صحفَ الله كفرًا ونهجُرُ؟

277- क्या हमने ख़ुदा के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को (दुर्भाग्य से) छोड़ दिया है? क्या हम ख़ुदा की किताबों को कुफ़्र करते हुए फेंक रहे हैं और छोड़ रहे हैं?

أنرغب عن دين النبى المصطفٰى؟ ودينًا مخالفَ دينه نتخيَّرُ

278- क्या हम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन (मज़हब) से मुँह फेर रहे हैं और उस मज़हब के विपरीत कोई

और मज़्हब अपना रहे हैं?

سيُخزى المهيمن كاذبا تاركَ الهدى كِلانا أمام الله والله ينظُرُ

279- सर्वज्ञ ख़ुदा, झूठे और इस्लाम की शिक्षा के छोड़ने वाले को अवश्य रुसवा कर देगा। हम दोनों ही अल्लाह के सामने हैं और अल्लाह देख रहा है।

و إنى أنا الرحمٰن ناصرُ حِزبه★ وَمَنْ كَانَ مِنْ حِزْبِيْ فَيُعْلٰى وَ يُنْصَرُ

280-★ (ख़ुदा ने अपने इल्हाम से फ़रमाया) मैं ही रहमान हूँ जो अपनी जमाअत का मददगार हूँ और जो व्यक्ति मेरी जमाअत में से होगा वही प्रतिष्ठित किया जाएगा और सहायता दिया जाएगा।

وما كان أن تُخفَى الحقائقُ دائما وما يكتم الإنسان فالدهر يُظهِرُ

281- सच्ची बातें हमेशा के लिए छुपाई नहीं जा सकतीं, और जो कुछ इन्सान छुपाता है ख़ुद ज़माना उसे ज़ाहिर कर देता है।

وليس خفاءٌ مغلَقٌ فى ديننا وما جاء مِن هَدْيٍ مُبينٍ فنؤثِرُ

282- हमारे दीन (इस्लाम) में कोई भी छुपी हुई अनसुलझी बात नहीं, और जो खुली-खुली हिदायत आ चुकी है हम उसे ही प्रधानता देते हैं।

سيُكشَف سرُّ صدورنا وصدوركم بيوم يقود إلى المليك و يَحْشُرُ

283- जब लोगों को इकट्ठा करके ख़ुदा के समक्ष पेश किया जाएगा (उस दिन) हमारे दिलों और तुम्हारे दिलों का राज़ ज़रूर खोल दिया जाएगा।

فمن كان يسعى اليوم فى الدين مفسدًا فيُحرَق فى يومٍ لظاه تُسعَّرُ

★ هذا الهام من الله تعالى (इस शैर का प्रथम पद ख़ुदा तआला की ओर से इल्हाम हुआ है।)

284- जो आज मुफ़्सिद (उपद्रवी/फूट डालने वाला) बनकर दीन (इस्लाम) में बिगाड़ की कोशिश करता है वह ऐसे दिन जलाया जाएगा जिस दिन अंगारा ख़ूब भड़काया जाएगा।

وإنا على نور وأنتم على اللظى وما يستوى عُميٌ و قومٌ يُبصِرُ

285- और हम तो (ज्ञान की) रौशनी पर क़ायम हैं और तुम आग के अंगारे पर। अन्धे और देखने वाले बराबर नहीं हो सकते।

ومن كان محجوبًا فيأتى مُوَسوِسٌ فيَكُبّه فى هوّة و يدمّرُ

286- और जो व्यक्ति (ज्ञान और विवेक से) रहित हो उसके पास शक डालने वाला शैतान आता है और वह उसको (नर्क के) गड्ढे में औंधे मुँह गिराकर तबाह व बर्बाद कर देता है।

وما يصطفى اللهُ العليمُ مزوّرًا وما يجتبى الفُسّاقَ ربٌّ أطهَرُ

287- सर्वज्ञ ख़ुदा, छलिया को प्रतिष्ठा नहीं दिया करता और दुराचारियों को नहीं चुनता।

فذَرْنى وخلّاقى ولستَ مصيطرا علىّ و لا حَكَمٌ و قاضٍ فتأمُرُ

288- तू मुझे और मेरे पैदा करने वाले को छोड़ दे, मुझ पर तू कोई दारोग़ा नहीं है और न हाकिम और क़ाज़ी है कि हुक्म चलाए।

وآثرَنى ربّى وأخزاك خالقى فقد ضاع يا مسكين ما كنتَ تَبذُرُ

289- मेरे रब्ब ने मुझे (पसन्द किया है और) प्रधानता दी है और तुझे रुसवा किया है। हे दरिद्र! जो तू बोता रहा है वह अब किसी काम का नहीं रहा।

أليست تقاة الله شرطا لمؤمن فما لك يومَ الاخذ لا تتذكرُ

290- क्या ख़ुदा का तक़्वा (डर) मोमिन के लिए शर्त नहीं? तुझे क्या हो गया है कि तू पकड़ के दिन को याद नहीं करता।

وعدوتَ حتى قلتَ لستُ بآئب وإن الهدى بعد القِلَى مُتوعِّرُ

291- और तू (दुश्मनी में) हद से इतना आगे बढ़ गया कि कह दिया कि मैं तो (अब) वापिस आने वाला नहीं हूँ, इतनी दुश्मनी के बाद हिदायत पाना बहुत मुश्किल है।

أتُفتى بما لم يُنـزل الله مِن هدًى وتُكفِر مَن ألقى السلام و تَجسُرُ

292- क्या तू ऐसी बात का फ़त्वा देता है जिसके लिए अल्लाह ने कोई आदेश नहीं दिया, और जो सलाम करता है उसे काफ़िर ठहराता है और दुस्साहस करता है?

ووالله بل تالله لو كنتَ مخلصًا أريتُك آياتٍ ولكن تُزوِّرُ

293- ख़ुदा की क़सम! अगर तू निश्छल होता तो मैं तुझे निशानात दिखाता, लेकिन तू तो छल और झूठ से काम ले रहा है।

ولو قبل إكفاري سألتَ أمانة لعمري هُدِيتَ وصرتَ شيخا يُبصِرُ

294- यदि तू मुझे काफ़िर ठहराने से पहले मुत्तक़ी (संयमी) बनकर (मुझसे) पूछ लेता तो मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि तू हिदायत पा जाता और एक दूरदर्शी शैख़ (प्रतिष्ठित व्यक्ति) बन जाता।

ولكن ظننتَ ظنونَ سوءٍ بعجلةٍ كغُولٍ هوًى والغولُ لا يتطهَّرُ

295- लेकिन तू सांसारिकता की चाह में जल्दबाज़ी से एक शैतान की तरह बद्गुमानी करने लग गया, और शैतान तो सदाचारी नहीं होता।

هل العلم شيء غير تعليم ربنا وأىّ حديث بعده نتخيّرُ

296- क्या उस ज्ञान का कोई महत्त्व है जिसे हमारे रब्ब ने नहीं सिखाया, उसके बाद हम और कौन सी बात अपना सकते हैं?

كتابٌ كريمٌ أُحكمتْ آياته وحياته يحيى القلوبَ ويُزهِرُ

297- वह प्रतिष्ठित किताब है, उसकी आयतें (बातें) सुस्पष्ट हैं, और उसकी तरोताज़गी दिलों को ज़िन्दा करती है और (चेहरे को) रौनक़ प्रदान करती है।

يدُعُّ الشقيَّ فلا يمسُّ نكاته ويروى التقيَّ هدًى فينمو ويثمرُ

298- वह धृष्ट (दुराचारी) को धक्के देती है वह उसके रहस्यों को नहीं जान सकता, और शिष्ट (सदाचारी) को सन्मार्ग से तृप्त करती है। फिर वह बढ़ता है और फल देता है।

ومتَّعنى مِن فيضه لطفُ خالقى فإنى رضيعُ كتابِه ومُخَفَّرُ

299- और मेरे रब्ब की कृपा ने अपने उपकार की (ज्ञानरूपी) दौलत से मुझे भर दिया है। मैं उसकी किताब का दूध पीता हूँ और उसकी रक्षा में खड़ा हूँ।

كريمٌ فيؤتى من يشاءُ علومَه قديرٌ فكيف تكذبَنَّ وتَهكِرُ

300- वह दानशील है, जिसे चाहता है अपने (अस्तित्व और विशेषताओं का) ज्ञान देता है, वह हर बात पर समर्थ है। फिर तू इस बात को कैसे झुठला सकता है और कैसे इस पर आश्चर्य कर सकता है।

وإنى نظمتُ قصيدتى من فضله لتعلم فضلُ الله كيف يُخيِّرُ

301- और मैंने ख़ुदा के उपकार से अपना क़सीद: (छंदोबद्ध शैली में) पिरोया है ताकि तू जान ले कि ख़ुदा का उपकार किस तरह प्रतिष्ठित बना देता है।

تعال بميدان النضال شجاعةً ليظهَرَ علمك فى الجدال وتُسبَرَ

302- तू बहादुर बनकर मैदान-ए-मुक़ाबला में आ जा, ताकि मुक़ाबले में तेरा ज्ञान ज़ाहिर हो और तू आज़माया जाए।

تريدون ذلتنا ونحن هوانَكم فيُكرم ربّى من يشاء وينصُرُ

303- तुम लोग हमारी रुसवाई चाहते हो और हम तुम्हारी रुसवाई, अत: मेरा रब्ब जिसे चाहेगा यश और सहायता प्रदान करेगा।

أتطلب منى آية الخزى والردى و يأتيك أمرُ الله فَجْأً فتُبْتَرُ

304- क्या तू मेरी ओर से रुसवाई और बर्बादी का निशान माँगता है? तुझ पर अल्लाह का फ़ैसला अचानक आएगा और तू बर्बाद हो जाएगा।

وحمّدتَنى من قبلُ ثم ذمّمتَنى فقد لاح أنك خَيْتَعُورٌ مزوّرُ

305- तूने पहले मेरी प्रशंसा की फिर मेरा उपहास उड़ाया। अत: स्पष्ट हो गया कि नि:सन्देह तू अवसरवादी (दोगला) और छलिया है।

وإنى أنا الخطّار إن كنتَ طاعنا رماحى مثقّفة وسيفى مُذَكَّرُ

306- यदि तू तीरन्दाज़ है तो मैं कुशल तीरन्दाज़ हूँ। मेरे तीर सीधे हैं और तलवार फ़ौलादी है।

وإنا جَهَرْنا بِثْرَ دينِ محمّدٍ وأنت تسبّ هوًى وفى السّبّ تجهَرُ

307- हमने तो दीन-ए-मुहम्मदी की (शिक्षाओं की) गहराई को ज़ोर-ज़ोर से ज़ाहिर कर दिया है और तू स्वार्थपरायणता का शिकार होकर गालियाँ देता फिरता है और वह भी चिल्ला-चिल्लाकर।

متى نَدنُ منك ترحمًا تتباعدُ ونريد حل العقد رُحمًا فتَحْتَرُ

308- जब हम हमदर्दी से तेरे पास आते हैं तो तू दूर भागता है, और (जब) हम हमदर्दी से (तेरी) गाँठ खोलना चाहते हैं तो तू (ग़ुस्से और अकड़ से) उसे और जकड़ लेता है।

وسيلُك صعبٌ لكن أنت غثاؤه وغيثك حِمْرٌ لكن أنت تُدَعْثَرُ

309- तेरा (छल से भरा) सैलाब तो बहुत तेज़ है पर तू तो

उसकी झाग ही है, तेरी (मुख़ालिफ़त की) वर्षा घनघोर है पर तू ही तबाह होगा।

وما إن أرى فيك التخوفَ والتقى وإن الفتى يخشى إذا ما يُذْعَرُ

310- और मैं तुझ में ख़ुदा का डर और तक़्वा (संयम) बिल्कुल नहीं देखता, हालाँकि एक शूरवीर भी ख़ुदा से डरता है जब उसे (ख़ुदा से) डराया जाए।

ومن كذّب الصدّيق هُتِّكَ سرُّه ومن أكثر التكفير يومًا سيُكفَرُ

311- जो सच्चे को झुठलाता है उसका पर्दा चाक किया जाएगा, और जो (उसे) काफ़िर-काफ़िर कहता फिरता है वह भी किसी दिन अवश्य काफ़िर ठहराया जाएगा।

وإن تضربَنَّ على الصَّلاة زجاجةً فلا الصخرُ بل إن الزجاجة تُكسَرُ

312- और यदि तू चट्टान पर शीशे को पटके तो चट्टान नहीं बल्कि शीशा ही टूटेगा।

فهل في أناس مُكفِرين مدبِّرٌ يدبِّر في قولي وفي الكتب ينظُرُ

313- काफ़िर-काफ़िर कहने वालों में से क्या कोई सोचने वाला भी है? जो मेरी बातों में सोच-विचार से काम ले और मेरी किताबों को गहरी नज़र से देखे।

ووالله إني آيسٌ مِن صلاحهم وما إن أرى شخصا يكفّ ويحذَرُ

314- ख़ुदा की क़सम! मैं उनकी विद्वता से निराश हूँ और मैं (उनमें) ऐसा कोई व्यक्ति नहीं देखता जो तक्फ़ीर से रुक जाए और (ख़ुदा से) डरे।

وقلتُ لشيخ قد تقدّمَ ذكرُه إلامَ تكفّرنا وتهجو وتصْعَرُ

315- और मैंने उस शैख़ को जिसका वर्णन पहले हो चुका है

कहा, तू कब तक हमें काफ़िर और बुरा कहता रहेगा और अहंकार से गाल फुलाकर भागता रहेगा।

تعال نباهِلْ فى مقامٍ معيّن ليُهلَك من هو كاذب ومزوّرُ

316- तू आ, कि एक निर्धारित स्थान में हम (इस बात पर) मुबाहला कर लें कि जो झूठा और मक्कार है वह हलाक हो जाए।

حلفتُ يمينا مِن لِعانٍ مؤكّدٍ فإنى بميدان اللعان سأحضرُ

317- मैंने बार-बार लानत की घोषणा करके क़सम खाई है कि मैं मुबाहला के मैदान में ज़रूर हाज़िर हूँगा।

فإذا أتى بعد الترصد يومنا فقمتُ ولم أكسل وما كنت أقصُر

318- फिर जब इन्तिज़ार के बाद हमारा वह दिन आ गया तो मैं तैयार हो गया, और न मैंने सुस्ती की और न ही कोताही।

خرجنا وخَلقٌ كان يسعى وراءنا لينظر كيف يباهلنْ ويكفِّرُ

319- हम (निर्धारित स्थान की ओर) निकल खड़े हुए और लोग हमारे पीछे तेज़ी से आ रहे थे ताकि देखें कि वह शैख़ किस तरह मुबाहला करता है और तक्फ़ीर करता है।

فجاء ولكن لم يباهل مخافةً وأعرضَ حتى لام من هو يُبصِرُ

320- अत: वह आ तो गया लेकिन डर के मारे उसने मुबाहला न किया और मुबाहले से मुँह फेर लिया, यहाँ तक कि देखने वाले उसे लान-तान करने लगे।

ولم يتمالك أن يباهل كالفَتَى وظل يُرينا ظهرَ جُبنٍ ويُدبِرُ

321- और उसे हिम्मत न हुई कि वह (ख़ुदा के) एक योद्धा की तरह मुबाहला करे, और वह हमें बुज़दिली (कायरता) से पीठ दिखाता रहा और पीठ फेरकर चला गया।

وجاشت إليه النفس خوفا وخشية وقد خفتُ أن يُغشى عليه ويُحظَرُ

322- और वह डर और ख़ौफ़ के मारे हाँफने लगा, फिर मैं डरा कि वह कहीं बेहोश होकर मर न जाए।

ووجدتُه بحرًا ومُوجِسَ خيفةٍ كأن حسامي يهجُمَنّ ويبتَرُ

323- और मैंने उसे अत्यन्त भौचक्का और डर में डूबा हुआ पाया, मानो कि मेरी तलवार अवश्य हमला कर देगी और उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी।

فقلتُ له لما أبى إنّ حجّتى لقد تمّ واللّٰهُ العليم سيأمُرُ

324- जब उसने (मुबाहला से) इन्कार किया तो मैंने उसे कह दिया कि मेरी बहस नि:सन्देह पूरी हो चुकी है और अब सर्वज्ञ ख़ुदा अवश्य कोई निर्णय करेगा।

وإن شئتَ سَلْ مَن كان فينا حاضرا وما قلتُ إلا ما هو المتقرّرُ

325- यदि तू चाहे तो उस व्यक्ति से पूछ ले जो हम में मौजूद था, और मैंने वही बात कही है जो ठोस और प्रमाणसिद्ध है।

وباهلَنى مِن غَزْنَوِيّين مُكفِرٌ وقوفا لَدى شجرات أرض يَشجُرُ

326- और ग़ज़नवियों में से एक काफ़िर-काफ़िर कहने वाले ने मुझसे उस समय मुबाहला किया, जब वह वृक्षों वाली ज़मीन के पास खड़ा होकर बहस कर रहा था।

فقمتُ بصحبى لِلدّعاء مباهلا وكان معى ربى يرانى وينظرُ

327- तो मैं अपने साथियों के साथ मुबाहला की दुआ करता हुआ खड़ा हो गया और मेरा रब्ब मेरे साथ था, मुझे देख रहा था और मुझ पर कृपा कर रहा था।

فصَعَّد صرخ الصادقين إلى السّما لِما أخذتهم رقّةٌ وتأثُّرُ

328- तो सत्यनिष्ठों की फ़रियाद ख़ुदा तक पहुँच गई, क्योंकि उनके आँसू बहने लगे और उन पर प्रभाव प्रकट हो गए।

فأعجبَ خلقًا جيشُهم وبكاؤهم فبكوا بِمَبْكاهم وقام المحشرُ

329- अत: उनके रोने-बिलखने ने लोगों को इतना स्तब्ध कर दिया कि उनको रोता देखकर वे भी रो पड़े और एक क़ियामत बरपा हो गई।

وظلّ المباهل يقذِفَنَّ مكفِّرًا فيا عجبًا مِن دينهم كيف كفّروا

330- और मुबाहला करने वाला प्रतिद्वन्द्वी ग़ज़नवी काफ़िर-काफ़िर कहते हुए लांछन लगाता रहा। उनके ढंग पर आश्चर्य है कि उन्होंने किस तरह काफ़िर (अधर्मी) ठहराया।

وما الكفر إلا ما يسمّيه ربُّنا فذَرْهم يسبّوا كيف شاءوا ويُكفِروا

331- कुफ़्र (अधर्म) तो वह है जिसको हमारा रब्ब कुफ़्र (अधर्म) कहे। तू उन्हें (उनकी हालत पर) छोड़ दे, वे जिस तरह चाहें गालियाँ दें और जिस तरह चाहें तक्फ़ीर करें।

وإنا توكّلْنا على الله ربّنا وقد شَدَّ أَزْرَ العبد ربٌّ مُبَشِّرُ

332- हमने अल्लाह पर जो हमारा रब्ब है पूर्णत: भरोसा किया है, और ख़ुशख़बरी देने वाले रब्ब ने (ख़ुशख़बरी देकर) अपने बन्दे का साहस बढ़ा दिया है।

وآخر دَعْوانا أَن الحَمْدُ كله لِربٍّ يرٰى حالى و قالِى و ينصُرُ

333- और हमारी आख़िरी घोषणा यही है कि सारी की सारी प्रशंसा उसी रब्ब के लिए है जो मेरी करनी-कथनी देखता है और सहायता करता है।

तीसरा पवित्र क़सीदः

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में)

بِكَ الحَوْلُ يَا قَيّومُ يا منبعَ الهدى فوفِّقْ لى أن أثنى عَليك وأحمدا

1- हे हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और दूसरों को ज़िन्दगी देने वाले ख़ुदा! हे हिदायत (ज्ञान) के मुख्य स्रोत! तुझसे ही शक्ति मिलती है। अतः तू मुझे शक्ति दे कि मैं तेरी स्तुति और प्रशंसा कर सकूँ।

تتوب على عبدٍ يتوب تندُّما وتنجى غرِيقًا فى الضَّـلالة مُفسدا

2- तू ही उस बन्दे पर दया करता है जो पश्चात्ताप से तौबा करे और तू ही दुष्ट को जो गुमराही (अन्धकार) में डूबा हुआ हो, गुमराही से बचाता है।

كبير المعاصى عند عفوك تَافهٌ فما لك فى عبدٍ أَلَمَّ تردُّدا

3- तेरी क्षमा के समक्ष बड़े से बड़ा गुनाह (पाप) भी एक छोटी सी बात है। फिर तेरा उस बन्दे से क्या बरताव होगा जिसने दुविधा (असमंजस) में छोटा सा गुनाह किया।

تحيط بكنهِ الكائنات وسِرِّها وتعلم منهاج السِّوٰى ومُحَرَّدا

4- तू संसार की यथार्थता (सच्चाई) और उसके रहस्य को जानता है, और तू सन्मार्ग और कुमार्ग को भी जानता है।

ونحن عبادك يا إلهى وملجئى نخرّ أمامك خشيةً وتعبُّدا

5- हे मेरे ख़ुदा और मेरी पनाह! हम तेरे बन्दे हैं और भय और प्रेम से तेरे समक्ष बंदगी में झुकते और सिज्दा करते हैं।

وما كان أَنْ يخفى عليكَ نُحاسُنا وتعلم ألوان النحاس وعَسْجَدا

6- तुझसे हमारा दोग़लापन (दोष) छुपा नहीं रह सकता, तू ताँबा और सोने के रंगों को भलीभाँति जानता है।

و كم مِن دَهِيٍّ أهلكتهم من شرورهم وأخذتَهم و كسرتَ دَأْيًا مُنضَّدا

7- कितने ही चालाक लोगों को तूने उनके दुराचारों के कारण उन्हें तबाह कर दिया, और उन्हें पकड़ा और उनके सीनों की मज़बूत हड्डियों को तोड़ डाला।

و كم مِن حقير فى عيونٍ جعلتَهم بأعينِ خَلقٍ لؤلوئًا وزَبرجَدا

8- और बहुत से तुच्छ नज़र आने वालों को तूने लोगों की आँखों में मोती और अनमोल रत्न बना दिया।

وتعمُر أطلالا بفضل ورحمةٍ وتَهُدّ مِن قهرٍ منيفًا مُمَرَّدا

9- तू अपनी कृपा और दया से खंडहरों को आबाद कर देता है और अपने प्रकोप से ऊँचे और चमकते हुए महलों को ढहा देता है।

وما كان مِثلُك قدرةً وترحمًا ومثلُك ربّى ما أرٰى متفردا

10- दया और शक्ति में तुझ जैसा कोई भी नहीं, और हे मेरे रब्ब! मुझे तुझ जैसा कोई अद्वय और एकांकी दिखाई नहीं देता।

فسبحان مَن خلَق الخلا ئق كلها وجعل كشيئٍ واحد متبددا

11- पवित्र है वह हस्ती जिसने समस्त लोगों को पैदा किया और बिखरे हुओं को एक वजूद की तरह बना डाला।

غيورٌ يُبيد المجرمين بسخطه غفور ينجّى التائبين من الرٰدى

12- वह स्वाभिमानी है पापियों का अपने प्रकोप से विनाश कर देता है, वह क्षमा करने वाला है पश्चात्ताप करने वालो को तबाही से बचा लेता है।

فلا تأْمَنَنْ مِن سخطه عند رحمه ولا تيئسَنْ من رُحمه إن تَشدَّدا

13- उसकी दया के समय उसके प्रकोप से निडर मत हो, और यदि वह कभी कष्ट में डाले तो उसकी दया से कभी नाउम्मीद मत हो।

وإن شاء يبلو بالشدائد خَلْقَه وإن شاء يُعطيهم طريفًا ومُتْلَدا

14- अगर वह चाहे तो कष्टों से लोगों को आज़माइश में डाले और अगर चाहे तो उनको नया और पुराना धन प्रदान कर दे।

وحيدٌ فريدلا شريكَ لذاته قويٌّ عليٌّ فى الكمال توحَّدَا

15- वह अपनी हस्ती में अद्वय और एकांकी है। उसका कोई भागीदार नहीं, वह अत्यन्त शक्तिशाली है, अत्यन्त श्रेष्ठ है और महानता में अद्वितीय है।

ومن جاءه طوعا وصدقا فقد نجا وأُدْخِلَ وِرْدًا بعد ما كان مُلْبَدا

16- और जो ख़ुदा के पास चाहत और सत्यनिष्ठा से आया वह गुनाहों से लथपथ होने के बावजूद मुक्ति पा गया और स्वर्ग में दाख़िल कर दिया गया।

له الملك والملكوت والمجد كله وكلٌّ له ما لاح أو راح أو غدا

17- शासन, स्वामित्व और महानता सब कुछ उसी को प्राप्त है, और हर चीज़ उसी की है जो पैदा हुई या सुबह या शाम को समाप्त हो गई।

ومن قال إن له إلٰها قادرًا سواه فقد تبع الضلالة واعتدى

18- और जिसने कहा कि उसके अतिरिक्त उसका कोई अन्य सामर्थ्यवान् उपास्य (ख़ुदा) है, तो उसने गुमराही (पथभ्रष्टता) का अनुसरण किया और सरकश (बहुरुपिया)हो गया।

هدى العالمين وأنزل الكتب رحمةً وأرسل رسلا بعد رسل وأكّدا

19- उसने लोगों को हिदायत दी और अपनी रहमत से किताबें

अवतरित कीं और रसूलों (पैग़म्बरों) के बाद रसूल (पैग़म्बर) भेजे, और इस सुन्नत (विधान) को दृढ़ किया।

وأنت إلٰهى مأمنى ومفازتى وما لى سواك معاونٌ يدفع العدا

20- और हे मेरे ख़ुदा ! तू मेरी पनाह और मेरी चाहत है और तेरे सिवा मेरा कोई मददगार नहीं जो दुश्मनों को भगाए।

عليك توكلنا وأنت ملاذنا وقد مسَّنا ضُرٌّ وجئناك للندى

21- हमें तुझ पर ही भरोसा है और तू ही हमारी पनाह है। हमें दु:ख पहुँचा है और हम उससे मुक्ति के लिए तेरे पास आए हैं।

ولك آيات فى عباد حمدتَهم ولا سيما عبدٌ تسمّيه أحمداً

22- उन बन्दों में तेरे कई निशान हैं जिनकी तूने प्रशंसा की है, और विशेषकर उस बन्दे में जिसका नाम तूने अहमद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) रखा।

له فى عبادة ربه غَلْيُ مِرجَلٍ وفاقَ قلوب العالمين تعبُّدا

23- उस (अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में अपने रब्ब की इबादत में हाँडी जैसा जोश है, और बंदगी में वह समस्त संसार के दिलों से आगे बढ़ गया है।

ومِن وجهه جَلَّى بعيدًا وأقربَا وأصاب وابلُه تِلاعًا وجَدْجَدا

24- और अपनी पवित्र बातों से उसने दूर और नज़दीक को रौशन कर दिया, उसकी वर्षा पहाड़ों पर भी हुई और मैदानों पर भी।

له آيتا موسٰى وروحُ ابنِ مريمٍ وعرفانُ إبراهيمَ دينًا ومَرْصَدا

25- उसे मूसा के दो चमत्कार और ईसा इब्नि मरियम की रूह (जान) प्राप्त है और धर्म और मार्गदर्शन के दृष्टि से इब्राहीम का विवेक और अध्यात्म भी।

و کان الحجاز و ما سواہ کمیّتٍ　　شفیعُ الوری أحیا و أدنی المبَعَّدا

26- हिजाज़ और उसके अतिरिक्त अन्य इलाक़े मुर्दे की तरह थे। (ख़ुदा के समक्ष) समस्त संसार के अनुशंसक (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने (उन्हें ज़िन्दा कर दिया और ख़ुदा से दूर लोगों को (ख़ुदा के) क़रीब कर दिया।

و کان مُکاوَحۃٌ و فسقٌ شعارَھم　　یُباھُون مِرِّیحِین فی سبل الردی

27- अपमान और दुराचार करना उनकी पहचान थी, तबाही और बर्बादी की राहों में मटक-मटक कर चलने में वे गर्व करते थे।

فلم یبق منھم کافر إلا الذی　　أصرَّ بشِقْوتہ علی ما تعوَّدا

28- फिर उनमें से उस व्यक्ति के अतिरिक्त कोई शेष न रहा जो अपनी दुष्टता से उस बात पर अड़ा रहा जिसका वह आदी (अभ्यस्त) था।

شریعتہ الغرّاء مَورٌ معبَّدٌ　　غیورٌ فأحرقَ کلَّ دَیْر و جَلْسَدا

29- उसकी रौशन शरीअत (क़ुर्आन करीम) एक मुख्य सन्मार्ग है (जिस पर हर एक आदमी चल सकता है)। वह स्वाभिमानी है, उसने हर गिरजा और उपासनागृह (की अस्वाभाविक शिक्षा) को निष्प्रभाव कर दिया है।

و أتی بصحف اللّٰہ لا شک أنھا　　کتاب کریم یرفِد المسترفِدا

30- और वह अल्लाह की बातें लाई, इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वह एक ऐसी प्रतिष्ठित पुस्तक है जो पुरस्कार चाहने वाले को पुरस्कृत करती है।

فمن جاءہ ذلا لتعظیم شأنہ　　فیعطی لہ فی حضرۃ القدس سؤددا

31- जो व्यक्ति उसकी महानता और तेज का सम्मान व्यक्त

करने के लिए उसके पास अनुपालक बनकर आता है तो उसे ख़ुदा के दरबार में सरदारी (अगुवाई) दी जाती है।

فيا طالبَ العرفان خُذْ ذيلَ شرعه ودَعْ كلَّ متبوع بهذا المقتدى

32- हे ज्ञान एवं अध्यात्म के इच्छुक! उसकी शरीअत (क़ुर्आन) का दामन पकड़ ले, और उस पेशवा के मुक़ाबले में हर पेशवा को छोड़ दे।

يزكّى قلوب الناس مِن كل ظلمة ومن جاءه صدقا فنوّره الهُدٰى

33- वह लोगों के दिलों को हर अन्धकार से दूर कर देता है, और जो भी उसके पास सत्यनिष्ठ बनकर आता है तो उसे उसकी शिक्षा रौशन कर देती है।

ولما تجلّى نوره التام للورٰى ولَوَّحَ وجهُ المنكرين وسوَّدا

34- जब उसकी व्यापक और सर्वोत्कृष्ट शिक्षा का प्रकाश लोगों पर स्पष्ट हुआ तो इन्कार करने वालों के चेहरे झुलस गए और काले हो गए।

تراءى جمال الحق كالشمس فى الضحٰى ولاح علينا وجهه الطلق سرمدا

35- ईमान और सच्चाई की चमक इस तरह स्पष्ट हो गई जिस तरह सूरज दोपहर में चमकता है, और उसका हमेशा चमकने वाला चेहरा हम पर सुस्पष्ट हो गया।

وقد اصطفيتُ بمُهْجتى ذكرَ حمده وكافٍ لنا هذا المتاع تزوُّدا

36- मैंने अपने दिलोजान से उसकी प्रशंसा करना पसन्द कर लिया, और पूँजी के तौर पर जीवनशैली का यही मार्ग हमारे लिए पर्याप्त है।

وفوّضنى ربّى إلى فيض نوره فأصبحتُ مِن فيضان أحمدٌ أحمدا

37- और मेरे रब्ब ने मुझे उस (नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नूर (प्रकाश) की दानशीलता से ओतप्रोत कर दिया तो मैं अहमद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नूर से अहमद बन गया।

وهذا من الله الكريم المحسنِ وما كان من ألطافه مستبعَدا

38- और यह सब कुछ कृपालु और दयालु ख़ुदा की ओर से है और ऐसा होना उसकी कृपाओं से असम्भव न था।

ووالله هذا كله من محمدٌ ويعلم ربى أنه كان مرشدا

39- और अल्लाह की क़सम ! यह सब कुछ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नूर (प्रकाश) की दानशीलता से है, और मेरा रब्ब भलीभाँति जानता है कि वह ही मुर्शिद (सन्मार्गदर्शक धर्मगुरू) है।

وفى مُهْجتى فورٌ وجيشٌ لامدحا سُلالةَ أنوار الكريم محمداً

40- और मेरे अन्दर एक जोश और उमंग है कि मैं कृपालु ख़ुदा के नूरों के सार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा करूँ।

كريم السجايا أكملُ العلم والنهٰى شفيع البرايا منبع الفضل والهدى

41- वह श्रेष्ठ शिष्टाचार वाला ज्ञान और बुद्धि में सर्वोत्कृष्ट है, और सम्पूर्ण मानवजाति का अनुशंसक एवं सौहार्द और सन्मार्ग का सबसे बड़ा स्रोत भी।

تبصَّرْ خصيمى هل ترى مِن مشاكهٍ بتلك الصفات الصالحات بأحمدا

42- मुझसे झगड़ने वाले देख! क्या तू इन महान विशेषताओं में अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई हमतुल्य पाता है?

بشير نذير آمرٌ مانع معًا حكيم بحكمته الجليلة يُقتدٰى

43- वह (स्वर्ग की) शुभसूचना देने वाला और (नर्क से) डराने वाला है, और नेकियों का आदेश देने वाला और बुराइयों से रोकने वाला भी है। वह पारंगत है और अपनी अत्युत्तम तर्कसंगत (शिक्षा और) नीति के कारण अनुकरण किया जाता है।

هدى الهائمين إلى صراطٍ مقوَّم ونوّر أفكار العقول وأيّدا

44- उसने इधर-उधर भटकने वालों का सन्मार्ग की ओर मार्गदर्शन किया और बौद्धिक विचारों को निखारा और उन्हें दृढ़ता प्रदान की।

له طلعةٌ يجلو الظلامَ شعاعُها ذُكاءٌ منير بُرجُه كان بُرْجُدا

45- उसकी ऐसी नूरानी चमक है कि उसकी एक किरण ही अन्धकार को दूर कर देती है। वह ऐसा चमकता हुआ एक सूरज है जिसका गुम्बद एक कम्बल था (जिसे वह ओढ़े हुए थे)।

له درجات ليس فيها مشارِكٌ شفيع يزكّينا و يُدنى المبَعَّدا

46- उसको ऐसे स्थान प्राप्त हैं कि जिनमें उसका कोई भागीदार नहीं। वह (ख़ुदा के समक्ष) अनुशंसक है, हमें पवित्र करता है और दूर को निकट कर देता है।

وما هو إلا نائب الله في الورٰى وفاق جميعًا رحمةً وتودُّدا

47- और वह सृष्टि में अल्लाह का नायब (ख़लीफ़ा)है, और प्रेम और उपकार में सबसे आगे बढ़ गया है।

تخيَّرَه الرحمن مِن بين خلقه وأعطاه ما لم يُعْطَ أحد من الندٰى

48- ख़ुदा ने उसे अपनी सृष्टि में से चुन लिया है और उसे एक ऐसी नेमत प्रदान की है जो किसी को नहीं दी गई।

وقد كان وجه الارض وجهًا مسوَّدا فصار به نورًا منيرا وأغيَدا

49- और धरती अन्धकार से भरी हुई थी फिर उसके द्वारा वह अत्यधिक रौशन और हरी-भरी हो गई।

وأرسله الباری بآیات فضله إلیٰ حزبِ قوم کان لُدًّا ومفسِدا

50- और ख़ुदा तआला ने उसे अपनी कृपा के निशानों के साथ ऐसे लोगों के समूह की ओर भेजा जो अत्यन्त झगड़ालू और उपद्रवी था।

ومُلْكٍ تأبَّطَ کلَّ شرٍّ قومُه وکلٌّ تلا بغیًا إذا راح أو غدا

51- और ऐसे देश की ओर भेजा जिसके निवासियों ने हर बुराई को अपना रखा था और उनमें से प्रत्येक ने हर पल उपद्रव का अनुसरण किया था।

بِلُوبَةِ مکةَ ذاتِ حِقْفٍ عَقَنْقَلٍ بلادٌ تری فیها صفیحا مُصَمَّدا

52- (उसे) मक्का की कंकरीली धरती में भेजा जो पथरीले टीलों वाली थी, और वह ऐसा इलाक़ा था कि तू उसमें ठोस चट्टानें देखता है।

وما کان فیها من زروعٍ ودوحة تُری کالظلیم ثراه أزعَر أربَدا

53- और उसमें कोई खेती और पेड़-पौधे न थे, और उसकी मिट्टी शुतुरमुर्ग़ के रंग की तरह मटमैली, काली और चटियल मैदान नज़र आती है।

تکنَّفَ عَقْوةَ داره ذاتَ لیلة جماعةُ قوم کان لُدًّا ومفسدا

54- एक रात उसके घर का ऐसे लोगों की भीड़ ने घेराव कर लिया जो अत्यन्त झगड़ालू और उपद्रवी थी।

فأدرکه تأییدُ ربٍّ مهیمن ونجّاه عونُ الله من صولة العدا

55- संरक्षक ख़ुदा का उसे समर्थन मिला और उसकी सहायता

ने उसे दुश्मनों के हमले से बचा लिया।

تذكرتُ يومًا فيه أُخرِجَ سيدى ففاضت دموع العين منى بمنتدٰى

56- मुझे वह दिन याद आया जिस दिन मेरे आक़ा (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने घर से निकाले गए तो मज्लिस (सभा) में ही मेरी आँखों से आँसू बह पड़े।

إلى الآن أنوارٌ بِبُرقَةِ يثرِبَ نشاهدُ فيها كلّ يوم تجدُّدا

57- अब तक यसरब (मदीना) की पथरीली ज़मीन में नूर मौजूद हैं, हर दिन हम उनमें अनुपमता देख रहे हैं।

فوجهُ المدينة صار منه منوّرا وبارك حُرَّ الرمل وَطئًا و قَردَدا

58- मदीना की बस्ती आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कारण से चमक उठी और आप ने अपने पगचिन्हों से पूर्णत: रेतीली और पथरीली ज़मीन को भी बरकत (उन्नति) दी।

حَفَافَ جنانى نُوِّرا مِن ضيائه فأصبحتُ ذا فهم سليم وذا الهدى

59- मेरे दिल के दोनों कोने आपकी रौशनी से चमक उठे, फिर मैं असल सच्चाई को जानने वाला और हिदायतयाफ़्ता (महदी) हो गया।

وأرسلنى ربّى لتأييد دينه فجئتُ لهذا القرن عبدًا مجدِّدا

60- और मेरे रब्ब ने मुझे अपने धर्म के समर्थन के लिए भेजा है। अत: मैं इस सदी (शताब्दी) के लिए (ख़ुदा का) एक फ़रमाँबर्दार मुजद्दिद बनकर आया हूँ।

له صُحْبةٌ كانوا مجانينَ حُبِّه وجعلوا ثرى قدميه للعين إثْمَدا

61- उस (नबी करीम) के सहाबी (सहचर) उसकी मुहब्बत में दीवाने थे। उन्होंने उसके क़दमों की धूल को अपनी आँख का सुरमा

बना लिया।

وأرَوا نشاطًا عند كل مصيبة كعَوْجاءَ مِرقالٍ تُوارى تَخدُّدا

62- और हर मुसीबत के समय उन्होंने उस तेज़ रफ़्तार दुबली ऊँटनी की तरह प्रसन्नता प्रकट की जो (अपनी तेज़ चाल से अपना) दुबलापन छुपा लेती है।

وإذا مُرَبِّينا أهابَ بغنمهٖ فراعُوا إلى صوت المُهيب توذُّدا

63- और जब हमारे पेशवा (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने अनुचरों को आवाज़ दी तो वे पुकारने वाले की आवाज़ की ओर मुहब्बत से लौट आए।

و كان وصال الحق فى نيّاتهم وخطراتهم فلاِجله مَدُّوا اليدا

64- उनकी नीयतों और इरादों में ख़ुदा को पाना (उद्देश्य) था, इसलिए उन्होंने आगे हाथ बढ़ाए।

ورأوا حياة نفوسهم فى موتهم فجاءوا بميدان القتال تجلُّدا

65- और उन्होंने अपने प्राणों की ज़िन्दगी अपनी मौत में देखी, तो वे मैदान-ए-जंग में दिलेरी से आ गए।

وجاشت إليهم من كروبٍ نفوسُهم وأنذرَهم قوم شقيٌّ تهدُّدا

66- और दु:खों से उनकी जानें उबलने लगीं और दुष्ट क़ौम ने उन्हें धमकी देकर डराया।

فظلوا ينادون المنايا بصدقهم وما كان منهم مَن أبى أو تردَّدا

67- वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण मौतों को पुकारने लगे, और उनमें से कोई नहीं था जिसने इन्कार या सन्देह किया हो।

وفاضت لتطهير الاناس دماؤهم من الصدق حتى آثر الخَلقُ مَرصَدا

68- और लोगों को बुराइयों से दूर करने के लिए वस्तुत: उनके

ख़ून बह पड़े, यहाँ तक कि लोगों ने सही मार्ग अपना लिया।

وأحيَوا لياليهم مخافةَ ربهم وأذابهم يومٌ يُشيِّب ثَوهَدا

69- उन्होंने अपने रब्ब से डरते हुए अपनी रातें ज़िन्दा कीं, और उनको उस दिन ने पिघला डाला जो एक नवजवान को भी बूढ़ा कर देता है।

تَناهَوا عن الاهواء خوفا وخشية وباتوا لمولاهم قِيامًا وسُجّدا

70- उन्होंने ख़ुदा के डर से सांसारिक मोह-माया को त्याग दिया और अपने मौला को पाने के लिए इबादत में रातें गुज़ारीं।

تلقَّوا علومًا من كتاب مقدس حكيم فصافاهم كريم ذو الندٰى

71- उन्होंने पवित्र एवं तर्कसंगत पुस्तक (क़ुर्आन करीम) से बहुत से ज्ञान सीख लिए, तो कृपालु और दानशील ख़ुदा ने उन्हें अपना प्रिय बना लिया।

كنوقٍ كرائمَ ذاتِ خُصْلٍ تجلَّدوا وتربَّعوا كلاءَ الاسِرَّة أغيَدا

72- उन्होंने अच्छी और ताक़तवर ऊँटनियों की भाँति साहस दिखाया और मैदानों की हरी-भरी घास पर मौसम-ए-बहार गुज़ारा।

أتعرف قوما كان ميتًا كمثلهم نَؤومًا كأموات جَهولا يَلَنْدَدا

73- क्या तू ऐसे लोगों को जानता है जो उन जैसे मुर्दा थे, जो मुर्दों की तरह सोए हुए थे और घोर मूर्ख और झगड़ालू थे।

فأيقظَهم هذا النبي فأصبحوا منيرين محسودين في العلم والهدى

74- जब उस नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उनको जगाया तो वे ज्ञान और सन्मार्ग में क़ाबिले रश्क (अनुकरणीय) हो गए।

وجاءوا ونورٌ من وراءٍ يسوقهم إليه ونورٌ من أمامٍ مُقوِّدا

75- और वे उसकी ओर आ गए, एक नूर (आत्मज्ञान/अन्तर्बोध)

उनको पीछे चलने पर प्रेरित कर रहा था और एक मार्गदर्शन करने वाला नूर उनके आगे-आगे था।

ولو كُشف باطنهم نرى فى قلوبهم يقينًا كطبقات السماء مُنضَّدا

76- और अगर उनका दिल टटोला जाए तो तू विश्वास को उनके दिलों में आसमान की ऊँचाइयों की तरह श्रृंखलाबद्ध पाएगा।

تدار كَهم لطفُ الإله تفضلا وزكّى بروح منه فضلا وأيّدا

77- ख़ुदा की कृपा ने अपने उपकार से उन्हें थाम लिया और अपनी कृपा से अपने रूहुलक़ुदुस (पवित्र फ़रिश्ते) द्वारा उन्हें सदाचारी और सहायताप्राप्त बना दिया।

ففاقوا بفضل الله خَلْقَ زمانِهم بعلم وإيمان ونور وبالهُدى

78- फिर वे अल्लाह की कृपा से अपने युग के लोगों पर ज्ञान, ईमान (विश्वास) एवं अध्यात्म और मार्गदर्शन में छा गए।

وهذا من النور الذى هو أحمدُ صلعم فدًى لك روحى يا مُحمّد صلعم سرمَدا

79- यह सब कुछ उसके नूर की बरकत (दानशीलता) से था जिसने सबसे ज़्यादा (ख़ुदा की) स्तुति की। हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरी जान हमेशा आप पर क़ुर्बान है।

أُمِرتَ من الله الذى كان مرشدا فأحرقتَ بدعاتٍ وقوَّمْتَ مَرْصَدا

80- तू उस अल्लाह की ओर से भेजा गया जो सच्चा ज्ञान (और सन्मार्ग) प्रदान करने वाला है। अत: तूने आडम्बरों को मिटा डाला और मार्ग को सीधा कर दिया।

وجئتَ لتنجية الانام مِن الهوٰى فواهًا لِمُنْجٍ خلّص الخَلق مِن رَدَى

81- तू लोगों को काम, क्रोध, लोभ मोह से छुटकारा दिलाने के लिए आया है। अत: प्रशंसा है ऐसे मुक्ति दिलाने वाले की जिसने

लोगों को तबाही और बर्बादी से बचा लिया।

وتورَّمَتْ قدماك لله قائمًا ومثلك رجلا ما سمعنا تعبُّدا

82- ख़ुदा के दरबार में खड़े-खड़े तेरे पैर सूज गए और इबादत करने में हमने तेरे जैसा आदमी नहीं सुना।

جذبتَ إلى الدين القويم بقوة وما ضاعت الدنيا إذا الدين شُيِّدا

83- तूने सच्चे धर्म की ओर लोगों को पूरी शक्ति से आकर्षित कर लिया, और जब उनका धर्म तर्कसंगतत: ठोस किया गया तो उनकी दुनिया भी नष्ट न हुई।

وأرسلَك الباری بآیات فضله لکی تُنقذ الإسلام مِن فتن العِدا

84- और ख़ुदा ने तुझे अपने फ़ज़्ल (दानशीलता) के निशानों के साथ भेजा, ताकि तू इस्लाम को दुश्मनों के फ़ित्नों से छुड़ाए।

یحبّ جنانی کلَّ أرض وطِئَتَها فیا لیت لی کانت بلادك مولدا

85- मेरा दिल हर उस धरती से मुहब्बत करता है जहाँ-जहाँ तेरे क़दम पड़े, काश! तेरे चरणों की जगह मेरा जन्मस्थान (भी) होता।

و أ ّ کفَرَنی قومی فجئتك لاهفًا و کیف یُکفَّرُ مَن یوالی مُحمَّداً

86- मेरी क़ौम ने मुझे काफ़िर (अधर्मी) ठहराया तो मैं तेरे पास सताया हुआ फ़रियादी बनकर आया, और वह व्यक्ति कैसे काफ़िर (अधर्मी) ठहराया जा सकता है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मुहब्बत करे।

عجبتُ لشیخ فی البطالة مفسدٍ أضلّ کثیرا بالشرور وبَعَّدا

87- मुझको बटाला के उपद्रवी शैख़ पर आश्चर्य है बहुतों को उसने कुतर्कों (वितंडावाद) से गुमराह और (सच्चाई से) दूर कर दिया।

سَلُوه یمینًا هل أتانی مباهِلا وقد وعَد جزمًا ثم نکث تعمُّدَا

88- उसे क़सम देकर पूछो कि क्या वह मेरे पास मुबाहला के लिए आया? हालाँकि उसने (आने का) पक्का वादा किया था, फिर उसने उसे जानबूझकर तोड़ डाला।

فخُذْ يا إلهى مثلَ هذا المكذِّبِ كأَخْذِكَ مَن عادى وليًّا وشدّدا

89- हे मेरे ख़ुदा! इस जैसे झूठे को इस तरह पकड़, जिस तरह तू उस व्यक्ति को पकड़ता है जिसने तेरे वली (मित्र) से दुश्मनी की और उस पर अत्याचार किया।

أضلَّ كثيرا من صراط منوّر تباعدَ من حق صريح وأبعدا

90- बहुत से लोगों को उसने रौशन मार्ग (इस्लाम) से भटका दिया, वह खुली-खुली सच्चाई से दूर रहा और (लोगों को भी) दूर किया।

قد اختار مِن جهل رضائَ خلائقٍ وكان رضى الباري أهمَّ وأَوْكَدا

91- उसने मूर्खता से लोगों की ख़ुशनूदी को प्रधानता दी, हालाँकि अल्लाह की ख़ुशनूदी अधिक महत्त्वपूर्ण और अतिआवश्यक थी।

وما كان لى بغضٌ وربّى شاهدٌ وفى الله عادَيناه إذ حال مَرصَدا

92- मुझे उससे कोई (निजी) दुश्मनी न थी और मेरा रब्ब इस बात का गवाह है कि जब वह (हमारे) रास्ते में रोक बन गया तो हम अल्लाह की ख़ातिर ही उसके दुश्मन हुए।

يسبّ وما أدرى على ما يسُبّنى أيُلعَن مَن أحيا صلاحا وجدَّدا

93- वह गालियाँ देता है, और मैं नहीं जानता कि वह किस बात पर मुझे गालियाँ देता है। क्या ऐसे आदमी पर भी लानत डाली जा सकती है जिसने नेकी को ज़िन्दा किया और धर्म को पुनः ताज़ा किया?

نعَمْ نشهدَنْ أن ابنَ مريم ميّتٌ أهذا مقال يجعل البَرَّ مُلحِدا؟

94- हाँ! हम अवश्य (इस बात पर) साक्ष्य देते हैं कि इब्नि मरियम का स्वर्गवास हो चुका है। तो क्या यह कोई ऐसी बात है जो एक नेक को नास्तिक (अधर्मी) बना दे?

وهل من دلائلَ عندكم تُؤثِرونها فإن كان فأْتوني بتلك تجلُّدا

95- क्या तुम्हारे पास (ईसा इब्नि मरियम के भौतिक रूप से जीवित होने पर) कोई ऐसे तर्क हैं जिन्हें तुम अपना रहे हो? यदि कोई ऐसा तर्क है तो उसे बहादुरी से मेरे सामने लाओ।

أنحنُ نخالف سبلَ دينِ نبينا؟ وقد ضل سعيًا مَن قَلَى دينَ أحمدا

96- क्या हम अपने नबी के दीन (धर्म) की राहों के मुख़ालिफ़ हैं? नि:सन्देह वह अपनी कोशिश में भटक गया जिसने अहमद के दीन (धर्म) से दुश्मनी की।

سيُكشَف سِرُّ صدورنا وصدوركم بيومٍ يسوّد وجهَ مَن كان مفسِدا

97- शीघ्र ही हमारे सीनों और तुम्हारे सीनों का राज़ खुल जाएगा, उस दिन मुफ़्सिद (उपद्रवी) का मुँह काला हो जाएगा।

فمن كان يسعى اليوم في الارض مفسدا فيُحرَق في يوم النشور مُزوَّدا

98- जो व्यक्ति आज धरती में मुफ़्सिद (उपद्रवी) बनकर दौड़ता-फिरता है, वह क़यामत के दिन फ़साद (उपद्रव) के फलस्वरूप जलाया जाएगा।

أليس تقاةُ الله فيكم كذرّةٍ؟ أتخشون لومةَ حَيّكم ومُفنِّدا

99- क्या अल्लाह का डर तुम में थोड़ा सा भी नहीं? क्या तुम अपने क़बीले की डाँट-डपट करने वाले और मूर्ख से डरते हो?

وقد كان ربّي قدّر الامرَ رحمةً فَخُصِصْتُ بإذن الله ثوبًا مُقدَّدا

100- और मेरे रब्ब ने यह घटना (अपनी) रहमत से निर्धारित कर रखी थी। अत: मैंने अल्लाह के आदेश से टुकड़े-टुकड़े किए हुए लिबास को सी दिया है।

رأيتُ تغيُّظكم فلمّ آلُ حجّةً ووطّأتُ ذوقًا أَمْعَزًا متوقِّدا

101- मैंने तुम्हारा ग़ुस्सा देखा, अत: मैंने (इस्लाम के समर्थन में) ठोस और निर्णायक प्रस्तुत करने में कोई कोताही नहीं की। और मैंने पथरीली और भड़कती हुई ज़मीन को पूरी रुचि और रसिकता से कुचल दिया।

ولستُ بذى علم ولكن أعاننى عليم رآنى مستهامًا فأيّدا

102- और मैं कोई ज्ञानी नहीं था, सर्वज्ञ ख़ुदा ने मुझे पूरी तरह अभिलाषी पाया तो उसने मेरी सहायता और समर्थन किया।

ووالله إنى صادق غيرُ مفترٍ وأيّدنى ربى وما ضاعنى سُدًى

103- और ख़ुदा की क़सम! मैं सच्चा हूँ, झूठा नहीं। और मेरे रब्ब ने मेरा समर्थन किया और मुझे नष्ट नहीं किया।

وما قلتُ إلا ما أُمِرتُ بوحيه وما كان هَجْسٌ بل سمعتُ مُنذِّدا

104- और मैंने वही बात कही, जिसका मुझे ख़ुदा की वह्यी (ईशवाणी) से आदेश दिया गया, और वह कोई फुस्फुसाहट की आवाज़ न थी जिसे समझा न जा सके, बल्कि मैंने तो एक रौबदार (वैभवशाली) आवाज़ सुनी है।

أأكتُمُ حقًّا كالمُداجى المُخامِرِ مخافةَ قوم لا يريدون مَرصَدا

105- क्या मैं उन लोगों से डरकर जो सीधा रास्ता अपनाना नहीं चाहते, सच को छुपाने वाले प्रपंची (धोखेबाज़) की तरह सत्य को छुपाऊँ?

تعالىٰ مقامى فاختفى من عيونهم وربى يرى هذا الجَنان المجرَّدا

106- मेरा स्थान ऊँचा है इसलिए उनकी आँखों से ओझल हो गया है, और मेरा ख़ुदा इस अतुलनीय (अद्वितीय) दिल को देख रहा है।

وفى الدين أسرار وسبلٌ خفيّة يلاحظها من زاده الله فى الهُدى

107- और दीन (धर्म) में कुछ रहस्यमयी बातें और रहस्यपूर्ण राहें हैं, उन्हें वही देखता और समझता है जिसे अल्लाह ने ज्ञान और युक्ति में बढ़ाया हो।

وهذا على الإسلام أدهى مَصائبٍ يُكفَّرُ مَن جاء الانامَ مجدِّدا

108- और यह इस्लाम पर मुसीबतों में से सबसे बड़ी मुसीबत है, कि उसका इन्कार किया जाता है जो लोगों के लिए (उनके दीन का) मुजद्दिद (सुधारक) बनकर आया है।

أتُكفِرُ رجُلا قد أنار صلاحه ومثلك جهلاً ما رأيتُ ضَفَنْدَدا

109- क्या तू ऐसे आदमी का इन्कार करता है जिसका सदाचार स्पष्ट है? और मूर्खता में तेरे जैसा मूर्ख मैंने कोई नहीं देखा।

أتُكَفِر رجلا أيّد الدّينَ حجّةً ودافَر رؤوس الصائلين وأرجَدا

110- क्या तू ऐसे आदमी को काफ़िर ठहराता है जिसने दलील (तर्क) के साथ दीन (इस्लाम) का समर्थन किया और (इस्लाम पर) हमला करने वालों के सिरों को तोड़ दिया और कुचल डाला?

أنحن نفرّ من الرسول ودينه ويبدو لكم آياتُنا اليوم أو غدا

111- क्या हम रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उसके दीन से दूर भाग सकते हैं? तुम्हारे लिए आज या कल हमारे अनगिनत निशान ज़ाहिर हो जाएँगे।

ووالله لولا حُبُّ وجهِ محمدٍ لما كان لی حولٌ لإمدحِ اَحْمَداً

112- और ख़ुदा की क़सम! अगर मुझे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मुहब्बत न होती तो मुझे कोई सामर्थ्य न मिलता कि मैं सबसे ज़्यादा स्तुति करने वाले की प्रशंसा कर सकूँ।

ففی ذاك آياتٌ لكلّ مكذِّبٍ حريص علی سبٍّ وألوَی كالعِدا

113- इस में हर उस झुठलाने वाले के लिए निशानियाँ हैं जो गालियाँ देने के लिए उत्सुक है और दुश्मनों की तरह पीछे पड़ने वाला झगड़ालू है।

و كم من مصائب للرسول أذوقُها و كم من تكاليف سئمتُ تودُّدا

114- बहुत सी मुसीबतें हैं जिन्हें मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातिर उठा रहा हूँ, और बहुत से कष्ट हैं जो मैंने (उसकी) मुहब्बत के कारण बर्दाश्त किए।

وغمٍّ يفوق ظلامَ ليلٍ مظلم وهولٍ كليل السَّلْخ يُبدی تَهَدُّدا

115- और बहुत से ग़म (दु:ख) हैं जो अत्यन्त काली रात के अन्धकार से भी बढ़कर हैं, और बहुत सी दहशतें हैं जो अमावस की रात की तरह डरावनी हैं।

وضُرٍّ كضرب الفأس أصلتَ سيفَه وخوفٍ كأصوات الصراصر قد بدا

116- और बहुत से दु:ख हैं जो कुल्हाड़ी के वार की तरह हैं और उन्होंने अपनी तलवार सोंत रखी है, और आँधियों की डरावनी आवाज़ों की तरह बहुत से डर हैं जो ज़ाहिर हुए।

فأسأمُ تلك المحنَ مِن ذوق مُهْجتی وأسأل ربّی أن يزيد تشدُّدا

117- यह सब कष्ट मैं अपनी हार्दिक इच्छा से सह रहा हूँ और मैं अपने रब्ब से चाहता हूँ कि वह (इस राह में) और कष्ट दे।

وموتی بسبل المصطفٰی خیرُ مِیتةٍ فإنْ فُزْتُها فسأُحْشَرَنْ بالمقتدی

118- और मुस्तफ़ा की राह में मेरी मौत सबसे अच्छी मौत है। अगर मैं उस (मौत के पाने) में सफल हो जाऊँ तो मैं अवश्य क़यामत में अपने पेशवा (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ उठाया जाऊँगा।

سأدخلُ مِن عشقی بروضةِ قبرہ وما تعلم هذا السرّ یا تارکَ الهدی

119- मैं अपने (अथाह) प्रेम के कारण उस (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की क़ब्र के रौज़: (बाग़) में दाख़िल किया जाऊँगा, और हे हिदायत को छोड़ने वाले! तू इस राज़ को नहीं जानता।

चौथा क़सीदः

ألا أيها الواشي إلامَ تكذِّبُ وتُكفِّرُ مَن هو مؤمن وتُؤنِّبُ

1- हे झूठे! तू उसको कब तक झुठलाकर और काफ़िर कहकर दाँत पीसता रहेगा जो मोमिन है।

وآليتُ أني مسلمٌ ثمّ تُكفِرُ فأين الحيا أنت امرؤٌ أو عقرَبُ؟

2- और मैं क़सम खा चुका हूँ कि मैं मुसलमान हूँ, तू फिर भी (मुझे) काफ़िर कहता है। शर्म कहाँ गई, तू इन्सान है या बिच्छू?

ألا إنني تِبرٌ وأنت مُذهَّبٌ ألا إنني أسدٌ وإنك ثعلبُ

3- सुन, कि मैं तो शुद्ध सोना हूँ और तुझ पर सोने का पानी चढ़ाया गया है। और सुन ले कि मैं तो शेर हूँ और तू निःसन्देह लोमड़ी।

ألا إنني في كل حرب غالبٌ فكِدْني بما زوّرتَ والحقُّ يغلِبُ

4- सुन ले! कि मैं हर लड़ाई में अवश्य विजय पाने वाला हूँ। तू अपने झूठ के सहारे मेरे बारे में षडयन्त्र रचता रह, और (याद रख कि) सत्य ही विजयी होगा।

وبشَّرني رَبّي وقال مبشّرًا ستعرف يومَ العيد والعيدُ أقربُ

5- और मेरे रब्ब ने मुझे ख़ुशख़बरी दी है और ख़ुशख़बरी देते हुए कहा है कि तू ईद के दिन को जान लेगा, जबकि (मुसलमानों की सामान्यतः) ईद (उसके) अत्यन्त निकट होगी।

ونعَّمني ربي فكيف أرُدّه وهذا عطاء الله والخَلقُ يعجَبُ

6- और ख़ुदा ने मुझ पर इनाम किया है तो मैं उसे किस तरह

ठुकरा दूँ और यह तो अल्लाह की दानशीलता है और लोग (इस पर) आश्चर्य कर रहे हैं।

وسوف ترى أني صدوقٌ مؤيَّدٌ ولستُ بفضل الله ما أنت تحسَبُ

7- और तू शीघ्र देख लेगा कि मैं नि:सन्देह सच्चा (और) समर्थनप्राप्त हूँ और ख़ुदा की कृपा से मैं ऐसा नहीं जैसा कि तू गुमान कर रहा है।

ويبدى لك الرحمن أمرى فينجلى أهذا ظلامٌ أو مِن الله كوكبُ

8- और (जब) ख़ुदा तुझ पर मेरा मामला खोल देगा तो स्पष्ट हो जाएगा कि क्या यह अंधेरा है या अल्लाह की ओर से रौशन सितारा।

يرى الله ما هو مختفٍي فى قلوبنا فيفضَح من هو كاذبٌ ويكذِّبُ

9- अल्लाह देख रहा है जो कुछ हमारे दिलों के अन्दर है। अत: वह रुसवा होगा जो झूठा है और झुठला रहा है।

ويعلم ربى من هو الشرّ مَنـزِلًا ومن هو عند الله بَرٌّ مقرَّبُ

10- और मेरा रब्ब जानता है कि मुक़ाम व मर्तबा में कौन बुरा है और कौन ख़ुदा के निकट नेक और सानिध्यप्राप्त।

إلامَ ترى زُورًا كصدقٍ ممحَّضٍ وتستجلب الحمقٰى إليه وتجذبُ

11- तू कब तक अपने झूठ को असल (शुद्ध) सच्चाई की तरह समझता रहेगा और मूर्खों को उसकी ओर लाना चाहेगा और (उन्हें उसकी ओर) आकर्षित करेगा?

وقاسمتَهم أن الفتاوى صحيحةٌ وعليك وِزرُ الكذب إن كنت تكذِبُ

12- और तूने उनसे क़सम खाई कि वे फ़त्वे सही हैं, यदि तू झूठ बोल रहा है तो झूठ का वबाल (गुनाह) तुझ पर पड़ेगा।

وهل لك مِن علمٍ ونصٍّ محكم على كفرنا أو تخرِصَنَّ وتَتغَبُ

13- और क्या तेरे पास हमारे कुफ़्र की तस्दीक़ (सत्यापन) में कोई वास्तविक ज्ञान और (क़ुर्आन करीम की) ठोस आयत (तर्क) मौजूद है या तू पूरी तरह अटकल से काम ले रहा है और लांछन लगाकर फ़साद (उपद्रव) फैला रहा है?

كمثلك أممٌ قد أُبيدوا بذنبهم فتَحَسَّسَنْ مِن نبئهم ما أُعقِبوا

14- तेरे जैसी कई क़ौमें अपने गुनाह (पाप) के कारण नष्ट हो गईं। तू उनके इतिहास से पता लगा कि उनका क्या अंजाम हुआ?

أتُغدِف فى حربى قناعًا دوننا وتترك ما أمّمتَ جُبنًا وتهرُبُ

15- क्या तू मुझसे लड़ने में मेरे और अपने मध्य पर्दा डाल लेता है और बुज़दिली से उस विषय को छोड़ देता है जिसका तूने पक्का इरादा किया था? और (मुबाहला और मुनाज़रा से) भाग जाता है।

وما البحث إلا ما علمتَ وذُقتَه و تلك وِهادٌ للمنايا تُقوّبُ

16- और बहस तो वही है जिसे तू जानता है और (उसका मज़ा) चख चुका है, और ये तो मौतों के गड्ढे हैं जो तू खोद रहा है।

وما فى يديك بغير فلسٍ مُذهَّب تُضِلّ أُمَيمًا بالسَّراب وتخلُبُ

17- और तेरे पास चाटुकारिता की बातों के अलावा और कुछ नहीं, तू दिखावटी लीडर बनकर एक छल के द्वारा लोगों को गुमराह करता और धोखा देता है।

وشاهدتُ أنّك لستَ أهلَ معارفٍ وتلهو وتهذى كالسكارٰى وتلعبُ

18- और मैं देख चुका हूँ कि तू मर्मज्ञ (ज्ञानी) नहीं है और (दिल को बहलाने के लिए) खेलकूद में लिप्त है और नशेड़ियों की तरह अनर्गल बक रहा है।

متى نُبْدِ أخلاقًا فتُبْدِ ذميمةً وتترك ما هو مستطابٌ وأطيبُ

19- जब हम शिष्टाचार दिखाते हैं तो तू दुष्टता करता है, और उस बात को छोड़ देता है जो अत्यन्त साफ़ और सुथरी है।

وعاديتنى وطويتَ كشحًا على الاذى ورميت حقدًا كل ما كنتَ تَجعَبُ

20- और तूने मुझसे दुश्मनी की और दु:ख देने पर तत्पर हो गया, और तू ईर्ष्या-द्वेष से वे सारे तीर फेंक चुका है जो तेरे तरकश में थे।

و كنتَ تقول سأغلبنّ بحجّتى وما كنتَ تدرى أنك اليوم تُغلَبُ

21- और तू कहता था कि मैं मुबाहसा (तर्क-वितर्क) में अवश्य विजयी हो जाऊँगा, और तू नहीं जानता था कि आज तू पराजित होगा।

ولستُ بعادٍ مسرفٍ بل إننى عَروفٌ علىٰ إيذائكم أتحبّبُ

22- और मैं संतुलन से हटने वाला योद्धा नहीं हूँ बल्कि अत्यन्त नेक सुलूक करने वाला हूँ, और तुम्हारे दु:ख देने पर भी (तुम से) मुहब्बत करता हूँ।

وإنى أمامَ اللهِ فى كُلّ ساعة وينظر ربّى كلَّ ما هو أكسَبُ

23- और मैं हर पल ख़ुदा के सामने हूँ और जो कुछ मैं कर रहा हूँ उसे मेरा रब्ब देख रहा है।

فإن كنتَ عاديتَ الخبيث تديُّنًا فتُكرَمُ عند مليكنا وتُقرَّبُ

24- यदि तू ईमानदारी (न्यायपूर्वक) से दुष्ट से दुश्मनी कर रहा है तो तू हमारे ख़ुदा के सामने सम्मान पाएगा और प्रिय ठहरेगा।

وإن كنتَ قد جاوزتَ حدَّ تورُّعٍ وقفوتَ ما لم تعلمنّ فتُعتَبُ

25- और यदि तू ऐसा है कि तक़्वा (संयम) की हद को छोड़ चुका है और उस चीज़ के पीछे पड़ गया है जिसे तू नहीं जानता, तो

तू ख़ुदा के कोप का शिकार बनेगा।

فسوف ترى فى هذه ضربَ ذلّةٍ ويومُ نكال الله أخزى وأعطَبُ

26- तू शीघ्र ही इसी दुनिया में रुसवाई की मार देख लेगा और अल्लाह के दण्ड देने का दिन तो बहुत ही रुसवा करने वाला और बहुत ही दु:खदायी है।

ومَن كان لاعِنَ مؤمنٍ متعمدًا فعليه ذِلّةُ لعنةٍ لا تَنكُبُ

27- और जो व्यक्ति मोमिन (ईश्वरनिष्ठ) पर जानबूझकर लानत डालता है तो उस पर उलटा लानत और रुसवाई की ऐसी मार पड़ेगी जो कभी पीछा नहीं छोड़ेगी।

أتأمر بالتقوى وتفعل ضِدّه وتنكث عهدًا بعد عهدٍ وتهرُبُ

28- क्या तू तक़्वा (संयम) की नसीहत करता है और ख़ुद उसके विपरीत व्यवहार करता है? और वादा करने के बाद वादा को तोड़ देता है और भाग जाता है।

ولى لك فى أعشار قلبى لوعَةٌ فكفِّرْ و كذِّبْ إننى لست أغضَبُ

29- और मेरा हाल तो यह है कि मेरे दिल के कोने-कोने में तेरी मुहब्बत का जोश भरा हुआ है, भले ही तू इन्कार करता रह और झुठलाता रह। मैं बिल्कुल क्रोधित नहीं हूँगा।

ألا أيها الشيخ اتق اللهَ الذى يهدّ عماراتِ الهوٰى ويخرّبُ

30- हे शैख़! सुन, उस अल्लाह से डर जो सांसारिकता की लोभ-लालसा के महलों को खण्डहर और वीरान कर देता है।

إذا ما توقَّدَ قهره يهلك الورٰى فما حِيصَ مِن ابن حُسام يعضَبُ

31- जब उसका प्रकोप भड़कता है तो वह (दुष्ट) लोगों का संहार कर देता है। अत: उससे कोई निपुण तलवारबाज़ भी नहीं बच सका।

أتعوى كمثل الذئب واللهِ إنني أراك كأنّك أرنبٌ أو ثعلبُ

32- क्या तू भेड़िए की तरह गुर्राता है? ख़ुदा की क़सम! मैं तुझको तो ख़रगोश या लोमड़ी की तरह (डरपोक) पाता हूँ।

وما إن أرٰى فى خيط كيدك قوةً ويُصلح ربّى ما تَهُدُّ وتشغَبُ

33- और मैं तेरे अन्दर कोई ताक़त नहीं देखता, और मेरा रब्ब उस महल को बुलन्द कर देगा जिसे तू गिराना चाहता है और भड़काव पैदा करता है।

ألم تعرفَنْ رؤياى كيف تحققت وأصدقُ رؤيًا مؤمنٌ لا يُكذَّبُ

34- क्या तूने नहीं जाना कि मेरी रोअया (ख़्वाब) कैसी सच्ची निकली? और जिसकी ख़्वाबें सच्ची हों वह मोमिन होता है (और) झुठलाया नहीं जा सकता?

و سَيأتيك من آثار صدقى بكثرة فليرقُبَنْ أوقاتِها المترقِّبُ

35- और मेरी सच्चाई के निशान बड़ी अधिकता से तू देखेगा, अत: चाहिए कि प्रतीक्षा करने वाला अवश्य उन क्षणों की प्रतीक्षा करे।

فإن كنتُ كذّابًا فأنت منعَّمٌ وإن كنتُ صدِّيقًا فسوف تُعذَّبُ

36- यदि मैं झूठा हूँ तो तू इनाम पाएगा और यदि मैं सच्चा हूँ तो तू (ख़ुदा की ओर से) अवश्य दण्ड पाएगा।

أتُكفِرنى فى أمر عيسٰى تجاسرًا و كذّبتنى خطأً ولستَ تُصوِّبُ

37- क्या तू ईसा (अलैहिस्सलाम) के विषय में दुस्साहस से मुझे काफ़िर (अधर्मी) ठहराता है? तूने (जानबूझकर) ग़लती करते हुए मुझे झुठलाया है और तू सही राह पर नहीं है।

تُوفِّى عيسٰى هكذا قال ربّنا صريحًا فصدّقْنا ولا نتريَّبُ

38- ईसा (अलैहिस्सलाम) तो देहान्त पा चुका है और हमारे

रब्ब ने यह खोलकर कहा है। अत: हम इस बात की (क़ुर्आन से) तस्दीक़ करते हैं और शक नहीं करते।

و كيف نكذّب آيةً هى قوله وتصديق كلمته أهمُّ وأوجبُ

39- और हम (क़ुर्आन की) उस आयत को कैसे झुठला सकते हैं जो ख़ुदा का कथन है। और ख़ुदा की बातों को सच्चा मानना तो बहुत ही अनिवार्य और अति आवश्यक है।

نَهَى خالقى أن نُحَيِيَنَّ ابنَ مريمٍ وتلك التى كفّرتَ منها وتَنصَبُ

40- मेरे ख़ुदा ने हमें इस बात से रोक दिया है कि हम इब्नि मरियम (अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को ज़िन्दा ठहराएँ। यही वह मसला (विषय) है जिसके कारण तूने कुफ़्र का फ़त्वा दिया और तू अकारण कष्ट उठा रहा है।

ولم يبق لى فى موته ريحُ ريبة لِما ألهَمَنى ملكٌ صدوقٌ مؤوّبُ

41- और मेरे लिए तो उसकी मृत्यु में शक की बू तक भी शेष नहीं रही, क्योंकि ख़ुदा ने मुझे अपने इल्हाम (ईशवाणी) से बताया है और वही है जो याद दिलाने वाला है।

أقول ولا أخشى فإنى مثيله ولو عند هذا القول بالسيف أُضرَبُ

42- मैं कहता हूँ और डरता नहीं कि, नि:सन्देह मैं उस (ईसा) का मसील (समरूप) हूँ। चाहे इसके कहने से मुझे तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए।

ووالله إنى جئتُ حين مجيئه وهو فارسٌ حقًا وإنى مُحقِبُ

43- और ख़ुदा की क़सम! मैं उसके आने के समय पर आया हूँ, सवार तो वह अवश्य है लेकिन मैं उसे अपने पीछे सवार करके लाया हूँ।

وقد جاء فی القرآن ذکرُ وفاته وما جاء فیه هو الذی هو أصوَبُ

44- और क़ुर्आन में उसकी मृत्यु का वर्णन आ चुका है, और जो कुछ उसमें आया है वही पूर्णत: सत्य है।

ولو کان فی القرآن أمرٌ خِلافَه لآثرتُه دینًا و لا أتجنَّبُ

45- और यदि क़ुर्आन में इसके विरुद्ध कोई आदेश होता तो मैं दीन (इस्लाम) के तौर पर उसे ही अपनाता और उससे किनारा न करता।

ولکن کتاب الله یشهد أنّهٗ تناوَلَ مِن کأس المنایا فتعجَبُ

46- लेकिन अल्लाह की किताब यह गवाही दे रही है कि नि:सन्देह वह मौत का प्याला पी चुका है। फिर भी तू आश्चर्य कर रहा है।

أمِن غیر منبع هدیه نطلب الهدی و کلٌّ من الفرقان یُعطی و یوهبُ

47- क्या हम उसकी हिदायत के स्रोत को छोड़कर और कहीं हिदायत ढूँढ़ें? हालाँकि हर एक व्यक्ति को क़ुर्आन करीम से ही हिदायत दी और बख़्शी जाती है।

فنؤمن بالله الکریم و کُتبه فأین بحقدك یا مکفِّرُ تذهبُ

48- हम ख़ुदा तआला और उसकी किताबों पर ईमान लाते हैं। हे काफ़िर कहने वाले! तू अपने द्वेष के साथ किधर जा रहा है?

ویعلم ربّی کلَّ ما فی عَیبتی علیمٌ فلا یخفی علیه مغیَّبُ

49- जो कुछ मेरे दिल में है मेरा रब्ब उसे जानता है। वह सर्वज्ञ है उससे कोई बात छुपी नहीं है।

وهذا هدی الله الذی هو ربّنا فإن کنتَ ترغَب عن هدًی لا نرغَبُ

50- और यह उस अल्लाह की हिदायत है जो हमारा रब्ब है।

यदि तू हिदायत से मुँह फेरता है तो फेर, हम तो नहीं फेरेंगे।

وإن سراجي قوله و كتابه فإن أعْصِه فسناه مِن أين أطلُبُ

51- मेरा चिराग़ (दीपक) तो उसका कथन और उसकी किताब (क़ुर्आन करीम) है। यदि मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो उसकी रौशनी कहाँ से ढूँढूँ?

وإن كتاب الله بحرُ معارفٍ ونجدنُ فيه عيونَ ما نستعذبُ

52- नि:सन्देह अल्लाह की किताब आध्यात्मिक ज्ञान का सागर है, और हम नि:सन्देह उसमें ऐसे स्रोत पाते हैं जो अत्यन्त मीठे (और चित्त के अनुकूल) हैं।

و كم من نكات مثل غِيدٍ تمتَّعَتْ بها مُهْجتي مِن هدى ربي فجَرِّبوا

53- और बहुत से रहस्य ख़ूबसूरत अछूती हसीनाओं की तरह हैं। मेरे दिल ने अपने रब्ब की रहनुमाई से उनसे फ़ायदा उठाया। अत: तुम भी तजुर्बा करो।

إذا ما نظرتُ إلى ضياء جماله فإذا الجمال على سنا البرق يغلِبُ

54- जब मैंने उसकी तरोताज़गी के नूर को देखा तो उसकी (तरोताजगी की) चमक बिजली (की चमक) से भी बढ़कर थी।

رأيتُ بنورٍ نورَه فتبيَّنتْ عليَّ حقائقه ففيها أُقلَّبُ

55- जब मैंने दिल की आँख से क़ुर्आन का नूर देखा तो मुझ पर उसके रहस्य खुल गए, और उन्हीं पर मैं ग़ौर करता रहता हूँ।

يصدّ عن الطغوى و يهدى إلى التقى خفيرٌ إلى طرق السلامة يجلِبُ

56- वह दुष्टता से रोकता है और शिष्टता की ओर मार्गदर्शन करता है, वह शान्ति देने वाला है और शान्ति के मार्गों की ओर आकर्षित है।

يجرّ إلى العُليا وجاء من العلٰى كما هو أمرٌ ظاهرٌ ليس يُحْجَبُ

57- वह आसमान से आया है और प्रतिष्ठा की ओर खींचता है, जैसा कि यह बात स्पष्ट है छुपी हुई नहीं।

وسرٌّ لطيفٌ فى هداه ونكتةٌ كنجمٍ بعيد نورها تتغيبُ

58- वह अपनी शिक्षा में सबसे ऊँचे सितारे की भाँति एक नूतन मर्म और अनुपम रहस्य है जिसका (एक) नूर हमेशा (आँख से) ओझल रहता है।

ومن يأته يُقبَلْ ومن يُهدَ قلبُه إلى مأمنِ الفرقان لا يتذبذبُ

59- और जो उसके पास आता है स्वीकार किया जाता है, और जिसके दिल का मार्गदर्शन किया जाए वह फ़ुर्क़ान (अर्थात् सत्य-असत्य में अन्तर करने वाली किताब क़ुर्आन मजीद) की शरण की ओर आने में असमंजस में नहीं पड़ता।

يُضىء القلوب ويدفَعنّ ظلامَها ويشفى الصدور سوادُه ويهذِّبُ

60- वह दिलों को रौशन करता और उनके अन्धकारों को दूर करता है, और उसकी इबारत सीनों को स्वच्छ और शिष्ट करती है।

فقلتُ له لما شربتُ زلاله فدًى لك روحى أنت عينى ومشرَبُ

61- जब मैंने उसका मीठा और स्वच्छ पानी पिया तो मैंने क़ुर्आन से कहा, तुझ पर मेरे प्राण न्योछावर हों कि तू तो मेरा जलस्रोत और घाट है।

و كم مِن عَمِينٍ قد كشفتَ غطاء هم ونجّيتَهم عما يعفّى ويَشغَبُ

62- और बहुत से अन्धे हैं जिनके पर्दे को तूने हटा दिया और उन्हें उस बुराई से बचा लिया जो फ़साद पैदा करती है और नष्ट कर देती है।

ألا رُبَّ خصمٍ خاضَ فيه عداوةً فألهاه عن خوضٍ سناه المؤنِّبُ

63- सुनो! बहुत से ऐसे दुश्मन हैं जिन्होंने दुश्मनी से उस पर अनुचित बहस की। लेकिन बुराई से नफ़रत दिलाने वाली उसकी रौशन शिक्षा ने उन्हें अनुचित बहस से दूर कर दिया।

وإن يفتَحنْ عيناك وهّابُ الهدى فكايِّنْ ترى مِن سرِّه لك معجِبُ

64- और हिदायत देने वाला यदि तेरी दोनों आँखों को खोल दे, तो तू उसके इतने रहस्य देखेगा जो तेरे लिए आश्चर्यचकित करने वाले होंगे।

وأنَّى لِعقل الناس نور كنوره وإن النُّهى ببيانه يتهذَّبُ

65- लोगों की अक़्ल में इस जैसा नूर कहाँ है। सच तो यह है कि अक़्लें तो इसके बयान से ही सँवरती हैं।

ووالله يجرى تحته نهرُ الهدٰى ومَن أكثر الإمعان فيه فيشرَبُ

66- और ख़ुदा की क़सम! इसके नीचे तो हिदायत का दरिया बहता है और जो इसकी गहराई में बार-बार जाएगा वह (हर बार इससे ज्ञान एवं अध्यात्म का नया प्याला) पिएगा।

ومن يمعن الانظار فى ألفاظه فإلى سناه التام يَصْبُ ويُسْحَبُ

67- और जो इसके शब्दों में गहरी निगाहें डालेगा तो वह इसकी व्यापक रौशनी की ओर झुक जाएगा और खिंचा जाएगा।

ومن يطلب الخيراتِ فيه ينَلْنَهُ ويرى اليقينَ التام والشكُّ يهرُبُ

68- जो इस (क़ुर्आन) में नेक बातों को ढूँढ़ने वाला हो वे उसको मिल जाएँगी और वह पूर्ण विश्वास को पहुँच जाएगा और सन्देह दूर हो जाएगा।

ومن يطلُبَنْ سبلَ الهُدٰى فى غيره يكُنْ سعيه لعنًا عليه فيُعطَبُ

69- और जो इसके अतिरिक्त किसी अन्य में हिदायत की राहें तलाश करेगा तो उसकी कोशिश उस पर धिक्कार बन जाएगी और वह तबाह व बर्बाद किया जाएगा।

ومن يعصِ فرقانًا كريمًا فإنه يُطعِ السعيرَ وفى الجحيم يُقلَّبُ

70- और जो क़ुर्आन करीम की नाफ़र्मानी करता है तो वह जहन्नुम (नर्क) की राह पर चलता है और जहन्नुम (नर्क) में ही गिरा दिया जाएगा।

وما العقل إلا خَبْط عشواءَ ما يُصِب يجِدْه وما يُخطى فيهذى ويلغَبُ

71- और अक़्ल तो केवल कमनज़र ऊँटनी की तरह टप्पे मारती है, जिसमें वह सही हो उसे पा लेती है और जिसमें वह ग़लती करती है तो वह बकती और थकती रहती है।

ومهما تكُنْ من عين ماءٍ باردٍ تراه حثيثًا عينُ صادٍ فيشرَبُ

72- और जहाँ कहीं भी ठण्डे पानी का स्रोत मौजूद हो प्यासे की आँख उसे जल्द ढूँढ़ लेती है और वह पी लेता है।

وقد جئتُ بالماء المَعين وعَذْبِهِ فأين النهى لا تشربَنْ وتُثرَّبُ

73- और मैं तो शुद्ध और मीठा पानी लाया हूँ, अक़्ल कहाँ गई कि तू पीता नहीं और निन्दा और धिक्कार का पात्र बन रहा है।

وسوف يريك الله نورَ تطهُّرى ويُريك مَنْ منّا صَدوقٌ وطيّبُ

74- और जल्द ही ख़ुदा तुझे मेरी पाकीज़गी का नूर दिखा देगा कि हम में से कौन अत्यन्त सच्चा और पवित्र है।

خَفِ اللهَ عند الطعن فى أوليائه أولئك قومٌ مَن قلاهم فيُشجَبُ

75- ख़ुदा के औलिया (मित्रों) पर व्यंग करते समय अल्लाह से डर, ये वे लोग हैं कि जिसने उनसे दुश्मनी की वह नि:सन्देह

तबाह व बर्बाद किया जाएगा।

تعَال وتُبْ مما صنعتَ فإننى أُصانِعُ من يتلقَّ حُبًّا وأصحَبُ

76- तू आ और तौबा कर उससे, जो कुछ तूने किया है। क्योंकि मैं तो उससे नेकी करता हूँ और उसका मित्र बन जाता हूँ जो प्यार से पेश आवे।

ولستُ مُدَعْثِرَ مَن جفا بل إننى عَروفٌ على إيذائكم أتحبَّبُ

77- और जिसने सताया मैं उसको पाँव तले रौंदने वाला नहीं हूँ, बल्कि नि:सन्देह मैं तो बहुत नेकी करने वाला हूँ और तुम्हारे दु:ख देने पर भी तुम से मुहब्बत करता हूँ।

وفى السلم والإسلام إنى سابقٌ وإذا تراميتم فسهمى مثقِّبُ

78- मैत्रीयता और शान्ति में नि:सन्देह मैं पहल करने वाला हूँ। यदि तुम (मुझ पर) तीर चलाओगे तो याद रखो कि मेरा तीर छेद देने वाला है।

وإذا تضاربتم فسيفى قاطعٌ وإذا تطاعنتم فرمحى مُذرَّبُ

79- और यदि तुम (मुझ पर) तलवार उठाओगे तो याद रखो कि मेरी तलवार दो टुकड़े करने वाली है, और यदि तुम भाला चलाओगे तो याद रखो कि मेरा बर्छी भी बहुत तेज़ है।

وإن المزوّر لا ينجّيه مكرُه وإن يخفَ فى غار عميق فيُتْغَبُ

80- छलिया को उसका छल बचा नहीं सकता, चाहे वह गहरी गुफा में भी छुप जाए तब भी वह मलियामेट किया जाएगा।

تذكَّرْ نصيحةَ غزنويٍّ صالحٍ وعليك سبل الرفق والرفقُ أعذَبُ

81- नेक बन्दे ग़ज़नवी (मौलवी अब्दुल्लाह साहिब) की नसीहत को याद कर और विनम्रता के मार्गों को अपना, विनम्रता ही अत्यन्त

मधुर होती है।

و كم من أمور الحق قلّبتَ جرأةً فسوف ترى يومًا إلى ما تُقلَّبُ

82- और बहुत सी सच्ची बातों को तूने दुस्साहस से बदल दिया है। अत: एक दिन तू अवश्य देख लेगा कि तू किस चीज़ की ओर पलटाया जा रहा है।

و إن كنتَ ذا علم فأَرنى كماله وما ينفَعنّ بعد الغزاة تَصيُّبُ

83- और यदि तू विद्वान है तो मुझे तू उसकी विशेषता दिखा, लड़ाई के बाद हथियारों का तेज़ करना कोई फ़ायदा नहीं देगा।

و إنى علىٰ علم وزدتُ بصيرةً من الله فى أمرى و أنت مكذِّبُ

84- मैं ज्ञान पर क़ायम (खड़ा) हूँ और अपने कार्य में अल्लाह की ओर से अध्यात्म में बढ़ गया हूँ और तू झुठला रहा है।

خَفِ اللّٰهَ حَزمًا يا ابنَ مَرْيٍ أَحَبَّنى فدَعْ ما يلازمه عدوٌّ مخيَّبُ

85- हे उस व्यक्ति के बेटे जो मुझसे प्यार करता था बुद्धि और विवेक से काम लेते हुए अल्लाह से डर, और उस बात को छोड़ दे जिसे नाकाम दुश्मन अपनाता है।

وما يمنعنَّك من رجوع وتوبةٍ أآليتَ جهلا حِلفةً فتُثَرَّبُ

86- कौन सी चीज़ तुझे क़ुबूल करने और तौबा करने से रोक रही है? क्या तूने मूर्खता से क़सम खा रखी है? (यदि ऐसा है तो) तू झिड़का और धुत्कारा जाएगा।

و إن كنتَ ذا عسرٍ وضَمْر مُعيَّلا فإن شاء ربى تُرزَقنّ فتُحظَبُ

87- और यदि तू कंगाल है और कमज़ोर परिवार वाला है, तो मेरा रब्ब यदि चाहे तो तुझे जीविका दे और तू समृद्ध हो जाएगा।

و والله إن شقاك هيَّج لى البكا لدى عينِ إحياءٍ تموت و تُتغَبُ

88- और ख़ुदा की क़सम! तेरी दुश्मनी ने मुझमें ख़ुदा के समक्ष गिड़गिड़ाने का जोश पैदा कर दिया है। तू जीवनदायक नदी के पास मर रहा है और हलाक हो रहा है।

ألا تعرِفنْ قصص الذين تمرّدوا فما لك تدرى سمَّ ذنبٍ وتُذنِبُ

89- क्या तू उन लोगों की घटनाएँ नहीं जानता जिन्होंने सरकशी (उद्दण्डता) की? तुझे क्या हो गया है कि तू गुनाह के ज़हर को तो जानता है, फिर भी गुनाह करता है?

أتُدامُ بين الاقربين كباطرٍ وإن غداة البين أدنٰى وأقربُ

90- क्या तू हमेशा अपने निकटतरों में इतराने वाले की तरह ही बना रहेगा? हालाँकि जुदाई की सुबह बहुत निकट और बहुत ही क़रीब है।

ومثلك جافٍ قد خلا ومكذِّبٌ فأبادهم ربٌّ قديرٌ معذِّبُ

91- और तेरे जैसे बहुत से झुठलाने और सताने वाले गुज़र चुके हैं। अन्ततः ख़ुदा ने दण्ड देकर उनका विनाश कर दिया।

سيسلب منك الضعفُ والشيب قوةً وما إن أرى عنك الغواية تُسلَبُ

92- कमज़ोरी और बुढ़ापा शीघ्र ही तेरी शक्ति छीन लेगी, लेकिन मैं नहीं समझता कि गुमराही तुझसे छीनी जाएगी।

فأكفِرْ وكذِّبْ أيها الشيخ دَائمًا وإنّى بفضل الله رجلٌ مهذَّبُ

93- अतः हे शैख़! तू जितना चाहे काफ़िर-काफ़िर कहता रह और झुठलाता रह, मैं तो अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) से एक विनम्र प्रकृति व्यक्ति हूँ।

وألهمَنى ربى وأعطى معارفًا فبنوره الاجلى إلى الحق أندُبُ

94- और मेरे रब्ब ने मुझे इल्हाम किया है और अध्यात्मज्ञान

प्रदान किए हैं। और उसी के रौशन नूर से मैं सत्य की ओर पूरी कोशिश से बुला रहा हूँ।

أتغفل مِن قهر الحسيب وأخذِه وتُذعِرنا مِن جَور خَلقٍ وتُرعِبُ

95- क्या तू हिसाब-किताब लेने वाले ख़ुदा के प्रकोप और पकड़ से ग़ाफ़िल (बेख़बर) है, और हमें लोगों के अत्याचार से डराता और भयभीत करना चाहता है?

نجاتك من جذبات نفسك مشكلٌ يُزلّ الغلام الخفرَ بَكْرٌ هَوزَبُ

96- तेरा अपने अहंकार से बच पाना मुश्किल है, तेज़ चलने वाला ऊँट अनाड़ी लड़के को फिसलाकर गिरा देता है।

إلى الله مرجعنا فيُظهِر خَبْأَنا على الاشقياء وكلّ أمر مرتَّبُ

97- हमें अल्लाह ही की ओर लौटकर जाना है फिर वह हमारी रहस्यपूर्ण बातों को दुश्मनों पर ज़ाहिर कर देगा, और हर काम के लिए एक प्रक्रिया है।

فقد كذّبوا بالحق لما جاءهم فسوف يُريهم ربنا ما كذّبُوا

98- अत: जब उनके पास सत्य आया तो उन्होंने उसको झुठला दिया। हमारा रब्ब निकट ही उन्हें अवश्य दिखा देगा कि उन्होंने किस चीज़ को झुठलाया है।

وقد كُذّبتْ قبلي عبادٌ ذووا التقٰى فصبروا علٰى ما كُذّبوا وتَرقّبوا

99- मुझसे पहले कई मुत्तक़ी (संयमी) बन्दे झुठलाए गए, अत: झुठलाए जाने पर उन्होंने सब्र किया और परिणाम की प्रतीक्षा की।

فلما نسوا فحواء ما ذُكّروا بهٖ أُسِفَّ وجوهُ قلوبهم ما قلَّبوا

100- जब वे (मुख़ालिफ़) उस बात का मतलब भूल गए जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी, तो उनके दिलों की हालत जो उन्होंने

(ख़ुद) बदलने की कोशिश की थी, बदल दी गई।

تَحامَونِ بالحقد المدمِّر كلّهم وأَمَّهم الشيخُ السفيه المعجَبُ

101- विनाशकारी ईर्ष्या-द्वेष के कारण उन्होंने मुझसे दूरी अपनाई और एक मूर्ख और अहंकारी शैख़ उनका लीडर बना है।

و كيف أخاف عنادَ قوم مفنَّدٍ ويَعْتامُنى ربّى عليهم و يصحَبُ

102- और मैं झूठे लोगों की दुश्मनी से कैसे डरूँ, जबकि मेरा रब्ब मुझको उन पर श्रेष्ठता और साथ दे रहा है।

فأبغى رضا ربّى وما أخشى العدا ولحربِ أعداء الهدى أتأهبُ

103- अत: मैं अपने रब्ब की प्रसन्नता चाहता हूँ और दुश्मनों से डरता नहीं, और हिदायत (अर्थात् इस्लाम) के दुश्मनों से धर्मयुद्ध के लिए तैयारी कर रहा हूँ।

ولكل نبأٍ مستقرٌّ معيّنٌ وما تُبسَل نفسٌ قبل وقت يُكتَبُ

104- और हर भविष्यवाणी के लिए एक समय निर्धारित है और किसी भी प्राणी को निर्धारित समय से पूर्व मृत्यु नहीं दी जाती।

و إن هُدى الله العليم هو الهدى ويعلم ما ندَعَنْ وما نحن نكسبُ

105- और सर्वज्ञ ख़ुदा की हिदायत ही असल हिदायत है, और जो हम छोड़ देते हैं या (पालन) करते हैं वह सब जानता है।

ويدرى أناسًا كفّرونا و كذّبوا إذا ادّاركوا لنضالهم وتحزَّبُوا

106- और वह उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जिन्होंने हमारी तक्फ़ीर और तक्ज़ीब की (अर्थात् काफ़िर और झूठा कहा), और वे अपनी तलवारें लेकर लड़ाई के लिए इकट्ठे हो गए और टोलियाँ बना लीं।

قلا نى الورى حتَّى الاقاربُ كلهم فمنهم كثعبان ومنهم عقربُ

107- लोगों ने मुझसे दुश्मनी की, यहाँ तक कि सारे सगे-सम्बन्धियों ने भी। उनमें कुछ तो अजगर की तरह हैं और कुछ बिच्छू की तरह।

وما نتقى حَرًّا بتلك الهواجرِ وفى الله ما نؤذَى ونُرمَى ونُجذَبُ

108- और इन दोपहरियों में हम गर्मी की परवाह नहीं करते। जो हमें कष्ट दिया जाता है, तीर मारे जाते हैं और घसीटा जाता है, यह सब ख़ुदा की राह में ही है।

وإنى بحضرته أموت بفضله فإن لم ينَلْنا العزُّ فالذلّ أطيبُ

109- और मैं तो ख़ुदा की कृपा से उसी के लिए ही मरूँगा, (इस राह में) अगर हमें सम्मान न मिला तो अपमान ही अच्छा है।

ألا كلّ مجد قد طرحتُ كجيفةٍ وفى كل أوقاتى إلى الله أُجلَبُ

110- सुनो! हर सम्मान को मैंने (उसकी राह में) मुर्दार की तरह फेंक दिया, और हर समय मैं ख़ुदा की ओर ही खिंचा चला जाता हूँ।

و إليه أسعى مِن جنانى ومُهْجتى ولغيره منى القَلا والتجنّبُ

111- और मैं अपने दिल व जान से उसी की तरफ़ दौड़ रहा हूँ और उसके अन्य से मुझे नफ़रत और दूरी है।

وإنى أعيش بهذه كمسافر وفى كل آنٍ مِن هوى أتغرّبُ

112- मैं इस दुनिया में मुसाफ़िर की तरह जीवन व्यतीत कर रहा हूँ और हर समय काम, क्रोध, लोभ, मोह से दूर रहता हूँ।

وما لى إلىٰ غير المهيمن رغبةٌ وعن كل ما هو غير ربّى أرغَبُ

113- और मुझे निगरान ख़ुदा के अलावा अन्य की ओर कोई झुकाव नहीं, और मैं हर उस चीज़ से जो मेरे रब्ब के विरुद्ध है उससे विमुख हूँ।

ألا أيها الشيخ الذى يتجنّبُ ترى إن تَتُبْ مِنّى الهوى والتحبّبُ

114- हे वह शैख़! जो मुझसे दूर भागता है, सुन! यदि तू अपनी धृष्टता से तौबा करे तो मेरी तरफ़ से प्रेम और स्नेह पाएगा।

ولستُ براضٍ أن ألاعِنَ لاعنًا فأختار نهج العفو والقلبُ مغضِبُ

115- और मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि लानत डालने वाले पर लानत डालूँ, मैं तो क्षमा का मार्ग ही अपनाता हूँ हालाँकि दिल प्रकोपित है।

رأيتُ بساتين الهدى مِن تذلُّلٍ وإنى بآلامى عُذَيقٌ مُرجَّبُ

116- मैंने विनम्रता के द्वारा हिदायत (सन्मार्ग) के बाग़ देखे हैं और इतने कष्टों के बावजूद मैं खजूर की ऐसी फलदार टहनी हूँ जिसे अत्यन्त फल के कारण सहारा दिया जाता है।

تسبّ وإن أعذِرْك فيما تسبّنى ولكن أمام الله تعصى وتُذنِبُ

117- तू मुझे गालियाँ देता है, और यदि मैं उन गालियों में तुझे मजबूर भी समझूँ तब भी अल्लाह के समक्ष तू नाफ़र्मानी कर रहा है और गुनहगार (पापी) बन रहा है।

تصول علىّ لهتكِ عرضى وأعتلى وأعطانىَ الرحمن ما كنتُ أطلبُ

118- तू तो मेरे सम्मान को मलियामेट करने के लिए मुझ पर लांछन लगाता है और मैं सम्मान पर सम्मान पाता जाता हूँ और रहमान ख़ुदा मुझे वह कुछ देता है जो मैं माँगता हूँ।

ترى عزّتى يومًا فيومًا فتنشوى وتهذى كأنّك بالهراوى تُضرَبُ

119- तू मेरे सम्मान को दिन-प्रतिदिन बढ़ता हुआ देखता है तो तू जलता-भुनता है और ऐसे अनर्गल बकता है कि जैसे तुझे लाठियों से मारा जा रहा है।

أرى أن نَشْزِى فيك كالرمح لاعجٌ ويُلاعجنَّك شأننا المترقَّبُ

120- मैं देखता हूँ कि मेरी उन्नति तुझमें तीर चुभने की तरह दर्द पैदा करने वाली है और हमारी वह हालत अवश्य तुझे दर्द पहुँचाएगी जिसकी (तुझे) प्रतीक्षा है।

ولو لم يكن فى القلب غير تغيُّظٍ فلا القلب إلا جمرةٌ تتلهبُ

121- और यदि दिल में ग़ुस्से के अतिरिक्त और कुछ न हो तो फिर वह दिल नहीं, बल्कि एक भड़कता हुआ अंगारा है।

ولا تحسبنّ قلبى إلى الضغن مائلا تعاشيبُ أرضى خُلّةٌ وتحبُّبُ

122- तू मेरे दिल को द्वेष की ओर झुकता न सोच, मेरे दिल में पैदा होने वाले विचार तो मित्रता और मुहब्बत हैं।

كمثلك عادٍ ما رأيتُ ولاعنًا أقولُك قولٌ أو سِنانٌ مُذرَّبُ

123- तेरे जैसा दुश्मन और लानत डालने वाला मैंने कभी नहीं देखा। क्या तेरी कोई बात, बात है या तेज़ किया हुआ भाला?

أردتَ وبالى لكنِ الله صانَنى تندَّمْ فقد فات الذى كنتَ تطلبُ

124- तूने मेरा विनाश चाहा, लेकिन अल्लाह ने मुझे बचाए रखा, शर्म से डूब मर कि जो कुछ तू चाहता था वह होने से रह गया।

ولستَ علىّ مسيطرًا و محاسبًا وما يعطينّ الربُّ أفأنت تسلُبُ

125- तू मुझ पर कोई दारोग़ा और पूछताछ करने वाला नहीं है। जो कुछ (मुझे) मेरा रब्ब दे रहा है, क्या तू (उसे) छीन सकता है?

ترفَّقْ فإن الرفق للناس جوهرٌ وما يترُكنْ سيفٌ فبالرفق يُجلَبُ

126- विनम्रता अपना, क्योंकि विनम्रता मानवता का सार (सद्गुण) है, जो काम तलवार से नहीं हो सकता वह विनम्रता से सम्भव है।

ولا تشرَبنْ جهلا أُجاجَ عداوةٍ ووالله إن السلم أحلى وأعذبُ

127- और मूर्खता से दुश्मनी का खारा पानी न पी, ख़ुदा की क़सम! मैत्रीयता बहुत ही मधुर और रुचिकर है।

ومن كان لا يتأدبنْ مِن ناصح فله دواهى الدهر نِعمُ المؤدِّبُ

128- और जो सदुपदेशक से शिष्टाचार नहीं सीखता, तो उसके लिए ज़माने की विपत्तियाँ अच्छी शिक्षक हैं।

أيا لاعِنى ما كنتُ بدعًا من الهوى لكل من العلماء رأىٌ ومذهبُ

129- हे मुझ पर लानत डालने वाले! सांसारिक लोभ-लालसा में तू कोई नया व्यक्ति नहीं है, उलेमा में से हर एक का यही चाल-चलन और यही सोच है।

علىّ لربّى نعمةٌ بعد نعمة فلا زلتُ فى نعمائه أتقلّبُ

130- मुझ पर मेरे ख़ुदा की नेमत पर नेमत बरस रही है। मैं हमेशा उसकी नेमतों से ओतप्रोत रहता हूँ।

وإن رسول الله شمسٌ منيرةٌ وبعد رسول الله بدرٌ و كوكبُ

131- और नि:सन्देह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक कांतिमान सूरज हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद चौदहवीं का चाँद और सितारे हैं।

جرت عادة الله الذى هو ربنا يُرى وجهَ نور بعد نور يذهَبُ

132- अल्लाह तआला जो हमारा रब्ब है उसका यह शाश्वत् विधान जारी है कि वह एक नूर के जाने के बाद दूसरे नूर का चेहरा दिखा देता है।

كذلك فى الدُّنيا نرى قانونه نجوم السما تبدو إذا الشمس تغرُبُ

133- उसी तरह संसार में हम उसका क़ानून पाते हैं कि जब

सूरज डूब जाता है तो आसमान के सितारे प्रकट हो जाते हैं।

خَفِ اللهَ يا من بارزَ اللهَ مِن هوى وإن الفتى عند التجاسر يرهَبُ

134- हे वह व्यक्ति! जो तामसिक आवेगों से ख़ुदा का मुक़ाबला करता है, ख़ुदा से डर। नि:सन्देह बहादुर यौद्धा भी ऐसा दुस्साहस दिखाने से डरता है।

ولا تطلُبَنْ ريحانَ دنياك خِسّةً وشوكُ الفيافي منه أشهى وأطيبُ

135- तू अपनी दुनिया की शोहरत (प्रसिद्धि) को नीचता (कमींनगी) से मत कमा, हालाँकि जंगलों के काँटे भी इसकी अपेक्षा अधिक अच्छे और रुचिकर हैं।

يزيد الشقيَّ شقاوةً طولُ أمنِه ويُرخي المهيمن حبلَه ثم يجذِبُ

136- दुष्ट का लम्बे समय तक निडर रहना उसे दुष्टता में बढ़ा देता है, और निरीक्षक ख़ुदा (पहले) उसकी रस्सी को ढीला करता है फिर उसे खींच लेता है।

إذا ما قصدتُ إشاعة الحق في الورى صددتَ وتبدي كلّ خبث وتَثلِبُ

137- और जब मैंने लोगों में सत्य के प्रचार का इरादा किया तो तू रोक बना, और तू हर तरह की दुष्टता प्रकट कर रहा है और दोष लगा रहा है।

وأنت ترى الإسلامَ قفرًا كأنه مقابرُ أموات وأرضٌ سَبسبُ

138- और तू इस्लाम को (इस तरह) एक चटियल मैदान समझ रहा है, जैसे कि वह एक क़ब्रिस्तान और बंजर ज़मीन है।

تصول العدا مِن جهلهم وعنادهم على صُحف مولانا وكُلٌّ يكذّبُ

139- दुश्मन अपनी मूर्खता और दुश्मनी से हमारे आक़ा के सहीफ़ों पर हमला कर रहे हैं। और हर एक (दुश्मन) उन्हें झुठला

रहा है।

وهدىٌ كسِمْطَى لؤلؤٍ وزَبَرجَدٍ به الطفل يلهو مِن عناد و يجدِبُ

140- और क़ुर्आन तो हीरे और मोतियों की दो सुन्दर लड़ियों की तरह एक हिदायत है, परन्तु बचकाना दिमाग़ दुश्मनी के कारण उससे खेलता और उस पर दोष लगाता है।

ومِن كل طرف تمطرنّ سهامُهم فهذا على الإسلام يومٌ عَصَبْصَب

141- और हर तरफ़ से उनके (हमले के) तीर बरस रहे हैं, अत: यह इस्लाम पर एक घोर संकट का दिन है।

نرٰى هذه مِن كل قوم بعيننا فتذرِف عينُ الروح والقلبُ يشجَبُ

142- यह हमला हर क़ौम की तरफ़ से हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। जिससे अन्दर की आँख आँसू बहा रही है और दिल तड़प रहा है।

فقمتُ فعادانى عِداى و معشرى فلى مِن جميع الناس لعنٌ مركَّبُ

143- अत: जब मैं (हमलों का जवाब देने के लिए) उठा तो मुझसे मेरे दुश्मन भी और मेरे ख़ानदान के लोग भी दुश्मनी करने लगे। फिर मुझे ऐसे तमाम् लोगों की ओर से इकट्ठी लानत मिली।

ولم يبق إلا حضرة الوتر ملجأٌ ومِن باب خَلاق الورى أين أذهب

144- और ख़ुदा के अलावा कोई पनाह की जगह न रही, और ख़ुदा के द्वार के अलावा मैं जा भी कहाँ सकता हूँ।

فإن ملاذى مستعانٌ يحبّنى ويسقينِ من كأس الوصال فأشربُ

145- नि:सन्देह मेरी पनाह तो वह हस्ती है जिससे सहायता माँगी जाती है, (और) वह मुझसे प्रेम करता है और मुझे प्रेम का प्याला पिलाता है और मैं पीता हूँ।

غيورٌ فيأخذ رأسَ خصمى إذا اعتدى غفورٌ فيغفر زلّتى حين أُذنِبُ

146- वह अत्यन्त ग़ैरतमन्द (स्वाभिमानी) है और मेरे दुश्मन को जब वह हद से बढ़ता है तो सिर से पकड़ लेता है। जब मैं कोई ग़लती करता हूँ तो वह मेरी ग़लती को क्षमा कर देता है। वह अत्यन्त क्षमा करने वाला है।

وإنى بَرِىءٌ مِن رياحين غيرِهِ وعذابُ شوكٍ منه عذبٌ وطيّبُ

147- मैं उसके अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से मिलने वाली प्रसिद्धि से भी विमुख हूँ, उसकी ओर से मिलने वाली काँटे की तकलीफ़ भी (मेरे निकट) मधुर और रुचिकर है।

يحبّ التذللَ والتواضعِ ربُّنا ومن ينـزلَنْ عن فرسِ كِبرٍ يركبُ

148- हमारा रब्ब तो विनम्रता और विनीतता को पसन्द करता है, जो अहंकार के घोड़े से नीचे उतर आए वही साहसी (बहादुर) बनाया जाता है।

وللصابرين يوسّع الله رحمةً ويفتح أبواب الجدٰى و يُقرّبُ

149- और सब्र (धैर्य) रखने वालों के लिए ख़ुदा अपनी कृपा को बढ़ा देता है और बख़्शिश (उपकार) के दरवाज़े खोल देता है और सानिध्य प्रदान करता है।

تعرّفتُه حتى أتتنى معارفٌ وإن الفتى فى سُؤْله لا يلغَبُ

150- मैंने लगातार उससे अध्यात्मज्ञान माँगा, यहाँ तक कि उसने मुझे बहुत अध्यात्मज्ञान प्रदान किया, नि:सन्देह साहसी (धैर्यवान्) इन्सान ख़ुदा से माँगने में नहीं थकता।

رأيناه من نور النبى المصطفٰى ولولاه ما تُبْنا ولا نتقربُ

151- हमने उस (ख़ुदा) को नबी मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के नूर (अर्थात् शिक्षा) के द्वारा पा लिया। यदि वह नबी (अवतार) न होता तो न हम ख़ुदा की ओर झुकते और न हम ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त करने वाले बनते।

له درجاتٌ فی المحبّة تامّةٌ له لمعاتٌ زال منها الغَيهَبُ

152- उस नबी (अवतार) को ख़ुदा के प्रेम में उच्चतम् स्थान प्राप्त हैं, उसको ऐसी रौशन किरणें मिलीं कि जिनके द्वारा अन्धकार दूर हो गया।

ذُكاءٌ منيرٌ قد أنار قلوبنا وله إلٰی یوم النشور معقِّبُ

153- वह चमकता हुआ सूरज है, उसने हमारे दिलों को रौशन कर दिया है और क़यामत के दिन तक उसका कोई न कोई जानशींन पैदा होता रहेगा।

وفی اللیل بعد الشمس قمرٌ منوَّرٌ کما فی الزمان نشاهِدنٌ ونجرِّبُ

154- और सूरज के बाद रात को चमकता हुआ चाँद आता है, जैसा कि हम ज़माने में देखते और अनुभव रखते हैं।

وللّٰه ألطافٌ علی مَنْ أحبَّهٗ فوابِلُه فی کلّ قرن یسکُبُ

155- और ख़ुदा की उस व्यक्ति पर कृपाएँ होती हैं जो उस नबी मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम करे। अत: उसकी मूसलाधार बारिश हर सदी में बरसा करती है।

وشِیمتُه قد أُفرِدتْ فی فضائلٍ وقد فاق أحلامَ الوری أفتعجَبُ

156- ऐसी दशा में वह अपने अख़्लाक़ (शिष्टाचारों) में लोगों के अनुमान से आगे बढ़ गया और उसका अख़्लाक़ (शिष्टाचार) विशेषताओं में बेजोड़ हो गया।

ورعَی وآتَی الصحبَ لبنًا سائغًا ولیس کراعی الغنم یرعی ویحلِبُ

157- वह ग्वाला बना और उसने अपने सहचरों को रुचिकर मीठा दूध प्रदान किया। वह बकरियों के चरवाहे की तरह नहीं जो बकरियाँ चराता और दूध दुह लेता है।

وليس التُّقى فى الدين إلا اتّباعه و كل بعيد مِن هداه يُقرَّبُ

158- और दीन (इस्लाम) में तक़्वा (संयम) केवल उस (नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के अनुकरण का नाम है। और हर वह व्यक्ति जो हिदायत से दूर है उसकी शिक्षा से ही (ख़ुदा का) सानिध्य पा सकता है।

ولو كان ماءٌ مثل عسلٍ بطعمه فواللهِ بحرُ المصطفى منه أعذَبُ

159- और यदि पानी अपने स्वाद में शहद की तरह भी (मीठा) हो तो ख़ुदा की क़सम! मुस्तफ़ा का सागर तो उससे भी अधिक मीठा है।

مدحتُك يا محبوبُ مِن صدق مُهْجتى ولولاك ما كنّا إلى الشعر نرغَبُ

160- हे महबूब! मैंने अपने सच्चे दिल से तेरी प्रशंसा की है, और यदि तू न होता तो हम शैर (पद्य) लिखने की ओर अग्रसर न होते।

وإنا لَجِئْنا فى عطائك راغبًا ومَنْ جاء بابك سائلا لا يُثرَّبُ

161- और हम तेरे उपकारों से आगे आकर्षित होते आए हैं, और जो तेरे द्वार पर भिखारी बनकर आए वह धुत्कारा नहीं जाता (अर्थात् उपकार से वंचित नहीं रहता)।

ووالله حُبُّك للنجاة لمؤمنٍ دليلٌ وعنوانٌ فكيف نخيَّبُ

162- और ख़ुदा की क़सम! तेरा प्रेम मोमिन की निजात (मुक्ति) के लिए एक मार्गदर्शक और संकेत है, तो फिर हम किस तरह नामुराद रह सकते हैं।

وآثرتُ حُبّك بعد حبّ مهيمنى وتُصبى جنانى مِن سناك وتجلِبُ

163- और (हे नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मैंने तेरी मुहब्बत को अपने संरक्षक (निगरान) ख़ुदा की मुहब्बत के बाद अपनाया है, और (हे मुस्तफ़ा) तू मेरे दिल को अपने नूर (रौशन शिक्षा) के द्वारा मोहित और आकर्षित कर रहा है।

ونستصغر الدنيا وخضراءَها معًا فلا نجتنى منها ولا نُستخلبُ

164- और हम दुनिया और साथ ही उसकी चमक-दमक को तुच्छ समझते हैं। अत: हम उसका कोई फल नहीं तोड़ते और न ही उसके काँटों से ज़ख़्मी होना चाहते हैं।

ألا أيها الشيخ الذى أكفرتَنى وإنى بزعمك كافرٌ ثم هَيدَبُ

165- हे वह शैख़ जो मुझे काफ़िर कहता है! सुन, यदि मैं तेरे विचारानुसार काफ़िर और असहाय हूँ

فتلك بعون الله منى قصيدةٌ محبَّرةٌ ونظيره منك أَطْلُبُ

166- तो अल्लाह की सहायता से मेरी ओर से लिखा हुआ यह क़सीदा मौजूद है और मैं इस क़सीदा (कविता) के तुल्य तुझे लिखने की चुनौती देता हूँ।

وهذى ثلاثٌ قد نظمنا وهِدْيةٌ ببحرٍ خفيف لِلأحبّاء أنسبُ

167- और यह तीन क़सीदे हमने पिरोए हैं और हल्के-फुल्के समुद्र में (तैराक की परीक्षा हेतु) मित्रों के लिए यह अत्यन्त उचित हैं।

فإن كنتَ ذى علم فآتِ نظيرَها وإنْ تعجزنْ جهلا فكِبرُك أعجبُ

168- अत: यदि तू ज्ञानी है तो इसके तुल्य लिखकर प्रस्तुत कर, और यदि तू मूर्खता के कारण लाचार हो जाए तो तेरा अहंकार अत्यन्त आश्चर्यचकित करने वाला है।

तफ़्सीर सूरः फ़ातिहा
(सूरः फ़ातिहा की व्याख्या)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर एक प्रशंसा का पात्र वह अल्लाह है जिसकी महानता के सामने सारे सिर नतमस्तक हैं और जिसकी प्रतिष्ठा और प्रताप के सामने सारी आँखें स्तब्ध हैं। जिसका कोई हमसर, हमपल्ला, सदृश और भागीदार नहीं। वही एक हस्ती है जिसने लोगों के सुधार के लिए सुधारक (अवतार) भेजे, और उसने हर उस व्यक्ति को मुक्ति दी जिसने उन (सुधारकों) के आदर्शों को अपनाया और उन पर चला, और ख़ुदा ने उसे चुन लिया जिसने उनकी तमाम् राहों को अपनाया और उनका अनुसरण किया और उनसे मुँह न फेरा। और अल्लाह से राज़ी हो गया और उसकी स्तुति और प्रशंसा की। और उस समस्त नबियों (अवतारों) के गौरव ख़ात्मुल् अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम (ख़ुदा की कृपा और दया) हो, जो ऐसे वर्ग के पेशवा और प्रधान हैं जिनकी सांसारिक इच्छाएँ समाप्त हो गयीं और उनके स्वाभाविक दोष नष्ट कर दिए गए और उनके दिलों में अध्यात्म (रूहानियत) के सागर ठाठें मारने लगे और अल्लाह ने उनसे कलाम (बातें) किया और उनको अपना मित्र बनाया और उनसे अटूट और अगाध प्रेम किया। ख़ात्मुल् अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के उन धीर-वीर योद्धाओं के इमाम हैं जिन्होंने ने षडयन्त्री शैतान को नाकाम

और नामुराद किया, यहाँ तक कि वह अपनी कुचाल में नाकाम शिकारी की तरह हाथ मलता रह गया। और वह इमाम ख़ात्मुल् अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं जिन्होंने उस भेड़िए को फ़साद और विनाश करने से रोका जिसने बनी इस्राईल के नबियों की भेड़ों को खा लिया था। और ख़ात्मुल् अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही वह नबी हैं जो लोगों को ख़ुदा की ओर लाए और उन्हें भेड़िए (शैतान) से बचाया और सीधा एवं शान्तिप्रद मार्ग दिखाया। अतः सलाम हो उस सफल शूरवीर साहसी और प्रतापी महानायक पर, इस लोक में भी और परलोक में भी।

तत्पशचात् अल्लाह तआला तेरी रहनुमाई करे। यह भलीभाँति जान ले कि यह किताब (करामातुस्सादिक़ीन) हर उस व्यक्ति के लिए पर्याप्त है जो फ़ातिहतुल् किताब (अर्थात् सूरः फ़ातिहा) के बाग़ों में सैर करना चाहे और उसके रहस्यों की वास्तविकताएँ और उसके अध्यात्म के सागर को सही तौर पर जानने का इच्छुक हो। और मैंने इस (पुस्तक) में वर्णित जितने भी मोती पिरोए हैं उनमें मैं रहमान ख़ुदा की कृपाओं में से अद्वितीय हूँ और इल्हाम करने वाले उपकारी ख़ुदा की ओर से मुझे उसका ज्ञान दिया गया है। इसमें यदा-कदा के अतिरिक्त जो न होने के बराबर है, न तो पहलों की किसी तहरीर से सहायता ली गई है और न ही पूर्व इमामों की बातों से कुछ नक़ल किया गया है और न ही इसमें पूर्व विद्वानों का कुछ जूठन है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी है वह मेरे उस रब्ब की ओर से है जिसने अपने नए-नए उपकार व्यापक रूप से मुझ पर किए हैं और इल्हाम करके

मुझे ऐसे महान रहस्य बताए जो उलेमा में से किसी को नहीं बताए गए। यह इसलिए है कि वह उनके द्वारा मुझे दृढ़ता प्रदान करे, मेरा बोझ मुझसे उतार दे और बहस करने वालों के अनुचित व्यवहार के मुक़ाबले में मेरा समर्थन करे और इन्कार करने वाले अहंकारियों पर मेरा तर्क अकाट्य और निर्णायक सिद्ध करे। समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें सन्मार्ग प्रदान किया, यदि अल्लाह हमें हिदायत न देता तो हम कभी हिदायत (सन्मार्ग) न पा सकते थे। वह हमारा रब्ब है और हमारी शरणगाह है। हम उसी की ओर झुकते हैं और वह सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।

हे वह जो इस किताब का अध्ययन कर रहा है! तुझे ज्ञात हो कि हमने इसमें ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' की तफ़्सीर (व्याख्या) छोड़ दी है और उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा, क्योंकि सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर उसकी तफ़्सीर को अपने घेरे में लिए हुए है, और इस तफ़्सीर के खुले-खुले वर्णन से हम ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' की तफ़्सीर (व्याख्या) बयान करने से निस्पृह हो गए हैं। अब हम सहायक और मददगार ख़ुदा पर भरोसा करते हुए मूल उद्देश्य का आरम्भ करते हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह

''हम्द'' उस प्रशंसा को कहते हैं जो किसी प्रभुत्ववान् सुन्दर हस्ती के सुन्दर कामों पर उसकी प्रताप और प्रतिष्ठा को दिल से स्वीकार करने के उद्देश्य से मुँह से वर्णन की जाए और पूर्णतम् ''हम्द'' (प्रशंसा) अतिप्रतापी पालनहार ख़ुदा से विशिष्ट है। और

हर छोटी-बड़ी हम्द (प्रशंसा) का मुख्य केन्द्र हमारा वह रब्ब है जो भूले-भटकों को सन्मार्ग दिखाने वाला और तिरस्कृत लोगों को प्रतिष्ठा प्रदान करने वाला है और प्रशंसितों का भी प्रशंसित है।

अधिकतर विद्वानों के निकट ''शुक्र'' नामक शब्द ''हम्द'' नामक शब्द से इस दृष्टि से अन्तर रखता है कि वह ऐसी विशेषताओं से विशिष्ट है जो दूसरों को लाभ पहुँचाने वाली हों, और ''मदह'' नामक शब्द का ''हम्द'' नामक शब्द से अन्तर यह है कि मदह ग़ैर इख़्तियारी (शक्तिहीन) और सुन्दर चीज़ों की प्रशंसा में भी की जाती है और यह बात अलंकर्ताओं, वाग्मियों और प्रकाण्ड विद्वानों से छुपी नहीं।

और अल्लाह तआला ने अपनी किताब को ''हम्द'' से शुरू किया है न कि ''शुक्र'' और ''सना'' से, क्योंकि शब्द ''हम्द'' उपरोक्त दोनों शब्दों के अर्थों को अपने घेरे में लिए हुए है और वह उनका स्थानापन्न होता है लेकिन उसमें सुधार सुसज्जा और सुश्रृंगार आदि करने के भाव (अर्थ) अधिक पाए जाते हैं। चूँकि कुफ़्फ़ार (अधर्मी) अकारण अपनी मूर्तियों की हम्द (प्रशंसा) किया करते थे और वे उनकी ''मदह'' (तारीफ़) के लिए ''हम्द'' नामक शब्द का प्रयोग किया करते थे और यह अक़ीदा (आस्था) रखते थे कि वे बुत (मूर्तियाँ) सारे उपकार और उपहार का मुख्य स्रोत हैं और सख़ावत (दान) करने वाले हैं। इसी तरह उनके मुर्दों के मातम करने वालियों की ओर से गुणगान के समय बल्कि युद्धस्थलों में और विभिन्न आयोजनों के अवसरों पर भी उसी तरह हम्द (प्रशंसा) की जाती थी जिस तरह उस अन्नदाता, संरक्षक और पालनहार ख़ुदा की

की जानी चाहिए। इसलिए यह शब्द ''अल्हम्दुलिल्लाह'' ऐसे लोगों और दूसरे यह कि अल्लाह का हमपल्ला या साझीदार ठहराने वालों की आस्था का खण्डन है और बुद्धि एवं विवेक से काम लेने वालों के लिए नसीहत है। और इन शब्दों में अल्लाह तआला मूर्तिपूजकों, यहूदियों, ईसाइयों और अन्य समस्त मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को झिड़कता और शर्मिन्दा करता है मानो वह यह कहता है कि हे मुश्रिको (बहुदेववादियो)! तुम अपने मनगढ़त ख़ुदाओं की क्यों प्रशंसा करते हो? और अपने पूर्वजों की बढ़ा-चढ़ाकर क्यों प्रशंसा करते हो? क्या वे तुम्हारे रब्ब (पालनहार) हैं जिन्होंने तुम्हारी और तुम्हारी सन्तान की परवरिश है? या वे ऐसे रहम करने वाले हैं जो तुम पर रहम करते हुए तुम्हारी मुसीबतों को दूर करते हैं और तुम्हारे दुःखों और कठिनाइयों को दूर करते हैं? और जो भलाई तुम्हें मिल चुकी है उसकी रखवाली करते हैं? और तुम्हारी मुसीबतों की बदहाली और मैल-कुचैल को तुमसे दूर करते हैं? और तुम्हारी बीमारी का इलाज करते हैं? या वे प्रतिफल दिवस (हिसाब-किताब के दिन) के मालिक हैं? नहीं, बल्कि वह तो अल्लाह तआला ही है जो हिदायत के साधन उपलब्ध करके, दुआएँ क़ुबूल करके और दुश्मनों से रक्षा करके तुम्हारी ख़ुशियों को बढ़ाकर तुम पर रहम करता है और तुम्हारी परवरिश करता है और अल्लाह तआला नेकी करने वालों को अवश्य अच्छा प्रतिफल प्रदान करेगा।

और ''हम्द'' शब्द में एक और संकेत भी है और वह यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे मेरे बन्दो! मेरी विशेषताओं से मुझे समझो और मेरी महानताओं से मुझे पहचानो। मैं दोषपूर्ण

हस्तियों की तरह नहीं, बल्कि प्रशंसा में अतिशयोक्ति करने वालों से भी बढ़कर मेरी प्रशंसा है और तुम समस्त आसमानों और ज़मीनों में कोई ऐसी प्रशंसनीय विशेषताएँ नहीं पाओगे जो तुम्हें मेरे वजूद में न मिल सकें। और यदि तुम मेरी प्रशंसनीय विशेषताओं को गिनना चाहो तो तुम उन्हें कभी नहीं गिन सकोगे, चाहे तुम कितनी ही कोशिश करो और तल्लीनों की तरह कष्ट उठाओ। ख़ूब सोचो! क्या तुम्हें कोई ऐसी प्रशंसा नज़र आती है जो मेरे वजूद में न पाई जाती हो? क्या तुम्हें कोई ऐसी महानता का पता मिलता है जो मुझसे और मेरी चौखट से दूर हो? और यदि तुम ऐसा सोचते हो तो तुमने मुझे पहचाना ही नहीं और तुम अन्धों में से हो। मैं (अल्लाह) अपनी प्रशंसनीय विशेषताओं और महानताओं से पहचाना जाता हूँ और मेरी मूसलाधार बारिश का पता मेरे उपकार के बादलों से लगता है। अत: जिन लोगों ने मुझे समस्त महानताओं और व्यापक विशेषताओं का ख़ज़ाना समझा और उन्होंने जहाँ भी जो विशेषता देखी और अपनी उत्कृष्टतम् सोच तक उन्हें जो भी तेज नज़र आया तो उन्होंने उसे मेरी ओर ही मंसूब किया। और हर महानता जो उनकी आँखों और अक़्लों में प्रकट हुई और हर शक्ति जो उन्हें उनकी सोच-समझ के दर्पण में नज़र आई, उन्होंने उसे मेरी ओर ही मंसूब किया। अत: यह ऐसे लोग हैं जो मुझे जानने-पहचानने की राहों पर चल रहे हैं। सत्य उनके साथ है और वे सफल होने वाले हैं।

अल्लाह तुम्हें सुख-शान्ति से रखे। उठो और महाप्रतापी ख़ुदा की विशेषताओं की तलाश में लग जाओ और बुद्धिमानों तथा सोच-विचार करने वालों की तरह उनमें सोच-विचार और गहरी नज़र से

काम लो। अच्छी तरह देखभाल करो और महानता के हर पहलू पर नज़र डालो और इस संसार की प्रत्यक्ष और परोक्ष चीज़ों में उसे इस तरह ढूँढ़ो जैसे कि एक उत्सुक बड़ी तल्लीनता से अपनी इच्छाओं की तलाश में रहता है। और जब तुम उसके चर्मोत्कर्ष तक पहुँच जाओ और उसकी ख़ुशबू पा लो तो मानो तुमने उसी को पा लिया। अत: यह ऐसा रहस्य है जो केवल हिदायत (सन्मार्ग) के अभिलाषियों पर ही खुलता है।

अत: यह तुम्हारा वह रब्ब और आक़ा (मालिक) है जो स्वयं सर्वशक्तिमान है और समस्त व्यापक एवं सर्वोत्कृष्ट विशेषताओं और प्रशंसाओं का मुख्य स्रोत है। उसको वही पहचान सकता है जो ''सूर: फ़ातिहा'' में ग़ौर करे और पूरे दर्देदिल से ख़ुदा तआला से सहायता माँगे। वे लोग जो अल्लाह तआला से वादा करते समय अपनी नीयत को साफ़ रखते हैं और बैअत (प्रण) कर लेते हैं और अपने आप को हर प्रकार की ईर्ष्या-द्वेष से रहित करते हैं उन पर इस सूर: (फ़ातिहा) के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और वे तुरन्त मर्मज्ञ बन जाते हैं।

इसके अतिरिक्त ''अल्हम्दुलिल्लाह'' में एक संकेत यह भी है कि जो ख़ुदा तआला की पहचान के विषय में अपने दुष्कर्मों और कुधारणाओं से तबाह व बर्बाद हुआ या उसके अतिरिक्त किसी और को ख़ुदा बना लिया तो समझो कि वह ख़ुदा तआला की महानताओं की ओर से अपना ध्यान फेर लेने, उसकी अनोखी चीज़ों को न देखने और जो बातें उसकी महानता के योग्य हैं उनसे झूठ के पुजारियों की तरह ग़फ़लत (उपेक्षा) बरतने के कारण तबाह व बर्बाद हो गया। क्या तू ईसाइयों को नहीं देखता कि उन्हें तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाया

गया तो उन्हें इसी (ग़फ़लत की) बीमारी ने तबाह व बर्बाद कर दिया और उनकी भ्रष्ट सोच और बहका देने वाली इच्छाओं ने उनके लिए यह विचार ख़ूबसूरत करके दिखा दिया कि उन्होंने एक असहाय बन्दे को ख़ुदा बना लिया और भ्रष्टता एवं मूर्खता का जाम पी लिया और अल्लाह तआला की महानता और उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं को भूल गए, और उसके लिए बेटे और बेटियों की विचारधारा रच ली। यदि वे अल्लाह तआला की विशेषताओं पर गहरी नज़र डालते तो उनकी बुद्धि धोखा न खाती और वे तबाह व बर्बाद होने वालों में से न हो जाते। यहाँ अल्लाह तआला ने इस ओर संकेत किया है कि उसके जानने-पहचानने के सम्बन्ध में ग़लती से बचाने वाला क़ानून यह है कि उसकी महानताओं पर पूर्णत: ग़ौर किया जाए, और उसकी हस्ती के योग्य विशेषताओं का अनुसरण किया जाए और उन विशेषताओं की प्रशंसा (जप) की जाए जो हर भौतिक उपहार से अत्युत्तम और हर सहायता से अत्यन्त प्रासांगिक (अवसरानुकूल) हैं, और उसने अपनी शक्ति, सामर्थ्य और प्रभुत्व के कार्यों द्वारा जो विशेषताएँ सिद्ध की हैं उन्हें उसकी दानशीलता समझी जाए। इस बात को याद रखो और लापरवाह मत बनो और जान लो कि अल्लाह पूर्णत: पालनहार, कृपालु और दयालु है और पाप-पुण्य का पूर्ण प्रतिफलदाता है। अत: हे मुख़ातिब! अपने पालनहार की आज्ञापालन से इन्कार न कर और ख़ुदा को एक और अद्वैत मानने वाले सच्चे मुसलमानों में से बन जा। इस आयत में अल्लाह तआला ने इस ओर संकेत किया है कि वह किसी गुण या अवस्था के परिवर्तन और नवीनीकरण, किसी दोष के पैदा होने, किसी विशेषता में कमी होने इत्यादि से रहित है। बल्कि उसके लिए आदि और अन्त एवं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष में हमेशा

के लिए प्रशंसा सिद्ध है। और जो इसके उलट कहे वह सच से मुँह फेरकर काफ़िरों (अधर्मियों) में से हो गया।

आपको मालूम हो गया है कि यह आयत ईसाइयों और मूर्तिपूजकों (के अक़ीदा) का खण्डन करती है, क्योंकि वे अल्लाह तआला की महानता को पूरा स्थान नहीं देते और उसकी चमक के फैलने की उम्मीद नहीं रखते, बल्कि उस पर अन्धकार का पर्दा ढक देते हैं और उसे दु:खों के मार्गों में डाल देते हैं और उसे समस्त महानताओं से दूर रखते हैं और सृष्टि में से एक बड़ी संख्या को उसका साझीदार ठहराते हैं।

अत: यह वह ऐसी ग़लत कल्पना (आस्था) है जिसने उनको तबाह व बर्बाद कर दिया है और यह वह अन्धा अनुसरण है जिसने उनको बर्बाद कर दिया है। झूठे और चालबाज़ों की बातों पर भरोसा करने ने उन्हें मलियामेट कर दिया, और उन्होंने यही समझ रखा है कि वे सच्चे हैं। और कहते हैं कि यह बातें हदीसों की चुनी हुई संकलित पुस्तकों में विश्वस्त रावियों द्वारा लिखित हैं। उन्होंने अपने बाप-दादों के ठोकरें खाने और अपने उलेमा के मूर्ख होने और नबियों की शिक्षाओं के मुख्य बिन्दुओं से आगे-पीछे दूर-दूर तक हर मैदान में अत्यन्त प्यासे होकर ढूँढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया। उनकी बुद्धि और विवेक पर आश्चर्य है कि वे जानते हैं कि अल्लाह तआला की हस्ती पूर्णत: सर्वगुणसम्पन्न और सर्वशक्तिमान है और उसमें किसी प्रकार की कोई कमी, कुरूपता, कमज़ोरी, भूल या बदलाव एवं परिवर्तन का कोई औचित्य नहीं। फिर भी वे उसमें बहुत सी ऐसी बातों का होना वैध समझते हैं और उसकी ओर हर क्रूरता, कमी, दोष और

नुकसान को मन्सूब करते हैं और उस बात को ख़ुद ही झुठला रहे हैं जिसको उन्होंने पहले सच्चा कहा था और पागलों की तरह अनर्गल (व्यर्थ) बातें करते रहते हैं।

''अल्हम्दुलिल्लाह'' के शब्द में मुसलमानों को यह शिक्षा दी गई है कि जब उनसे प्रश्न किया जाए और उनसे पूछा जाए कि उनका माबूद (ख़ुदा) कौन है तो हर मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह यह उत्तर दे कि मेरा माबूद (ख़ुदा) वह है जिसके लिए हर एक प्रशंसा है और किसी प्रकार की कोई महानता या शक्ति ऐसी नहीं जो उसके लिए सिद्ध न हो। अतः तू भूलने वालों में से न बन। यदि मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में थोड़ा सा भी ईमान (विश्वास) पैदा हो जाता और अध्यात्मज्ञान की हल्की सी भी फुहार पड़ जाती तो वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्रष्टा (ख़ुदा) पर कुधारणा रखकर (आध्यात्मिक दृष्टि से) तबाह न होते। लेकिन उन्होंने ख़ुदा तआला को ऐसे व्यक्ति की तरह समझ लिया जो जवानी के बाद बूढ़ा हो गया हो और अपनी निस्पृहता के बाद साधनों का मुहताज हो गया हो और उस पर बुढ़ापा और कमज़ोरी की मुसीबतें और अकाल व अभाव की रुकावटें आ पड़ी हों और वह बेबस हो गया हो बल्कि तबाही के किनारे जा लगा हो और बिल्कुल मुहताज हो गया हो।

رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰن۔ الرَّحِيْم۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ

(रब्बुल् आलमीन, अल्-रहमान, अल्-रहीम, मालिक यौमिद्दीन)

सबसे पहले आपको यह ज्ञात हो कि आलम (जगत) उसे कहते हैं कि जिसके बारे में इल्म (ज्ञान) दिया जाए और बताया जाए, और

जो एक प्रबन्धकुशल दृढ़निश्चय स्रष्टा (सर्वशक्तिमान ख़ुदा) पर संकेत करे और हर सत्याभिलाषी को उस पर विश्वास करने पर मजबूर करे और उसको मोमिनों (विश्वासपात्रों) के मरतबे तक पहुँचा दे।

जहाँ तक इन आयतों में अल्लाह तआला के बयान किए हुए नामों के गुप्त भेदों और उनमें भरे हुए नाना प्रकार के मर्मों का सम्बन्ध है तो इसके बारे में मेरी ओर ध्यान केन्द्रित कर, मैं तेरे लिए उन रहस्यों को खोलकर बयान करूँगा। लेकिन शर्त यह है कि तू मुझसे पूछे और सज्जनों की भाँति मेरे पास आए। स्पष्ट हो कि यह चारों (रब्बुलआलमीन, अल्-रहमान, अल्-रहीम, मालिक यौमिद्दीन) विशेषताएँ अल्लाह तआला की व्यापक दानशीलताओं की मुख्य स्रोत हैं जो धरती और आसमान पर रहने वालों पर होती हैं, और हर विशेषता एक विशेष प्रकार के उपकार का उद्गम स्रोत है। और यह विशेषताएँ इस क्रम से बयान की गई हैं जिस क्रम से ख़ुदा तआला ने उनके लक्षण संसार में जारी कर रखे हैं, ताकि वह अपने कथन की अपने कर्म से अनुकूलता सिद्ध कर दिखाए, और सोचने-समझने वालों के लिए एक निशान हो। इन असीम दानशीलता सम्बन्धी विशेषताओं के प्रकारों में से पहली प्रकार की विशेषता वह है जिसका नाम हमारा ख़ुदा ''रब्बुलआलमीन'' (समस्त लोकों का पालनहार) रखता है और यह विशेषता दानशीलता का लाभ पहुँचाने में दूसरी समस्त विशेषताओं से अत्यन्त व्यापक है। इसलिए आवश्यक है कि हम इस विशेषता के उपकार का नाम ''सर्वव्याप्त दानशीलता'' रखें। क्योंकि पालन-पोषण करने की यह विशेषता केवल सजीवों और निर्जीवों पर ही हावी नहीं, बल्कि आसमानों और ज़मीनों पर भी

छायी है और इस विशेषता का उपकार दूसरी विशेषता के हर उपकार से अधिक व्यापक है। जिसने न किसी इन्सान को वंचित रखा और न किसा हैवान को, न किसी पेड़ को और न किसी पत्थर को, न किसी आसमान को और न किसी ज़मीन को। बल्कि उसकी रहमत (कृपा) की वर्षा हर चीज़ पर हुई और उसे जीवन प्रदान किया। यह दानशीलता सम्पूर्ण जगत की प्रत्यक्ष और परोक्ष चीज़ों पर छायी हुई है। अत: हर चीज़ उसी अल्लाह की बनाई हुई है जिसने हर चीज़ को उसकी आवश्यकतानुसार आकृति दी, और इन्सान की पैदाइश को गीली मिट्टी से शुरू किया और इस दानशीलता का नाम रबूबियत (पालनहारिता) है, और इसके माध्यम से अल्लाह तआला हर शिष्ट (नेक) व्यक्ति में नेकी का बीज बोता है। नेकियों के फल, सद्प्रवृत्ति का प्रकटन, पवित्रता, शालीनता और संयम आदि के लक्षण और हर वह विशेषता जो सच्चे सन्मार्गियों मे पाई जाती है वह इसी रबूबियत (पालनहारिता) नामक विशेषता की दानशीलता पर आधारित है। और हर दुर्प्रवृत्त-सद्प्रवृत्त, संयमी-असंयमी अपना हिस्सा उतना ही पाता है जितना कि उसके रब्ब (पालनहार) ने अपनी रबूबियत (पालनहारिता) के पलड़े में उसके लिए चाहा। अत: यह दानशीलता जिसे चाहे इन्सान बना देती है और जिसे चाहे गधा, जिसे चाहे पीतल बना देती है और जिसे चाहे सोना, अल्लाह तआला किसी के सामने जवाबदेह नहीं। और यह भी स्पष्ट रहे कि यह दानशीलता पूरी चर्मोत्कर्षता के साथ अनवरत जारी है और यदि एक पल के लिए भी इसका रुकना या बन्द होना मान लिया जाए तो धरती-आसमान और उसमें पाई जाने वाली सारी चीज़ें नष्ट हो जाएँ। लेकिन यह दानशीलता प्रत्येक

रोगी-निरोगी, छोटे-बड़े, पेड़-पत्थर और जो कुछ भी संसार में है उन सब पर पूर्णत: छायी हुई है। अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इस (रबूबियत नाम की) दानशीलता को सबसे पहले इसलिए बयान फ़रमाया है कि संसार की समस्त चीज़ों में स्वाभाविक रूप से उसकी प्रधानता सिद्ध हो, और यह प्रधानता केवल बयान को सजाने और उसकी माधुर्यता और सुन्दरता दिखाने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि इसमें तो पूर्णत: रहस्यपूर्ण अलंकृत शैली द्वारा सृष्टि के प्रबन्ध को दिखाना उद्देश्य है। क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने कथनों को सृष्टि के विभिन्न वर्गों में मौजूद अपने कामों को दिखाने के लिए एक दर्पण बनाया है। ताकि इससे आध्यात्मिक लोगों के दिल तसल्ली पाएँ।

दानशीलता की इन विशेषताओं में से दूसरे प्रकार की विशेषता वह विशेषता है जिसका नाम हमारा ख़ुदा 'अल्-रहमान' रखता है। और आवश्यक है कि हम भी इस फ़ैज़ान (दानशीलता) की विशेषता को "फ़ैज़ान-ए-आम" (सर्वव्यापी) और "रहमानियत" के नाम से पुकारें। इसका स्थान फ़ैज़ान-ए-आम्म (अर्थात् सर्वव्याप्त रबूबियत नामक दानशीलता) के बाद है, और इस दानशीलता का दायरा-ए-अमल (रबूबियत नामक) पहली दानशीलता से अत्यन्त निकट है और इससे धरती और आसमान की केवल सजीव (जानदार) चीज़ें ही लाभ प्राप्त करती हैं, और अल्लाह तआला अपना यह उपकार करते समय किसी विशेष हक़, कर्म और धन्यवाद को नहीं देखता बल्कि वह केवल अपनी कृपा से हर सजीव (जानदार) पर यह उपकार करता है, चाहे वह इन्सान हो या हैवान, पागल हो या बुद्धिमान, मोमिन हो या काफ़िर, और हर जानदार को उस तबाही के गड्ढे से बचाता

है जो उस (गड्ढ़े) के पास पहुँच चुका हो और उसमें गिरने लगा हो। और हर चीज़ को ऐसी आकृति और चेहरा प्रदान करता है जो उसके लिए लाभदायक हो। क्योंकि अल्लाह तआला अपार दानी है कृपण (कंजूस) कदापि नहीं, और जो कुछ तुम्हें आसमान में दिखाई देता है जैसे कि सूरज, चाँद, सितारे, बारिश और हवा, और जो कुछ ज़मीन में दिखाई दे रहा है जैसे कि नदियाँ, पेड़-पौधे और फल, लाभदायक औषधियाँ, स्वादिष्ट दूध और शुद्ध शहद इत्यादि, यह सब सर्वशक्तिमान ख़ुदा की रहमानियत नामक विशेषता से मिलती हैं न कि किसी कर्ता के कर्म के बदले में, इस दानशीलता की ओर अल्लाह तआला ने अपनी निम्नलिखित आयतों में संकेत किया है। फ़रमाया:-

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ★

(सूरः अल-आराफ़ आयत नं. 157)

اَلرَّحْمٰن عَلَّمَ الْقُرْاٰن

(सूरः अल-रहमान आयत नं. 2,3)

مَنْ يَّكْلَؤُ كُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ

(सूरः अल-अम्बिया आयत नं. 43)

مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ (सूरः अल-मुल्क आयत. 20)

यह सारी आयतें मुत्तक़ियों (संयमियों) के लिए याददिहानी के

★ **हाशिया- अनुवादः-**

1. मेरी रहमत हर चीज़ पर छायी हुई है।

2. वह रहमान ख़ुदा ही है जो अपार उपकार करने वाला और बिन माँगे देने वाला है, उसने क़ुर्आन की शिक्षा दी।

3. कौन है जो रात-दिन तुम्हें रहमान ख़ुदा की पकड़ से बचा सकता है।

4. रहमान ख़ुदा के अतिरिक्त कोई नहीं जो कि उन्हें रोके रखे।

तौर पर हैं। और यदि यह दानशीलता न होती, तो न कोई पक्षी हवा में उड़ सकता और न कोई मछली पानी में साँस ले सकती, और हर बीवी-बच्चों वाले को उसके धन की कमी और सन्तान की अधिकता, और हर ग़रीब को उसकी आय के साधन की कमी नष्ट कर देती और इसके निवारण की कोई सूरत शेष न रह जाती। जैसा कि वस्तुस्थिति जानने वालों से कोई बात छिपी नहीं।

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ज़मीन के मुर्दा हो जाने के बाद उसे किस तरह ज़िन्दा करता है। और रात को दिन पर ढाँपता है और दिन को रात पर। और उसने सूरज और चाँद को सेवा में लगा रखा है। हर एक तारा एक निर्धारित अवधि तक अपने निर्धारित मार्ग पर चलता जा रहा है। इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए अल्लाह तआला की रहमानियत नामक विशेषता के खुले-खुले निशान हैं। और उसने तुम्हारे लिए रात को इसलिए बनाया है ताकि तुम उसमें सुकून और आराम पाओ और दिन को रौशन बनाया है (ताकि उसमें जीविकोपार्जन के साधन ढूँढ़ो)। इसी तरह उसने तुम्हारे रहने के लिए ज़मीन और हिफ़ाज़त के लिए आसमान बनाया है। और उसने तुम्हें रंग-रूप प्रदान किया और तुम्हारे चेहरों को अच्छा बनाया, और तुमको शुद्ध आजीविका प्रदान की। यही ''रहमान'' तुम्हारा वह रब्ब (पालनहार) है जो असहायों की परवरिश करने वाला है। जो लोग उसकी रहमानियत का इन्कार करते हैं उन्होंने अपने विरुद्ध ख़ुदा तआला को एक खुला-खुला प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने अल्लाह तआला की विशेषताओं की क़द्र उस तरह नहीं की जिस तरह करनी चाहिए थी, बल्कि वे इस बारे में भ्रमित ही रहे। क्या वे

सूरज को नहीं देखते कि वह पूरब से पश्चिम को चला जा रहा है, क्या उसका पैदा करना और उसकी यह गति उनके किसी अपने कर्म का परिणाम है? या केवल उस रहमान ख़ुदा की कृपा से है जिसकी रहमानियत अच्छे और बुरों पर (बराबर) छायी हुई है? इसी तरह अल्लाह तआला पानी को उसकी आवश्यकता के समय बरसाता है और उसके द्वारा फसलें और वृक्ष उगाता है। जिनमें प्रचुरता से फल लगते हैं। क्या यह सारी नेमतें किसी कर्ता के कर्म का फल हैं या केवल उस ख़ुदा की ''रहमानियत'' से हैं जिसने हमें जीवनयापन के साधनों की कमी से बचाया है और हमें हर ज़रूरत के समय उन्नति की एक सीढ़ी प्रदान की है और रस्सियाँ भी, जिन (साधनों) के हम आसमानी पानी पाने के लिए मुहताज हैं। अतः पवित्र है वह ख़ुदा जिसने अपनी ''रहमानियत'' से हम पर उपकार किया, अन्यथा हमारा कोई ऐसा कर्म नहीं था जो हमें इसका पात्र बना देता। बल्कि उसने अपनी यह नेमतें हमारे जन्म से भी पहले पैदा कर रखी हैं। अतः खूब सोचो और ग़ौर करो, क्या तुम्हें उपकार करने वालों में से इस शान का कहीं कोई उपकार करने वाला नज़र आता है सारांश यह कि रहमानियत मानवजाति, पशु-पक्षी एवं हर प्राणी और पेड़-पौधे के लिए एक बड़ी रहमत (उपकार) है जो किसी कर्म पर फल देने की इच्छा के अतिरिक्त है और यह (उपकार) धर्म में किसी व्यक्ति के संयमी और सदाचारी होने की दृष्टि से नहीं है।

दानशीलता की इन विशेषताओं में से तीसरे प्रकार की विशेषता वह विशेषता है जिसका नाम हमारे ख़ुदा ने ''अल-रहीम'' रखा है और आवश्यक है कि दानशील ख़ुदा की ओर से इस फ़ैज़ (दानशीलता)

को हम फ़ैज़ान-ए-ख़ास (विशेष दानशीलता) व ''रहीमियत'' के नाम से पुकारें। यह उन लोगों के लिए है जो नेक काम करते हैं और हर समय नेक कामों के लिए तत्पर रहते हैं और कोई कोताही नहीं करते और अल्लाह तआला को हमेशा याद रखते है कभी भूलते नहीं। सुबुद्धि से काम लेते हैं अन्धे नहीं बनते, मौत के लिए हमेशा तैयार रहते हैं (उससे डरते नहीं), और केवल महाप्रतापी ख़ुदा के क्रोध से डरते हैं। अपने रब्ब के सामने झुकते और गिड़गिड़ाते हुए रातें व्यतीत करते हैं, दिन को रोज़ा रखते है अपनी मौत और अपने असल मालिक (अर्थात् ख़ुदा तआला) की ओर लौटने को नहीं भूलते, बल्कि किसी की मौत की ख़बर सुनकर इबरत हासिल करते हैं, और किसी मीत के इस संसार से उठ जाने पर काँप उठते हैं, सद्भावकों की मौत से अपनी मौतों को याद करते हैं, अपने हमउम्र साथियों को दफ़नाना उन्हें व्याकुल करता है, वे उनके ग़म से तड़पते हैं और अपने अन्दर झाँकते हैं, दोस्तों की जुदाई उन्हें अपनी मौत का नज़ारा दिखा देती है। अत: वे अल्लाह तआला की ओर झुकते हैं और नेकियाँ करने वाले बन जाते हैं। अब शायद तुम समझ गए होगे कि ख़ुदा की ओर से ''रहीमियत'' नामक इस दानशीलता (कृपा) का होना सदाचार, परहेज़गारी, नेकचलनी, तक़्वा (संयम) और ख़ुदा पर ईमान (विश्वास) इत्यादि से सशर्त है। इस दानशीलता का घटित होना, बुद्धि और विवेक के (मौजूद) होने और ख़ुदा की किताब और उसकी सज़ाओं और आदेशों के उतरने के पश्चात् ही सम्भव है। इसी तरह जो लोग इस नेमत से वंचित हैं वे इन शर्तों के पूरा होने से पहले किसी सज़ा या प्रकोप के पात्र नहीं ठहरते। अत: स्पष्ट हो गया कि अल्लाह तआला

की रहीमियत नामक विशेषता, और उसकी किताब एवं उसकी शिक्षा और समझ का आपस में जुड़वाँ सम्बन्ध है। और उसकी किताब के नुज़ूल (अवतरण) से पहले तब तक किसी पर ख़ुदा का प्रकोप नहीं भड़कता और न सज़ा मिलती है जब तक उसकी रहीमियत नामक विशेषता प्रकट न हो। किसी दुराचारी से उसके दुराचार के बारे में पूछताछ इसके बाद ही होगी। अत: यह रहस्य की बात मुझसे समझ ले, और यह ईसाइयों की विचारधारा का ठोस और तर्कसंगत खण्डन है। क्योंकि वे तो आदम के जन्म से लेकर संसार के अन्त होने तक गुनाह (रूपी साँप) के डसने के क़ाइल हैं। वे कहते हैं कि हर इन्सान गुनहगार है, चाहे उसे ख़ुदा की ओर से किताब मिली हो और सद्बुद्धि भी या वह मज्बूरों में से हो। उनका दावा है कि अल्लाह तआला मसीह नासरी अलैहिस्सलाम की सलीबी मृत्यु पर ईमान लाए बिना किसी को निजात (मुक्ति) नहीं देता, और उनका यह भी दावा है कि मसीह पर ईमान न लाने वाले पर निजात (मुक्ति) के दरवाज़े बन्द हैं, और केवल कर्मों से निजात (मुक्ति) पाने की कोई संभावना नहीं। क्योंकि अल्लाह तआला न्यायक है और न्याय इस बात का तक़ाज़ा करता है कि जो भी गुनहगार और मुजरिम हो उसको सज़ा दी जाए। अत: जब इस सम्बन्ध में पूर्णत: निराशा स्पष्ट हो गई कि लोग अपने कर्मों के द्वारा (गुनाहों से) पाक नहीं हो सकते तो अल्लाह तआला ने अपने निष्पाप बेटे को भेजा ताकि वह लोगों के (पाप के) बोझ अपने सिर पर उठा ले और फिर सलीब पर लटकाया जाए। और इस तरह लोगों को उनके (गुनाह के) बोझों से निजात (मुक्ति) दिलाए। फिर क्या था ख़ुदा का बेटा आया और वह ख़ुद सलीब पर लटकर जान दे

दी और ईसाइयों ने निजात (मुक्ति) पाई, फिर वे निजात (मुक्ति) की जन्नतों में ख़ुशी-ख़ुशी दाख़िल हो गए। यह उनका अक़ीदा (आस्था) है। लेकिन जो सद्बुद्धि की आँख से इस अक़ीदे को परखे और उसे छानबीन की कसौटी पर कसे तो वह इस मस्लक (पंथ) को अनर्गल बातों का मस्लक (पंथ) ठहराएगा। यदि तू (इस अक़ीदा पर) आश्चर्य करे तो (कुछ भी) ग़लत नहीं, क्योंकि तू उनके इस दावे से अधिक आश्चर्यजनक बात और कहीं नहीं पाएगा। वे नहीं जानते कि अद्ल (न्याय) रहम (दया) से भी अधिक महत्त्वपूर्ण और अतिआवश्यक है। अत: जो गुनाहगार को छोड़ दे और बेगुनाह को सज़ा दे, उसने एक ऐसा काम किया कि जिससे न अद्ल (न्याय) शेष रहा और न रहम (दया)। और ऐसा काम उसके अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता जो पागलों से भी बढ़कर हो। जब गिरफ़्त (पकड़) ख़ुदा तआला के वादा और वार्निंग (चेतावनी) के साथ सशर्त है तो फिर क़ानून के प्रचार-प्रसार और उसके मज़बूती से लागू करने से पहले किसी को सज़ा देना किस तरह जाइज़ (वैध) हो सकता है? किसी ऐसे पाप के होने पर जिसके करने से पहले न कोई वार्निंग (चेतावनी) मौजूद हो और न किसी को उसकी पहले से ख़बर हो, तो पहलों और पिछलों की गिरफ़्त (पकड़) कैसे जाइज़ (वैध) है। सच्ची बात तो यह है कि ख़ुदा तआला की किताब, उसके वादा और वार्निंग (चेतावनी), उसके क़ानून और उसकी सज़ाओं और शर्तों के लागू होने के बाद ही अद्ल (न्याय) और उसका लागू होना सम्भव है। और अल्लाह तआला की ओर सबसे पहले न्याय को सम्बद्ध करना पूर्णत: ग़लत और निराधार है। क्योंकि अद्ल (न्याय) की कल्पना तभी की जा सकती है जब

उससे पहले अधिकारों की कल्पना की जाए और उनकी अनिवार्यताएँ सिद्ध हो जाएँ, परन्तु समस्त लोकों के पालनहार (ख़ुदा) पर तो किसी का कोई अधिकार नहीं हो सकता। क्या तुम नहीं देखते कि उसने हर एक जानवर को मनुष्य की सेवा में लगा रखा है? उसकी छोटी सी आवश्यकता के लिए भी उनका ख़ून बहाना जाइज़ (वैध) रखा है। यदि अद्ल (न्याय) को अल्लाह के ज़िम्मे बुनियादी तौर पर अनिवार्य ठहराया जाए तो फिर उसके लिए ऐसे क़ानून जारी करने का कोई औचित्य न था अन्यथा उसे अत्याचारियों में से गिना जाता। लेकिन अल्लाह तआला अपनी बादशाहत में जो चाहता है करता है। वह जिसे चाहे सम्मानित करता है और जिसे चाहे अपमानित करता है, जिसे चाहे ज़िन्दा रखता है और जिसे चाहे मौत देता है, जिसे चाहे महान बनाता है और जिसे चाहे मलियामेट कर देता है। परन्तु अधिकारों की माँग इससे उलट है, बल्कि यह तो उसके हाथ बाँध देती है और तुम देखते हो कि तुम्हारा अनुभव और अवलोकन (अधिकारों की माँग के) इस दावे को झुठलाता है। हालाँकि अल्लाह तआला ने अपनी सृष्टि को स्तरों के विभिन्न अन्तरों के साथ पैदा किया है। उसकी सृष्टि में कुछ घोड़े और गधे हैं, कुछ ऊँट और ऊँटनियाँ हैं, कुछ कुत्ते, भेड़िए और चीते हैं, उसने अपनी सृष्टि में से कुछ को तो कान और आँखें दी हैं, कुछ को बहरा पैदा किया है और कुछ को अन्धा बनाया है। किस प्राणी को यह हक़ (अधिकार) है कि वह खड़ा हो और अपने रब्ब से झगड़ा करे कि उसने उसे इस तरह का क्यों पैदा किया और उस तरह का क्यों नहीं पैदा किया? हाँ अल्लाह तआला ने किताबें भेजने और पूर्णतः ख़ुशख़बरी एवं चेतावनी देने के बाद स्वयं

ही अपने ऊपर बन्दों का हक़ (अधिकार) ठहरा लिया है और उसने पालन करने वालों को उचित प्रतिफल की ख़ुशख़बरी दी है। अत: जो व्यक्ति उसकी किताब (के क़ानून) और उसके नबी (के आदर्शों) का अनुसरण करे और अपने आप को दुष्कामनाओं से रोके रखे तो नि:सन्देह जन्नत (स्वर्ग) ही उसका ठिकाना है। लेकिन जो व्यक्ति अपने रब्ब का इन्कार करे और उसके आदेशों (क़ानूनों) की नाफ़र्मानी करे तो वह अवश्य दण्ड का पात्र होगा। अत: जब ख़ुशख़बरी और चेतावनी पर ही प्रतिफल का आधार है न कि किसी मनगढ़त अद्ल (न्याय) पर जो सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर अनिवार्य ठहरा दिया जाए, तो इस प्राकृतिक नियम से ईसाइयों के भ्रमों द्वारा बनाया गया महल धड़ाम से गिर जाता है। इससे सिद्ध हो गया कि अल्लाह तआला पर मूलगतत: (आरम्भिकत:) न्याय अनिवार्य ठहराना एक विकृत सोच और खोटी बात है। जिसे मूर्खों के अतिरिक्त और कोई नहीं स्वीकार कर सकता। इस बहस से हमें यह पता चलता है कि ख़ुदा तआला के न्याय पर कफ़्फ़ार: (के अक़ीदा) की बुनियाद रखना विकृत सोच पर बना एक विकृत महल है। अत: इस बारे में गम्भीर चिन्तन करो। यदि तुम इस्लाम के मुनाज़िर (शास्त्रार्थी) हो तो ईसाइयों की सलीब (से भरी विचारधारा) को तोड़ने के लिए यही चीज़ तुम्हारे लिए पर्याप्त है। ख़ुदा तआला की किताब (क़ुर्आन करीम) में इस विशेषता का नाम ''रहीमियत'' है। जैसा कि ख़ुदा तआला ने अपनी प्रभुत्वशाली पुस्तक (क़ुर्आन करीम) में फ़रमाया है कि:-

وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا (अल-अहज़ाब - 44)

(अनुवाद- वह मोमिनों पर बार-बार रहम (दया) करने वाला है।

फिर फ़रमाया:-

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (सूरः अल-बक़रः 219)

अर्थात - अल्लाह अत्यन्त क्षमा करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

यह दानशीलता केवल उसके पात्र पर ही होती है और केवल कर्म करने वालों को ही पसन्द करती है, और रहमानियत और रहीमियत में यही अन्तर है। क़ुर्आन करीम इस अन्तर के उदाहरणों से भरा पड़ा है। यदि तुम अक़्लमन्दों में से हो तो इस जगह तुम्हारे लिए इतना ही बयान काफ़ी है।

चौथी प्रकार की दानशीलता वह दानशीलता है जिसे हम विशिष्ट दानशीलता या मालिकीयत की पूर्ण द्योतक (क़यामत) के नाम से पुकारते हैं। और वह दानशीलताओं में सबसे बड़ी, सबसे महान, सर्वव्यापक, सर्वस्व सम्पूर्ण और दानशीलता की पराकाष्ठा है। और समस्त सृष्टिजगत के वृक्षों का फल भी। उस दानशीलता का व्यापक प्रकटन इस तुच्छ और भौतिकजगत के महलों (और सपनों) के टूटने, उसके खण्डरों और निशानों के मिट जाने, उसके रंग-रूप के बदल जाने और उसके गालों की लाली (सुन्दरता) नष्ट हो जाने और सब कुछ मिट जाने वालों की तरह उसके इक़्बाल (तेज) के मिट जाने के बाद होता है। मालिकीयत एक गुह्यलोक (ब्रह्मलोक) है जिसके रहस्य अत्यन्त गुह्य हैं और उसके प्रकाश अत्यन्त और ज्वलंत हैं। उसमें सोच-विचार करने वालों की बुद्धि आश्चर्य में पड़ जाती है, और यदि

तुम पूछो कि इस जगह अल्लाह तआला ने ''मालिक यौमिद्दीन'' क्यों फ़रमाया और ''आदिल यौमिद्दीन'' (अर्थात् कर्मफल दिवस का न्यायकर्ता) क्यों नहीं फ़रमाया? तो स्पष्ट हो कि इसमें भेद यह है कि न्याय की कल्पना उस समय तक नहीं हो सकती जब तक अधिकार सिद्ध न हो जाएँ, और समस्त लोकों के पालनहार ख़ुदा पर तो किसी का कोई हक़ (अधिकार) नहीं। और आख़िरत की निजात (मुक्ति) उन लोगों के लिए ख़ुदा तआला की ओर से मात्र एक दान है जो उस पर ईमान लाए और उसकी आज्ञापालन करने और उसके आदेशों को स्वीकार करने, उसकी इबादत करने और उसको पहचानने के लिए अचम्भित करने वाली तेज़ी से क़दम बढ़ाया। मानो वे अपने कामों की तेज़ी में और सुबह-शाम के सफ़रों में तेज़ रफ़्तार और द्रुतगामी ऊँटनियों पर सवार थे। और चाहे वे आज्ञाकारिता में पूरे चर्मोत्कर्ष को न पहुँच सके हों, और इबादत का पूरा हक़ न अदा कर पाए हों और न ही अध्यात्म की वास्तविकता को पूरी तरह समझ सके हों, लेकिन उन बातों की प्राप्ति के घोर उत्सुक रहे हों। और इसी तरह वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की नाफ़र्मानी की, चाहे उनकी दुष्टता भले ही पराकाष्ठा को न पहुँची हो, लेकिन वे उस दुष्टता की ओर तेज़ी से बढ़ते रहे, दुराचार करते रहे और दुष्कर्म करने पर अपने दुस्साहस में बढ़ते गए और वे (दुराचार से) रुकने वाले न बने। अतः (ऐसे लोगों में से) हर व्यक्ति अपनी नीयत के अनुसार अल्लाह तआला की रहमत (दया) या उसका क़हर (प्रकोप) देखेगा। अतः जिसने अपना ध्यान उधर फेरा जिधर से नसीम-ए-रहमत आ रही हो तो वह अवश्य रहमत (दया) से अपना हिस्सा पाएगा और उसमें रहता चला जाएगा

और जो क़हर (प्रकोप) की तेज़ आँधियों का मुक़ाबला करेगा तो वह अवश्य उसके थपेड़े खाएगा, और यह मालकीयत (की विशेषता से) ही (सम्भव) है, अद्ल (की विशेषता से) नहीं, क्योंकि वह हमेशा हुक़ूक़ (अधिकारों) को चाहती है। अत: तुम गम्भीरता से सोचो और ग़ाफ़िलों में से मत बनो।

स्पष्ट हो कि ख़ुदा की इन विशेषताओं के क्रम में एक और आलंकारिकता पाई जाती है। जिसे हम (यहाँ) बयान करना चाहते हैं ताकि दिव्यदृष्टों के दिव्यज्ञान से आपकी आँखें भी खुलें, और वह यह है कि अल्लाह तआला ने इन विशेषताओं के तुरन्त बाद जो आयतें पिरोई हैं वे इन्हीं उपरोक्त विशेषताओं का हिस्सा हैं। हर आयत उपरोक्त विशेषताओं की तर्तीब (क्रम) की दृष्टि से उसके सामने और सदृश घटित होने के कारण उस विशेषता से सम्बद्ध है, और धरती एवं आसमानों के परतों की तरह एक विशेषता के अन्तर्गत एक आयत रखी गई है। और उसकी व्याख्या यह है कि पहले ख़ुदा तआला ने अपनी हस्ती और विशेषताओं का उसी तर्तीब (क्रम) से वर्णन किया जो समस्त ब्रह्माण्ड में पायी जाती है। फिर उन समस्त विषयों को जिनका सम्बन्ध मनुष्य के गुणों से है उसी क्रम से वर्णन किया जो ख़ुदा के क़ानून (प्रकृति) में दिखाई देता है और इसके साथ ही उसने मनुष्य की हर विशेषता को ख़ुदा की एक विशेषता के अन्तर्गत रख दिया और हर मानवीय विशेषता के लिए ख़ुदा की एक विशेषता को घाट और पीने का स्थान ठहरा दिया जिसके द्वारा वह लाभ उठाए। ख़ुदा तआला ने इन आयतों में रखी जाने वाली तर्तीब (क्रम) की आपस में तुलना दिखाई है। अत: अल्लाह तआला अनगिनत उपकार

करने वाला और सबसे उत्तम और उत्कृष्ट तर्तीब (क्रम) देने वाला है। इस वर्णन की पूर्ण व्याख्या इस तरह है कि यह विशेषताएँ (अल्लाह तआला के) मूल नाम सहित पाँच अथाह सागर हैं। जिनका वर्णन इस सूरः के प्रारम्भ में (इस तर्तीब से) आया है अर्थात् :-

1. अल्लाह
2. रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का पालनहार)
3. अल्-रहमान (बिन माँगे देने वाला)
4. अल्-रहीम (बार-बार दया करने वाला)
5. मालिक यौमिद्दीन (कर्मफल दिवस का मालिक)

फिर ख़ुदा तआला ने समुद्रों की उन पाँच संख्या के तुरन्त बाद उनके अनुसार उनसे लाभ उठाने वाले पाँच वाक्यों का वर्णन किया, और इन पाँचों को उन पाँच (समुद्रों) के सम्मुख रखा। और लाभान्वित होने वालों में से हर एक (उसकी) ऐसी दानशीलता के स्रोत से लाभान्वित होता है जो उसके सदृश और सम्मुख है और उससे वे लाभ प्राप्त करता है जिन पर वे विशेषताएँ सर्वस्व छायी हुई हैं और वे अध्यात्मज्ञानियों (ब्रह्मज्ञानियों) को अत्यन्त प्रिय हैं। उदाहरणतः उन में से सबसे पहला अल्लाह (यह ख़ुदा का मूल नाम है) का सागर है। उसके सम्मुख ''इय्याका नअबुदु'' (हम तेरी इबादत करते हैं) का वाक्य है जो बादशाह के सामने खड़े होने वालों की तरह खड़े होकर लाभ प्राप्त करता है, और इबादत की वास्तविकता यह है कि पूरी विनम्रता से माबूद (ख़ुदा) का सम्मान करना और उसके आदर्श को अपनाना और उसके रंग में रंगीन होना और ख़ुदा की राह में लीन होने वालों की तरह स्वार्थपरायणता और अहंकार से दूर हो जाना। इसमें

रहस्य यह है कि इन्सान को बीमार एवं रोगी और प्यासे की भाँति कमज़ोर पैदा किया गया है। उसका बीमारी से छुटकारा पाना, प्यास से चैन पाना और दिल का तृप्त होना अल्लाह की इबादत के पानी से होता है। वह तभी तन्दुरुस्त और तृप्त हो सकता है जब वह अल्लाह की प्रशंसा करते हुए उसकी ओर अपना ध्यान लगाता है और उसके साथ अपने प्रेम को बढ़ाता है और उस सच्चे माबूद (ख़ुदा) की ओर प्यासों की तरह दौड़ता है। और अल्लाह तआला की याद के अतिरिक्त न तो कोई चीज़ उसके दिल को साफ़ कर सकती है और न उसके दिल की गन्दगी को दूर कर सकती है, और न ही उसके मुँह की बातों को शीतल और सुहानी बना सकती है। सुनो ! अल्लाह तआला की याद से उन्हीं लोगों के दिल संतुष्टि पाते हैं जो अल्लाह तआला की इबादत करते हैं और उसके समक्ष आज्ञापालक बनकर खड़े होते हैं। अत: इस पवित्र आयत ''इय्याका नअबुदु'' में उस अल्लाह की माबूदियत (बन्दगी) का इक़रार है जो सभी सम्पूर्ण और सर्वोत्कृष्ट विशेषताओं का असीम सागर है। इसीलिए ''इय्याका नअबुदु'' का यह वाक्य, अल्हम्दुलिल्लाह के वाक्य के अधीन (अन्तर्गत) है। यदि तू ग़ौर करने वालों में से है तो ग़ौर कर।

उन में से दूसरा रब्बुल आलमीन का सागर है और उससे ''इय्याका नस्तईनु'' का वाक्य लाभ उठाता है। क्योंकि बन्दा जब यह बात सुनता है कि अल्लाह तआला समस्त लोकों का पालन-पोषण करता है और ऐसा कोई संसार नहीं जिसका वह पालनहार न हो। और जब बन्दा अपने चंचल मन को बुराई की ओर ले जाने वाला पाता है तो वह गिड़गिड़ाता है और बेचैन एवं मजबूर होकर उम्मीदों

के साथ उसकी ओर दौड़ता और पनाह (शरण) ढूँढ़ता है और उसके दामन से लिपट जाता है और उसकी प्रतिष्ठा का सम्मान करते हुए उसकी रूहानी (आध्यात्मिक) भोजनशाला में दाख़िल हो जाता है ताकि वह (ख़ुदा) अपनी रबूबियत (पालन-पोषण की विशेषता) से उसकी सहायता करे और उस पर उपकार करे, और वह उपकार करने वालों में से सबसे बढ़कर उपकार करने वाला है। अत: रबूबियत (पालन-पोषण की विशेषता) एक ऐसी विशेषता है जो हर चीज़ को उसके अस्तित्व की दशानुसार स्वभाव प्रदान करती है और उसे अधूरी हालत में नहीं छोड़ती।

उन में से तीसरा ''अल्-रहमान'' का सागर है और उससे ''इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम'' का वाक्य लाभान्वित होता है। ताकि बन्दा हिदायत और रहमत पाने वालों में से हो जाए। क्योंकि रहमानियत (नाम की विशेषता) हर उस चीज़ को जो रबूबियत (नाम की विशेषता) से पालित-पोषित है हर वह चीज़ प्रदान करती है जिसकी उसे आवश्यकता हो। इसलिए यह विशेषता समस्त साधनों को रहम पाने वाले के अनुकूल बना देती है। और रबूबियत का (प्रभावी) काम वजूद को पूरी शक्तियाँ देना और इस तरह पैदा करना है जो उसकी अवस्थानुसार और उचित हो। इस विशेषता का (प्रभावी) काम यह है कि यह हर वजूद को उसके दोषों (कमज़ोरियों) को ढकने वाला वस्त्र पहनाती है, उसे सुन्दरता प्रदान करती है, उसकी आँखों में सुर्मा लगाती है, उसके चेहरे को धोती है, उसको सफ़र के लिए सवारी देती है, और उसको कुशल सवारों के मार्ग बताती है। इस रहमानियत (नाम की विशेषता) का दर्जा रबूबियत (की विशेषता) के

बाद आता है और यह हर चीज़ को उसके वजूद की आवश्यकता प्रदान करके उसे अनुकूलों में से बना देती है।

उनमें से चौथी विशेषता ''अल्-रहीम'' (नामक विशेषता) का सागर है और उससे ''सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्'' का वाक्य लाभान्वित होता है, ताकि बन्दा विशेष पुरस्कृत लोगों में हो जाए। क्योंकि रहीमियत एक ऐसी विशेषता है जो उन विशिष्ट पुरस्कारों तक पहुँचा देती है जिनमें आज्ञापालक लोगों के अतिरिक्त कोई शामिल नहीं होता। यद्यपि उस (अल्लाह तआला) की सर्वव्यापी दानशीलता इन्सानों से लेकर समस्त जीव-जन्तुओं पर भी व्याप्त है।

उन में से पाँचवाँ सागर ''मालिक यौमिद्दीन'' (की विशेषता) का है और उससे ''ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़्वाल्लीन'' का वाक्य लाभान्वित होता है। क्योंकि ख़ुदा तआला के प्रकोप और उसके (द्वारा मनुष्य को) पथभ्रष्टता और गुमराही (अन्धकार) में छोड़ देने की वास्तविकता, लोगों पर पूर्ण रूप से क़यामत (प्रतिफल दिवस) के दिन ही प्रकट होगी। जिस दिन अल्लाह तआला अपने प्रकोप और पुरस्कार के साथ उन पर प्रकट होगा और उनको अपमानित या सम्मानित करके वास्तविकता स्पष्ट कर देगा। और इस हद तक अपने आप को प्रकट कर देगा कि उस हद तक अपने वजूद को कभी प्रकट न किया होगा, और ख़ुदा की राह में आगे बढ़ने वाले ऐसे दिखाई देंगे जैसे जंग के मैदान में सफल योद्धा, और गुनहगार (दोषी) अपनी खुली-खुली गुमराही (पथभ्रष्टता) में नज़र आएँगे। उस दिन काफ़िरों (अधर्मियों) पर स्पष्ट हो जाएगा कि वे सचमुच ख़ुदाई प्रकोप के पात्र थे और (आँखें होते हुए भी) अन्धे थे। जो (आँखें होते हुए भी) इस

संसार में अन्धा रहेगा वह परिणामस्वरूप अन्धा ही रहेगा। इस दुनिया का अन्धापन (उसे) दिखाई नहीं देता लेकिन क़यामत (महाप्रतिफल दिवस) के दिन वह स्पष्ट हो जाएगा। अत: जिन लोगों ने (ख़ुदा का) इन्कार किया और हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श और हमारी किताब (क़ुर्आन करीम) की शिक्षा का पालन न किया और अपने झूठे ख़ुदाओं की अनुसरण करते रहे वे अवश्य अल्लाह के प्रकोप को देखेंगे, और जहन्नुम (नर्क) की तीव्रोन्माद (धधक) और उसकी हृदयविदारक आवाज़ को सुनेंगे, और अपने भ्रष्टता और दुष्टता (भरे चाल-चलन के परिणाम) को अपनी आँखों से देख लेंगे, अपने आप को लूले-लँगड़े और काने की तरह पाएँगे और जहन्नुम (नर्क) में दाख़िल होंगे, जहाँ वे लम्बे समय तक रहेंगे और उनका कोई शफ़ीअ (अनुशंसक) नहीं होगा। इस आयत में इस बात की ओर भी संकेत है कि ख़ुदा का नाम ''मालिक यौमिद्दीन'' अपने अन्दर दो विशेषताएँ रखता है। वह जिसे चाहता है गुमराह (भ्रष्ट) ठहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। इसलिए तुम दुआ करो कि वह तुम्हें हिदायत पाने वालों में से बना दे।

यही वह विषय है जिसको हम बयान करना चाहते थे। अर्थात् इस आयत के कुछ रहस्यों और साहित्यिक गूढ़ताओं को, जो देखने वालों के लिए चमकते हुए निशानों की भाँति हैं, और इसकी आश्चर्यचकित कर देने वाली अछूती और सुसज्जित आलंकारिकता को, जो उपमानों (गुह्य संकेतों) की अत्युत्तम विशेषताओं एवं युक्तियुक्त मोतियों और ख़ुदा की गूढ़ बातों के अद्भुत और अपार ज्ञान एवं अध्यात्म से भरी हुई है। तुम इस बयान का उदाहरण न तो पहले और न बाद में आने

वाले लोगों में पाओगे। नि:सन्देह इसकी सुन्दर, शिष्ट, सलोनी बातें अपने अन्दर अद्वितीय विशेषताएँ रखती हैं। इसका स्थान ज्ञान की चोटियों से भी ऊपर है। यह अध्यात्मज्ञानियों के दिलों को मोह लेती है। अब तूने उन पाँच सागरों के क्रम को ज्ञात कर लिया है जो एक-दूसरे के बाद जारी हैं। अब तू उसे स्वीकार कर और कृतज्ञों में से हो जा। यदि तू लाभ पाने वालों में से है तो लाभ उठाने वाले वाक्यों के क्रम को उनके सागरों के क्रम से पहचान लेगा।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

''इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईनु''

(अनुवाद- हम तेरी ही इबादत करते हैं और हम तुझ से ही सहायता माँगते हैं)

इन वाक्यों में ख़ुदा तआला ने ''इय्याका नअबुदु'' के वाक्य को ''इय्याका नस्तईनु'' के वाक्य से पहले रखा है। और इसमें प्रार्थी के सहायता एवं सामर्थ्य माँगने से भी पूर्व उस ख़ुदा के रहमानियत नामक सागर की दानशील विशेषताओं के लाभों की ओर संकेत है। मानो कि बन्दा (प्रार्थी) अपने रब्ब की कृतज्ञता प्रकट करता है और कहता है कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी उन नेमतों पर तेरी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्हें तूने मेरी दुआ (प्रार्थना), मेरी विनती, मेरे कर्म, मेरी कोशिश और मदद की पुकार से पहले अपनी रबूबियत और रहमानियत के सागर की दानशीलताओं से जो माँगने वालों के माँगने से भी पहले प्रदान कर दी गई हैं और तूने मुझे भी प्रदान कर रखी हैं। फिर मैं तुझ से ही हर प्रकार की शक्ति, सन्मार्ग, समृद्धि, सफलता और उन उद्देश्यों

की प्राप्ति के लिए दुआ करता हूँ जो विनती करने, मदद माँगने और दुआ करने पर ही प्रदान की जाती हैं और तू सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ प्रदाता है। और इन आयतों में उन नेमतों पर कृतज्ञता प्रकट करने की प्रेरणा है जो तुझे (बिन माँगे) दी जाती हैं और जिन चीज़ों की तुझे इच्छा हो उनके लिए सब्र (धैर्य) के साथ दुआ करने और व्यापक एवं उच्चकोटि की चीज़ों की ओर उत्सुकता बढ़ाने की प्रेरणा है ताकि तुम भी हमेशा कृतज्ञता प्रकट करने वालों और धैर्य रखने वालों में से हो जाओ। फिर इन आयतों में बन्दे की अपनी हिम्मत और ताक़त के नकारने और उससे आस एवं उम्मीद रखकर हमेशा प्रार्थना, दुआ, विनम्रता और प्रशंसा करते हुए अपने आप को अल्लाह तआला के सामने डाल देने और भय एवं आस के साथ उस दूध पीते बच्चे की तरह जो माँ की गोद में हो (अपने आप को अल्लाह तआला का) मोहताज समझने, और समस्त सांसारिक चीज़ों के त्याग और बलिदान की प्रेरणा है। इसी तरह इन (आयतों) में इस बात के स्वीकार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है कि हम तो बहुत कमज़ोर हैं, तेरे दिए हुए सामर्थ्य के बिना तेरी इबादत नहीं कर सकते और तेरी सहायता के बिना तुझे ढूँढ़ नहीं सकते। हम तेरी मदद से काम करते हैं और तेरी मदद से ही हरकत करते हैं, और उन औरतों की तरह हैं जो अपने बच्चे की मौत के ग़म में घुल रही होती हैं, और उन प्रेमियों की तरह हैं जो प्रेम की ज्वाला में जलते और तड़पते हुए तेरी ओर दौड़ते हैं। फिर इन आयतों में अहंकार एवं घमण्ड को त्यागने की, और कामों के जटिल और कठिन होने और मुश्किलों के घेर लेने पर, केवल अल्लाह तआला की ओर से मिलने वाले संयम और सामर्थ्य

पर भरोसा करने की, और विनम्र स्वभाव (शालीन और शिष्ट) लोगों में शामिल होने की प्रेरणा है। मानो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे मेरे बन्दो! अपने आप को मुर्दों की तरह (सामर्थ्यहीन) समझो और हर समय अल्लाह तआला से सामर्थ्य माँगा करो। अत: तुम में से न कोई नवजवान अपनी शक्ति पर इतराए और न कोई बूढ़ा अपनी लाठी पर भरोसा करे, और न कोई बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर गर्व करे, और न कोई विद्वान अपने ज्ञान की शुद्धि, सूझबूझ और उत्कृष्ट विद्वता पर भरोसा करे, और न कोई मुल्हम (ईशवाणी पाने वाला) अपने इल्हाम (ईशवाणी) या कश्फ़ या अपनी दुआओं की सच्चाई पर इतराए, क्योंकि अल्लाह जो चाहता है करता है। वह जिसको चाहे धुत्कार दे और जिसको चाहे अपने विशिष्ट बन्दों में दाख़िल कर ले। और ''इय्याका नस्तईनु'' के वाक्य में तामसिक वृत्ति (तमोगुण) के (दुष्टता से भरे हुए) उन्मादपूर्ण उत्तेजक आवेगों से पैदा होने वाले गुनाहों की ओर संकेत है जो नेकियों से ऐसे भागता है जैसे अनसधी (अड़ियल) ऊँटनी सवार को अपने ऊपर बिठाने से भागती है या वह एक अजगर की तरह है जिसका उन्माद और उपद्रव बहुत बढ़ गया है, जब वह निगलता है तो हर शिकार को सड़ी-गली हड्डियों की तरह बना देता है, और तू देख रहा है कि वह ज़हर उगल रहा है या वह शेर की भाँति है कि अगर हमला करता है तो पीछे नहीं हटता। अत: उस ख़ुदा की सहायता के अतिरिक्त कोई शक्ति, सामर्थ्य और समृद्धि कारगर नहीं जो शैतानों का विनाश कर सके।

और ''नअबुदु'' शब्द को ''नस्तईनु'' से पहले रखने में भी कई रहस्य हैं, जिन्हें हम उन लोगों के लिए यहाँ लिखते हैं जो सारंगियों

की रूँ-रूँ की ध्वनि पर नहीं बल्कि क़ुर्आन की बार-बार पढ़ी जाने वाली (सूरः फ़ातिहा की) आयतों से दिलचस्पी (रुचि) रखते हैं और आतुरतापूर्ण जिज्ञासुओं की भाँति उनकी ओर लपकते हैं, और वे (रहस्य) यह हैं कि महाप्रतापी ख़ुदा अपने बन्दों को एक ऐसी दुआ सिखाता है जिसमें उनका कल्याण है। अतः वह कहता है कि, हे मेरे बन्दो! मुझसे विनम्रता और बंदगी के साथ माँगो और कहो कि, हे हमारे रब्ब (पालनहार)! ''इय्याका नअबुदु'' (हम तेरी ही बंदगी करते हैं) लेकिन बड़ी कोशिश, कष्ट, लज्जा, अस्त-व्यस्त सोच, पैशाचिक एवं ख़ुश्क विचार और विनाशक सन्देहों और अन्धकारपूर्ण विचारों के होते हुए जो सैलाब (बाढ़) के मटमैले पानी के समान या रात को ईंधन के लिए (सूखी-गीली) लकड़ियाँ एकत्र करने वाले की तरह हैं, और हम केवल भ्रम (कल्पना) का अनुसरण कर रहे हैं, हमें ठोस विश्वास प्राप्त नहीं। और फिर ''व इय्याका नस्तईनु'' कहो अर्थात् यह कि हम चाहत, शौक़, एकाग्रचित्तता, अटल विश्वास की प्राप्ति के लिए रूहानी तौर पर तेरे आदेशों पर चलने (के लिए), प्रसन्नता और प्रकाश (पाने के लिए) और ज्ञान एवं अध्यात्म के आभूषणों और प्रेम के परिधानों के साथ दिल को सुसज्जित करने के लिए तुझ से ही सहायता माँगते हैं। ताकि हम तेरी कृपा से विश्वास के क्षेत्रों में आगे बढ़ जाने वाले बन जाएँ और अपने उद्देश्यों के चरम को पहुँच जाएँ और सच्चाई एवं यथार्थ के सागरों में दाख़िल हो जाएँ। फिर ''इय्याका नअबुदु'' के शब्दों में एक और संकेत है, और वह यह है कि अल्लाह तआला इस (आयत) में अपने बन्दों को इस बात की प्रेरणा देता है कि वे उसकी आज्ञापालन में उच्चकोटि के साहस

और प्रयास से काम लें और आज्ञाकारों की तरह हर समय (मालिक के पुकारने पर) लब्बैक-लब्बैक (हम हाज़िर, हम हाज़िर हैं) कहते हुए उसके समक्ष खड़े रहें, मानो कि यह (आज्ञापालन करने वाले) बन्दे यह कह रहे हैं कि हे हमारे रब्ब! हम प्रयत्न करने, तेरे आदेशों के पालन करने और तेरी प्रसन्नता चाहने में कोई कमी नहीं कर रहे, लेकिन हम तुझ से ही मदद चाहते हैं और अहंकार एवं दिखावे में पड़ने से तेरी पनाह (शरण) माँगते हैं, और हम तुझ से ऐसा सामर्थ्य माँगते हैं जो सन्मार्ग और तेरी प्रसन्नता की ओर ले जाने वाला हो, और हम तेरी आज्ञापालन और तेरी इबादत (बंदगी) पर अडिग हैं। अत: तू हमें अपने आज्ञाकारी बन्दों में लिख ले। और यहाँ एक और संकेत भी है, और वह यह है कि बन्दा कहता है कि हे मेरे रब्ब (पालनहार)! हमने तुझे माबूदियत (ईश्वरत्व) के साथ विशिष्ट कर रखा है और तेरे अतिरिक्त जो कुछ भी है उस पर तुझे प्रधानता दी है। अत: हम तेरी हस्ती के अतिरिक्त और किसी चीज़ की इबादत (बन्दगी) नहीं करते और हम एक और अद्वय ख़ुदा पर विश्वास करने वालों में से हैं। इस आयत में महाप्रतापी ख़ुदा ने उत्तम पुरुष बहुवचन की विभक्ति इस बात की ओर संकेत करने के लिए बयान फ़रमायी है कि यह दुआ समस्त भाइयों के लिए है, न कि केवल दुआ करने वाले के अपने लिए ही। और इसमें (अल्लाह ने) मुसलमानों को परस्पर मसालिहत (मेल-मिलाप), एकता और मित्रता की प्रेरणा दी है, कि दुआ करने वाला अपने आप को अपने भाई की भलाई के लिए उसी तरह कष्ट में डाले जैसा कि वह अपनी भलाई के लिए अपने आप को कष्ट में डालता है, और उसकी आवश्यकताओं को पूरा

करने के लिए उसी तरह प्रबन्ध करे और बेचैन हो जैसा कि अपने लिए प्रबन्ध करता और बेचैन होता है, और वह अपने और अपने भाई के बीच कोई अन्तर न करे और पूरे दिल से उसका शुभचिन्तक बन जाए। मानो कि अल्लाह तआला ज़ोर देकर कहता है कि हे मेरे बन्दो! भाइयों और मित्रों के (एक-दूसरे को) उपहार देने की तरह दुआ का उपहार दिया करो, और अपनी दुआओं का दायरा बढ़ाओ और अपनी नीयतों में उदारता पैदा करो अर्थात् अपनी शुभकामनाओं में अपने भाइयों को भी याद रखो, और परस्पर मित्रता करने में बाप, बेटों और भाइयों के समान बन जाओ।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

(इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम् ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन)

यह दुआ उन लोगों के विचारों का खण्डन है जो यह कहते हैं कि जो कुछ होने वाला है वह पहले से निर्णय हो चुका है अब दुआ का कोई फ़ायदा नहीं। अत: अल्लाह तआला अपने बन्दों को इसमें दुआ क़बूल करने की ख़ुशख़बरी देता है। जैसा कि वह कहता है कि हे मेरे बन्दो! तुम मुझसे माँगा करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा। नि:सन्देह दुआ में क़ज़ा व क़दर (निर्णय और भाग्य) बदलने की अद्भुत शक्तियाँ हैं और स्वीकृत दुआ, दुआ करने वाले को इनामयाफ़्ता (पुरस्कृत) लोगों में दाख़िल कर देती है। इस आयत में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिनसे पवित्रता के अनुसार दुआ के क़बूल होने

की पहचान होती है और इसमें स्वीकृत बन्दों की निशानियों की ओर भी संकेत है। क्योंकि इन्सान जब रहमान ख़ुदा से प्रेम करता है और अपने ईमान को दृढ़ कर लेता है तभी वह सच्चा इन्सान बनता है, चाहे उसे अपनी दुआओं के क़बूल होने के बारे में पहले से कितनी ही बड़ी आस्था हो। केवल आस्था, आँखों देखी हुई बात की तरह नहीं हो सकती, क्योंकि सुनी-सुनाई बात आँखों देखी के समान नहीं हो सकती। दृष्टिवान् और दृष्टिहीन आपस में बराबर नहीं हो सकते। बल्कि जिस व्यक्ति को दुआओं की स्वीकारिता का पूर्णत: अनुभव हो और उसके साथ निशान भी प्रकट हो चुके हों तो ऐसे व्यक्ति की दुआओं के क़बूल होने में कोई संशय और सन्देह नहीं हो सकता, और जो लोग इस बारे में शक करते हैं इसका कारण क़बूलियत-ए-दुआ के हिस्से में उनकी असफलता, अपने पालनहार की ओर उनके ध्यान की कमी, और प्रकृति के उन साधनों में उनका उलझ जाना जो स्वाभाविक घटनाओं और क़ुदरत के नज़ारों में पाए जाते हैं। अत: उनकी सोचें उन भौतिक साधनों से जो उनके सामने हैं ऊपर नहीं उठतीं। इसलिए वे उन समस्त बातों को असम्भव समझते हैं जो उनकी बुद्धि और विवेक से बाहर हों, और वे हिदायत पाने वाले नहीं होते।

इसके अतिरिक्त इस सूर: में और भी अनेक रहस्य हैं जिनमें से कुछ को हम लिखना चाहते हैं। उनमें से एक यह है कि सूर: फ़ातिहा की 7 (सात) आयतें हैं। जिनमें से पहली आयत اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन) है। और आख़िरी आयत غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ (ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन) है।

पहली आयत में सृष्टि के आरम्भ का वर्णन है और आख़िरी आयत में उन लोगों और यहूदियों एवं ईसाइयों में से (आचार-व्यवहार में) उनसे मिलते-जुलते लोगों की ओर संकेत है, जिन पर क़यामत नाज़िल होगी। और 7 (सात) आयतें निर्धारित करने में इस बात की ओर संकेत है कि (ख़ुदा के निकट) दुनिया की आयु 7 (दिन) है, जैसा कि हमारे सप्ताह के 7 दिन हैं। इसके अतिरिक्त इस सात की संख्या की वास्तविकता पूर्णरूप से हमें ज्ञात नहीं कि वह हमारे (सांसारिक) सहस्र वर्षों की भाँति (एक दिन) सहस्र वर्ष (के बराबर) है या कुछ और। परन्तु हम यह जानते हैं कि उन सात में से केवल एक बचा है, और इसके बीत जाने के बाद अल्लाह तआला ने नए-नए परिवर्तनों का इरादा किया है। तब अल्लाह इन सात की समाप्ति पर पहले लोगों को समाप्त कर देगा और दूसरे लोगों को पैदा करेगा।

और छठी आयत صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्) में एक और रहस्य है, और वह यह है कि आदम छठे दिन पैदा किए गए थे और उन पर कृपा की गई थी और उनमें जुमा के दिन अस्र के बाद (अपरान्ह के समय) ज़िन्दगी की रूह फूँकी गई थी। उसी तरह छठे हज़ार वर्ष में एक महान व्यक्ति पैदा किया जाएगा, जो उन लोगों का आदम है जिन्होंने अपने ईमान (विश्वास) को नष्ट कर दिया। अत: वह आएगा और उनके दिलों को ज़िन्दा करेगा और उन्हें बिल्कुल ताज़ा बताज़ा अध्यात्मज्ञान प्रदान करेगा और उन्हें उनकी ग़फ़लत की नींद से जगाएगा।

आयत : اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम) में सच्चे ज्ञान एवं पहचान की दुआ के लिए संकेत और

प्रेरणा है। मानो कि अल्लाह तआला हमें शिक्षा देते हुए फ़रमाता है कि तुम अल्लाह से दुआ करो कि वह अपनी विशेषताओं के गुण तुम्हें दिखाए और तुम्हें कृतज्ञ (आभारी) बन्दों में से बना दे। क्योंकि पहली क़ौमें अल्लाह तआला की विशेषताओं एवं उसकी कृपा और प्रसन्नता पाने के ज्ञान एवं पहचान से अन्धी होने के बाद ही सन्मार्ग से भटकी हैं। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी के दिन ऐसे कर्मों में बरबाद कर दिए जिन्होंने उन्हें गुनाहों (पापों) में और भी आगे बढ़ा दिया। फिर उन पर ख़ुदा का प्रकोप भड़का और उन पर अपमान और रुसवाई की मार डाली गई और वे तबाह व बरबाद होने वालों में शामिल हो गए। अल्लाह तआला ने अपने कथन غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ (ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम्) में इसी की ओर संकेत किया है। वर्णन के प्रसंग से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला का प्रकोप उन्हीं लोगों पर होता है जिन पर प्रकोप से पहले अल्लाह तआला ने कृपाएँ की हों। अत: इस आयत में غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ (ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम्) से अभिप्राय वे लोग हैं जिन्होंने उन नेमतों, बरकतों (उपकारों) और आदेशों की अकृतज्ञता और अवज्ञा की, जो अल्लाह तआला ने उन्हें विशेष रूप से प्रदान कीं थीं। और वे अनुचित इच्छाओं के पीछे चल पड़े और कृपालु ख़ुदा और उसके अधिकारों को भूल गए और नाशुक्रों (अकृतज्ञों) में शामिल हो गए। इसी तरह الضَّآلِّيْنَ (ज़्वाल्लीन) से वे लोग अभिप्राय हैं जिन्होंने सही रास्ते पर चलने का इरादा तो किया लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में उनके पास सच्चा ज्ञान एवं ज्वलंत अध्यात्म न था और उन्होंने अनुचित इच्छाओं से बचाने वाली और नेकियों के लिए सामर्थ्य प्रदान करने वाली दुआएँ न कीं, बल्कि उन

पर भ्रम छा गए और वे उनकी ओर झुक गए और अपने सही रास्तों से भटक गए और ख़ुदा के सच्चे मशरब (अर्थात् उसके अवतार की जीवनदायक शिक्षा) को भूल गए। फिर वे भटक गए और उन्होंने अपने चिंतन-मनन को स्पष्ट और खुली-खुली सच्चाई की चरागाहों में नहीं छोड़ा। उनकी बुद्धि, विवेक और विचारों पर आश्चर्य है कि उन्होंने ख़ुदा तआला और उसकी सृष्टि पर वह कुछ वैध (जाइज़) ठहरा दिया जिसको सत्प्रकृति और अन्त:ज्ञान कदापि स्वीकार नहीं करते। वे नहीं जानते कि धार्मिक विधान की पुस्तकें (वस्तुत:) मानवीय स्वभावों की चिकित्सा के रूप में सेवा करती हैं। और चिकित्सक चित्त (मिज़ाज) का रक्षक होता है न कि उसका भक्षक। अफ़सोस है कि यह लोग सच्चों की राह से कितने ग़ाफ़िल हैं।

इस सूर: में अल्लाह तआला अपने आज्ञापालक बन्दों को शिक्षा देते हुए फ़रमाता है कि हे मेरे बन्दो ! तुमने यहूदियों और ईसाइयों (की अवज्ञाओं और अनेकेश्वरवादों) को देख लिया है। अत: तुम उन जैसी अवज्ञाओं और अनेकेश्वरवादों से बचो और दुआ और सहायता माँगने की शैली (तर्ज़) को मज़बूती से पकड़ लो, और यहूदियों की तरह अल्लाह तआला की नेमतों (कृपाओं) को न भूलो अन्यथा तुम पर ख़ुदा तआला का प्रकोप भड़केगा। अत: तुम सच्चे ज्ञान और दुआ को मत त्यागो और हिदायत की तलाश में ईसाइयों की तरह आलस्य मत करो, अन्यथा तुम भी गुमराहों (पथभ्रष्टों) में शामिल हो जाओगे। और उसने हिदायतप्राप्ति की प्रेरणा यह इशारा करते हुए दी कि हिदायत पर साबितक़दमी अल्लाह तआला की चौखट में निरन्तर दुआ और गिड़गिड़ाने के बिना सम्भव नहीं। इसके अतिरिक्त इस ओर

भी संकेत है कि हिदायत (सन्मार्ग) एक ऐसी नैतिक शिक्षा है जो ख़ुदा तआला की ओर से ही मिलती है, और जब तक ख़ुदा तआला स्वयं बन्दे का मार्गदर्शन न करे और उसे सन्मार्गप्राप्त लोगों में दाख़िल न करे तब तक वह कदापि सन्मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता। फिर इस बात की ओर भी इशारा है कि हिदायत का कोई अन्त नहीं। लोग दुआओं की सीढ़ी के द्वारा ही उस तक पहुँच सकते हैं, और जिस व्यक्ति ने दुआ करना छोड़ दिया उसने अपनी सीढ़ी खो दी। हिदायत पाने के योग्य वही है जिसकी ज़बान ख़ुदा के स्मरण और दुआ करने में लगी रहे, और वह उस पर धैर्य और निरन्तरता अपनाने वालों में से हो। जिस किसी ने भी दुआ को छोड़कर हिदायतयाफ़्ता होने का दावा किया तो निकट है कि वह लोगों के सामने ऐसी चिकनी-चुपड़ी बातों से अपने आप को सजा-सवाँरकर दिखाए जो उसमें नहीं पाई जातीं, और वह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और दिखावे के गढ़े में गिर जाए और सद्भावकों की जमाअत (गिरोह) से निकल जाए। सद्भावक बन्दा दिन-प्रतिदिन तरक़्क़ी करता जाता है, यहाँ तक कि वह चुनीदा हो जाता है और ख़ुदा तआला की कृपा उसे एक ऐसा रहस्य प्रदान करती है जो केवल ख़ुदा और उस बन्दे के ही मध्य होता है और वह प्रियपात्रों के गिरोह में सम्मिलित हो जाता है और प्रतिष्ठित बन्दों का स्थान पा लेता है। बन्दा उस समय तक ईमान की वास्तविकता तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि वह निष्कपटता की हक़ीक़त को न समझ ले और उस पर अडिग न हो जाए। इसी तरह वह भी सद्भावक नहीं बन सकता जिसके पास धरती में ऐसी चीज़ मौजूद हो जिस पर वह भरोसा करता हो या वह उससे डरता हो या उसे

दूसरे मददगारों में से एक मददगार समझता हो। कोई व्यक्ति तामसिक वृत्ति की तबाहियों और चिंगारियों से तब तक नहीं बच सकता जब तक कि उसकी निष्कपटता के कारण अल्लाह तआला उसे अपना प्रिय न बना ले और अपनी कृपा एवं शक्ति और सामर्थ्य से उसकी रक्षा न करे, और उसे आध्यात्मिकता का मज़ा न चखाए, क्योंकि वह (अर्थात् तामसिक वृत्ति) अन्त:मलिन है और वह अपनी कुटिलता और विषाक्तता में चरम को पहुँची हुई है और तबाह व बरबाद करने वाली और सन्मार्ग से भटकाने वाली दुर्भावनाओं के पलने-बढ़ने का स्थान है। अत: अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को यह शिक्षा दी है कि वे दुआएँ करते हुए और उस (तामसिक वृत्ति) की दुष्कामनाओं और दुष्टताओं एवं कष्टों से बचने की शरण माँगते हुए उस (ख़ुदा तआला) की ओर दौड़े चले आएँ, ताकि वह उन्हें सुरक्षित लोगों के समूह में दाख़िल कर ले। नि:सन्देह जान लो कि तामसिक वृत्ति की दुर्भावनाओं का उदाहरण तेज़ बुख़ारों की भाँति है। अत: जिस तरह उन बुख़ारों के समय (नाना प्रकार के) भयानक और प्रचण्ड रोग पाए जाते हैं, जैसे कँपकपा देने वाला बुख़ार, सर्दी, कँपकपाहट या अत्यन्त पसीना, प्रचण्ड नकसीर, भयंकर उल्टी, अतिसार (कमज़ोर कर देने वाली पेचिश), जलोदर (ड्रॉप्सी), या घोर निद्रा या अनिद्रा, जीभ का खुरदरापन, मुँह का सूखना, या लगातार छींकें, अत्यन्त सिरदर्द, लगातार खाँसी, भूख न लगना, और हिचकी लगना इत्यादि, जो बुख़ार के मरीज़ों के लक्षण हैं। इसी तरह तामसिक वृत्ति की दुर्भावनाएँ और लक्षण हैं, जिसके कुविचार जोश मारते रहते हैं और उसकी लहरें उमड़ती रहती हैं। और रोग रूपी उसकी दुर्भावनाएँ और

दुष्टताएँ चक्कर लगाती रहती हैं और उसके पराधीन उसे उचित और सही समझते रहते हैं, और उसके वशीभूत तबाह होते रहते हैं। बहुत ही कम लोग हैं जो उस (तामसिक वृत्ति की दुर्भावनाओं) से बचे रहते हैं। अत: हिदायत (सन्मार्ग) का चाहना किसी अनुभवी चिकित्सक के पास जाने और अपने आप को चिकित्सकों के सुपुर्द कर देने की तरह है। अपने बन्दों के लिए जिस पुरस्कार की ओर ख़ुदा ने संकेत किया है वह बन्दे का सांसारिकता (काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि) को त्यागकर अल्लाह तआला की ओर पूर्णत: झुक जाना और ख़ुदा के प्रेम में लीन होना और उसकी ओर से सदैव सौभाग्य दिया जाना और अपनी नैतिकता को सदैव क़ायम रखना और अल्लाह तआला का उस पर अपनी कृपा, इल्हाम (संवाद) और क़बूलियत-ए-दुआ का सौभाग्य प्रदान करना और उसे अपने प्रतापी लोगों में से बनाना और उसे अपने सुरक्षित बन्दों में दाख़िल कर लेना है। उसके लिए अल्लाह का आदेश:-

يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

(या नारो कूनी बरदन् व सलामन् अला इब्राहीमा)

अनुवाद- हे आग! तू इब्राहीम के लिए ठण्डी भी हो जा और उसके लिए सलामती का कारण भी बन जा।

(सूर: अल्-अम्बिया आयत नं. 70)

और उसका अपने निष्पाप और निश्छल बन्दों में शामिल करना ही पापों के ज्वर से छुटकारा और अनुकूल औषधियों और आहारों से इलाज करना, यह ऐसा गूढ़ उपाय है जिसे रब्बुल आलमीन (समस्त जगत के पालनहार) के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला इस मुबारक सूरः में मोमिनों पर यह भी स्पष्ट करता है कि देखो अहले किताब (अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों) का क्या अन्जाम हुआ। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यहूदियों ने अपने ऊपर लगातार कृपाओं और उपकारों के होने के बावजूद अपने पालनहार की नाफ़रमानी की, जिसके कारण वे एक प्रकोपित और तिरस्कृत क़ौम बन गए। और ईसाइयों ने अपने पालनहार (ख़ुदा) की विशेषताओं को भुला दिया और उसे एक कमज़ोर और असहाय बन्दा घोषित कर दिया, जिसके कारण वे एक पथभ्रष्ट क़ौम बन गए।

इस सूरः में इस ओर भी संकेत है कि आख़िरी युग (अर्थात् कलियुग) में मुसलमानों का चाल-चलन भी अहले किताब (अर्थात् उपरोक्त यहूदियों और ईसाइयों) जैसा हो जाएगा। अतः वे अपने आचार-व्यवहार में उन (अहले किताब)की तरह हो जाएँगे। फिर (पुनः) अल्लाह तआला उन्हें अपनी विशेष कृपा और अपने विशेष इनाम (पुरस्कार) से पुरस्कृत करेगा और उन्हें पाशविकता, अत्याचार, अन्धविश्वास और उसकी ख़राबियों और त्रुटियों से बचाएगा और उन्हें अपने नेक बन्दों में दाख़िल करेगा।

इस सूरः में दुआ की बरकतों की ओर भी संकेत है कि हर एक भलाई ख़ुदा की ओर से ही अवतरित होती है, और इस ओर भी संकेत है कि जिसने सत्य को पहचान लिया और अपने आप को हिदायत (सन्मार्ग) पर क़ायम कर लिया और शिष्ट एवं नेक बन गया तो अल्लाह उसे तबाह व बरबाद नहीं करेगा, बल्कि उसे अपने इनाम प्राप्त लोगों में दाख़िल कर लेगा, और जो अपने रब्ब की नाफ़रमानी

करेगा तो वह तबाह व बरबाद होने वालों में शामिल हो जाएगा।

और इस सूर: में इस ओर भी संकेत है कि सौभाग्यशाली वह है जिसके अन्दर दुआ के लिए जोश हो, वह किसी चीज़ की परवाह नहीं करता, न वह थकता है और न वह रुष्ट होता है, और न वह उदास होता है, बल्कि वह अपने रब्ब की कृपा पर इस हद तक भरोसा करता है कि अल्लाह की कृपा उस पर हो जाती है और वह कामयाब हो जाता है।

इसके अतिरिक्त इस सूर: में इस ओर भी संकेत है कि अल्लाह तआला की विशेषताएँ ठीक उसी विश्वास (ईमान) के अनुसार अपना प्रभाव (असर) दिखाती हैं जितना बन्दे को उन (विशेषताओं) पर विश्वास हो, और जब कोई अध्यात्मज्ञानी अल्लाह तआला की विशेषताओं में से किसी एक विशेषता की ओर झुकता है और उसे अपनी अन्तरात्मा की आँख से देख लेता है और उस पर विश्वास करता है, फिर विश्वास में आगे बढ़ता है, और फिर इतना बढ़ जाता है कि वह अपने विश्वास में लीन हो जाता है तब उस विशेषता का रूहानी प्रभाव उसके दिल में भर जाता है और वह उस पर वास कर लेता है। तब दुआ करने वाला अपने अन्दर यह आभास करता है कि उसका दिल अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों की मुहब्बत से रिक्त है और उसका दिल विश्वास से भर गया है और उसका जीवन उपकारी ख़ुदा की याद से मधुर और सुमंगल हो गया है तो वह अत्यन्त प्रसन्न और प्रफुल्ल हो जाता है। फिर उस पर उस विशेषता का और अधिक प्रभाव पड़ता है और वह उस पर छा जाती है। यहाँ तक कि उस बन्दे का दिल (ख़ुदा की) उस विशेषता का अर्श (सिंहासन) बन जाता है

और स्वार्थ एवं अहंकार का रंग पूर्णत: धुल जाने और ख़ुदा में उसके पूर्णत: लीन हो जाने के बाद उसका दिल उस विशेषता के रंग में अच्छी तरह रंगीन हो जाता है।

और यदि तू यह कहे कि यह तुझे कहाँ से ज्ञात हुआ कि यह संकेत सूर: फ़ातिहा में मौजूद हैं, तो याद रहे कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (अल्हम्दु लिल्लाहि) का शब्द इस पर संकेत करता है। क्योंकि अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि तुम अल्हम्दु लिल्लाहि कहो, बल्कि केवल ''अल्हम्दु लिल्लाहि'' कहा है। मानो कि उसने हमारी अन्तरात्मा से यह शब्द कहलवाए हैं और जो चीज़ हमारी अन्तरात्मा में छुपी है वह उसने हमें दिखाई है, और यह इस बात की ओर संकेत है कि इन्सान इस्लाम की प्रकृति (नेचर) पर पैदा किया गया है और इन्सान के स्वभाव में यह बात रख दी गई है कि वह अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) करे और यह विश्वास रखे कि वह ''रब्बुल आलमीन'' और ''रहमान'' और ''रहीम'' और ''मालिक यौमिद्दीन'' (समस्त जगत का पालनहार, बिन माँगे देने वाला, बार-बार दया करने वाला और कर्मफलदाता) है। वह हर सहायता माँगने वाले की सहायता करता है और दुआ करने वालों को हिदायत देता है। अत: यहाँ से यह सिद्ध हुआ कि इन्सान स्वभावत: अपने रब्ब (पालनहार) को पहचानने और उसकी इबादत करने के लिए पैदा किया गया है और उसके दिल में उसकी मुहब्बत भर दी गई है। अत: यह हालत पर्दों (अन्धकारों) के उठ जाने के बाद ही प्रकट होती है, और अल्लाह तआला की याद ज़बान पर सहसा और नि:संकोच जारी हो जाती है, और अध्यात्म का वृक्ष उगता और फल देने लगता है, और हर मौसम में अपना ताज़ा-बताज़ा फल देता रहता है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला के कथन -

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(सिरातल्लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्)

में एक संकेत यह भी है कि अल्लाह तआला ने बाद में आने वालों को पहले आने वालों के समान पैदा किया है। फिर जब इन बाद में आने वालों की रूहें उन पहलों की रूहों से पूर्णत: अनुसरण और स्वभावों के मिलने के कारण परस्पर एक होती हैं तो उन पहलों के दिलों से एक विशेष फ़ैज़ (लाभ) इन बाद में आने वालों के दिलों को मिलता है। फिर जब फ़ैज़ (लाभ) पाने वाले की पहुँच फ़ैज़ (लाभ) पहुँचाने वाले तक हो जाती है और पारस्परिक निकटता का सम्बन्ध अपने चरम को पहुँच जाता है तो उन दोनों का वजूद एक ही वजूद के समान हो जाता है और वे एक-दूसरे में विलय हो जाते हैं, और यही वह हालत है जिसे परस्पर एकता (और सच्ची मैत्रीयता) से परिभाषित किया जाता है और इस स्तर (पर पहुँचने) में साधक (भक्त) को ख़ुदा के निकट नबियों (अवतारों) का नाम दिया जाता है, क्योंकि स्वभाव और सार में वह उनसे समानता रखता है, और यह विषय अध्यात्मज्ञानियों से छुपा नहीं है।

सारांश यह है कि अल्लाह तआला हमारे नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत को ख़ुशख़बरी देता है, मानो वह यह कहता है कि हे मेरे बन्दो! तुम पहले इनामयाफ़्ता लोगों के स्वभावों पर पैदा किए गए हो और तुम में उनकी क्षमताएँ रखी गई हैं। इसलिए तुम उन क्षमताओं को नष्ट न करो और महानताएँ पाने के लिए त्याग, तपस्या और बलिदान करो, और जान लो कि

अल्लाह तआला बड़ा ही दानशील और कृपालु है, द्वेषी और कृपण कदापि नहीं। यहाँ से मसीह के नाज़िल होने का वह राज़ समझा जा सकता है जिसके बारे में लोग झगड़ते हैं। क्योंकि जब अल्लाह तआला के बन्दों में से एक बन्दा हिदायतयाफ़्ता लोगों के मार्ग का अनुसरण करे और महानतम् लोगों (अर्थात् पैग़म्बरों) के आदर्शों का अनुकरण करने वाला हो और हिदायतयाफ़्ता लोगों के रंग से रंगीन होने के लिए तैयार हो और अपनी सारी सोच और शक्ति और दिल से उनकी ओर अग्रसर हो और यथासम्भव सदाचार और सद्व्यवहार की शर्तों को पूरा करे और अपनी कथनी को करनी से और वचन को व्यवहार से अनुकूल करे, और उन लोगों में दाख़िल हो जाए जो सर्वशक्तिमान ख़ुदा की मुहब्बत का प्याला पीते हैं और अल्लाह की बार-बार याद और विनम्रता एवं गिड़गिड़ाहट से अध्यात्मज्ञान पाते हैं, और रोने वालों के साथ रोते हैं। तब (बन्दे के इस स्थान पर पहुँचने पर) अल्लाह तआला की रहमत का सागर जोश मारता है ताकि उस व्यक्ति से हर प्रकार की आन्तरिक मलिनता दूर करे और उसे मूसलाधार (रूहानी) बारिश की दानशीलता से तृप्त करे। फिर वह उसको थाम लेता है और उसे अध्यात्मोन्नति के उच्च स्थानों तक पहुँचा देता है और उसको उन लोगों में दाख़िल कर देता है जो उससे पहले सदाचारियों, वलियों, (ऋषियों, मुनियों) रसूलों और नबियों में से गुज़र चुके हैं। फिर उसे उनकी विशेषताओं की तरह विशेषता और उनकी सौम्यता (विनम्रता) की तरह सौम्यता और उनकी रौद्रता (प्रताप) की तरह रौद्र प्रदान किया जाता है। और कभी युग और युक्ति इस बात को चाहती है कि ऐसा व्यक्ति एक विशेष नबी (अवतार)

के पगचिन्हों पर भेजा जाए। फिर उसे उस नबी (अवतार) का सा ज्ञान और अध्यात्म, उसकी बुद्धि की सी बुद्धि, उसके नूर का सा नूर और उसके नाम का सा नाम दिया जाता है, और अल्लाह तआला उन दोनों की रूहों (आत्माओं) को उन शीशों की तरह बना देता है जो परस्पर आमने-सामने हों। अत: नबी असल (मूल) की तरह होता है और वली (ऋषि) प्रतिरूप की तरह। वह उसके मर्तबा और रूहानियत (अध्यात्म) से प्रतिबिम्बस्वरूप हिस्सा लेता है और लाभ उठाता है। यहाँ तक कि उनके बीच की दूरी (अन्तर) और द्वयता उठ जाती है और पहले (अर्थात् मूल) के आदेश प्रतिरूप पर घटित हो जाते हैं। तब वे दोनों अल्लाह और फ़रिश्तों के निकट परस्पर एक ही की तरह हो जाते हैं और अल्लाह तआला की इच्छा और उसका उसे एक की ओर झुकाना और उसका आदेश और निषेधादेश पहले (अर्थात् मूल) की रूह (आत्मा) पर उतरने के बाद उस दूसरे (अर्थात् प्रतिरूप) पर उतरते हैं। और यह अल्लाह तआला के रहस्यों में से एक ऐसा रहस्य है जिसको रूहानी (आध्यात्मिक) लोगों के अतिरिक्त और कोई नहीं समझता। और याद रहे कि ऐसा व्यक्ति जिसका दिल नबी के दिल के साथ अत्यन्त प्रगाढ़ और व्यापक समानता रखता होगा वह केवल उसी समय आएगा जब भविष्य में उसके आने की अत्यन्त आवश्यकता होगी। अत: जब ऐसे प्रतिरूपी अस्तित्व की आवश्यकता पैदा हो जाएगी तब अल्लाह उस काम के लिए अपने बन्दों में से किसी एक बन्दे को प्रधानता देते हुए चुन लेगा। फिर वह उस पर अपनी इतनी रहमत करेगा जितनी कि उसके पहले (अर्थात् मूल) नबी पर की थी। और वह उस पर उस (पहले नबी) की रूह

का रहस्य और उसके सार की वास्तविकता और उसके पवित्र जीवन एवं स्वभाव और विशेषताओं की शान् अवतरित करेगा, और उसके इरादों को इसके इरादों से, उसकी तपस्याओं (दुआओं) को इसकी तपस्याओं से इस तरह परस्पर मिला देगा कि मुशब्ब:बिही (अर्थात् उपमान्) नबी की सारी महानताएँ प्रतिरूप में प्रकट हो जाएँगी, और वह एक एकरूपता के अर्थ के अन्तर्गत आ जाएगा। फिर वे दोनों मुशब्ब: और मुशब्ब:बिही (उपमा और उपमान) परस्पर एक ऐसी सच्ची एकता बन जाएँगे कि वे एक ही नाम से नामित और एक ही तुलना से युक्त हो जाएँगे। मानो मुशब्ब:बिही (अर्थात् उपमान्) नबी स्वयं आसमान से धरती पर रहने वालों के पास उतर आया है। अत: हज़रत ईसा इब्नि मरियम के उतरने के बारे में नबी करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन का यही अर्थ है, और यही वह सच्चाई है जो क़ुरआन के विरुद्ध और विपरीत नहीं, और इसका उदाहरण पहलों में गुज़र चुका है। इसलिए तू व्यर्थ बहस न कर और इन्कार करने वालों (मुन्किरों) में से मत बन। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी उसी तरह मृत्यु पा चुके हैं जिस तरह उनसे पहले के लोग और बाद के लोग इस संसार से गुज़र गए। अत: तू ऐसे लोगों से न डर जिन्होंने किताबुल्लाह (अर्थात् क़ुरआन) और उसके खुले-खुले सिद्धान्तों (क़ानूनों) को छोड़ दिया, और दूसरी किताबों को क़ुरआन पर प्रधान रखा, और सन्देह को सत्य पर प्रधानता दी। तू अल्लाह और उसके अज़ाब (प्रकोप) से डर, और उन तमाम् फ़िर्क़ों से अलग हो जा (जो क़ुरआन को छोड़ चुके हैं), और अल्लाह की स्पष्ट और स्थायी डोर को दृढ़तापूर्वक (अर्थात् अटूट अनुशासन से)

थाम ले। और जो व्यक्ति अपने ध्यान और चिन्तन-मनन की बागडोर को (क़ुरआन की) इस (उपरोक्त) आयत की ओर फेरेगा और इस पर पूर्णत: चिन्तन-मनन करेगा तो वह देखेगा कि यह आयत हमारे इस बयान पर गवाह (साक्षी) है। फिर वह इस (उपरोक्त आयत) के सामने अपना सिर झुका देगा।

فلا تعذلونى بعد ما قلتُ سِرّه
و أثبته بدلائل الفرقانِ

अनुवाद- मैंने उस रहस्य की हक़ीक़त को खोल दिया है (जो सैकड़ों वर्षों से रहस्यमय था) और उसे क़ुरआन शरीफ़ के तर्कों से सिद्ध कर दिया है। अत: इसके बाद तुम मेरा उपहास मत करो।

وقد بان برهانى بقول واضح
وأنار صدقى عند ذى العرفانِ

अनुवाद- खुले-खुले वर्णन के बाद मेरी दलील खुलकर सामने आ गई है और दिव्यज्ञानियों पर मेरी सच्चाई स्पष्ट हो गई है।

و عليك بالصدق النقى وسبله
ولو أنه ألقاك فى النيرانِ

अनुवाद- और तुम पर पूर्णत: अनिवार्य है कि पवित्र एवं निखोट (संयमित) सच्चाई और उसके समस्त मार्गों को अपनाओ, चाहे ऐसा करने पर तुम्हें भाँति-भाँति के कष्टों में ही क्यों न डाला जाए।

इसके अतिरिक्त ज्ञात हो कि अल्लाह तआला की कई प्रधान विशेषताएँ हैं जो उसकी हस्ती के तक़ाज़ा से ख़ुद बख़ुद पैदा होने वाली हैं और उन्हीं पर समस्त लोक निर्भर हैं और वे चार हैं:-

(1) रबूबियत (पालन-पोषण करने की विशेषता)

(2) रहमानियत (बिन माँगे देने की विशेषता)

(3) रहीमियत (बार-बार दया करने की विशेषता)

(4) मालिकीयत। (कर्मफल देने की विशेषता)

जैसा कि अल्लाह तआला ने इस सूरः (फ़ातिहा) में उनकी ओर संकेत किया है और फ़रमाया है कि:-

1- रब्बिल आलमीन

2- अल्-रहमान

3- अल्-रहीम

4- मालिक यौमिद्दीन

अतः यह प्रधान (मुख्य) विशेषताएँ हर चीज़ पर प्रधानता रखती हैं और हर चीज़ पर छायी हुई हैं। समस्त चीज़ों का अस्तित्व, उनकी क्षमता, उनकी योग्यता और उनका अपनी पराकाष्ठाओं को पहुँचना, इन्हीं (विशेषताओं) से सम्बद्ध है। लेकिन प्रकोप (क्रोध) की विशेषता ख़ुदा तआला की प्रधान विशेषता नहीं बल्कि वह प्रासांगिक (गौण) है, जो विशुद्ध नैतिकता के न पनपने और न बढ़ने के कारण पैदा होती है। और इसी तरह पथभ्रष्ट ठहराने की शक्ति का प्रकटन भी पथभ्रष्ट होने वालों में दुराचार पैदा होने के बाद ही होता है। उपरोक्त चार (प्रधान) विशेषताओं की संख्या इस लोक को दृष्टिगत रखते हुए है जिसमें उन विशेषताओं के निशान (लक्षण) पाए जाते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि यह सारा संसार हर समय इन चारों विशेषताओं के वजूद पर अपने आप गवाही दे रहा है। और यह चारों विशेषताएँ इस तरह से प्रकट (उद्घटित) हैं कि इनमें एक मूर्ख के अतिरिक्त कोई विवेकी और बुद्धिमान सन्देह नहीं कर सकता। और इस संसार के अन्त तक इन

(प्रधान) विशेषताओं की संख्या चार ही रहेगी। यह (विशेषताएँ) इतनी महान हैं कि दूसरे लोक (परलोक) में इन्हीं में से चार और विशेषताएँ प्रकट होंगी और उनके प्रकट होने का पहला स्थान अतिप्रतिष्ठित और समस्त जगत के पालनहार (ख़ुदा) का अर्श (सिंहासन) होगा। जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त कभी कोई विराजमान नहीं हुआ, और वह अर्श (सिंहासन) समस्त लोकों के पालनहार (ख़ुदा) के आलोकों (नूरों) का पूर्ण द्योतक है जिसके आधारभूत चार स्तम्भ हैं।

(1) रबूबियत (पालनहारिता)

(2) रहमानियत (बिन माँगे देने की विशेषता)

(3) रहीमियत (बार-बार दया करने की विशेषता)

(4) मालिकीयत-ए-यौमिद्दीन (कर्मफलदाता)

और प्रतिरूपी दृष्टि से इन चारों विशेषताओं का पूर्ण संग्रहीता अल्लाह तआला के अर्श (सिंहासन) या इन्सान-ए-कामिल (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के दिल के अतिरिक्त और कोई नहीं। और यह (चारों) विशेषताएँ अल्लाह तआला की समस्त विशेषताओं की आधारभूत (मूल) विशेषताएँ हैं। और वे उस अर्श (सिंहासन) के लिए पायों के समान हैं जिस पर ख़ुदा तआला विराजमान (जल्व:गर) है और इस्तवा (अर्थात् विराजमान होने) के शब्द में अल्लाह तआला की विशेषताओं के पूर्ण प्रतिबिम्बित होने की ओर संकेत है जो सर्वोत्कृष्ट सृष्टिकर्ता है। फिर अर्श (सिंहासन) का हर इक पाय: एक फ़रिश्ते तक पहुँचता है जिसे वह उठाए हुए है और उसी पाय: से सम्बन्धित कार्य का प्रबन्ध करता है और उसकी तजल्लियों (प्रकटनों) का पात्र बनता है और उन तजल्लियों (प्रकटनों) को धरती और आसमानों पर

रहने वालों पर बाँटता है। अत: अल्लाह तआला के कथन -

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ

(व यहमिलो अर्शा रब्बिका फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानिय:, सूर: अल हाक़्क़ा-18) का यही अर्थ है। क्योंकि फ़रिश्ते ख़ुदा की उन विशेषताओं को उठाए हुए हैं (अर्थात् प्रतिबिम्बित और प्रकट कर रहे हैं) जो अर्श (सिंहासन) की वास्तविकता से सम्बन्धित हैं और इसमें रहस्य यह है कि अर्श (सिंहासन) इस लोक की चीज़ों में से नहीं है बल्कि वह इहलोक और परलोक के मध्य बर्ज़ख़ (अर्थात् मृत्यु और पुरुत्थान के बीच की स्थिति) और ख़ुदा की:-

(1) रबूबियत (पालनहारिता)

(2) रहमानियत (बिन माँगे देने की विशेषता)

(3) रहीमियत (बार-बार दया करने की विशेषता) और

(4) मालिकीयत।

नामक विशेषताओं की तजल्लियों (प्रकटनों) का अनादि स्रोत है। ताकि ख़ुदा की दानशीलताओं का प्रकटन और कर्मफल देने की प्रक्रिया अपने चर्मोत्कर्ष को पहुँचे। और यह अर्श (सिंहासन) ख़ुदा तआला की विशेषताओं में से है। क्योंकि अल्लाह तआला अनादिकाल से अर्श (सिंहासन) पर विराजमान है और अनादिकाल में उसके साथ अन्य कोई चीज़ न थी। अत: तुम इन बातों पर चिन्तन-मनन करने वालों में से बनो। अर्श (सिंहासन) का तथ्य और उस पर अल्लाह तआला का विराजमान होना अल्लाह के रहस्यों में से एक बहुत बड़ा रहस्य है और एक अत्यन्त ठोस और व्यापक तर्कसंगत युक्ति एवं रूहानी (आध्यात्मिक) अर्थों पर आधारित है, और उसका नाम इसलिए अर्श

(सिंहासन) रखा गया है ताकि इस लोक के बुद्धिजीवियों को उसका अर्थ समझाया जाए और इस युक्ति का समझना उनकी बौद्धिक क्षमताओं के निकट कर दिया जाए। और वह अर्श (सिंहासन) अल्लाह के पास से उसकी कृपा और दानशीलताओं की तजल्ली (प्रकटन) को फ़रिश्तों तक और फ़रिश्तों से रसूलों (अवतारों) तक पहुँचाने का वास्ता (माध्यम) है। ख़ुदा के एकांकी और अद्वय होने पर उस पर इस बात से कोई आरोप नहीं लगता कि उसकी दानशीलता को लेने और उसे आगे पहुँचाने वाले माध्यमों की प्रचुरता अत्यधिक हो। बल्कि इस स्थान में माध्यमों की प्रचुरता मानवजाति के लिए उपकारों का कारण है और आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति में उनको सहयोग देती है और उन्हें उन कोशिशों और तपस्याओं में सहायता पहुँचाती है जो उन सम्बन्धों (रिश्तों) के प्रकटन का कारण बनती है जो मानवजाति (उदाहरणत: बुद्धिजीवियों और महान आत्माओं) में मौजूद हैं और उन तक मानवजाति ने तरक़्क़ी करना है। यह काम उस समय तक जारी रहेगा जब तक कि इन्सान ख़ुदा के समक्ष न हाज़िर हो जाए। फिर जब ख़ुदा के प्रेम का प्रभाव और उसकी कृपा की ठण्डी हवाएँ दुआ करने वाले की सहायता करें तो अल्लाह तआला उसके बहुत से पर्दे (अन्धकार) दूर कर देता है और उसे लक्ष्य के निकट कर देता है और मध्य में पैदा होने वाली बहुत सी रोकों और मुसीबतों को दूर कर देता है, और दुआ करने वाले को ख़ुदा अपने नूर से मुनव्वर कर देता है और अपने प्रिय बन्दों में दाख़िल कर लेता है, और दुआ करने वाला ख़ुदा की निकटस्थता के मुक़ाम और मर्तबा के चमत्कार देखने के साथ-साथ वह ख़ुदा को देखने और उससे मिलने का सौभाग्य पा लेता है। लेकिन फ़िलास्फ़रों

(दार्शनिकों) को इन अध्यात्मज्ञानों और रहस्यों का कुछ भी ज्ञान नहीं, और न ही निरी बुद्धि की वहाँ तक पहुँच है और ऐसे उद्देश्यों और अर्थों का अंतर्बोध केवल नबियों (अवतारों) और औलिया अल्लाह की नूर-ए-हिदायत से प्राप्त होता है। बुद्धि उसकी सुगन्ध को नहीं पा सकती, और न ही किसी बुद्धिजीवी के लिए यह सम्भव है कि वह इस स्थान पर रब्ब की किसी कृपादृष्टि के बिना पहुँच सके।

और जब पवित्र और महान रूहें (आत्माएँ) इन भौतिक शरीरों से अलग हो जाती हैं और वे पूर्णत: (पापों के) मैल-कुचैल से रहित हो जाती हैं तो वे फ़रिश्तों के द्वारा अर्श (सिंहासन) के पास ख़ुदा के समक्ष पेश की जाती हैं। तब वे एक नए ढंग से ख़ुदा की रबूबियत (पालनहारिता) से ऐसा हिस्सा पाती हैं जो पहली (अर्थात् इस भौतिक जगत की) रबूबियत (पालनहारिता) से पूर्णत: भिन्न होता है, और उसी तरह उसकी रहमानियत (कृपा) से ऐसा हिस्सा पाती हैं जो पहली (अर्थात् इस भौतिक जगत की) रहमानियत से बिल्कुल भिन्न होता है। फिर वे उसकी रहीमियत (दया) और मालिकीयत से ऐसा हिस्सा पाती हैं जो इस भौतिक जगत में मिलने वाले हिस्सा से बिल्कुल भिन्न होगा। उस समय अल्लाह तआला की इन (चारों) विशेषताओं की संख्या आठ हो जाएगी। जिनको ख़ुदा के आठ फ़रिश्ते अहसनुल् ख़ालिक़ीन (ख़ुदा) के आदेश से उठाएँगे और हर इक विशेषता के लिए एक फ़रिश्ता नियुक्त होगा, जो बड़े सुव्यवस्थित और सुश्रृंखलित ढंग से उस विशेषता (के उपकारों) को बाँटने और उसे यथावसर और यथास्थान रखने के लिए पैदा किया गया है। अल्लाह तआला के कलाम- فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا (फ़ल् मुदब्बिराते अमरन्) में इसी की

ओर संकेत है। अत: तू भी ग़ौर कर और ग़ाफ़िलों में शामिल न हो।

परलोक में अर्श (सिंहासन) को उठाने वाले फ़रिश्तों की संख्या की बढ़ोत्तरी ख़ुदा की सिफ़ात -

(1) रबूबियत (पालनहारिता)

(2) रहमानियत (बिन माँगे देने की विशेषता)

(3) रहीमियत (बार-बार दया करने की विशेषता) और

(4) मालिकीयत

की तजल्लियात की बढ़ोत्तरी के कारण है। तब नुफ़ूस-ए-मुतमइन्न: (अर्थात् संतुष्ट और सात्विकप्रवृत्त आत्माओं) की क्षमताओं में वृद्धि हो जाएगी। क्योंकि नुफ़ूस-ए-मुतमइन्न: इस संसार से अपना सम्बन्ध तोड़कर दूसरे संसार और रब्बे करीम की ओर वापस लौटने के बाद अपनी योग्यताओं में तरक़्क़ी करती हैं। अत: उनकी क्षमताओं और योग्यताओं के अनुसार ख़ुदा की रबूबियत, रहमानियत, रहीमियत और मालिकीयत नामक विशेषताएँ जारी होती हैं जैसा कि आध्यात्मिक लोगों के कुशूफ़ (दिव्यस्वप्न) इस विषय पर गवाह हैं। और यदि तुम उन लोगों में से हो जिन्हें क़ुर्आन करीम की समझ का कुछ हिस्सा प्रदान किया गया है तो तुम भी इस (क़ुर्आन करीम) में ऐसे बहुत से वर्णन पाओगे। अत: तुम गहरी नज़र से देखो ताकि तुम्हें अल्लाह तआला की किताब से (मेरी इस) तहक़ीक़ का प्रमाण मिल जाए।

इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात रहे कि आयत -

★ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

★**अनुवाद-** हे ख़ुदा! हमें सीधे मार्ग पर चला, उन लोगों के मार्ग पर जिन्हें तूने पुरस्कृत किया है।

(इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम, सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्।) (सूरः फ़ातिहा आयत नं. 6-7) में बारीक से बारीक शिर्क (बहुदेववाद) और उसके कारणों की जड़ काटकर लोगों को शिर्क से बचाने की ओर बहुत बड़ा संकेत पाया जाता है।

इसीलिए अल्लाह तआला ने इस आयत में लोगों को नबियों के से इनाम पाने और उन (इनामों) के द्वार खोले जाने की दुआ करने का आदेश दिया है। क्योंकि अधिकतर शिर्क (बहुदेववाद) नबियों और वलियों (अवतारों और ऋषियों-मुनियों) के बारे में अतिशयोक्ति करने के कारण संसार में फैला है, और जिन लोगों ने अपने नबी को ऐसा एकांकी और अद्वितीय और ऐसा एक और अद्वय समझ लिया जैसे कि ख़ुदा तआला, तो उनकी सोच का परिणाम यह निकला कि उन्होंने कुछ समय के बाद उसी नबी (अवतार) को उपास्य (ख़ुदा) बना लिया और इसी तरह (हज़रत ईसा की प्रशंसा में) अतिशयोक्ति करने और हद से आगे बढ़ने के कारण ईसाइयों के दिल बिगड़ गए। अतः अल्लाह तआला इस आयत में इसी ख़राबी और गुमराही की ओर संकेत करता है और इस ओर भी संकेत करता है कि (अल्लाह तआला से) इनाम पाने वाले लोग अर्थात् रसूल, नबी, मुहद्दस (मुल्हम) इसलिए अवतरित किए जाते हैं कि लोग उन महान हस्तियों के आदर्श अपनाएँ, इसलिए नहीं कि वे उनकी इबादत (उपासना) करने लगें और उन्हें मूर्तियों की तरह ख़ुदा बना लें। इसलिए संयम और शिष्टाचार से परिपूर्ण इन पवित्र हस्तियों को संसार में भेजने का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि उनका हर अनुयायी उनकी ख़ूबियों को अपनाए, न यह कि उन्हीं को पत्थर की मूर्ति बनाकर उन पर

माथा रगड़ने वाला बन जाए। अत: अल्लाह तआला ने इस आयत में बुद्धि और सूझबूझ रखने वालों को कहा है कि नबियों (अवतारों) की खूबियाँ ख़ुदा तआला की ख़ूबियों के बराबर नहीं होतीं। ख़ुदा तआला अपने आप में एकांकी, अद्वय और निस्पृह हैं। उसकी हस्ती और विशेषताओं में कोई उसका साझीदार नहीं और न ही कोई उसके बराबर है। नबी (अवतार) उस जैसे नहीं होते बल्कि अल्लाह तआला उनके सच्चे अनुयायियों में से उनके वारिस बनाता है। अत: उनकी उम्मत के सच्चे लोग उनके वारिस होते हैं और वे वह सब कुछ पाते हैं जो उनके नबियों (अवतारों) को मिला हो, लेकिन शर्त यह है कि वे उनके पूरे वफ़ादार और निश्छल अनुयायी बनें। और आयत

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ ★

(क़ुल इन् कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिऊनी युहबिबकुमुल्लाह। आले इमरान 3/32) में अल्लाह तआला ने इसी की ओर संकेत किया है। अब देखो कि अल्लाह तआला ने समस्त प्रियवर नबियों (अवतारों) के गौरव हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करने और उनके आदर्श पर चलने की शर्त पर उम्मत के लोगों को किस तरह अपना प्रिय ठहराया है। और आयत -

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीमा, सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्)

इस बात की ओर संकेत करती है कि पहले रसूलों और सिद्दीक़ों (सत्यनिष्ठों) की विरासत (इस उम्मत के लोगों का) एक

★**अनुवाद-** हे मुहम्मद! तू घोषणा कर दे कि हे लोगो! यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो (इस दशा में) वह (भी) तुमसे महब्बत करेगा। (सूर: आले इम्रान आयत नं. 32)

अनिवार्य और न ख़त्म होने वाला हक़ है और सच्चे और सदाचारी मोमिनों के लिए क़यामत तक इस विरासत का मिलना अनिवार्यत: जारी है, और वे नबियों के वारिस बनते हैं और अल्लाह तआला से वे सारे इनाम पाते हैं जो नबियों ने पाए, और यही वह सत्य है (जो अल्लाह ने कहा)। अत: तू सन्देह करने वालों में से सम्मिलित न हो।

इस विरासत का रहस्य और उत्तरदानी (रिक्यदायी) और उत्तराधिकारी बनने का असल कारण इस आयत से रहस्योद्घटित होता है जो एक और अद्वय ख़ुदा पर ईमान लाना (विश्वास करना) सिखाती है और उस एक और अद्वय रब्ब (पालनहार) की महानता बयान करती है। क्योंकि सबसे बड़े सहायक और सबसे बढ़कर दया करने वाले ख़ुदा ने जब अपने एक और अद्वय होने के रहस्य बताए और सिखाए और उन पर दृढ़ता से क़ायम रहने का बार-बार आदेश दिया और फ़रमाया कि यह दुआ करते रहो कि

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

(इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईनु)

(अनुवाद- हे ख़ुदा! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद माँगते हैं। सूर: फ़ातिहा आयत नं. 5, अनुवादक)

तो इस शिक्षा और तालीम से उसने यह चाहा कि ख़ातमुन्नबीयीन (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की उम्मत पर अपनी विशेष दानशीलता और विशेष उपकार से शिर्क की सारी जड़ें काट दे, ताकि इस उम्मत को उन मुसीबतों से छुटकारा दे जो पहलों पर आ पड़ी थीं। अत: उसने अपनी कृपा और दानशीलता से हमें एक दुआ सिखाई और उसके द्वारा हमें अपने निश्छल बन्दों में शामिल कर लिया। अत: हम उसके

सिखाने के अनुसार दुआ माँगते हैं और उसके समझाने के अनुसार उससे माँगते हैं। इस दशा में हम उसके इनाम पर बहुत ख़ुश हैं और उसकी प्रशंसा करते हुए इन शब्दों में दुआ करते हैं कि:-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ

(इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीमा, सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम् ग़ैरिल् मग़्ज़ूबे अलैहिम् वलज़्ज़वाल्लीन। फ़ातिहा- 1/7)

और इस दुआ में हम अल्लाह तआला से अपने लिए वे तमाम् नेमतें माँगते हैं जो नबियों को दी गई थीं और उससे हम यह भी माँगते हैं कि हम नबियों की तरह सिरात-ए-मुस्तक़ीम (इस्लाम) पर अडिग रहें और अन्याय एवं अत्याचार से बचें और हर प्रकार की गन्दगी और धूर्तता से दूर होकर और ख़ुदा के दरबार की ओर जल्दी-जल्दी उन (नबियों) के साथ ही पवित्र अहाते (आँगन) में दाख़िल हो जाएँ। अत: यह बात किसी से छुपी नहीं कि अल्लाह तआला ने इस दुआ में हमें नबियों (अवतारों) का प्रतिरूप ठहराया है और हमें तमाम् बाह्य एवं आन्तरिक और अछूती अर्थात् हर प्रकार की बरकतों और नेमतों का वारिस ठहराया और प्रदान किया है। जिनमें से हमने अपने सामर्थ्यानुसार उठा ली हैं और उतनी ले आए हैं जो हमारी कंगाली को दूर कर सकें, और (दिलों की) वादियाँ (अपनी) अपनी सामर्थ्यानुसार बह निकलीं (अर्थात् जितने इनाम किसी की क्षमता के बर्तन में समा सकते थे वे उसे मिल गए)। अत: हम सफल लोगों के स्तर और स्थान पर उतारे गए। नबियों के भेजने और रसूलों एवं पवित्र लोगों को पैदा करने का यही रहस्य है कि हम उन पवित्र लोगों के रंग में

रंगीन हो जाएँ और उनके साथ मिलाप की लड़ी में पिरोए जाएँ और पहले इनाम पाने वाले नबियों और लोगों के वारिस बन जाएँ।

इसके साथ ही अल्लाह तआला का सदैव से यह विधान भी जारी रहा है कि जब वह अपने किसी प्रिय भक्त को कोई महानता प्रदान करता है और मूर्ख लोग अपनी गुमराही के कारण उसकी इबादत (आराधना) करने लग जाते हैं और प्रतिष्ठा एवं प्रताप में उसे ख़ुदा का हमपल्ला ठहरा देते हैं बल्कि उसे सक्रिय ख़ुदा समझने लग जाते हैं तो अल्लाह तआला उस महान बन्दे का कोई प्रतिरूप पैदा कर देता है और उसे उसका नाम दे देता है और उसके आदर्श भी उस (प्रतिरूप) की प्रकृति में रख देता है। और वह अपने स्वाभिमान के आधार पर ऐसा करता है ताकि मुश्रिकों के दिलों में जो विचार पैदा हुए उन्हें वह ग़लत सिद्ध कर दे। वह जो चाहता है करता है, और जो वह करता है उसके बारे में वह जवाबदेह (उत्तरदायी) नहीं होता (क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत का मालिक है), लोग ही जवाबदेह होते हैं। वह जिस (चीज़) को चाहता है पोषण के लिए मीठे दूध के समान बना देता है और जिसको चाहता है स्वच्छता (शुद्धता) और चमक में चमकदार मोती के समान कर देता है और उस तक अपनी तस्नीम (प्रेम का शर्बत) का प्याला पहुँचा देता है और उसे लोकप्रियता की सुगन्ध से भर देता है। यहाँ तक कि देखने वालों को उसकी सुन्दर ललाट और लोकप्रियता से अवगत करा देता है। सारांश यह है कि अल्लाह तआला ने इस दुआ में हिदायत चाहने वालों के लिए अपनी अपार कृपा और अगाध प्रेम की ओर संकेत किया है। मानो उसने यह कहा है कि मैं रहीम हूँ और मेरी रहमत हर चीज़ पर

व्याप्त है। मैं अपनी कृपा एवं दानशीलता से कुछ बन्दों (भक्तों) को कुछ का वारिस बनाता हूँ, ताकि मैं उस शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का द्वार बन्द कर दूँ जो कतिपय अवतारों के साथ कुछ विशेषताओं के विशिष्ट किए जाने के कारण फैल सकता है। यह रहस्य है इस दुआ का। मानो कि (इसमें) अल्लाह तआला अपने बन्दों को एक व्यापक कृपा एवं दानशीलता की ख़ुशख़बरी देता है और यह कहता है कि मैं दानशील हूँ और समस्त लोकों का रब्ब (पालनहार) हूँ, द्वेषी और कंजूस नहीं। अत: तुम मेरी दानशीलता के ख़ज़ाने को और जो कुछ (तुम्हें) आगे मिलेगा, याद करो। क्योंकि मेरी दानशीलता व्यापक भी है और लाभदायक भी। और मेरा मार्ग वह मार्ग है जो हर उस व्यक्ति के लिए आसान और भेदभावरहित बनाया गया है जो उठे, ध्यान दे और तत्पर होकर कोशिश करने वालों की तरह ढूँढ़ने लगे। आयत-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीमा सिरातल् लज़ीना अन्अम्ता अलैहिम्) में यही सबसे बड़ा रहस्य है अर्थात् शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का खण्डन और उसका रोकना। अत: उन लोगों पर सलामती हो जो इस शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से मुक्ति पा गए, और उन पर भी जो उनके साथी हैं, और उन समस्त सत्याभिलाषियों पर भी, जो उनके आज्ञाकारी बन गए।

इस आयत में एक और संकेत यह भी है कि ''सिरात-ए-मुस्तक़ीम'' (सन्मार्ग) एक बहुत बड़ी नेमत है और हर नेमत की जड़ है और हर उस कृपा का द्वार है, जो माँगने पर की जाती है। और जब बन्दे को यह बड़ी दौलत और न मिटने वाली बादशाहत प्रदान

की जाती है तो उस पर लगातार अल्लाह की नेमतें उतरती हैं और जो इस नेमत को लेने के लिए तत्पर हो जाए और साबितक़दम (दृढ़) रहने का सामर्थ्य पा ले तो वह हर प्रकार की हिदायत की तरफ़ बुलाया गया और घोर अन्धकारों के बाद उसने अच्छी ज़िन्दगी और चमकती हुई रौशनी पा ली, और मौक़ा हाथ से निकल जाने से पहले अल्लाह तआला उसे हर तरह की गुमराही से छुटकारा दे देता है। और दुष्टों की मित्रता से निकालकर अल्लाह तआला उसे मुत्तक़ियों (संयमियों) के गिरोह में दाख़िल कर देता है और उसे मुन्अम् अलैहिम् (इनाम पाने वाले) लोगों की राहें दिखाता है, न कि मग़्ज़ूब अलैहिम् (सज़ा पाने वालों) की और न ही ज़्वाल्लीन (गुमराहों) की। सिरात-ए-मुस्तक़ीम की वास्तविकता जो इस्लाम की दृष्टिकोण से है वह यह है कि इन्सान अपने प्रदाता और उपकारी ख़ुदा से प्रेम करे, उसके आदेश पर राज़ी रहे, अपनी रूह और अपना दिल उसके सुपुर्द कर दे और अपने आप को उस ख़ुदा को सौंप दे जिसने इन्सान को पैदा किया है। उसके अतिरिक्त किसी और को न पुकारे और उसी से सच्चा प्रेम करे। उसी से फ़रियाद करे और उसी से कृपा और दया माँगे, अपनी ग़फ़लत से जाग जाए, अपना चाल-चलन सुधारे और रहमान (कृपालु) ख़ुदा से डरे और ख़ुदा की मुहब्बत उसके ख़ून में रच-बस जाए। अल्लाह तआला उसकी सहायता करे और उसके यक़ीन और ईमान (आस्था और विश्वास) को दृढ़ करे। तब बन्दा अपने पूरे दिल, बुद्धि, विवेक एवं अंगों और अपनी ज़मीन एवं खेतीबाड़ी सहित पूर्णतः अपने रब्ब की ओर झुक जाता है और उसके अतिरिक्त सबसे मुँह मोड़ लेता है। उसके लिए उसके रब्ब के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रह

जाता। वह अपने महबूब (प्रियतम्) ही का अनुसरण करता है और निश्छल हृदय के साथ अल्लाह के समक्ष हाज़िर हो जाता है और उसके जीवन में अल्लाह तआला के पाने के अतिरिक्त उसका कोई उद्देश्य नहीं होता और वह धन और धनाढ्य होने पर किसी प्रकार का घमण्ड करने या उनसे धोखा खाने से बच जाता है और ख़ुदा के दरबार में मिस्कीनों (दरवेशों) की तरह हाज़िर हो जाता है। वह सांसारिक मोहमाया को त्याग देता है और उससे दूर हो जाता है और अल्लाह से मुहब्बत करता है और उसे ही चाहता है और उसी पर भरोसा करता है और उसका ही हो जाता है और उसी में ही लीन हो जाता है और प्रेमियों की भाँति अल्लाह तआला की ओर दौड़ता है। अत: यही वह सिरात-ए-मुस्तक़ीम है जो साधकों (इबादतगुज़ारों) की साधना का चरमोत्कर्ष है और सत्याभिलाषियों और साधकों का अन्तिम ध्येय है, और यही वह नूर (प्रकाश) है जिसके उतरे बिना ख़ुदा की कृपा नहीं उतरा करती, और उसकी प्राप्ति के बिना कोई सच्ची सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यही वह सफलता का मार्ग है जिसके द्वारा साधक (इबादतगुज़ार) अपने दिल की बातें अपने रब्ब के सामने फ़रियाद में पेश करता है, जिससे उस पर बुद्धि, विवेक और दूरदर्शिता के दरवाज़े खोले जाते हैं और ख़ुदा की ओर से उसे मुहद्दस (मुल्हम) ठहराया जाता है। और जो व्यक्ति भोर के समय सच्ची निष्ठा एवं सच्ची और निश्छल नीयत और परहेज़गारी एवं वफ़ादारी की शर्तों को पूरा करते हुए तन्हाई में ख़ुदा तआला से यह दुआ माँगे तो नि:सन्देह वह ख़ुदा के नबियों (अवतारों), प्यारों एवं सानिध्यप्राप्त लोगों का स्थान पा लेता है। और जो उस व्यक्ति की तरह जिसकी

औलाद खो गई हो कृपालु ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ाए और रोते एवं गिड़गिड़ाते हुए रहमान ख़ुदा से विनम्रतापूर्वक उस दुआ के स्वीकार होने की प्रार्थना करे तो उसकी दुआ क़ुबूल कर ली जाती है और उसे प्रतिष्ठित स्थान मिलता है, उसे उसकी दशानुकूल हिदायत दी जाती है, उसका अक़ीदा याक़ूत (चमकदार बहुमूल्य रत्न) की भाँति सुस्पष्ट प्रमाणों से सुदृढ़ किया जाता है। उसका दिल जो मकड़ी के घर से भी अधिक कमज़ोर था मज़बूत किया जाता है। उसे अत्यधिक शिष्ट एवं सुशील व्यवहार के साथ-साथ संयम की सूक्ष्म राहों पर चलने का सामर्थ्य दिया जाता है, और वह आध्यात्मिक लोगों के दस्तरख़्वान और आसमानी (ईश्वरनिष्ठ) लोगों की श्रेष्ठ चीज़ों की ओर बुलाया जाता है। वह हर परिस्थिति में अपनी तामसिक इच्छा को अपने वश में रखता है और उसको शरीअत (क़ुर्आन करीम) की निगरानी में इस तरह हाँकता है जैसे कि एक बहादुर योद्धा अपनी सिधाई हुई सवारी को। वह सांसारिकता से प्रेम नहीं करता, न उसके लिए अपने आप को कष्ट में डालता है और न ही दुनिया के किसी अनर्गल बकने वाले का अनुसरण करता है। ख़ुदा तआला उसका मित्र हो जाता है और वही सदाचारियों का मित्र है। उसका दिल संतुष्ट हो जाता है, और वह गुमराह (पथभ्रष्ट) एवं तबाह व बरबाद करने वाले की तरह नहीं होता। वह ऊँचाई से शिकार पर झाँकने वाले बाज़ की तरह आँखें फाड़-फाड़कर सांसारिकता की ओर नहीं देखता, बल्कि सम्माननीय लोगों की भाँति अपने व्यवहारों के लक्ष्य को देखता है। उसकी सख़ावत (दानशीलता) के बादल बिन पानी बादल की तरह नहीं होते, बल्कि वह हर समय स्वच्छ झरने से दूसरों को पानी पिलाता है। अल्लाह

तआला ने अपने बन्दों को यह चाह दिलाई है कि वे उससे उस अमूर्त (अन्तहीन) स्थान तक पहुँचने और उस पर सदैव दृढ़प्रतिज्ञ रहने और उस लक्ष्य को पाने के लिए दुआ (प्रार्थना) किया करें। क्योंकि वह एक अत्यन्त महान स्थान और महान उद्देश्य है, जो केवल ख़ुदा की कृपा से ही किसी को प्राप्त होता है न कि अपनी कोशिश से। अत: आवश्यक है कि दुआ करने वाला इस नेमत को पाने के लिए बड़ी उत्सुकता से ख़ुदा की चौखट की ओर बढ़े और उससे इस चाहत में कामयाबी के लिए उठते-बैठते चलते-फिरते गिड़गिड़ाते हुए मजबूरों और माँगने वालों की तरह विनम्रता की मिट्टी में लथपथ होकर हाथ फैला-फैलाकर कृपा माँगते हुए दुआएँ करता रहे।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

(ग़ैरिल् मग़्ज़ूबे अलैहिम्)

के वाक्य में ख़ुदा के समक्ष उत्तम सत्कार और शिष्टाचार से पेश होने की ओर संकेत है। क्योंकि दुआ करने के भी कुछ शिष्टाचार हैं और उन्हें वही व्यक्ति समझ सकता है जो (अल्लाह तआला की ओर) झुकने वाला हो। जो व्यक्ति उन शिष्टाचारों का ध्यान नहीं रखता अल्लाह तआला उससे नाराज़ हो जाता है। जब वह (अपनी) ग़फ़लत में बढ़ता जाता है और तौबा नहीं करता तो उसे अपनी दुआ से (अपने दुराचारों की) सज़ा और अज़ाब के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। इसीलिए दुआ में कामयाबी पाने वाले लोग बहुत कम होते हैं और अहंकार, आलस और दिखाया के पर्दों के कारण तबाह व बरबाद होने वाले बहुत अधिक होते हैं। क्योंकि अधिकतर लोग जब दुआ करते हैं तो साथ ही शिर्क भी करते रहते हैं और अल्लाह

के अतिरिक्त किसी और की ओर से भी आस लगाए रहते हैं बल्कि ज़ैद-बक़र से भी उम्मीद लगाए बैठे होते हैं। अल्लाह तआला ऐसे मुश्रिकों की दुआओं को क़ुबूल नहीं किया करता और उन्हें उनके अन्धकार के जंगलों में हैरान व परेशान भटकता हुआ छोड़ देता है। हालाँकि अल्लाह तआला के उपकार विनम्र स्वभाव लोगों के बहुत निकट हैं। वह व्यक्ति दुआ करने वाला नहीं है जो ख़ुदा के अतिरिक्त इधर-उधर देखता रहता है बल्कि वह हर चमक और रौशनी से धोखा खा जाता है और चाहता है कि वह अपना दामन भर ले, चाहे बुतों के माध्यम से ही हो, और भीख पाने के शौक़ में बड़ी से बड़ी मुश्किल जगह पर पहुँचता है। वह अपने कल्पित प्रियतम् को ढूँढ़ता है चाहे दुष्टों और बदचलनों के द्वारा ही क्यों न हो। लेकिन सच्ची दुआ करने वाला वह है जो सांसारिक मोहमाया को त्यागकर पूर्णत: अल्लाह तआला की ओर झुक जाता है और उसके अतिरिक्त किसी से कुछ नहीं माँगता और विरक्तों एवं आज्ञापालकों की तरह ख़ुदा की ओर आता है। उसकी दौड़ ख़ुदा की तरफ़ ही होती है और वह उसके अतिरिक्त किसी की परवाह नहीं करता चाहे वह बादशाहों या सुल्तानों में से ही क्यों न हो। और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी और की चौखट पर झुकता है और व्यवहारिकता में अल्लाह तआला को पाने की चाहत नहीं रखता वह तौहीदपरस्त (एकेश्वरवादी) दुआ करने वालों में से नहीं, बल्कि शैतानों के साथियों की तरह है। अत: अल्लाह तआला उसकी बनावटी बातों की परवाह नहीं करता बल्कि उसके मन की मलिनताओं को देखता है और ऐसा व्यक्ति अल्लाह तआला के निकट अपनी ज़बान की माधुर्यता और सुन्दर वर्णनशैली

के बावजूद ऐसे गोबर की तरह है जिस पर चाँदी का रंग चढ़ाया गया हो या ऐसे शौचालय की तरह है जिस पर सफेदी की गई हो। उसके ओंठ तो मोमिन हैं लेकिन दिल से वह काफ़िर (अधर्मी) है।

अत: यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला का प्रकोप भड़कता है और उसके कथन الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ। (मग़्ज़ूबे अलैहिम्) से यही लोग अभिप्राय हैं। उन लोगों को सन्मार्गों की ओर बुलाया गया लेकिन उन्होंने उन्हें देखने के बाद छोड़ दिया और दुराचारों को उनकी ख़राबियों से सचेत करने के बावजूद भी अपना लिया। वे उलटी (असंगत) ओर चल पड़े और सीधी ओर का रुख न किया। वे झूठ की ओर ऐसे झुक गए कि थोड़ा सा भी अन्तर शेष न रहा। सच को पहचानने के बावजूद उन्होंने उसे छोड़ दिया। पथभ्रष्ट लोग तो वे हैं जिनकी ओर अल्लाह के कथन الضَّآلِّيْنَ। (ज़्वाल्लीन) में संकेत है कि उन्होंने अँधेरी रात में मिटा हुआ रास्ता पाया और किसी सच्चे रहनुमा के प्रादुर्भाव से पहले ही उस राह से भटक गए और लापरवाह होकर झूठ का रास्ता अपना लिया। उन्हें न कोई चिराग़ (सन्मार्गदर्शक) मिला जो उन्हें ठोकरों से बचाता और उन्हें सन्मार्ग दिखाता। अत: वे अज्ञानतावश गुमराही के गड्ढ़े में जा गिरे। यदि वे اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम) की दुआ करने वाले होते तो उनका पालनहार (ख़ुदा) उन्हें अवश्य (गुमराही के गड्ढ़े में गिरने से) बचाए रखता और उन्हें सीधा और सच्चा मार्ग दिखाता और उन्हें गुराराही के रास्तों से दूर रखता और सच्चे, उचित एवं न्यायसंगत मार्गों की ओर उनका मार्गदर्शन करता ताकि वे प्रशंसित लोगों का सही रास्ता पा लेते। लेकिन उन्होंने सांसारिकता की ओर तेज़ी से क़दम बढ़ाया

और सन्मार्ग के लिए अपने पालनहार (ख़ुदा) से दुआ न की, और न ही वे ख़ुदा तआला (के प्रकोप) से डरे। बल्कि उन्होंने घमण्ड से अकड़ते हुए अपने मुँह फेर लिए और कूट-कूटकर अहंकार उनके दिलों में भर गया। अत: उन्होंने उन व्यर्थ बातों के कारण जो उनके मुँह से निकलीं सत्य को छोड़ दिया और उनकी ईर्ष्या-द्वेषों ने उन्हें तबाही और बरबादी के जंगलों में फेंक दिया। अत: सारांश यह है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम) की दुआ इन्सान को हर दुराचार से बचाती है और उस पर सन्मार्ग को सुस्पष्ट करती है और उसको मुफ़्लिस (कंगाल) घर से निकालकर फल और सुगन्ध से भरे बाग़ों में ले जाती है, और जो इस दुआ में अधिक रोता और गिड़गिड़ाता है अल्लाह तआला उसको नेकी और भलाई में अधिक बढ़ाता है। नबियों (अवतारों) ने दुआ से ही रहमान ख़ुदा की मुहब्बत पाई और मरते दम तक एक पल के लिए भी दुआ को न छोड़ा। और किसी के लिए उचित नहीं कि वह इस दुआ से लापरवाह हो या इस उद्देश्य से मुँह फेर ले, चाहे वह नबी (अवतार) या रसूलों में से ही क्यों न हो। क्योंकि सद्बुद्धि और सन्मार्ग के मक़ाम और मर्तबों का अंत नहीं, बल्कि वे अनन्त हैं और बुद्धि एवं विवेक की सोच उन तक नहीं पहुँच सकती। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को यह दुआ सिखाई और उसे नमाज़ का आधार ठहराया, ताकि लोग उसकी हिदायत से फ़ायदा उठाएँ और उसके द्वारा लोग ख़ुदा तआला को एक और सर्वशक्तिमान समझें और उसके वादों को याद रखें और मुश्रिकों के शिर्क (अर्थात् अनेकेश्वरवादियों के अनेकेश्वरवाद) से छुटकारा पावें। इस दुआ की विशेषताओं में से एक

यह है कि वह लोगों के समस्त मक़ाम और मर्तबों पर छायी हुई है और हर व्यक्ति पर भी हावी है। वह एक व्यापक दुआ है जिसकी कोई सीमा या अन्त नहीं, और न ही उसका कोई छोर या किनारा है। अत: सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो ख़ुदा के मर्मज्ञ भक्तों (ऋषियों, मुनियों) की तरह उस दुआ पर ऐसे तड़पते दिलों के साथ जिनसे ख़ून बहता हो और ऐसी अन्तरात्माओं के साथ जो ज़ख़्मों पर धैर्य रखने वाली हों, और सन्तुष्ट दिलों के साथ निरन्तरता (हमेशगी) अपनाते हैं। यह वह दुआ है जो हर एक भलाई, सलामती, सच्चाई और धैर्य पर आधारित है और इस दुआ में समस्त लोकों के पालनहार ख़ुदा की ओर से बहुत सी ख़ुशख़बरियाँ हैं। कहते हैं कि प्रखर बुद्धि और विवेक रखने वालों के निकट मार्ग को उस समय तक सन्मार्ग नहीं कहा जा सकता जब तक कि वह धार्मिक विषयों में से पाँच विषयों पर आधारित न हो, और वे पाँच विषय यह हैं:-

(1) सीधा होना।

(2) निश्चित रूप से लक्ष्य तक पहुँचाना।

(3) उस (मार्ग) का सबसे (छोटा और) निकट होना

(4) चलने वालों के लिए उसका खुला (चौड़ा) होना

(5) साधकों की दृष्टि में लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उस मार्ग का निर्धारित किया जाना।

सिरात (मार्ग) का शब्द कभी तो ख़ुदा तआला की ओर मन्सूब (सम्बद्ध) किया जाता है, क्योंकि वह उसकी शरीअत (विधान) है और चलने वालों के लिए वह आसान रास्ता है। और कभी उसे बन्दों की ओर मन्सूब (सम्बद्ध) किया जाता है, क्योंकि वे उस पर चलने वाले

और उसे पार करने वाले हैं।

अब हम उचित समझते हैं कि सूरः फ़ातिहा की दुआ का उस दुआ से तुलना करें जो हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम ने इन्जील में सिखाई है, ताकि हर एक न्यायकर्ता पर यह बात सुस्पष्ट हो जाए कि इन दोनों में से कौन सी (दुआ) बीमार को अधिक चंगा करने वाली या प्यासे की प्यास को अधिक बुझाने वाली है और श्रेष्ठता में अधिक श्रेष्ठ, तर्क की दृष्टि से अधिक व्यापक और पूर्ण और सत्याभिलाषियों के लिए अधिक लाभदायक है। अब ज्ञात हो कि इन्जील लूक़ा अध्याय 11 आयत नं. 2 में लिखा है कि ईसा मसीह अलैहिस्सलाम ने हवारियों (सहचरों) को इस प्रकार की दुआ सिखाई और उन्हें कहा: ''जब तुम दुआ करो तो कहो हे हमारे बाप जो आसमानों पर है तेरे नाम की पाकीज़गी हो, तेरी बादशाहत आवे, तेरी मुराद जैसी आसमानों पर है ज़मीनों पर भी हो। हमारी रोज़ की रोटी हर रोज़ हमें दे और हमारे गुनाहों को बख़्श, क्योंकि हम भी अपने तमाम् गुनाहगारों का गुनाह बख़्शते हैं, और हमें आज़माइश में न डाल, बल्कि हमें शरीर (दुष्ट) से बचा। यह दुआ है जो मसीहियों को सिखाई गई।

ज्ञात रहे कि यह दुआ ख़ुदा की विशेषताओं को घटाकर पेश करती है। इसके अतिरिक्त यह दुआ मानवीय प्रकृति के समस्त उद्देश्यों पर भी हावी नहीं, बल्कि रूहानी हसरत की प्यास को और भी बढ़ाती है और प्रतिफल दिवस (क़यामत) में मिलने वाले शुभफलों से ग़ाफ़िल करके मानवीय शक्तियों को भौतिक और नश्वर इच्छाओं की प्राप्ति पर उभारती है। इस दुआ के सारे वाक्यों में एक वाक्य यह भी है कि ''तेरे नाम की पाकीज़गी हो'' अब अपनी बुद्धि

और विवेक से काम लेकर इस पर ग़ौर कीजिए कि क्या आप इस दुआ को उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा की शान् के योग्य पाते हैं जिसकी सारी विशेषताओं (के प्रकटन) में से कोई भविष्य शेष नहीं, और न उसकी पवित्रता और प्रताप के स्थानों में से कोई स्थान का प्रकटन भविष्य में निर्धारित है। नि:सन्देह सारी प्रशंसाएँ और पवित्रताएँ उस ख़ुदा के लिए सिद्ध हैं। इनमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसकी किसी भविष्यकाल में मिलने की आशा (प्रतीक्षा) हो। यही क़ुर्आन करीम की शिक्षा है और रहमान ख़ुदा का आदेश। जिसके बारे में हम इससे पहले सुस्पष्ट कर चुके हैं, और जिस व्यक्ति ने भी क़ुर्आन मजीद की ओर ध्यान दिया, उसे समझा, उस पर ग़ौर किया और उस पर गहन दृष्टि डाली, उस पर यह बात खुल जाएगी कि क़ुर्आन करीम ने इस विषय को पूर्णत: बयान किया है और इस बात को सुस्पष्ट कर दिया है कि हर एक पराकाष्ठागत महानता अल्लाह तआला को प्राप्त है और उसके लिए हर एक महानता अभी भी सिद्ध है और इसमें कोई सन्देह नहीं। और उसके लिए किसी महानता का भविष्य में मिलना तय करना मूर्खता, अन्याय और पाप है। लेकिन इन्जील ख़ुदा तआला को भविष्य में शक्तियाँ मिलने का मोहताज और कुछ लुप्त और विलुप्त शक्तियों के लिए बेचैन ठहराती है, और इन्जील ख़ुदाई वृक्ष (अर्थात् उसके धर्म के पवित्र शिक्षारूपी वृक्ष -अनुवादक) को सर्वगुणसम्पन्न नहीं मानती बल्कि केवल उसके फल के पकने की आशा प्रकट करती है, और वह ख़ुदा के सर्वशक्तिमान होने को नहीं मानती बल्कि वह उसकी महानता के बढ़ने के युग की प्रतीक्षक है। मानो इन्जील का ख़ुदा मुरादों (मनोकामनाओं) के पूरा न होने के

कारण दु:ख की वजह से ख़ामोश है और अपने इरादों को पूरा करने से असमर्थ है, उसने कितनी ही रातें अपनी महानताओं के पराकाष्ठा तक पहुँचने की प्रतीक्षा में और हालात के पलटा खाने की आस में व्यतीत कर दीं। यहाँ तक कि वह सफलता के दिनों से निराश हो गया और अपने बन्दों की ओर रुख़ किया ताकि वे उसकी मुराद पूरी होने के लिए दुआएँ करें और उसके दु:ख मिटने और उसका रोना-धोना दूर करने के लिए अपनी कमर कस लें। हमारा रब्ब इन सब दोषों से रहित है। यह उस पर खुला-खुला लांछन है। उसमें तो यह शक्ति है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है कि वह हो जाए तो वह केवल यह कह देता है कि वह हो जाए तो वह हो जाती है। भला महाप्रतापी और समस्त लोकों के पालनहार ख़ुदा का परेशानी से क्या सम्बन्ध? फिर मसीह अलैहिस्सलाम की दुआ एक ऐसी दुआ है जिसमें ख़ुदा को दोष से रहित ठहराने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं, मानो यह दुआ यह कहती है कि ख़ुदा तआला झूठ और बनावट से तो रहित है लेकिन न उसमें दूसरे गुण पाए जाते हैं और न उसमें स्थायी (शाश्वत्) गुणों का कोई थोड़ा सा भी लक्षण पाया जाता है। क्योंकि दोष और दोष से रहित होना यह सिफ़ाते सल्बिय: (छीन लेने वाले गुणों) में से है, जैसा कि अध्यात्मज्ञानी और दिव्यदृष्टि रखने वाले लोगों से यह बात छिपी नहीं, और अस्थायी गुण स्थायी गुणों के (मक़ाम और मर्तबा के) बराबर नहीं हो सकते, यह सच्चाई विश्वस्त और न्यायसंगत लोगों के निकट साबितशुदा है। लेकिन क़ुर्आन करीम ने जो दुआ हमें सिखाई है वह उन समस्त महान विशेषताओं पर आधारित है जो सर्वशक्तिमान ख़ुदा में पाई जाती हैं।

क्या तुम अतिप्रतिष्ठित और अतिप्रतापी ख़ुदा की वाणी -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ

(अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन अर्रहमानिर्रहीम मालिक यौमिद्दीन) को नहीं देखते कि वह किस तरह ख़ुदा की समस्त विशेषताओं को अपने अन्दर लिए हुए है और किस तरह उसने उनकी जड़ों और शाखाओं (अर्थात् प्रधान और प्रासांगिक विशेषताओं) को अपने अन्दर समेट लिया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (अल्हम्दु लिल्लाह) में यह संकेत किया कि अल्लाह तआला वह हस्ती है जिसके न गुण गिने जा सकते हैं और न उसकी महानताएँ गिनी जा सकती हैं। उसने अपने कथन:-

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (रब्बिल् आलमीन) में यह संकेत किया है कि अल्लाह तआला की रबूबियत (पालन-पोषण करने की विशेषता) की वर्षा आसमानों और ज़मीनों के अतिरिक्त समस्त लौकिक एवं अलौकिक चीज़ों पर भी फैली हुई है।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (अर्रहमानिर्रहीम) में यह संकेत किया है कि हर प्रकार की रहमत (भलाई) अल्लाह तआला की ही ओर से है जो अमर, अनादि और अपार कृपालु एवं दयालु स्रष्टा है। और अपने कथन:-

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ (मालिक यौमिद्दीन) में यह संकेत किया है कि प्रतिफल देने का (मूलत: सबसे बड़ा) मालिक केवल अल्लाह तआला ही है, उसके अतिरिक्त सृष्टि में से कोई और मालिक नहीं। उसके प्रतिफल के सागर लगातार ठाठें मार रहे हैं और हर समय बादलों की तरह बरस रहे हैं। इन्सान सदाचार, सत्यनिष्ठा और अपने

दान, पुण्य के बाद अल्लाह तआला की कृपा और उसके उपकारों में से जो कुछ भी पाता है वह सब अल्लाह तआला की प्रतिफल (देने वाली विशेषता) का करिश्मा होता है। ख़ुदा की इन प्रशंसित विशेषताओं में इस बात के उच्चकोटि के संकेत एवं गूढ़ और उच्चकोटि का मार्गदर्शन है कि रौद्र और सौम्य ख़ुदा हर एक महानता का सुपात्र है। फिर यह भी स्पष्ट है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ (अल्हम्दु लिल्लाह) में जो ''अलिफ़ लाम्'' है वह इस्तिग़राक़ (अविच्छिन्नता) के लिए (आया) है और वह इस बात की ओर संकेत करता है कि अधिकार के रूप में सारी विशेषताएँ अल्लाह तआला के लिए ही (अनिवार्य) हैं। लेकिन इन्जील की यह दुआ कि ''तेरा नाम पवित्र हो'' किसी पराकाष्ठा की ओर संकेत नहीं करती बल्कि कमी की आशंकाओं की ओर संकेत करती है और रहमान ख़ुदा की तक़दीस (पवित्रता) के लिए केवल इच्छाएँ प्रकट करती है, मानो उसे अभी तक तक़द्दुस (पवित्रता) प्राप्त नहीं। इसलिए यह दुआ एक प्रकार की अनर्गल बात के अतिरिक्त और कुछ नहीं। क्योंकि तुम्हें ज्ञात रहे कि अल्लाह तआला जिस तरह अपनी अद्वयता और निस्पृहता की दृष्टि से पवित्र है उसी तरह वह अनादि से अन्नत तक पवित्र है और समस्त दोषों से हमेशा रहित और पवित्र है। वह न किसी विशेषता से रहित है और न भविष्य में किसी गुण के पाने का प्रतीक्षक।

फिर अल्लाह तआला के पवित्र कलाम :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ

(अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन से मालिक यौमिद्दीन)

तक की आयतों में एक गूढ़ और तर्कसंगत रूप में नास्तिकों, अधर्मियों और नेचरीयों (भौतिकवादियों) की विचारधाराओं का खण्डन है। और जो लोग ख़ुदा तआला की महानताओं पर विश्वास नहीं रखते और कहते हैं कि वह इल्लत-ए-मूजिबा (अर्थात् संसार में मौजूद अन्य चीज़ों) की भाँति तो है लेकिन मुदब्बिर बिल्इरादा नहीं (अर्थात् वह इच्छा एवं प्रयोजनशक्ति से रहित है), और उसमें उपकारी एवं दानशील मनुष्यों की भाँति इच्छा नहीं पाई जाती (तो इसके खण्डन में) मानो अल्लाह तआला यह फ़रमाता है कि तुम किस लिए सृष्टि के पालनहार (ख़ुदा) पर ईमान नहीं लाते और उसकी प्रयोजित रबूबियत (पालनहारिता) का इन्कार करते हो। हालाँकि वही है जो समस्त लोकों का पालन-पोषण करता है और सब पर अपने अपार उपकार करता है और अपने प्रभुत्व और प्रताप से धरती और आसमानों की रक्षा करता है। जो लोग उसकी आज्ञापालन करते हैं उन्हें भी और जो अवज्ञा करते हैं उन्हें भी वह भलीभाँति जानता है। वह गुनहगारों के गुनाह क्षमा कर देता है या सज़ा के द्वारा उनका सुधार करता है। लेकिन जो व्यक्ति आज्ञापालक बनकर उसके पास आए उसे दो जन्नतें और दो ख़ुशियाँ मिलती हैं। एक ख़ुशी तो उसे ख़ुदा की रहीमियत नामक विशेषता से मिलती है और दूसरी ख़ुशी रहीमियत से पूर्व रहमानियत नामक विशेषता से मिलती है। अत: उसे महान ख़ुदा की ओर से पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जाता है और वह सफल लोगों में दाख़िल कर दिया जाता है। यह विशेषताएँ पूर्णत: अल्लाह तआला को इबादत का पात्र और नेक एवं सदाचारियों के लिए पुरस्कार प्रदान करने वाला ठहराती हैं। लेकिन केवल उसकी महानता का बयान जैसा

कि इन्जील में लिखा है, रूह (दिल) में इबादत के लिए उत्सुकता नहीं पैदा करता बल्कि उसे सोए हुए बीमार की तरह रहने देता है। शेष इस बात का रहस्य कि महान और प्रभुत्ववान् ख़ुदा ने सूरः फ़ातिहा में जिस क्रम को बयान किया है और दुआ एवं इबादत के बयान से पहले अपनी प्रशंसाओं का वर्णन किया है तो इस सम्बन्ध में ज्ञात रहे कि उसने ऐसा इसलिए किया है ताकि सृजनकारी महान ख़ुदा दुआ से पूर्व अपने बन्दों को अपनी विशेषताओं की महानता याद दिलाए और इस ओर संकेत करे कि मूलतः वही सच्चा आक़ा (मालिक) है। उसके अतिरिक्त न तो कोई नेमतें देने वाला है और न दया करने वाला है और न ही कोई प्रतिफल देने वाला है। बन्दों को जो भी उपहार और उपकार मिलते हैं वे सब उसी की ओर से आते हैं। (सूरः फ़ातिहा का) यह क्रम अत्युत्तम है और रूह (दिल) के लिए अति लाभदायक। वह नेक और सदाचारी व्यक्ति पर दयालु ख़ुदा के उपहारों और उपकारों को अच्छी तरह स्पष्ट करता है और उसे सामर्थ्यवान् एवं उपकारी ख़ुदा के दरबार में आने के लिए तत्पर करता है और उसकी ओर ध्यानाकर्षित करता है, और इस अनुक्रम से सत्याभिलाषियों के दिलों में पूरा जोश पैदा होता है जो बुद्धिमानों से छुपा नहीं। रबूबियत, रहमानियत, रहीमियत, और मालिकीयत नामक इन चार विशेषताओं का जिनका सम्बध लोक और परलोक (और भौतिक एवं आध्यात्मिक) से है विशिष्टतः इसलिए वर्णन किया गया है कि यह चारों विशेषताएँ ख़ुदा की शेष सारी प्रभावी और लाभदायक विशेषताओं की जड़ हैं, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये दुआ करने वालों के दिलों में (इबादत के लिए) प्रचण्ड उत्सुकता

पैदा करने वाली हैं।

फिर इन्जील ख़ुदा तआला का वर्णन ''अब्बुन'' (बाप) के नाम से करती है जबकि क़ुर्आन करीम उसका वर्णन ''रब्बुन'' (पालनहार) के नाम से करती है, और इन दोनों (शब्दों) में बहुत बड़ा अन्तर है। जिसे हर बुद्धिमान और सौभाग्यशाली समझ सकता है, मूर्ख चाहे इसे भले ही न समझें। अब्बुन (बाप) का शब्द लोगों में अधिकता से प्रयोग होता है और उसे ख़ुदा तआला के लिए प्रयोग करना एक ऐसा कार्य है जिसमें शिर्क (द्वैतवाद) की दुर्गन्ध पाई जाती है और यह इन्सान की तबाही और बर्बादी के अत्यन्त निकट है, जो ग़ौर करने वालों से छुपी नहीं।

फिर तुझे ज्ञात होना चाहिए कि दया करने वाले और उपकार करने वाले का शुक्र करना समस्त बुद्धिमानों और अध्यात्मज्ञानियों के निकट एक समुचित और सर्वमान्य बात है। फिर जब एक उपकारी अपने अपार उपकार और अपनी अपार दया के साथ आदि से अन्त तक समस्त चीज़ों का स्रष्टा और समस्त संसार को ज़िन्दा रखने वाला भी हो और प्रतिफल देने का प्रत्येक निर्णय उसके हाथ में हो तो स्वभावत: हर इन्सान उसकी ओर प्रवृत्त होने और उसके सामने विनम्रता अपनाने पर मजबूर हो जाता है और अपनी तबाही से बच जाता है। और जब (इन्सान) उस (ख़ुदा) को पा लेता है तो कोई दु:ख उसके पास नहीं फटकता और कोई डर उसे डरा नहीं सकता, और वह सन्तुष्टि पाने वालों में से हो जाता है। और यह बात उसके स्वभाव में दाख़िल है, और उसकी प्रकृति में समूहित है, और उसकी अन्तरात्मा में उत्कीर्ण है कि वह हर दुविधा और परेशानी के समय

इन विशेषताओं से विशिष्ट हस्ती के निकट होने की जिज्ञासा करे और उसकी मदद से मुश्किलों से बचने की राह ढूँढ़े। सत्याभिलाषी उसकी चर्चा पर आधारित बातचीत के जाम पीते हैं और उसको पाने के लिए बहस-मुबाहसे (शास्त्रार्थ) के चक़माक़ रगड़कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। सुनसान जंगलों और रेगिस्तानों में घूमकर उस अपार उपकारी और मनोकामनाएँ पूरी करने वाले ख़ुदा के निशान ढूँढ़ते हैं और इबादत (तपस्या) करते हुए रातें गुज़ारते हैं। अत: अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को ख़ुशख़बरी दी कि वह वही हस्ती है (जिसके पाने की वे इच्छा रखते हैं)। और वही उनकी हसरत भरी निगाहों का उद्देश्य और उनकी नज़रों की चाहत और उनके (शुभ) कर्मों का आधार है। अत: यदि वे सच्चे सत्याभिलाषी हैं तो उसी हस्ती को तलाश करें, और इस मुक़ाम और मर्तबा से सूर: फ़ातिहा की श्रेष्ठता और उसका सर्वज्ञ ख़ुदा की ओर से होना सुस्पष्ट होता है। क्योंकि यह हर बीमारी की दवा और उसके इलाज से भरी हुई है और हर मुसीबत से मुक्ति देती है। कमज़ोरों को शक्ति प्रदान करती है और नेक लोगों को ख़ुशख़बरी देती है और भलाई के द्वार खोलती है, और ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जिसे उसकी मूर्खता और अभागेपन ने अन्धा कर रखा हो और वह तबाह होने वालों में से हो गया हो हर सुहृद (निश्छल) को सन्मार्ग प्रदान करती है। अतिप्रतापी और प्रभुत्ववान् ख़ुदा की ओर से सूर: फ़ातिहा के क्रम की उत्कृष्टता को देख, कि इबारत में किस तरह अल्लाह के नाम के वर्णन को प्रधानता दी है और उसे चारों विशेषताओं की व्याख्याओं के लिए संक्षिप्त रहस्य बनाया और इबारत को वाग्मिता की उच्चकोटि की शुद्धता, विनम्रता, मृदुलता और भावों

की रहस्यपूर्ण नवीनता एवं गम्भीरता इत्यादि से सुसज्जित किया। इसके बाद रबूबियत ए-आम्म: (सर्वव्यापक पालनहारिता) नामक विशेषता का वर्णन किया। क्योंकि अल्लाह अध्यात्मविदों की दृष्टि से एक गुप्त ख़ज़ाना था। अत: सबसे पहली चीज़ जिसने उसकी पहचान दिलाई वह महान शक्ति और युक्ति से उसकी रबूबियत (पालनहारिता) नामक विशेषता का प्रकटन था। उसके बाद अल्लाह तआला ने सूर: फ़ातिहा में रहमानियत नामक विशेषता का वर्णन किया और फिर उसके बाद रहीमियत का और फिर उसके बाद मालिकीयत का। अत: उसने इन विशेषताओं को श्रृंखलाबद्ध ढंग से रखा और उन्हें प्रकट करने के लिए क्रमबद्ध किया और उनकी प्राकृतिक श्रेणियों के अनुसार उन्हें पैदाइश (निर्धारण) के रूप में एक-दूसरे पर प्राथमिकता दी और इसमें ग़ौरोफ़िक्र करने वालों के लिए बहुत से निशान हैं। और अल्लाह ने अपने बन्दों को यह शिक्षा दी है कि वे पहले इन प्रशंसाओं को उसके समक्ष प्रस्तुत करें और उसकी प्रशंसा करने के बाद उससे हिदायत और धैर्य (दृढ़ता) माँगें, ताकि ये विशेषताएँ और इनका अनुध्यान आध्यात्मिकता के स्रोतों के ज़ोर से फूटने का कारण और दिल की एकाग्रचित्तता का साधन और पूरी रुचि-रसिकता और इबादत में तड़प और बेचैनी और आनन्द पैदा करने का माध्यम बने, ताकि इस एकाग्रचित्तता और दर्देदिल के कारण दुआ क़ुबूल की जाए, और तरह-तरह के आनन्द एवं ज्ञान के मिलने और भाँति-भाँति के पाप एवं दुराचार से दूरी का कारण हो। क्योंकि जब कोई बन्दा इस बात का ज्ञान प्राप्त कर लेता है कि वह एक ऐसे रब्ब (पालनहार) की इबादत कर रहा है जिसमें हर एक प्रशंसा पाई जाती है, और वह

प्रशंसा करने वाले की सारी दुआएँ क़ुबूल करने में समर्थ है। और वह बन्दा यह जान लेता है कि वह ऐसा महान रब्ब (पालनहार) है जिसमें पालन-पोषण करने के समस्त प्रकार पाए जाते हैं, और वह रहमान परम् कृपालु भी है जिसमें कृपा के समस्त प्रकार पाए जाते हैं, और वह शाश्वत् रहीम (परम् दयालु) भी है जिसमें दया के समस्त प्रकार पाए जाते हैं, और वह प्रतिफल देने का मालिक भी है जो इस पर समर्थ है कि वह निष्ठा और निश्छलता के अनुसार हर एक महान व्यक्ति को उसकी महानता के अनुसार प्रतिफल दे, तो वह ख़ुदा तआला को सामर्थ्य में सबसे उच्चकोटि का और उसकी विशेषताओं की महानता को असीम पाएगा। तब वह उसके पास भागता हुआ आएगा और उसकी चौखट पर -

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

(इय्याका नअबुदु व इय्याका नस्तईनु)

कहते हुए (बड़ी उत्सुकता से बार-बार) लपकेगा। इस तरह इस वर्णन में बन्दे की विनम्रता और रब्बुल् आलमीन (समस्त लोकों के पालनहार) की महानता परस्पर एक जगह मिल जाती है, और यह मुबारक मिलन हर शक और संशय को दूर कर देता है और दुआ के क़ुबूल होने का तुरन्त कारण बन जाता है। जिसके परिणामस्वरूप दुआ करने वाला ख़ुदा के प्रिय बन्दों (भक्तों) में से हो जाता है, बल्कि वह उनमें से हो जाता है जिनकी संगति करने वाला उनके लाभ से (लाभ पाने में) कभी वंचित नहीं रहता और तबाही का शैतान और छल-फ़रेब पास नहीं फटकता, और उनके बारे में की जाने वाली हर सुधारणा सही होती है। उनके सारे पर्दे उठा दिए जाते हैं और उनसे

कोई सच्चाई छुपाई नहीं जाती, और वह लोगों के दिलों में बेचैनी पैदा करने वाली चीज़ पर और उन ख़ुदाई बातों पर जो बुद्धि और कल्पना से दूर होती हैं सूचना पा लेता है, और ख़ुदा के राज़दारों, प्यारों और उससे संवाद पाने वाले लोगों के गिरोह में दाख़िल हो जाता है, और ख़ुदा उसका हमदर्द मित्र और प्यार करने वाला प्रेमी बन जाता है, बल्कि हर निकट सम्बन्धी से निकटतर और हर प्रेमी से प्रियतर हो जाता है, और उसके साथ अल्लाह की बातें हर शर्बत से अधिक मीठी और उस पर होने वाला इल्हाम हर आनन्ददायक चीज़ से अधिक आनन्दप्रद हो जाता है। अल्लाह उसके दिल में दाख़िल हो जाता है और उसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत घर कर जाती है। वह अपने प्रेमी की ओर देखता है और उसे शुद्ध रत्न बना देता है और उसे सांसारिक मोहमाया से दूर करके ख़ुदा की ओर झुकने वालों के रंग में रंगीन कर देता है, और उसे अल्लाह की ओर से वह विशेष प्रमाण, प्रताप, दूरदर्शिता, ज्ञान एवं अध्यात्म प्रदान होता है कि अन्धकार उस पर छा नहीं सकता, चाहे वह धरती की गुफाओं के कितने ही अन्दर हो। पाक है हमारा रब्ब, जो समस्त अगलों और पिछलों का रब्ब है।

हे पाठको और दूरदर्शी विद्वानो! जान लो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दुआ से पहले एक प्रस्तावना सिखाई और क़ुर्आन करीम ने भी दुआ से पहले एक प्रस्तावना सिखाई है, और बुद्धिमानो के निकट इन दोनों प्रस्तावनाओं में अन्तर स्पष्ट है। क्योंकि क़ुर्आन करीम की प्रस्तावना रूह को रहमान ख़ुदा की इबादत की ओर प्रेरित करती है और बन्दों को प्रेरित करती है कि वे स्वच्छ नीयत और

स्वच्छ हृदय से ख़ुदा तआला की तलाश में लग जाएँ, और (यह प्रस्तावना) उन्हें बताती है कि ख़ुदा तआला समस्त उपकारों का मुख्य स्रोत और समस्त अनुकंपाओं का उद्गम है और रब्ब, रहमान, रहीम और मालिक के नामों से विशिष्ट है। जिन लोगों को इन विशेषताओं का ज्ञान हो जाता है वे इन के (असली) मालिक (अल्लाह तआला) से दूर नहीं होते, चाहे वे मौत के जंगलों में जा गिरें। बल्कि वे उसकी ओर दौड़ते हैं और सच्चे दिल और शुद्ध नीयत से उसी के पास डेरे जमा लेते हैं। उसी की ओर अपनी (कोशिश और कर्म के) घोड़े दौड़ाते हैं। उसकी ओर (प्रेमियों की तरह) भावुकतापूर्ण बढ़ते हैं। उनके अन्दर अपने प्रेमी के प्रेम की ज्वाला भड़क उठती है। अत: रब्बुल् आलमीन (समस्त लोकों के पालनहार) की मुहब्बत के पूर्णत: छा जाने के समय दूसरी इच्छाएँ उसकी (मुहब्बत में) बाधक नहीं होतीं। अत: साबित हुआ कि इस दुआ की प्रयोजना (प्रस्तावना) में इबादत करने वालों के लिए एक प्रबल उत्कंठा को उभारना है।

जब इन्सान ख़ुदा तआला की उन विशेषताओं पर ग़ौरोफ़िक्र करता है जिन्हें अल्लाह तआला ने सूर: फ़ातिहा की दुआ में प्रधानता दी है और जान लेता है कि यह (सूर: फ़ातिहा) अल्लाह तआला की महानता और उसके प्रताप की समस्त विशेषताओं और प्रशंसाओं पर आधारित है और उन्हें पूर्णत: अपनी परिधि में लिए हुए है और हर प्रकार की जिज्ञासा और प्रेम के लिए प्रेरक है और यह भी जान लेता है कि उसका रब्ब समस्त कृपाओं का मुख्य स्रोत, समस्त उपकारों का उद्गम, सारी विपदाओं को दूर करने वाला और हर प्रकार के प्रतिफल देने का मालिक है, और उसी से सृष्टि का आरम्भ हुआ है

और अन्ततः सारी सृष्टि उसी की ओर ही लौटाई जाएगी, और वह (स्रष्टा) समस्त दोषों, त्रुटियों और बुराइयों से रहित है, और हर प्रकार की महान विशेषताएँ और हर प्रकार की अच्छाइयाँ उसमें मौजूद हैं। तब इन्सान निःसन्देह अल्लाह तआला को ही सारी आवश्यकताओं का पूरा करने वाला और सारी तबाहियों से बचाने वाला मान लेता है, और उसकी प्रसन्नता पाने की चाहत में हर प्रकार की मुसीबतों को बर्दाश्त करता है, चाहे वह क़त्ल ही क्यों न कर दिया जाए। दुःख और पीड़ाएँ उसे विचलित नहीं कर सकतीं, और न वह यह जानता है कि थकान क्या होती है। महबूब ख़ुदा उसे अपनी ओर खींचता है, और बन्दा जानता है कि वही उसका ध्येय (चाह) है। उसके लिए अपने मालिक की प्रसन्नता पाने के रास्तों की तलाश आसान हो जाती है। इसलिए वह उसकी ओर ले जाने वाले मार्गों में चलने की पूरी कोशिश करता है चाहे वह मर ही क्यों न जाए। और वह किसी आज़माइश के डर से नहीं डरता, बल्कि हर आज़माइश का मुक़ाबला करने के लिए सीना तानकर खड़ा हो जाता है, और उसके लिए उसकी मुहब्बत की चर्चा और गुणगान के अतिरिक्त और कोई वर्णन शेष नहीं रहता। दूसरे विचार उसे वशीभूत नहीं कर सकते। वह तामसिक इच्छाओं की सवारी से उतरकर ख़ुदा तआला की इच्छा के घोड़ों पर सवार हो जाता है और जिज्ञासा की बागें पकड़े हुए सरपट दौड़ता है ताकि वह ख़ुदा के पास पहुँचने के लिए दूर का सफ़र शीघ्र तय कर ले, और वह हमेशा उसकी गोद में रहता है और अपने प्यारों में से किसी को भी उसका हमपल्ला नहीं बनाता, और उसका दिल झूठे ख़ुदाओं के पास नहीं भटकता फिरता। वह यही दुआ माँगता रहता है कि हे मेरे

रब्ब! तू मेरे दिल को अपने कब्ज़ा में, मुझे अपनी ओर खींचने और आकर्षित करने के लिए तू पर्याप्त हो जा, किसी और की ख़ूबसूरती मुझे कभी वशीभूत न कर सके। यह सारे परिणाम सूरः फ़ातिहा की दुआ की उच्चकोटि की प्रयोजना (प्रस्तावना) के कारण हैं। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ की प्रयोजना (प्रस्तावना) का जो विषय है उसकी वास्तविकता और उस (दुआ) में जो त्रुटि छिपी हुई है उसे भी तू अच्छी तरह जान चुका है। इसलिए उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं। अतः तू मेरे इस संकेत पर ग़ौर कर और बीते हुए समय पर शर्मिन्दा हो और तौबा करने वालों में शामिल हो जा।

फिर इसके बाद हम उस दुआ पर ग़ौर करते हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सिखाई और उस दुआ पर भी जो हमारे महान ख़ुदा ने सिखाई, ताकि बुद्धिमानों पर सुस्पष्ट हो जाए कि इन दोनों दुआओं के मध्य क्या अन्तर है, और जो कोई भी नेक और सदाचारियों में शामिल हो वह उस अन्तर से लाभ उठाए।

अतः जान लो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जो यह दुआ सिखलाई है कि ''हमारी रोज़ की रोटी हर रोज़ हमें दिया कर'' हमारा इन्साफ़ इसे त्रुटिपूर्ण ठहराता है। इसके विपरीत क़ुर्आन शरीफ़ ने (अपनी) दुआ में रोटी-पानी माँगने का वर्णन करना नापसन्द किया है और हमें सहृदयता और सन्मार्ग माँगने का ढंग सिखाया है और इस बात की ओर अभिरुचि दिलाई है कि हम ''इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम'' कहें और अल्लाह तआला से सीधा, सरल, सुसंगत और सुदृढ़ दीन (सन्मार्ग) माँगें और ''मग़्ज़ूबे अलैहम्'' और ''ज़्वाल्लीन'' के मार्गों से बचने के लिए ख़ुदा की शरण माँगें। इस दुआ में इस ओर

भी संकेत किया है कि लोक-परलोक की ख़ुशी सन्मार्ग की तलाश और नि:स्वार्थ आज्ञापालन पर ही आधारित है। अब इन्जील की दुआ पर भी निगाह डालो और क़ुर्आन की दुआ पर भी जो महाप्रतापी ख़ुदा की ओर से है, और न्याय से काम लो। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ में इस्तिग़फ़ार के बारे में जो अभिरुचि दिलाई गई है वह व्याकुलों की तरह केवल रोटी माँगने की दुआ करने का निर्देश है, ताकि अल्लाह तआला दया करे और (दुआ की) उस स्वीकृति पर बहुत सी रोटियाँ दे दे। अत: (उनका) इस्तिग़फ़ार भी केवल रोटियाँ माँगने के लिए ही रोना और गिड़गिड़ाना है और असल उद्देश्य दाता ख़ुदा से रोटी माँगना ही है। (इन्जील की) इस दुआ से सिद्ध है कि हज़रत ईसा के अधिकतर अनुयायी प्रारम्भ से ही सोने-चाँदी ही को पसन्द करते हैं और वे सोने-चाँदी के लिए ख़ुदा तआला को छोड़ देते हैं। थोड़े से पैसों के लिए दीन को बेच डालते हैं और चाँदी-सोने के सिक्कों को ही अपने कपड़ों में छिपाए फिरते हैं और रहम करने वाले रब्ब के दामन को छोड़ने वाले और नाफ़र्मान है। उन्हें इसी बात का शौक़ दिलाया गया है कि वे लालच को अपना मार्ग ठहरा लें और दुनिया की चाहत को अपना लक्ष्य बना लें। अत: इन्जीलों का गहरा अध्ययन करो ताकि आप पर हमारी बात की सच्चाई सुस्पष्ट हो जाए। महाप्रतापी ख़ुदा से डरो और व्यर्थ बातों को छोड़ दो। खुली-खुली सच्चाई को मुश्किल मत समझो और मुश्किलों का मुझसे स्पष्टीकरण माँगो, ताकि मैं तुम्हें नाफ़र्मानों की बातों एवं बचाने और विनाश करने वाले विषयों से अवगत करूँ। मौत के आने, दु:खों के हमले, प्राण के निकलने, और ज़ुबान बन्द होने से पहले-पहले सच्चाई की तलाश

करो, और जान लो कि सारी भलाई इस्लाम में है। अत: ख़ुशख़बरी हो उस व्यक्ति के लिए जो इस स्थान पर ठहरा और इल्हाम और सर्वज्ञ ख़ुदा की वह्यी के द्वारा अपने विश्वास को दृढ़ किया और अल्लाह ने उसे सम्मान और प्रतिष्ठा की चादर पहनाई। मुसलमान वह क़ौम है कि कलिमा-ए-तौहीद (एकेश्वरवाद) की सरबुलन्दी और एक एवं अद्वय ख़ुदा की प्रसन्नता पाने के लिए जान की बाज़ी लगाना उनके स्वभाव और शिष्टाचार में दाख़िल है। इस क़ौम के औलिया अल्लाह और सदाचारी लोग सांसारिकता तो क्या बल्कि सांसारिक शासन-सत्ता को भी लेना पसन्द नहीं करते और अपने प्राणों के लिए प्रभुत्ववान् ख़ुदा की प्रतिष्ठा के अतिरिक्त किसी चीज़ को प्रधानता नहीं देते, और ख़ुदा की याद से ग़फ़लत के पल के अतिरिक्त और कोई चीज़ उन्हें ग़मगीन नहीं करते। वे उसी पर भरोसा करते हैं और उसी से उसका सन्मार्ग माँगते हैं और लोगों की भीड़ का सहारा नहीं लेते, बल्कि ख़ुदा की कृपा चाहते हैं और धरती पर विनम्रतापूर्वक चलते हैं, वे क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं करते। बल्कि चारों ओर लम्बा सोचविचार करना, सत्य की खोज करना और युक्ति को सुस्पष्ट करना उनका काम होता है। वे राज्य के शासन में सभ्य राजनीति का व्यवहार करते हैं और ग़रीबी और तंगी के अवसरों पर धैर्य और दृढ़ता के तौर-तरीक़ों का ध्यान रखते हैं। उनमें सदाचार और संयम की महानता के अतिरिक्त महानता का और कोई कारण नहीं होता। सृष्टि के रब्ब के अतिरिक्त उनका कोई रब्ब नहीं, और यह सब नूर (ज्ञान) सूर: फ़ातिहा से प्राप्त होते हैं और यह बात सत्प्रकृति और अनुभव रखने वालों से छुपी नहीं।

अत: सच्ची बात यही है कि सूर: फ़ातिहा प्रत्येक ज्ञान एवं

अध्यात्म पर छायी हुई है। वह सच्चाई और युक्ति के समस्त रहस्यों पर आधारित है और यह हर सवाल करने वाले के सवाल का जवाब देती है और हर हमलावर दुश्मन को टुकड़े-टुकड़े करती है। और हर मुसाफ़िर को जो मेहमाननवाज़ी (आवभगत) चाहता है खिलाती है, और हर आने-जाने वाले को (रुचिकर और जीवनदायक शर्बत) पिलाती है। नि:सन्देह वह हर शक को जो नाकामी के गड्ढे तक पहुँचाने वाला हो नष्ट कर देती है, और हर ग़म को जिसने बूढ़ा कर दिया हो जड़ से उखाड़ देती है, और हर भटके हुए रहनुमा को सन्मार्ग पर वापिस लाती है और हर दाँत पीसने वाले दुश्मन को शर्मिन्दा करती है। सत्याभिलाषियों को ख़ुशख़बरी देती है। गुनाहों के ज़हर और दिलों के टेढ़ेपन को दूर करने के लिए इस जैसा कोई और हकीम (इलाज करने वाला) नहीं और यह सत्य और ठोस विश्वास तक पहुँचाने वाली है।

जिस सन्मार्ग के माँगने का हमें सूर: फ़ातिहा में आदेश दिया गया है, वह ख़ुदा तआला की ख़ूबियों और उसकी (उपरोक्त) चारों विशेषताओं का अनुसरण करना है और इसी की ओर ''अलिफ़ लाम्'' का वह शब्द संकेत कर रहा है जो ''इहदिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम'' में मौजूद है। इस बात को वही व्यक्ति समझ सकता है जिसे अल्लाह तआला ने सद्बुद्धि दी हो, और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह चारों विशेषताएँ समस्त विशेषताओं की जननी हैं और ये लोगों को घृणित बातों और तरह-तरह की बुराइयों से दूर करने के लिए पर्याप्त हैं। अत: कोई बन्दा उस समय तक इन पर ईमान लाने वाला नहीं कहला सकता जब तक कि वह इन (विशेषताओं) में से हर एक से अपना

हिस्सा न ले ले और ख़ुदा तआला के गुणों को अपना न ले। अत: जो कोई भी इन से फ़ायदा उठाता है उस पर रब्ब की पहचान का एक बहुत बड़ा द्वार खोला जाता है और उस (रब्ब) की महानता उसके लिए उजागर हो जाती है। अत: उसे अल्लाह तआला के आदेश से जो सन्मार्ग पर चलने वालों की तरबियत करने वाला है, शान्ति प्राप्त हो जाती है और गुनाहों से नफ़रत, चैन, विनम्रता, सच्ची आज्ञापालन, सच्चा संयम, सच्चा लगाव, सच्ची रुचि-रसिकता, सच्ची अन्तर्विवेकता और अल्लाह के प्रेम में प्रेमासक्त करने वाली और गुनाहों को भस्म कर डालने वाली व्यक्तिगत मुहब्बत, प्राप्त हो जाती है।

और यह सारे सूर: फ़ातिहा के वर्णनों पर ग़ौर करने के फल हैं। सूर: फ़ातिहा (ज्ञान एवं अध्यात्म का) एक ऐसा पवित्र वृक्ष है जो हर पल ज्ञान एवं अध्यात्म के फल देता है और सच्चाई और युक्ति के जाम से तृप्त करता है। जो भी उसका नूर (प्रकाश) लेने के लिए अपने दिल के कपाट खोलता है तो उसका नूर (प्रकाश) उसमें प्रवेश कर जाता है और वह इस सूर: के गूढ़ रहस्यों से अवगत हो जाता है, और जो उस कपाट को बन्द करता है वह स्वयं ही अपने कर्म से अपनी पथभ्रष्टता को आमन्त्रित करता है और अपनी तबाही को देखता है और मलियामेट (नष्टभ्रष्ट) होने वालों के साथ जा मिलता है।

फिर स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला का आदेश -

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

(इय्याका नअबुदो व इय्याका नस्तईनु)

इस बात पर संकेत करता है कि सारी भलाई ''रब्बुल आलमीन'' (ख़ुदा) के गुणों के अनुसरण करने में है, और इबादत की वास्तविकता

माबूद (ख़ुदा) के रंग में रंगीन होना है, और सन्मार्ग पर चलने वालों के निकट नेकी की यही सबसे बड़ी उत्कृष्टता है। अत: अध्यात्मज्ञानियों के निकट इन्सान उसी समय ''अब्द'' (सच्चा भक्त) कहला सकता है जब उसके गुण रहमान ख़ुदा के गुणों की झलक बन जाएँ। अत: सच्ची भक्ति की निशानियों में से एक निशानी यह है कि इन्सान में भी ख़ुदा की रबूबियत की तरह रबूबियत के लक्षण पैदा हो जाएँ और इसी तरह ख़ुदा तआला के रहमानियत, रहीमियत, और मालिकीयत रूपी गुण उस (भक्त) में प्रतिरूपी रूप से पैदा हो जाएँ। यही वह सिरात-ए-मुस्तक़ीम (सन्मार्ग) है जिसके बारे में हमें आदेश दिया गया है कि हम इसे माँगें, और यही वह रास्ता है जिसके बारे में हमें निर्देश दिया गया है कि अति कृपालु और असीम दानशील ख़ुदा से उस (के मिलने) की उम्मीद रखें।

चूँकि सिरात-ए-मुस्तक़ीम (सन्मार्ग) पर चलने और इन स्थानों को पाने में सबसे बड़ी रोक दिखावा है जो नेकियों को खा जाता है और इससे बढ़कर अहंकार है जो बुराइयों की जड़ है और पथभ्रष्टता है जो नेकियों की राहों से दूर ले जाती है। इसलिए अल्लाह तआला ने (अपने) कमज़ोर बन्दों पर दया करते हुए जो गुनाहों की ओर झुक जाते हैं और सन्मार्ग पर चलने वालों (की कोशिश) पर तरस खाकर उन राक्षसी (शैतानी) बीमारियों की दवा की ओर संकेत किया। अत: उसने आदेश दिया कि लोग اِيَّاكَ نَعْبُدُ (इय्याका नअबुदो) कहा करें, ताकि वे दिखावे की बीमारी से छुटकारा पाएँ। फिर اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (इय्याका नस्तईनु) कहने का आदेश दिया, ताकि वे घमण्ड और अहंकार की बीमारी से बच जाएँ। फिर उसने اِهْدِنَا (इहदिना) कहने

का आदेश दिया, ताकि वे गुमराहियों (भटकावों) और तामसिक इच्छाओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि) से छुटकारा पाएँ। अत: उसके आदेश اِيَّاكَ نَعْبُدُ (इय्याका नअबुदो) में सत्यनिष्ठ प्रेम और पूर्ण उत्कृष्ट इबादत का सौभाग्य पाने हेतु रुचि दिलाना अभिप्राय है। और उसके आदेश اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (इय्याका नस्तईनु) में शक्ति, दृढ़ता और धैर्य माँगने की ओर संकेत है। और उसके आदेश اِهْدِنَا الصِّرَاطَ (इहदिनस् सिरात) उससे उपकारस्वरूप ज्ञान और सन्मार्ग माँगने की ओर संकेत करता है।

अत: इन आयतों का सारांश यह है कि ख़ुदा के सिरात् (मार्ग) पर चलना उस समय तक पूर्णत: सर्वोत्तम् और सर्वोत्कृष्ट नहीं हो सकता और न ही वह मुक्ति का कारण बन सकता है जब तक उच्चकोटि का सच्चा और स्वार्थरहित प्रेम, प्रयत्न और आदेशों के समझने की योग्यता न प्राप्त हो जाए, बल्कि जब तक किसी सेवक में यह विशेषताएँ न पाई जाएँ तब तक वस्तुत: वह सेवा के योग्य नहीं होता। उदाहरणत: यदि कोई सेवक निश्छल भी हो और नेकनीयती, ईमानदारी, निष्ठा और पवित्रता की विशेषताओं से विभूषित भी हो लेकिन वह सुस्त, डरपोक और (बेकार) बैठे रहने वालों में से हो या हर समय लेटे रहने या सोए रहने वाले व्यक्ति की तरह हो और वह प्रयास, पराक्रम और साहस करने वालों में से न हो तो नि:सन्देह ऐसा सेवक अपने मालिक पर एक बोझ ही होगा और अपने मालिक के आदेश का पालन नहीं कर सकेगा और उसके आज्ञापालकों में नहीं गिना जा सकेगा। इसी तरह यदि कोई दूसरा सेवक जो निश्छल भी हो, ईमानदार और वफ़ादार भी हो और साथ परिश्रमी भी हो और

दूसरों की तरह बैठे रहने वाला न हो लेकिन वह मूर्ख हो और अपने मालिक के आदेशों को समझ न सकता हो और मूर्खों की तरह बार-बार ग़लतियाँ करता हो, अपनी मूर्खता के कारण कई बार मना किए गए कामों को करने का दुस्साहस कर बैठता हो, अपने आप को ख़तरे के स्थानों और निषेध जगहों में डाल देता हो और अत्यन्त मूर्खता के कारण मालिक की ख़ुशनूदी प्राप्त न कर सकता हो और कभी-कभी वह अपने मालिक की अच्छी-अच्छी चीज़ों को, उसकी मोतियों को और उसके जवाहरात (रत्नों) को अपनी मूर्खता, मूढ़ता और कुबुद्धि के कारण नष्ट कर देता हो और अपनी धृष्टता और लापरवाही के कारण वस्तुओं को उनकी असल जगह के अलावा किसी और जगह रख देता हो तो ऐसा सेवक भी मालिक की ख़ुशनूदी प्राप्त नहीं कर सकता, और उसकी मूर्खता उसे हर बार अपने मालिक की नज़रों से गिरा देती है। फिर वह तिरस्कृत और वंचित मनुष्य की तरह रोता रहता है, और इस तरह हमेशा एक भर्त्सनायोग्य लानती व्यक्ति की तरह ज़िन्दगी के दिन व्यतीत करता है। वह कभी प्रशंसनीय लोगों में शामिल नहीं हो सकता, बल्कि उसका मालिक उसे (हमेशा) अशुभ, अनिष्ट, भ्रष्ट और दुष्ट समझता है, जो अपनी भागदौड़ से कभी भी किसी प्रकार की भलाई (की ख़बर) नहीं लाता। ऐसा सेवक मालिक की ज़मीनों, मकानों और उसके धन को हमेशा बर्बाद करता रहता है।

लेकिन सर्वश्रेष्ठ और सम्माननीय सेवक वह बन्दा (भक्त) होता है जो अपने मालिक को ख़ुश रखता है और उसके आदेश की किसी छोटी सी भी बात को नज़रअन्दाज़ नहीं करता और मालिक की ओर से स्नेह एवं स्वागत-सत्कार के शब्द सुनता है तो यही ऐसा सेवक (भक्त) है

जो अपने अन्दर (उपरोक्त) इन तीन गुणों को पूर्णत: आत्मसात् करता है और अपने मालिक को अपने छल और अन्याय से दु:ख नहीं पहुँचाता और न ही उसे सुस्ती या मूर्खता से नुकसान पहुँचाता है, बल्कि वह एक प्रिय सेवक (भक्त) बन जाता है। अत: उन लोगों के लिए यही वे तीन शर्तें हैं जो पूरी सहृदयता से सन्मार्ग के अभिलाषी बनकर अपने रब्ब के रास्तों पर चलते हैं। अत:- اِيَّاكَ نَعْبُدُ (इय्याका नअबुदो) में पहली शर्त की ओर संकेत है। اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (इय्याका नस्तईनु) में दूसरी शर्त की ओर संकेत है। اِهْدِنَا الصِّرَاطَ (इहदिनस् सिरात्) में तीसरी शर्त की ओर संकेत है।

अत: मुबारक (सौभाग्यशाली) हैं वे लोग जो इन तीनों (गुणों) को अपने अन्दर जमा कर लें और इन पर पूरे उतरकर अपने रब्ब की ओर लौटें। ऐसे लोग अपने रब्ब के हर एक सम्मान और शिष्टाचार का पूरा ध्यान रखते हैं और बिना किसी सुस्ती और लापरवाही के हर शर्त के अनुसार सद्व्यवहार के समस्त पड़ाव पार करते हैं। अत: यही वे लोग हैं जिनसे ख़ुदा राज़ी (ख़ुश) है और वे ख़ुदा से राज़ी हैं। वे ख़ुदा के घर में सुख-चैन और संतोष-सहजता से दाख़िल हो गए हैं। चूँकि यह शर्तें उस व्यक्ति के महत्त्वपूर्ण विषयों में से थीं जो नूर (अर्थात् ज्ञान एवं अध्यात्म) की राहों पर चलने का संकल्प करता है। इसलिए सर्वज्ञ ख़ुदा ने इन शर्तों को दुआ के अटूट अंग बना दिया है, ताकि हर साधक (भक्त) बुद्धिमानों की भाँति सोच-विचार करे और दिखावा और छलकपट करने वालों का ढंग भी पूर्णत: स्पष्ट हो जाए।

और यह उपसंहार (समापन) है जिसका हमने ख़ुदा की कृपा से इस किताब में लिखने का निर्णय किया है कि सारी प्रशंसाएँ केवल

अल्लाह ही को शोभनीय हैं जो समस्त लोकों का रब्ब (पालनहार) है, और सलामती हो हमारे पेशवा और रसूल हज़रत मुहम्मद ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर। हे ख़ुदा! तू उसके झुठलाने वालों पर सबसे बुरे अज़ाब की वर्षा कर और हमें सफल और सहायताप्राप्त लोगों में से बना। आमीन

सेवकों में से अति विनीत ख़ाकसार ग़ुलाम मुहम्मद अमृतसरी ने इस तहरीर को क़लमबद्ध किया है जो वर्तमान युग के अवतार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद के अनुगामियों में से है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है जो अत्यन्त कृपालु एवं दयालु है और प्रतिफल देने का मालिक भी है। और समस्त सच्चों के सच्चे और पूरी मानवजाति एवं नबियों और रसूलों के गौरव (हज़रत) मुहम्मद ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आपके परिवार एवं समस्त सहाबा पर दुरूद व सलाम हो।

इसके बाद सर्वशक्तिमान ख़ुदा का कमज़ोर और मुहताज बन्दा **नूरुद्दीन** दुआ करता है कि अल्लाह उसे कष्टों से बचाए और अमन-चैन पाने वाले लोगों के गिरोह में शामिल करे और उसे अपने नाम की तरह नूरुद्दीन (धर्मांशु) बना दे। जब से मैंने इस ज़माने के लोगों की बुराइयाँ देखीं और धर्मों का बिगाड़ देखा तो ऐसी महान हस्ती के देखने का उत्सुक हुआ जो इस धर्म का जीर्णोद्धार करे और दुष्टों का संहार करे। और मेरी यह इच्छा इसलिए थी कि अल्लाह ने जो सब सच कहने वालों में सबसे सच्चा है अपनी खुली किताब (क़ुर्आन करीम) में मोमिनों को ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया है कि -

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ★ (सूरः नूर आयत नं. 56)

★**अनुवादः**- तुम में से जो लोग ईमान लाने के बाद अच्छे कर्म किए उनसे

इसी तरह उस महान अवतार ने जो स्वयं अपनी ओर से कोई बात नहीं कहता था, बल्कि उसकी हर बात ख़ुदा के आदेश पर आधारित थी, जिसका नाम सुदूक़ और अमीन (अर्थात् महान सत्यनिष्ठ और न्यायनिष्ठ) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है कहा था, कि नि:सन्देह अल्लाह तआला हर शताब्दी के सिर पर इस उम्मत में ऐसे व्यक्ति को अवतरित करेगा जो उसके धर्म का जीर्णोद्धार करेगा, और मैं उसकी इस कृपा का प्रतीक्षक था। इसी उद्देश्य के लिए मैं सच्चाई और विश्वास के नूरों (प्रकाशों) के उद्गम स्थल बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) की ओर गया। अत: मैं जंगलों में फिरता रहा और मरुस्थलों को पार करता रहा और ख़ुदा के रब्बानी बन्दों में से किसी महान बन्दे की तलाश करता रहा।

अत: मैंने पवित्र और सम्माननीय स्थान मक्का शरीफ़ में अपने सम्माननीय शिक्षक सैयद हुसैन मुहाजिर साहिब और मुहम्मद ख़ज़रजी अन्सारी से जो सदाचारी, संयमी और तपस्वी थे भेंट की, और मदीना तय्यबा जाकर अपने सम्माननीय शिक्षक मोहतरम शैख़ अब्दुल ग़नी अलमुजद्ददीयुल् अहमदी से मुलाक़ात की, और वे सब मेरे अनुसार संयमी थे। अल्लाह तआला उन्हें मेरी ओर से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। आमीन

शेष हाशिया - अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि वह उन्हें धरती में अवश्य ख़लीफ़ा बनाएगा, जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया। और वह उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसन्द किया है दृढ़ता प्रदान करेगा और उनके डर के बाद उनकी हालत को अमन में बदल देगा। वे मेरी सच्ची इबादत करेंगे और किसी को मेरा साझीदार नहीं ठहराएँगे, और जो इसके बाद भी कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) न हो तो यही वे लोग हैं जो दुराचारी हैं। -(अनुवादक)

अल्लाह उन समस्त बुज़ुर्गों (प्रतिष्ठतों) पर रहम फ़रमाए। वे संयम और ज्ञान के उच्च स्थानों पर थे, लेकिन दीन-ए-इस्लाम के दुश्मनों का मुक़ाबला करने वाले न थे और न ही उनके संशयों को दूर करते थे। बल्कि अपने हुजरों (कमरों) में इबादत में व्यस्त और एकान्त में अपने रब्ब से प्रेम की गुप्त बातों में मग्न थे।

मैंने उलेमा (मुस्लिम विद्वानों) में से किसी को न देखा जो ईसाइयों, आर्यों, ब्राह्मणों, नास्तिकों, दार्शनिकों (फ़िलास्फ़रों), मोतज़लियों, और इन जैसे अन्य गुमराह (पथभ्रष्ट) करने वाले समुदायों के प्रोपोगण्डे की ओर ध्यान देता हो। बल्कि मैंने हिन्दुस्तान में लगभग 9 लाख ऐसे छात्र देखे जिन्होंने धार्मिक विद्याओं को त्याग दिया और उनकी तुलना में अंग्रेज़ी शिक्षा और यूरोपियन भाषाओं को अपना लिया और मोमिनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र बना लिया।

और 6 करोड़ से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ इस्लाम और मुसलमानों की मुख़ालिफ़त (विरोध) में प्रकाशित की गयीं। एक ओर यह मुसीबत थी और उससे बढ़कर यह कि हम बड़े-बड़े शैख़ों-सूफ़ियों और उनके अनुयायियों से सुनते थे कि वे कहते हैं कि तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) और मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) औलिया अल्लाह (सूफ़ी-सन्तों) और मोमिनों का काम नहीं, और हमारे उलेमा में से इक्का-दुक्का के अलावा किसी को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि इस्लाम और मुसलमानों पर क्या बीत रही है और लोगों की तहक़ीक़ात का सबसे बड़ा विषय यह था कि ख़ुदा झूठ बोल सकता है या नहीं, न कि काफ़िरों (अधर्मियों) का मुँह बन्द करना और दुश्मनों के षडयन्त्रों का रद्द करना। यह शिकवा अपनी जगह हम सबसे बड़े शैख़ अपने महान

उस्ताद रहमतुल्लाह हिन्दी मक्की और डॉक्टर वज़ीर ख़ान साहिब से करते हैं (अल्लाह तआला इन दोनों पर रहम फ़रमाए)। और इमाम सैयद अबुल् मन्सूर देहलवी और संयमी प्रवीण एवं प्रतिभावान् सैयद मुहम्मद अली कानपुरी और बुद्धिमान मौलवी मुकर्रम मुहम्मद बशीर साहिब सहसवानी रचयिता ''तन्ज़ीहुल् क़ुर्आन''★ और उन जैसे अन्य की कोशिशों का शुक्रिया अदा करते हैं, अल्लाह उन पर सलामती नाज़िल करे और उनकी कोशिशों को प्रतिष्ठा प्रदान करे, वह सबसे अच्छी प्रतिष्ठा प्रदान करने वाला है।

लेकिन उनका मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम से जिहाद केवल व्यक्तिगत कोशिश थी, उनके साथ ख़ुदा के निशान और भविष्यवाणियाँ (ख़ुशख़बरियाँ) न थीं।

मैं तो एक ऐसे व्यक्ति के देखने का उत्सुक था जो ज़माने के लोगों में से एकांकी और अद्वितीय हो और दीन (इस्लाम) के समर्थन और मुख़ालिफ़ों का मुँह बन्द करने के लिए मैदान में खड़ा हो। फिर मैं वतन (हिन्दुस्तान) वापिस लौट आया। मैं बहुत व्याकुल और किमकर्तव्यविमूढ़ था और दिन-रात सफ़र करता और प्यासों की तरह (रूहानी पानी) ढूँढ़ता रहा, और किसी सत्यनिष्ठ की घोषणा की प्रतीक्षा करता रहा।

कि मुझे बहुत बड़े प्रतापी विद्वान युगावतार मसीह व महदी लेखक बराहीन अहमदिया का पता लगा। अत: मैं वास्तविकता जानने के लिए उनके पास आया, और अपनी दूरदर्शिता से पहचान लिया कि

★ **हाशिया**- तन्ज़ीहुल क़ुर्आन के लेखक मुकर्रम मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब सहसवानी थे -प्रकाशक)

यह ही मसीह मौऊद और हकम् व अदल हैं। और यह ही वह महान हस्ती हैं जिनको अल्लाह तआला ने दीन (इस्लाम) के जीर्णोद्धार के लिए अवतरित किया है। फिर मैंने ख़ुदा को साक्षी ठहराकर कहा कि हे समस्त लोकों के ख़ुदा मैं इस मसीह मौऊद और हकम् व अदल की आज्ञापालन के लिए पूरी तरह हाज़िर हूँ। अत: मैं इस महान उपकार पर ख़ुदा का शुक्र अदा करते हुए सिज्दे में गिर गया कि हे कृपालु ख़ुदा! सारी बड़ाई और शुक्र और एहसान तेरा ही है। फिर मैंने उसकी मुहब्बत को अपना लिया और उसकी बैअत करना श्रेष्ठ समझा, यहाँ तक कि उसकी दया और ममता ने मुझे ढाँप लिया और उसकी मुहब्बत मेरे दिल में घर कर गई और मैं उसकी मुहब्बत में दीवाना हो गया और उसे अपने अर्जित एवं पैतृक धन पर ही नहीं बल्कि अपने प्राणों, बीवी-बच्चों, बाप-दादों और समस्त रिश्तेदारों पर प्रधानता दी। उसके ज्ञान एवं अध्यात्म ने मेरे दिल को मोह लिया। मैं ख़ुदा का शुक्रगुज़ार हूँ जिसने उससे मिलने का मुझे सुअवसर प्रदान किया। मेरा सौभाग्य है कि मैंने उसको सारे संसार पर प्रधानता दी। मैं उनकी सेवा में उस व्यक्ति की भाँति तत्पर हो गया जो सेवा के मैदानों में कोई कसर नहीं छोड़ता। अत: सारी प्रशंसाएँ उस ख़ुदा के लिए हैं जिसने मुझ पर उपकार किया और वह सब उपकार करने वालों से बढ़कर उपकार करने वाला है।

فَوَاللّٰہِ مُذْ لَاقَیتُہ زادنی الھُدی　　　وعرفتُ مِن تفھیمِ أحمَدَ أحمَدَا

1- अल्लाह की क़सम! जब से मुझे उस (मसीह व महदी) से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उसने मुझे हिदायत में बढ़ा दिया है

और मैंने इस अहमद के समझाने से उस अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचाना है।

و كم مِن عويصٍ مشكلٍ غيرِ واضحٍ أنارَ علىَّ فصرتُ منه مُسهِّدا

2- बहुत से उलझे हुए मुश्किल और संशयपूर्ण विषय थे जो उसने मुझ पर सुस्पष्ट कर दिए। फिर मैं उसके द्वारा मर्मज्ञ बन गया।

وما إنْ رأينا مثلَه بطلا بدا وما إنْ رأينا مثله قاتِلَ العِدا

3- हमने नहीं देखा कि उस जैसा प्रतापी योद्धा कभी पैदा हुआ हो और न ही हमने उस जैसा कोई दुश्मनों को संहार करने वाला देखा।

وأكفَرَه قومٌ جَهول وظالِمٌ و كذّبه مَن كان فَظًّا ومُلحِدا

4- और अत्यन्त मूर्ख और अन्यायी (अत्याचारी) क़ौम ने उसे काफ़िर कहा और हर घोर धृष्ट और भौतिकवादी ने उसको झुठलाया।

وهذا على الإسلام إحدى المصائبِ يُكفَّرُ مَن جاء النبيَّ مُؤيِّدا

5- इस्लाम पर आने वाली मुसीबतों में से एक मुसीबत यह है कि जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का समर्थक बनकर आया है उसे काफ़िर ठहराया गया है।

أفي القومِ تُمدَح يا مُكفِّرَ صادِقٍ ألا إنّ أهل الحق سمَّوك مُفْندا

6- हे सच्चे को काफ़िर कहने वाले! क्या क़ौम में तेरी प्रशंसा की जाएगी? ध्यान से सुन! सच्चों ने तेरा नाम पागल रखा है।

نبَذتَ هُدى العرفان جهلا وبعدَه أخذتَ طريقًا قد دعاك إلى الرَّدى

7- तूने मूर्खता के कारण अध्यात्म एवं बुद्धि और विवेक से भरी हुई हिदायत को त्याग दिया है और उसके बाद तूने ऐसा मार्ग अपना लिया है जो नि:सन्देह तुझे विनाश की ओर ले जा रहा है।

وإن كنتَ تسعى اليومَ في الارض مفسِدًا فتُحرَق في يوم النشور مُزوّدا

8- यद्यपि आज तू धरती में फ़सादी (उपद्रवी) बनकर दौड़ता फिरता है लेकिन क़यामत (अन्तिम निर्णय) के दिन तू अच्छी तरह आग में जलाया जाएगा।

ولو قبْلَ إكفارٍ تفكّرتَ ساعةً لَعَمْرِى هُديتَ وما أبيتَ تبدُّدا

9- और यदि काफ़िर कहने से पहले पल भर भी ग़ौर कर लेता तो मेरी ज़िन्दगी की क़सम! तू अवश्य हिदायत पा जाता और नाना प्रकार के विचारों के कारण इन्कार न करता।

قصدتَ لتُرضِى القومَ مِن سوءِ نِيّة وكان رِضَى البارى أتمَّ وأوكَدا

10- तूने बदनीयती से लोगों को ख़ुश करने का इरादा किया, हालाँकि ख़ुदा तआला की ख़ुशी सबसे शुद्ध और सच्ची है।

وما فى يديك لتبعدن مقرَّبًا إلٰه البرايا قد دناه وأحمدا

11- तेरे पास क्या है, कि तू ख़ुदा के एक प्यारे बन्दे को (ख़ुदा के दरबार से) दूर ठहरा दे, जबकि ख़ुदा ख़ुद उस व्यक्ति के निकट हुआ है और उसकी प्रशंसा की है।

وقد كنتَ تقبَل صدقَه وكتبتَه فمِثلُك كُفرًا ما رأينا ضَفَنْدَدا

12- हालाँकि इससे पहले तू उसकी सच्चाई क़ुबूल कर चुका है और उसे लिख चुका है। अतः तेरे जैसा इन्कार करने वाला मूर्ख हमने नहीं देखा।

ألا إنه قد فاق صدقًا خواصَّكم ودافَ رؤوسَ الصائلين وأرْجَدا

13- सच्चाई और संयम में वह तुम्हारे विशिष्ट बुज़ुर्गों से भी आगे बढ़ गया है। उसने हमला करने वालों का सिर फोड़ दिया है और उन पर कँपकँपी छा गई है।

أتُكفِرُ يا غُولَ البرارى مثيلَه أتلعَنُ مقبولا يحبّ محمّدا

14- हे राक्षसों (शैतानों) के गिरोह! क्या तू उसके प्रतिरूप को काफ़िर कहता है और उस प्यारे बन्दे पर लानत डालता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आशिक़ (प्रेमी) है?

وتعسًا لكم يا زُمَرَ شيخٍ مزوّرٍ هلكتم وأردا كم وعفّى وأفسَدا

15- हे धोखेबाज़ शैख़ (लीडर) के पीछे चलने वालो! तुम्हारी ज़िन्दगी सत्यानाश हो गई, तुम मारे गए और उस (शैख़) ने तुम्हें बरबाद कर दिया, मिटा दिया और बिगाड़ दिया।

له كُتُبٌ اَلسب والشتم حَشْوُها شريرٌ ويستقرى الشرور تعمُّدا

16- उस (शैख़) की किताबें गाली-गलौज से भरी हुई हैं। वह ख़ुद दुष्ट है और सबसे बड़ी दुष्टता की ताक में रहता है।

أضلَّ كثيرًا مِن ضلالات وَهْمه وباعدَ مِن حق مبين وأبعَدا

17- उसने अपने भ्रष्ट (गुमराही से भरे हुए) विचारों से बहुतों को भ्रष्ट (गुमराह) कर दिया। वह ख़ुद भी खुली-खुली सच्चाई से दूर हुआ और दूसरों को भी दूर कर दिया।

وما إنْ أرى فيه الفضيلةَ خاصةً نعَمْ فى طريق المفسدين تَفرَّدا

18- मैंने उसमें विशिष्ट रूप से कोई विशेषता नहीं देखी। हाँ वह उपद्रवियों में सबसे बड़ा उपद्रवी है।

يُشيع رسالاتٍ لِبَغْيِ ثَرائدٍ ولِيجلِبَ الحُمْقى إليها ويُرفِدا

19- स्वादिष्ट खानों की तलाश में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है ताकि मूर्खों को उन (पत्र-पत्रिकाएँ) की ओर खींच लाए और बहुत सा इनाम हासिल कर ले।

وما كان لى بغضٌ به وعداوةٌ وفى الله عادَيناه إذ ذمَّ أحمَدا

20- मुझे उससे कोई द्वेष और दुश्मनी नहीं, जब उसने अहमद

अलैहिस्सलाम का अपमान किया तो हमने अल्लाह के लिए ही उससे दुश्मनी की।

فخُذْ يا إلٰهى رَأْسَ كلّ معاند كأَخْذِك مَن عادى وليًّا وشدّدا

21- हे मेरे ख़ुदा! तू हर दुश्मन को सिर से पकड़ ले, जैसे कि तू उसे पकड़ता है जो तेरे प्यारों से दुश्मनी करता है और उससे सख़्ती करता है।

لتكون آيات لكلّ مكذّب حريص على سبٍّ مُباهٍ تحسُّدا

22- ताकि हर उस व्यक्ति के लिए (इबरत के) निशान हों जो ईर्ष्या-द्वेष के कारण झुठलाने वाला, बढ़-बढ़कर गालियाँ देने वाला और अहंकार दिखाने वाला है।

ويا طالبَ العرفان خُذْ ذيلَ نوره ودَعْ كلَّ ذى قول بقول المهتدى

23- हे अध्यात्मज्ञान के इच्छुक! उसके नूर का दामन थाम ले और महदी की बात की ख़ातिर हर दूसरे बातूनी को छोड़ दे।

وفى الدين أسرارٌ وسبلٌ خفيّة يلاحظها بصرٌ يلاقى إِثْمَدا

24- इस्लाम में ऐसी कई गूढ़ और सारगर्भित बातें हैं जिन्हें केवल वह आँख देख सकती है जिसने (दूरदर्शिता का) सुर्मः लगाया हो।

وآخر دعوانا أن الحمد كله لرَبٍّ رحيم بعث فينا مجدّدا

25- हमारा आख़िरी सन्देश यही है कि सारी प्रशंसाएँ उस पालनहार और दयालु ख़ुदा के लिए हैं जिसने हम में मुजद्दिद अवतरित किया।

ये क़सीदे यहाँ समाप्त हुए। इसके अतिरिक्त हमने चाहा कि यहाँ कुशल अरबी साहित्यकार श्री मुहम्मद सईद शामी तराबलसी (अल्लाह उन्हें सलामत रखे) के काव्य में से उनके कुछ वे सरस-

सुबोध और अलंकृत क़सीदे शामिल करें जिन्हें उन्होंने हमारे वर्तमान मार्गदर्शक व पवित्र गुरू हज़रत अक़दस मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की प्रशंसा में लिखा है और उनके विरोधियों और (झूठे) मसीही फ़िर्क़ा (गिरोह) की निंदा की है।

خضَعتْ لِرفعةِ مجدِك العظمائُ وأتتْك تسحَب ذيلَها العَلياءُ

1- बड़े-बड़े तेरी महान शान् के आगे सिर झुकाते हैं और बड़ी-बड़ी पद-प्रतिष्ठा वाले तेरे पीछे चलने के लिए अपना दामन घसीटते हुए आते हैं।

ورنَتْ إليك مع الوقار وسلّمتْ وتفاخرتْ بمديحك الشعرائُ

2- (बड़े-बड़े) शायर (कवि) तुझे सलाम करते हैं और तेरी ओर सम्मान से देखते हुए गर्व से तेरी प्रशंसा बयान करते हैं।

ولك الامان من الزمان وما علىٰ مَنْ لاذَ فيك من الزمان عَنائُ

3- आपको ज़माने की मुसीबतों से ख़ुदा की सुरक्षा प्राप्त है, और जो आपकी शरण में आ जाए ज़माने की कोई मुसीबत उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

قد حُزْتَ فضلًا مِن إلٰهك فوق ما قد حازَه مِن قبلك الآباءُ

4- आप से पहले आपके पूर्वजों ने जो प्रतिष्ठा पाई, आपने अपने ख़ुदा की ओर से उनसे बढ़कर प्रतिष्ठा पाई।

وحوَيتَ علمًا ليس فيه مشارِكٌ لك فى الانام وللإلٰه عطائُ

5- आपको वह ज्ञान प्राप्त है जिसमें सारी सृष्टि में से कोई दूसरा आपका हमपल्ला नहीं, और यह सारी कृपा ख़ुदा की है।

يا مَن إذا نزَل الوفودُ ببابه أغناهُمُ عمّا إليه جاءوا

6- हे वह हस्ती, कि जब आपके पास गिरोह दर गिरोह लोग आते हैं तो आप उनकी इच्छा पूर्ति करके उन्हें उससे निस्पृह (इच्छाहीन) कर देते हैं जो वे लेकर आए थे।

أنت الذى وعَد الرسولُ وحبَّذا وعدٌ به قد صحّت الانبائُ

7- आप ही वह वजूद हैं जिसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (इस युग में आने का) वादा दिया था, और वादानुसार आने वाले उस वजूद की क्या ही महानता है कि जिसके बारे में दी गई सारी भविष्यवाणियाँ सच सिद्ध हुईं।

أنت الذى إنْ حلَّ جَذْبٌ فى الملا ودعوتَ ربَّك حَلَّه الإروائُ

8- आप ही वह वजूद हैं कि जब सृष्टि पर अकाल पड़ा और आपने अपने रब्ब से दुआ की तो उस पर तृप्त करने वाली वर्षा हुई।

طُوبىٰ لعبدٍ قد رضى بك ملجأً إذ لا يخيب و راحتاه مَلائُ

9- वह बन्दा कितना ख़ुशक़िस्मत (सौभाग्यशाली) है जो आपकी शरण में आकर ख़ुश हो गया, क्योंकि तब वह नामुराद नहीं रहता और मालामाल हो जाता है।

طوبىٰ لقومٍ أنت بيضةُ مُلكهم و كذا العصر أنت فيه ذُكائُ

10- उन लोगों का सौभाग्य है जिनके वतन का तू सरताज है, और सौभाग्यशाली है वह ज़माना जिसका तू सूरज है।

طوبىٰ لدارٍ أنت فيها قاطنٌ فلقد بدَتْ فى سَوْحها الزَّهْرائُ

11- मुबारक है वह घर जिसका तू आवासी है, कि उसके आँगन में फूल खिल उठे हैं।

يا أيّها الحبْرُ الاجلّ ومَن به يرجى المرادو تُكشَف الضَّرّائُ

12- हे अतिप्रतापी विद्वान! और वह हस्ती जिसके द्वारा मनोरथ

पूरे होते हैं और कष्ट दूर हो जाते हैं।

إني لأرغب أن أرى لك سيدى وجهًا عليه من الجمال رِدائُ

13- हे मेरे इमाम! मैं आपका वह सुन्दर और सौम्य चेहरा देखना चाहता हूँ जो ख़ुदा का साक्षात् द्योतक है।

يا واحدًا فى ذاته وصفاته قد حقّقتْ بوجودك الاشياءُ

14- हे अपने वजूद (अस्तित्व) और विशेषताओं में एकांकी और अद्वय ख़ुदा! तेरे वजूद से ही चीज़ें प्रमाणसिद्ध होती हैं।

وبك استقامت للعلا أركانُه وتزيّنتْ بمقامك الجَوْزاءُ

15- आपके द्वारा ही प्रतिष्ठा के स्तम्भ क़ायम हैं और आपके दर से ही युगल सितारे को प्रतिष्ठा मिली है।

أيّدتَ دينَ الحق يا عَلَمَ الهدى وأَبَنْتَ طرقًا طَمَّها الجهلاءُ

16- हे हिदायत के मीनार! तूने सच्चे धर्म (इस्लाम) का समर्थन किया है और उन रास्तों को रौशन कर दिया है जिन पर अन्धकार छाया हुआ था।

ورفعتَ للإسلام حصنًا باذخًا تفنى الدّهورُ وما يليه فناءُ

17- तूने इस्लाम के लिए वह अभेद्य क़िला बनाया कि ज़माने पर ज़माना बीत जाएगा फिर भी मौत उसके निकट नहीं फटकेगी।

ونكَأْتَ أهلَ الشِّرك حتى أصبحوا فى غيّهم قد مَسَّهم إقواءُ

18- आपने मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के वे दोष निकाले कि वे अपनी गुमराही (पथभ्रष्टता) में जवाब देने से बेबस होकर रह गए।

وسلَلْتَ سيفًا للشريعة بينهم لمّا رأوه أَكَبَّهم أعباءُ

19- आपने उनके सामने शरीअत (फ़ुर्क़ान मजीद) की चमचमाती हुई तलवार निकाली, जब उन्होंने उसे देखा तो उसकी चमक ने उन्हें

औंधे मुँह गिरा दिया।

ما زلتَ تضرب فيهِم حتى انثنَوا مِن وَقْعِه فكأنهم أهباءُ

20- तू उनमें लगातार (फ़ुर्क़ान की) तलवार चलाता रहा, यहाँ तक कि वे उसके लगातार वारों से टुकड़े-टुकड़े हो गए।

جاؤوا لينتصروا عليك وما دَرَوا أن الإله عليك منه لِواءُ

21- वे (इसलिए हमला करने) आए कि तुझ पर विजय पाएँ, लेकिन यह नहीं जानते थे कि उनसे रक्षा के लिए ख़ुदा तआला तेरी ढाल बनकर खड़ा है।

صالُوا ورامُوا أن يفوزوا بالذى قصَدوا إليه فصَدَّهم إعياءُ

22- उन्होंने हमला किया और चाहा कि अपने उद्देश्य में सफल हो जाएँ, पर बेबसी ने उन्हें रोक दिया।

وتفرّقتْ أحزابهم لما رأوا أسدًا هَصُورًا كَفُّه عَضْباءُ

23- जब उन्होंने उस ख़ूँख़्वार शेर को देखा जिसके पंजे धारदार चमचमाती तलवार की तरह हैं, तो उनके गिरोह तितर-बितर हो गए।

ما ضَرَّهم لو آمنوا إذ جئتَهم بل كذّبوك فخابت الآراءُ

24- यदि वे उस समय ईमान ले आते जब तू उनके पास आया था तो उनका क्या बिगड़ता था, लेकिन उन्होंने तुझे झुठलाया तो उनके सारे उपाय विफल हो गए।

هيهاتَ أن يصِلوا إلى ما أمّلوا حتى تَلينَ وتُنبِتَ الصَّمّاءُ

25- उनका अपनी उम्मीदों में सफल मनोरथ होना ऐसा ही कल्पना से दूर है जैसा कि एक ठोस चट्टान का नरम होकर हरियाली उगाना।

بئسَ الذى قصدوا إليه من الردى وتنـزّلتْ بقلوبهم بَأْساءُ

26- क्या ही बुरी है वह तबाही, जिसके पीछे चलने का उन्होंने इरादा कर लिया है और (अभी भी) उनके दिलों पर एक के बाद एक मुसीबत टूट रही है।

ضلّوا وقالوا إنّ عيسٰى لم يَمُتْ بل فى السماء وأين منه سمائُ

27- वे गुमराह (पथभ्रष्ट) हो गए और अभी भी कहते हैं कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की मृत्यु नहीं हुई बल्कि वह आसमान में है। पर कहाँ ईसा और कहाँ आसमान (पर जाना)...

قد مات عيسٰى مثلَ موتةِ أُمِّه والموتُ حقٌّ ليس فيه خفائُ

28- हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) अपनी माँ के मृत्यु पाने की तरह मृत्यु पा गए, और मृत्यु पूर्णत: सत्य है इसमें कोई ढकी-छुपी बात नहीं।

مَن كان ينكر ذا فليس بمؤمن فيما أرى والربُّ منه بَرائُ

29- जो व्यक्ति इस बात का इन्कार करे तो वह मेरी समझ में मोमिन नहीं, और अल्लाह इस मान्यता से बरी है।

إنْ كان عيسٰى يأتينَّ بُعيدَ ما ذاقَ الحِمامَ فهٰكذا القدمائُ

30- यदि ईसा (अलैहिस्सलाम) ने मृत्यु का स्वाद चखने के कुछ सालों बाद अवश्य वापिस आना है तो तमाम् मरे हुए लोगों को भी उसी तरह वापिस आना चाहिए।

لا مرحبًا بهم ولا أهلا ولا سهلا ولا حمَلتْهم الغَبْرائُ

31- अब उन्हें धरती पर कोई स्वागत-स्वागत कहने वाला नहीं, और न धरती ने उनका बोझ उठाया हुआ है।

كلا ولا برِحتْ صباحًا مع مسا مَرَّ الدهورِ تجُذُّهم حَصْبائُ

32- यह बिल्कुल सत्य है, धरती ऐसी ही रहेगी और सुबह-शाम

होते-होते ज़माने बीतते रहेंगे और धरती उन्हें चूरा-चूरा करती रहेगी।

قوم كأنهم الذياب إذا عوَتْ فاستحوذتْها أَكْلُبٌ و رُعائُ

33- वे लोग ऐसे भेड़ियों (लकड़बग्घों) की तरह हैं जो (भेड़ों के) चरवाहों और उनके (रक्षक) कुत्तों के प्रभुत्व पा जाने पर चिल्लाते हैं।

لا يقرَبون من الحلال وعندهم إن الحلال طريقة شَنْعائُ

34- वे हलाल (उचित) के निकट भी नहीं फटकते और हलाल उनके निकट बहुत ही बुरा मार्ग है।

وإلى الحرام شواخصٌ أبصارُهم إن الحرام لمن يرُمْه غذائُ

35- वे हराम (अनुचित) की ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखते हैं। जो व्यक्ति हराम (अनुचित) की इच्छा करे तो नि:सन्देह हराम ही उसका भोजन है।

يا أيها البحر الذى ما مِثلُه بحرٌ وما لجميله إحصائُ

36- हे वह (अध्यात्मज्ञान के) सागर! जिस जैसा न कोई दूसरा सागर है और न उसकी विशेषताओं की कोई सीमा है। ?

بل أيها الغيث الذى أنواؤه فعلتْ بما لا تفعل الانوائُ

37- हाँ, हे वह रहमत की घनघोर वर्षा! जिसकी वर्षा (दानशीलता) ने वह काम किया जो वर्षा से सम्बन्धित नक्षत्र भी नहीं कर सके।

حيّاك ربّى كلما هبّتْ صبا نَجْدٍ وما قد غنّتِ الوَرْقائُ

38- जब-जब नज्द की ठण्डी हवा चले और पत्ते मनोहर गीत गाएँ तो मेरे रब्ब का तुझे सलाम पहुँचे।

أو ما تَرنَّمَ فى مديحك مُنشِدٌ خضعَتْ لرفعةِ مجدك العظمائُ

39- जब कोई तेरी प्रशंसा में गुनगुनाएगा तो बड़े-बड़े विद्वजन तेरी बुलन्द शान् के आगे सिर झुकाएँगे।

السيّد محمد سعيد الشامى

मोहतरम् मुहम्मद सईद शामी रहमहुल्लाहु अलैहि का एक और क़सीदा

حمدٌ غزيرٌ صادقُ الإذعانِ لِلّٰهِ ربٍّ دائمِ الغفرانِ

1- सदैव पालन-पोषण करने और क्षमा करने वाले ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा और सच्ची साधना करता हूँ।

فردٌ كثيرُ العفو والإحسانِ مُنْشِى الانامِ ومُنْـزِل الفرقانِ

2- वह एकांकी है, बार-बार क्षमा एवं उपकार करने वाला, सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला और (सत्य-असत्य में स्पष्ट अन्तर करने वाली) पवित्र फ़ुर्क़ान (क़ुर्आन मजीद) को नाज़िल करने वाला है।

إذ قد أُبِيرتْ دولةُ الصلبانِ مِن وَقْعِ شهمٍ حاذِقِ الطعانِ

3- निपुण निशानेबाज़ प्रतापी योद्धा के वार से सलीबियों की हुकूमत टुकड़े-टुकड़े हो गई।

فى الحرب إذ يعدو بحدِّ سِنانِ مُحْيِ المَنونِ ومُوقِدُ النيرانِ

4- जब वह (प्रतापी योद्धा) युद्ध में भाले की नोक से हमला करता है तो वह क़यामत बरपा करने वाला और युद्ध की ज्वाला भड़काने वाला हो जाता है

كالليث صادَفَ رَعْلةَ الضِّبْعانِ فى يومِ مخمصةٍ على أَسوانِ

5- उस शेर की तरह, जिसे भूख के दिन चट्टान पर लकड़बग्घे के बच्चे मिल गए हों।

أسدٌ هِزَبْرٌ ثابِتُ الجَنانِ لم يكترثْ بكثرة الفرسانِ

6- वह पूरे साहस से ख़ूख़्वार शेर की तरह हमला करता है, जिसे घुड़सवारों की अधिकता की कोई परवाह नहीं।

بَتَلَ الشكوكَ بقاطِعِ البرهانِ و دلائلٍ قرّتْ بها العينانِ

7- आपने शक और सन्देहों को तर्कों की तेज़ तलवार और ऐसे प्रमाणों से जिनसे आँखें ठण्डी हो जाती हैं, काट कर रख दिया है।

حَبْرٌ أَمَدَّ موائدَ العرفانِ وأَسَحَّ أَبْحُرَها على الظمآنِ

8- आप वह महानतम् विद्वान हैं जिन्होंने अध्यात्मज्ञान के आहार (खाने) परोस दिए और प्यासों के लिए उसकी नदियाँ बहा दीं।

ردَعَ الخصومَ بقدرة المنّانِ يَدْعون ويلا نُكَّسَ الاذقانِ

9- आपने कृपालु ख़ुदा की दी हुई सामर्थ्य से दुश्मन को धूल चटा दी। वे (दुश्मन) औंधे मुँह पड़े हुए अपनी तबाही को बुला रहे हैं।

يا أيها المولى العظيمُ الشانِ هيهاتَ عينى أن ترى لك ثانِ

10- हे महान इमाम (मार्गदर्शक)! मेरी आँख से यह असम्भव है कि तुझ सा कोई और (इमाम) देखे।

إذ كنتَ عَلَمًا فخرَ كلّ زمانِ ولقد تناقَلَ فضلَك الثَّقَلانِ

11- क्योंकि तू हर ज़माने का गौरव और रौशनी का मीनार है और समस्त मानवजाति तेरे ही महान उपकार से हिस्सा लेती चली जा रही है।

فانعَمْ ودُمْ بالعز والامانِ ما هَزَّ ريحٌ مُيَّدَ الاغصانِ

12- जब तक बादे-सबा (भीनी-भीनी ठण्डी हवा) शाख़ों को

हिलाती रहे, तू हमेशा ख़ुश रहे और ख़ुदा की सुरक्षा और सम्मान में रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रीति और प्रशंसा में सैयद मुहम्मद शामी का एक और क़सीदा

ألا لا أرى مَن أحبّ بعينى وعدوّى أراه بكرةً وأصيلا

1- मैं अपने महबूब को आँख से नहीं देख पा रहा, जबकि अपने दुश्मन को मैं सुबह-शाम देखता हूँ।

يا لقومى ويا لصَحْبى الْحَقُونى وأدرِكونى فقد غدَوتُ قتيلا

2- हे मेरी क़ौम! और हे मेरे मित्रो! मुझे आ मिलो और मेरे साथ शामिल हो जाओ, मैं तो अपने महबूब के प्रेम में पूर्णत: खो गया।

مِن لِحاظٍ راشقاتٍ بقلبى أسهمًا عنه لا ترى تحويلا

3- ऐसी निगाहों से, जो मेरे दिल में तीरों की तरह गड़ चुकी हैं और वे तीर मेरे दिल से निकलना नहीं चाहते।

وخدودٍ أينعَ الشقيقُ عليها و رُضابٍ مِزاجُه زنجبيلا

4- ऐसे सुन्दर चेहरे से जिस पर सुर्ख़ गुलाब खिले हुए हैं और ऐसे सरस होठों से जिनसे ज़ंजबील का रस टपकता है, दूरी गवारा नहीं।

ظَبْية مِن قاديان سبَتْنى إذرنَتْ رنْوةً و طرفًا كحيلا

5- क़ादियान के मृगछौने ने मुझे अपना वशीभूत कर लिया, जब उसने मुहब्बत भरी निगाह और सुरमई आँख से (मुझे) देखा।

حبَّذا قَدُّها إذا يتثنى كتثنِّى الغصونِ ذُلّلتْ تذليلا

6- उसकी महानता का क्या कहना, जब वह फलों से लदी हुई डालियों की तरह झुकता है।

ما الشمس عندى ولا البدر فاعلَمْ فى حُلاها أرى لها تمثيلا

7- उसकी सुन्दरता में मैं उसका हमतुल्य, सूरज और चौदहवीं के चाँद को भी नहीं पाता।

كـلا ولستُ فى الجَنان براضٍ بسواها ان أراها بديلا

8- (लोक-परलोक की) जन्नतों में मैं उस प्रियतम् के अतिरिक्त किसी अन्य पर बिल्कुल राज़ी नहीं।

ولقد أرانى بعد ما كنتُ ليثًا مُضْمَبِلاً عَمْثَهِلا خَنْشَلِيلا

9- कभी मैं ख़ुद को एक बलिष्ठ, बहादुर और शक्तिशाली शेर समझता था,

يرهب الاحمَسُ المدجَّج صوتى وبعينى يرى العزيز ذليلا

10- और हथियारों से लैस बहादुर मेरी आवाज़ से डरता था, और मेरी आँखों में विजेता भी पराजित नज़र आता था।

تسحَب النملةُ يا فدَيتُك جسمى وابنُ آوى يدعو علىَّ العويلا

11- लेकिन, हे मेरे प्रियतम्! मैं तुझ पर बलिहारी जाऊँ, अब (मैं तेरे प्रेम में इतना कमज़ोर हो गया हूँ कि) चींटी मेरा शरीर घसीटती फिरती है और गीदड़ भी मुझ पर भौंकता है।

غيرَ أنى وإن جُننتُ غرامًا فى هواها لاصبِرنّ جميلا

12- उस प्रियतम् के प्रेम में यद्यपि मैं दीवाना हो गया, लेकिन मैं पूर्णत: सब्र ही करूँगा।

فعسى الهُمام الذى إليه المطايا قد تخطّتْ تَلائعًا وسهولا

13- आशा है कि वह निष्कलंक इमाम (अवतार) जिसकी ओर सवारियाँ पहाड़ों और मैदानों को फलाँगती हुई आ रही हैं,

خيرُ عبدٍ يراه أشرفُ قوم مَن لعيسى المسيحِ أضحَى مثيلا

14- और क़ौम के प्रतिष्ठित लोग उसे सबसे अच्छा बन्दा (सेवक) पाते हैं, जो ईसा मसीह का प्रतिरूप हो गया है,

أَن يراني ويكشف ما بي عن قريب قبلَ أنوى الرحيلا

15- वह मुझे देख ले और मेरा हाल उस पर मेरे मरने से पहले शीघ्र खुल जाए।

इस मुबारक किताब की प्रशंसा करते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (ख़ुदा तआला आपके अस्तित्व को मुसलमानों के लिए लाभप्रद बनाए) की प्रशंसा में मुहम्मद सईद शामी रहमहुल्लाहु तआला का एक और क़सीदा

كتابٌ حكى زَهْرَ الربيعِ نضارةً وحوى مِن النظمِ البديعِ طُروسا

1- यह वह पवित्र पुस्तक है जो अपनी ताज़गी में बसंत ऋतु के फूलों की तरह है और अतुल्य कविता पर आधारित है।

يُغنى الاديبَ فكاهةً ومسرّةً عن أن يكون له الحبيب جليسا

2- प्रभाव और प्रसन्नता में विद्वान व्यक्ति को घनिष्ठ मित्र से निस्पृह कर देती है।

قد صاغه الحَبْرُ الذى أنوارهُ تَدَعُ الليالَ إذا دَجَينَ شُموسا

3- इसको ऐसे महाप्रतापी विद्वान ने लिखा है कि जिसकी किरणें

अँधेरी रातों को सूरज बना देती हैं।

لِلّٰهِ دَرُّ القاديان فإنّها كالشام حيث أقام فيها عيسى

4- हे क़ादियान! तू सौभाग्यशाली है। क्योंकि तू शाम की धरती की तरह है जहाँ हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम)पैदा हुए।

بلدٌ بها غيثُ المواهب قد هَمَى وتقدستْ أرجائها تقديسا

5- यह (वह) ऐसी बस्ती है जिसमें ख़ुदा के उपकारों की वर्षा हुई और इसका हर कोना बहुत सम्माननीय हो गया।

فكأنما هى إيلياءُ إذ حوَتْ جبلًا حباه ربُّه الناموسا

6- मानो यह बैतुल-मुक़द्दस (यरोशलम) है, क्योंकि इसने उस पहाड़ को अपने अन्दर ले लिया है जिसको उसके रब्ब ने वह्यी से सुशोभित किया था।

قَرْمٌ تقاصَرَ عن ثناء خصاله فُوهُ الزمان ولا يرٰى تدليسا

7- आप ऐसे महान इमाम (मार्गदर्शक) हैं जिनकी विशेषताओं के बयान से इस ज़माने की ज़बान असमर्थ है और इस प्रशंसा में कोई दोष और बनावट नहीं।

بحرٌ تلاطمَ بالمعارف موجه شَهْمٌ علا رُتَبَ الكمال عروسا

8- वह ऐसा सागर है जिसकी लहरें ज्ञान एवं अध्यात्म से ठाठें मार रही हैं, और ऐसे उच्चकोटि के शिष्टाचार वाला बहादुर सरदार (इमाम) है जो बुलन्दी के स्थान पर दूल्हे की तरह विराजमान है।

मुहम्मद सईद शामी रहमहुल्लाहु ने इस (किताब) की प्रशंसा में आगे कहा:-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर एक महानता अल्लाह के लिए है जो समस्त लोकों का पालनहार है, और वह समस्त रसूलों के पेशवा (गौरव) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजता है।

इसके पश्चात् मैंने अपनी नज़र को इस अद्भुत किताब के मैदानों में दौड़ाया और अपनी सोच के तीरों को बुद्धि और विवेक के बाग़ों में ख़ूब घुमाया जिसको युग के सबसे बड़े शुभचिन्तक और सर्वोच्च अध्यात्मज्ञानी ने लिखा है। जो संसार में अपने युग के महान प्रतिभाशाली, सरस-सुबोध्य सप्रवाह वक्ता, हमारे इमाम और धर्मगुरू, युग के अवतार मसीह (मौऊद व महदी मअहूद), सम्मान और सुरक्षा का केन्द्र, प्रकाण्ड विद्वानों के नायक, प्रखर ज्ञानी, गुण-दोषों के पारखी (समालोचक), महान बुद्धिमान और विवेकी, दोनों लोकों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप, अपने आचार-व्यवहार की दृष्टि से अहमद, अल्लाह उन पर हमेशा अपने प्रताप के प्रभावों और कृपाओं की वर्षा करता रहे। आप हमेशा ख़ुदा के दरबार में प्रतिष्ठा और महान स्थान पाते रहें। अत: मैंने उसको महान सौभाग्यशाली, अनुपम (अतुलनीय) मोती और हरा-भरा मैदान और फलदार बाग़ पाया और यह क्यों न होता, इसका लिखने वाला ऐसा कुशल लेखक है जिसके उच्च प्रताप की ओर उँगलियों से संकेत किया जाता है कि वह (ज्ञान एवं अध्यात्म का) असीम

सागर है। मानो कि मैंने अपने इन शैरों में आपका ही वर्णन किया है। क्योंकि आप इसके सबसे अधिक पात्र और इसके रहस्य को सबसे अधिक जानने वाले हैं।

यह मैं उस अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ जो मिना की तरफ़ जाने वाली सवारियों और रातों को उठ-उठकर इबादत करने वालों का रब्ब है, कि ज़माने में इस (किताब) की मिसाल (उदाहरण) मिलना असम्भव है।

अत: आपकी महान प्रताप और प्रतिष्ठा का क्या कहना, आपकी चमक हमेशा रहे और उसकी उम्र लम्बी हो, क्योंकि आपने इसे बहुत ही सुन्दर और अच्छी लिखी है और लाभदायक होने में इसे चर्मोत्कर्ष तक पहुँचा दिया है।

समाप्त

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर एक प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए है जिसने अध्यात्मज्ञानियों के दिलों में हिदायत के सूर्य उदय किए और भूले-भटकों के अन्दर (गुमराहियों से) मुक्ति के पवित्र झरनों पर आने की इच्छा पैदा की और उत्तम शिष्टाचार की नदियाँ बहायीं, ताकि हर प्यासा उनके स्वच्छ और शीतल जल से प्यास बुझाए। और पवित्रता एवं महानता के स्तर बढ़ाए और लांछन लगाने वाले सरदारों के सिर झुका दिए। और हर समय और हर पल मानवजाति के गौरव एवं हमारे सरदार और पेशवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम हो, जो सच और झूठ में सुस्पष्ट अन्तर कर देने वाली पवित्र क़ुर्आन लेकर आए, और दुरूद व सलाम हो उनकी आल (परिवार और अनुयायियों) पर, (उनके) सहाबा पर, और उनकी धर्मपत्नियों पर।

इसके पश्चात् अपने गुनाहों में क़ैद और अपने कृपालु ख़ुदा की दया और दरगुज़र का मोहताज मुहम्मद तराबलसी शामी जो हमीदान की उपाधि से मशहूर है कहता है, जब मैं हिन्दुस्तान में दाख़िल हुआ और क़ादियान की बस्ती में पहुँचा और उसके विद्वान बल्कि पूरे विश्व के महाज्ञानी और युग के इमाम (मार्गदर्शक) व मसीहुज़्ज़मान मौलाना सय्यदना अश्शैख़ **मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद** से मिला और इस किताब के बारे में सुना, तो यह किताब ऐसी है कि जब मैंने इसे पढ़ा तो मैंने इसे बहुत उत्कृष्ट पाया। और मैंने उन्हें देखा कि उन्होंने मुख़ालिफ़ों को पराजित करने और कजी (टेढ़ेपन) के शिकार बहस-मुबाहसा करने वालों का मुँह बन्द करने के लिए तर्कों की तलवार

सोंती है। आपने हर तीरन्दाज़ को अपने तरकश से जवाब दिया और आपका कोई तीर व्यर्थ नहीं गया। आप भूले-भटकों को भलाई की ओर बुलाते हैं और सफलता की अनिवार्यताओं में से कोई नुक्ता नहीं छोड़ते। मुसलमानों पर आपके आदेश का पालन अनिवार्य है और मेरे दिल में यह बात बिठा दी गई है कि आप सत्यनिष्ठों में से हैं। अल्लाह तआला हिसाब लेने के लिए काफ़ी है और वह लोगों के अन्दर-बाहर को ख़ूब अच्छी तरह जानता है और वह उसे भी जानता है जो कुछ धरती और आसमानों में है, और हमारा आख़िरी सन्देश यही है कि हर एक प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त लोकों का पालनहार है।

एक अनोखा स्वप्न

मैं रोज़ाना की तरह रात के आख़िरी पहर में फ़ज्र की नमाज़ के लिए खड़ा हुआ, नमाज़ के बाद मुझे नींद आ गई, मैंने देखा कि हमारे पीर (गुरू) ने बहुत अधिक शाही खाना तैयार किया है और विभिन्न देशों की एक बड़ी भीड़ को आमन्त्रित किया है जिसमें अरब और ग़ैर अरब सब शामिल हैं। फिर आपने बहुत से दस्तरख़्वान बिछाए और उन पर वे दस-दस की टोलियों में बैठ गए और मैं उनके साथ उनके अन्त में बैठा हूँ। फिर वे खाना खाकर उठ खड़े हुए और मैं अकेला रह गया और शर्मिन्दगी से आधे पेट खाकर ही उठ गया। मैंने अपनी दायीं ओर शोरबे से भरा हुआ एक बर्तन देखा, मैं उसमें से गट-गट पीने लगा, यहाँ तक कि मेरा पेट भर गया। फिर मैं रुक गया। फिर मैं और दूसरे लोग प्रशंसित महोदय के घर पर पहुँचे जिसमें नाना प्रकार के स्वच्छ और सुन्दर बहुमूल्य ग़लीचे बिछे हुए थे। फिर वे उसमें अपने-अपने पदों के अनुसार बैठ गए। जिनमें विद्वान, शासक और आम लोग थे। फिर उनमें से एक आदमी खड़ा हुआ और इमाम अबू हनीफ़ा के अनुयायियों के ढंग पर लोगों को नसीहत करने लगा (और ऐसा लगा कि) जैसे ही उसने किसी बात को औलिया की तरफ़ मन्सूब किया, इस पर सभा में मौजूद लोगों में से एक ने कहा कि यदि उन्होंने यह कहा था तो औलिया के बाप-दादों पर ख़ुदा की लानत हो। मैंने जवाब दिया कि नहीं, तेरे बाप-दादों पर। तू क्यों औलियाअल्लाह पर झूठ बाँधता

है, और इमाम जौहरी का वर्णन चल पड़ा। उनमें से एक आदमी ने आप को गाली दी तो मैं उस पर भड़क उठा और कहा कि तू अरबी भाषा में दुनिया के इमाम को गालियाँ देता है और अल्लाह से नहीं डरता। फिर मैंने देखा कि मानो उपरोक्त हस्ती (इमामुज़्ज़मान) अल्लाह उनकी सहायता करे, ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे लेकर अलग एक सीधी राह पर जो फूल-पौधों भरी हुई थी चल पड़े और मुझे कहा कि मैंने शाम या अमृतसर में रहने का इरादा किया है, तुम्हारी इस बारे में क्या राय है। मैंने जवाब दिया कि मेरी राय यह है कि आप शाम में रहें, क्योंकि वह अल्लाह की धरती और मुसलमानों का क़िला है और यहाँ आप विवाह करें और अपने लिए एक घर बनाएँ और बाग़ और ज़मीन लें। यदि आप मेरे साथ मेरे मकान में रहें जिसका मैंने वर्णन किया है तो वह आपके लिए सबसे अच्छा है और मैं आपकी उन सारी आवश्यकताओं को पूरा करूँगा। उन्होंने मुझसे कहा, इन्शाअल्लाह मैं वही करूँगा जिसका आपने संकेत किया है। फिर मैंने देखा कि मेरे पास एक आदमी लाया गया जो लम्बी क़द-काठी, भूरे रंग और दाढ़ी वाला है और फटे-पुराने कपड़े पहने हुए है और पीड़ित है, मानो कि उसके क़त्ल का इरादा किया गया है। इसके बाद मैं अपने इस स्वप्न से आश्चर्यचकित अवस्था में जागा और मैं इस से भलाई और उपरोक्त हस्ती (इमाम आख़िरुज़्ज़मान) की तरक़्क़ी और ज़माने की मुसीबतों से सुरक्षा का कारण समझता हूँ। यह है वह स्वप्न जो मैंने देखा और उसकी व्याख्या की। शेष अल्लाह अधिक जानता है और उसी की ओर हम सबको लौटना और वापिस जाना है।

सैयद मुहम्मद सईद शामी

समस्त झुठलाने और इन्कार करने वाले पीरों (सरदार) और उलेमा पर इत्माम-ए-हुज्जत (निर्णायक तर्क)

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातुहू

हे भाइयो! मैंने सुना है कि तुमने मुझे काफ़िर ठहराया है और झुठलाया है और मुझे झूठा समझा है और मेरा मुक़ाबला कर रहे हो, यहाँ तक कि तुम्हारे तरकश तीरों से ख़ाली हो गए और सच्चाई खुल गई और जो होना था वह सुस्पष्ट हो गया। लेकिन तुम्हारा शोरशराबा न रुका और न तुम पर सच्चाई का डर छाया, बल्कि तुम उद्देश्य से बहुत दूर जा पड़े हो और तुमने सच्चाई को बहुत नापसन्दीदा चीज़ समझा और अपनी बातों पर अड़े रहे। अत: जब तुम मेरे बारे में शक में पड़ गए और शैतान के साथी और भ्रम में डालने वाले के घनिष्ठ मित्र बन गए, तो मैं तुम्हारे अन्दर छुपे विचारों और इन्कार के कारणों को समझ गया और कई किताबें लिखीं। जिनका क्रम अति उत्तम बनाया गया है और (शब्दों की) अद्भुतताओं की फ़ौज क्रमबद्ध की गई है और मैंने उनमें तलाश करके मोती की चमक, (आध्यात्मिक) शराब का नशा और बहुमूल्य रत्न की लाली जमा की। और इसमें शक करने वालों के समस्त सन्देहों का उन्मूलन और शैतानी सदमों का इलाज और फ़सादियों (उपद्रवियों) के हमलों को दूर करना और बाग़ियों (विद्रोहियों) के अत्याचार और षडयन्त्रकारियों की ओर से दिए जाने वाले दु:ख-दर्द और दुश्मनों की दुश्मनी, धोखेबाज़ों के छल और अत्याचारियों के अत्याचार और षडयन्त्रकारियों के षडयन्त्र

का बहुत से ठोस प्रमाण और तर्कों के साथ खण्डन और बचाव का इलाज है। उन किताबों के नाम:-

1. फ़तह इस्लाम 2. तौज़ीह-ए-मराम 3. इज़ाल: औहाम् और 4. आईना कमालात-ए-इस्लाम हैं।

लेकिन तुमने न देखा और आँखें बन्द कर लीं, और तुमने अल्लाह की ओर बुलाने वाले को काफ़िर (अधर्मी) ठहराया और नाफ़रमानी की और तुम उद्दण्ड और बाग़ी लोग हो, और तुम अपने इन्कार पर अड़े रहे यहाँ तक कि तुम्हारा काम मुसलमानों को काफ़िर कहने और मोमिनों पर लानत डालने तक जा पहुँचा, और तुमने उन रहस्यों को झुठलाया जिनका तुम्हें ज्ञान ही नहीं, और जब तुम उसकी वास्तविकता को न समझ सके तो मुझ पर अन्याय और अत्याचार किया और तुम बड़े आराम से मेरा उपहास उड़ाया करते थे। कितने ही डोल मैंने तुम्हारे कुओं में डाले ताकि तुम्हारे ज्ञान और सच्चाइयों की कोई एक बूँद पा सकूँ, लेकिन वे गीले होकर भी न लौटे और इतना भी न लाए कि जिससे प्यास बुझ सके। और तुमसे प्रश्न करने ने मुझे निराशा, नाउम्मीदी और दर्द के अतिरिक्त और किसी में नहीं बढ़ाया। अत: मैंने ज्ञान के ख़त्म होने और मिट जाने और उसके चाँदों और सूरजों के डूब जाने पर अफ़सोस किया और इस क़ौम के हाल पर मेरी आँखों से आँसू बह पड़े। जिसमें ऐसे उलेमा हैं जो (धार्मिक दृष्टि से) ज्ञान से रहित और धार्मिक रहस्यों से अनभिज्ञ हैं और इसके अतिरिक्त मैंने तुम (उलेमा) में से हर एक को अपनी डींग में बढ़ा हुआ, अहंकार का चोग़ा ओढ़े हुए, निर्लज्ज और बड़े फ़सादियों (उपद्रवियों) में से पाया। अत: जब तुम्हारी शर्मोहया के पर्दे उतर गए

और काम, क्रोध, लोभ, मोह ने तुम्हारी बंजर ज़मीन की बची-खुची हरियाली भी मिटा दी और तुम्हारी बदबूदार हवा निरन्तर चलने लगी तो मैं समझ गया कि तुम्हें नसीहत करने का कोई फ़ायदा नहीं और न किसी नसीहत करने वाले की बात तुम्हें फ़ायदा पहुँचा सकती है, क्योंकि वह नाफ़र्मानों (अवज्ञाकारियों) और बाग़ियों (उपद्रवियों) को फ़ायदा नहीं पहुँचाती। तो मैंने उस औरत की तरह आह भरी जिसका बच्चा गुम हो गया हो, और मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे, और मैंने नमाज़ों में एक लम्बे समय तक अल्लाह से दुआ माँगी और उसके समक्ष गिर गया, और मैंने उसके वसील: के दामन को पाने के लिए ख़ुद को उसके सामने डाल दिया और मैंने घोर कष्ट में पड़े हुए लोगों की आवाज़ की तरह अपनी चीखोपुकार बुलन्द की।

अत: अल्लाह तआला ने मेरे दु:खों और मेरे शत्रुओं की अधिकता और मेरे मित्रों की कमी को देखा और मुझे सफलताओं, निशानों और चमत्कारों (के मिलने) की शुभसूचना दी और मुझ पर अपने खुले-खुले समर्थन से उपकार किया। इन सबके अतिरिक्त वह वादा भी है जो मेरे रब्ब ने मुझसे क़रीबी रिश्तेदारों के बारे में किया है। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों (निशानों) को झुठलाते और उनका उपहास उड़ाया करते थे, और अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार किया करते थे और कहते थे कि हमें अल्लाह और उसकी किताब और उसके रसूल ख़ातमुन्नबीयीन (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की कोई आवश्यकता नहीं, और उन्होंने कहा कि हम तब तक किसी निशान को ख़ुदा की ओर से नहीं मानेंगे जब तक कि अल्लाह हमें हमारे आदमियों में से निशान न दिखाए। और

हम ''फ़ुर्क़ान हमीद'' पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, और हम नहीं जानते कि रिसालत (ईश्वरीय दूत) क्या है, और ईमान क्या है, और हम काफ़िरों (अधर्मियों) में से हैं। फिर मैंने अपने रब्ब को दर्द से रोते हुए गिड़गिड़ाकर पुकारा और उसकी ओर दुआ के लिए हाथ बढ़ाया तो मेरे रब्ब ने मुझे इल्हाम किया और कहा:-

''मैं ज़रूर उन्हें उन्हीं के बीच में से निशान दिखाऊँगा और मुझे भविष्यवाणी से अवगत करते हुए फ़रमाया- मैं उनकी बेटियों में से एक बेटी को उनके लिए निशान बनाऊँगा, और उसका नाम भी बताया★ और फ़रमाया कि उसे विधवा कर दिया जाएगा और उसका पति और उसका पिता उसके विवाह के दिन से तीन वर्ष के अन्दर मर जाएँगे। फिर उन दोनों की मौत के बाद हम उसे तेरी ओर लौटाएँगे और उन दोनों में से कोई बचाने वालों में से न होगा''

और फ़रमाया:-

''हम उसे तेरी ओर लौटाने वाले हैं, ख़ुदा की बातों को कोई बदल नहीं सकता। नि:सन्देह तेरा रब्ब जो चाहता है करता है।''

★**हाशिया:-** और उसके पति का नाम सुल्तान मुहम्मद पुत्र मुहम्मद बेग पुत्र निज़ामुद्दीन है। और उसके पति के चाचा का नाम महमूद बेग है, और वह ज़िला लाहौर में एक मनहूस बस्ती पट्टी के रहने वाले हैं। और उस लड़की के बाप का नाम मिर्ज़ा अहमद बेग है और वह मेरी इस भविष्यवाणी के बाद भविष्यवाणी की निर्धारित समयसीमा के अन्दर मृत्यु पा गया, शेष रह गया उसका पति सुल्तान मुहम्मद, तो वह अभी ज़िन्दा है और उसकी मृत्यु की निर्धारित समयसीमा में लगभग एक वर्ष शेष है।

हे हमारे रब्ब! हमारे और हमारी क़ौम के बीच सच्चाई स्पष्ट कर दे, और तू सबसे उत्तम सच्चाई स्पष्ट करने वाला है।

01 सफ़र सन् 1311 हिज्री

अत: उसकी इन दोनों सचेतक भविष्यवाणियों में से एक पूरी हो चुकी है कि उसका पिता निर्धारित समय के अन्दर मर गया। अब उसकी दूसरी भविष्यवाणी के पूरा होने की प्रतीक्षा करो। इस (भविष्यवाणी) में एक पारखी की तरह सोच-विचार करो और तीक्ष्ण एवं प्रौढ़बुद्धि के साथ इसे देखो कि क्या यह ख़ुदा तआला का कार्य है या झूठों का षडयन्त्र। और क्या यह उचित है कि ख़ुदा मुल्हिद और काफ़िर (नास्तिक और अधर्मी) की दुआ उसी तरह क़ुबूल करे जिस तरह वह अपने प्रिय और चुने हुए बन्दों की दुआ क़ुबूल करता है। और ऐसे व्यक्ति का मामला किस तरह संदिग्ध रह सकता है जिसकी प्रताप और प्रतिष्ठा के लिए प्रतापी ख़ुदा दो लोगों को मार दे और इस (व्यक्ति) को ख़ुदा की भविष्यवाणियाँ बताने में सच्चा ठहराए। अल्लाह तआला अपने उस रसूल के अतिरिक्त जिसे वह चुन लेता है और लोगों के सुधार हेतु नबियों और मुहद्दसों के रूप में भेजता है किसी (और) को अपनी भविष्यवाणी से अवगत नहीं करता। इन भविष्यवाणियों के अतिरिक्त यह भी है कि मेरे रब्ब ने मुझे भविष्यवाणी की है और एक उपद्रवकारी व्यक्ति जो अल्लाह और उसके रसूल (पैग़म्बर) का दुश्मन है जिसका नाम लेखराम पेशावरी है, उसके बारे में मेरी दुआ स्वीकार की और मुझे ख़बर दी है कि उसका दु:खद अन्त होने वाला है। वह अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को गालियाँ देता था और उनके बारे में गन्दी-गन्दी बातें करता था। जब मैंने उसके ख़िलाफ़ दुआ की तो मेरे रब्ब ने मुझे छ: साल के अन्दर उसके मरने की भविष्यवाणी से अवगत किया। नि:सन्देह इसमें (सत्य के) अभिलाषियों के लिए बहुत बड़ा निशान है।

इन निशानों में से वह (सचेतक भविष्यवाणी) भी है जिससे मेरे रब्ब ने मुझे अवगत किया है। अत: जब ईसाइयों में से अब्दुल्ला आथम अमृतसरी नामक एक व्यक्ति ने मुझसे मुबाहसा (शास्त्रार्थ) किया, तो उसने चाहा था कि वह ईसाई धर्म पर छल-प्रपंच के पर्दे डालकर उसकी लाश को छिपाए। उसने इस्लाम पर आरोपों की तलवार से हमला किया और वह इस्लाम के घोर विरोधियों में से था। उसने मुझसे लोगों से भरी हुई भीड़ में जो उस सभा के लिए विशिष्ट थी मुबाहसा (शास्त्रार्थ) किया। और काफ़िरों (अधर्मियों) को ख़ुश करने के लिए अपने षडयन्त्रों का ख़ूबसूरत जाल बिछाया। अत: मैंने अपना ध्यान उसकी ओर फेरा और अपनी अध्यात्मपूर्ण बातों और यथार्थ प्रमाणों से उसके षडयन्त्रों के पर्दे उसके सामने खोलकर रख दिए और उसका मुँह बन्द कर दिया। लेकिन बेशर्मी के कारण वह चुप न हुआ और अपनी मूर्खता में सरकशी दिखाई और अतिशयोक्ति में बढ़ता गया और यह मुबाहसा (शास्त्रार्थ) आधे महाने तक लम्बा हो गया। हम फ़ज्र की नमाज़ के बाद उसके पास जाते थे और ठीक दोपहर के समय जब प्रचण्ड गर्मी होती थी वापिस आते थे। हमने योद्धाओं की तरह आराम-चैन को त्याग दिया था। उसी मध्य जब मैं इस्लाम की विजय और ओछे एवं दुष्प्रकृति लोगों का मुँह बन्द करने की फ़िक्र में था तो मेरे रब्ब ने मेरी दुआ के बाद मुझे मुबाहसा (शास्त्रार्थ) की समाप्ति से लेकर पन्द्रह माह के अन्दर उस (छलिया और पाखण्डी अब्दुल्ला आथम अमृतसरी) की मौत की भविष्यवाणी से अवगत किया। फिर मैं जाग उठा और पूर्ण विश्वास से भरा हुआ था। फिर हम उसके पास आए और मुबाहसा (शास्त्रार्थ) के लिए सभा

लग गई और हर प्रकार के लोग हाज़िर हो गए और दवात एवं क़लमें लाई गयीं। फिर बैठते ही मैंने वह सारी भविष्यवाणी जो मुझे ख़ुदा की ओर से दी गई थी बता दी, और उसे किताब में लिखवा दिया। उसके बाद मैं अपने मुसाफ़िरख़ाना से रवाना हुआ। और मैं इस मुबाहसा (शास्त्रार्थ) को अपने श्रेष्ठ और ख़ुदा के प्रिय कामों में से समझता हूँ और मैं इस भविष्यवाणी को समस्त लोकों के पालनहार (ख़ुदा) की नेमतों में से एक बड़ी नेमत समझता हूँ। अत: तुम सोच-विचार करो, अल्लाह तुम्हें सकुशल रखे। मुझे काफ़िर कहने में जल्दी न करो और न गालियाँ दो और न ही झूठे आरोप लगाओ। और यदि तुम शक में हो तो इन उपरोक्त भविष्यवाणियों (के पूरा होने) की प्रतीक्षा करो। क्योंकि यह मेरी सच्चाई और झूठ (को परखने) के लिए एक कसौटी है। और यदि तुम बाज़ न आए तो अल्लाह का और मेरा निर्णायक तर्क तुम पर पूरा हो चुका है और तुम मुझे कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे, और मालिक यौमिद्दीन (अर्थात् प्रतिफल देने वाले ख़ुदा) के यहाँ तुम अवश्य पूछे जाओगे। और यदि तुम तौबा करो और तक़्वा (संयम) से काम लो तो (जान लो कि) अल्लाह नेक लोगों के फल को नष्ट नहीं करता।

----------******----------